वार्षिक प्रतिवेदन

ANNUAL REPORT
2019 – 2020

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान

राष्ट्रपति निवास, शिमला–171005

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY

RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
	अध्यक्ष की ओर से प्राक्कथन	5
	निदेशक की टिप्पणी	7
1	**सामान्य**	9
	संचालन तथा प्रशासन	10
2	**अध्येता**	10
3	**अकादमिक गतिविधियां**	12
	रवीन्द्रनाथ टैगोर स्मृति व्याख्यान	12
	डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन स्मृति व्याख्यान	13
	संगोष्ठियां, सम्मेलन, परिसंवाद तथा गोलमेज	14
	अध्येताओं द्वारा प्रस्तुत साप्ताहिक संगोष्ठियां	14
	अध्येताओं से प्राप्त पाण्डुलिपियां	78
	विशिष्ट व्याख्यान शृंखला	79
	बेस्ट माइंड्स ऑफ़ इंडिया शृंखला	79
	अतिथि प्राध्यापक	80
	अतिथि विद्वान	80
	सह–अध्येता (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के तहत अंतर–विश्वविद्यालय केन्द्र)	82
	अन्य कार्यक्रम	86
4	**लेखे तथा बजट**	87
	संस्थान के परीक्षित लेखे	89
	अंतर–विश्वविद्यालय केन्द्र के परीक्षित लेखे	134
5	**पुस्तकालय**	140
6	**प्रकाशन**	141
7	**राजभाषा**	142
8	**विविध**	143
	संलग्नक	
	संस्थान की सोसाइटी, शासी निकाय तथा वित्त समिति की सूची	147

अध्यक्ष की ओर से प्राक्कथन

वित्तीय वर्ष 2019–20 के लिए मुझे भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान शिमला के वार्षिक प्रतिवेदन का प्राक्कथन लिखते हुए अति प्रसन्नता हो रही है। प्रतिवेदन की अवधि के दौरान संस्थान ने कई अकादमिक गतिविधियों तथा विभिन्न प्रशासनिक कार्यों का निष्पादन किया। संस्थान में कई अध्येताओं ने अध्येतावत्ति ग्रहण की गंभीर शोधकार्यों में जुट गए। वर्ष के दौरान कई मौलिक और व्यावहारिक विषयों पर संगोष्ठियां और कार्यशालाएं आयोजित की गईं। मुझे विश्वास है कि इस कार्य से संस्थान की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई है।

देश की आजादी के 75 साल पूरे होने के उपलक्ष पर भारत सरकार की पहल पर मनाए जा रहे जश्न 'आजादी का अमृत महोत्सव' के अंतर्गत संस्थान द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

संस्थान को रचनात्मक सहयोग के लिए हम माननीय केंद्रीय शिक्षा मंत्री तथा शिक्षा मंत्रालय (भारत सरकार) उच्चत्तर शिक्षा विभाग के सचिव एवं अन्य अधिकारियों के आभारी हैं।

संस्थान के संस्थापक, विश्व विख्यात शिक्षाविद भारत के पूर्व राष्ट्रपति, प्रोफेसर सर्वपल्ली राधाकृष्णन के सपनों को साकार करने प्रति समर्पण और प्रतिबद्धता के लिए संस्थान के निदेशक, सभी अधिकारी एवं कर्मचारी प्रशंसा के पात्र हैं।

हर्ष का विषय है कि संस्थान में अब विद्वान भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में सूचीबद्ध किसी भी भाषा में अपना शोधकार्य कर सकते हैं। संस्थान अपने संगम–ज्ञापन (एमओए) में निहित अकादमिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के प्रति अग्रसर है।

मैं हृदय से कामना व प्रार्थना करती हूँ कि संस्थान सकारात्मक दिशा में बढ़ता रहे और अपने उद्देश्यों की पूर्ति के प्रति अग्रसर रहे।

शशिप्रभा कुमार
प्रधान, सोसाइटी
एवं
अध्यक्ष, शासी निकाय

निदेशक की टिप्पणी

वित्तीय वर्ष 2019–20 के दौरान भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान के वार्षिक प्रतिवेदन में अकादमिक उत्कृष्टता की खोज की यात्रा में एक और सफल वर्ष का विवरण है।

अक्तूबर 1965 में संस्थान का उद्घाटन करते हुए, भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति, प्रोफेसर सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने इस संस्थान की परिकल्पना एक ऐसे स्थान के रूप में की, जहां जीवन और विचार के विषयों व समस्याओं के समाधान के लिए एक स्वतंत्र और रचनात्मक अन्वेषण को समर्थन मिलेगा। संस्थान का वातावरण विशेष रूप से मानविकी, भारतीय संस्कृति, धर्म, साहित्य, दर्शन और सामाजिक विज्ञान के क्षेत्रों में आयोजित की जाने वाली अकादमिक गतिविधियों के लिए उपयुक्त है। हालांकि, समय–समय पर शोध के अन्य क्षेत्रों को भी जोड़ा गया है।

वर्षों से यह संस्थान उत्कृष्ट विद्वानों को विविध विषयक मौलिक अवधारणाओं की तलाश में सक्षम बनाने के अपने मूल उद्देश्य के प्रति समर्पित रहा है जिससे ज्ञान की सीमाओं का विस्तार हुआ है।

संस्थान में देश के उत्कृष्ट विद्वानों के साथ अन्य देशों के विद्वानों को भी अध्येतावृत्ति प्रदान की जाती है। संस्थान द्वारा प्रख्यात शिक्षाविदों को व्याख्यान देने और संगोष्ठियां/सम्मेलन आदि आयोजित करने के लिए भी आमंत्रित किया जाता है। अध्येतावृत्ति अवधि के अंत में अध्येता अपने शोध परिणाम को प्रकाशन के लिए जमा कर देते हैं। अभ्यागत आचार्य/अभ्यागत आचार्य तथा अतिथि अध्येताओं द्वारा प्रस्तुत किए गए व्याख्यान संस्थान की पत्रिकाओं में प्रकाशित होते हैं।

मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि प्रतिवेदनावधि के दौरान संस्थान ने 12 पुस्तकें, दो पत्रिकाओं के 6 संस्करण तथा एक राधाकृष्णन स्मृति व्याख्यान प्रकाशित किया है। इसके अलावा, इस अवधि के दौरान बड़ी संख्या में ऑफलाइन व ऑनलाइन संगोष्ठियों, सम्मेलनों, कार्यशालाओं और अध्ययन सप्ताहों का आयोजन भी किया गया।

संस्थान का पुस्तकालय देश में सर्वश्रेष्ठ पुस्तकालयों में से एक है। मुझे यह बताते हुए अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है कि पुस्तकालय की कई दुर्लभ पुस्तकों का अंकरूपण किया जा चुका है और शेष पुस्तकों के अंकरूपण का कार्य चल रहा है।

संस्थान के संस्थापक प्रोफेसर सर्वपल्ली राधाकृष्णन के पदचिन्हों पर चलते हुए, संस्थान लगातार अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयास कर रहा है जैसा कि उस महान संस्थापक का आशय था।

मैं अपने कर्तव्य में विफल हो जाऊंगा यदि मैं सोसाइटी के पूर्व सभापति और शासी निकाय के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर कपिल कपूर तथा संस्थान के पूर्व निदेशक प्रोफेसर मकरंद आर. परांजपे के प्रति अपना हार्दिक धन्यवाद व्यक्त न कर पाऊँ जिन्होंने प्रतिवेदन वर्ष के दौरान संस्थान को आगे ले जाने में भरसक प्रयास किए।

सतत सहायता प्राप्ति के लिए संस्थान, केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय का सदैव ऋणी रहेगा वरना इस सहायता के अभाव में संस्थान वांछित परिणाम प्राप्त करने में समर्थ नहीं होता।

नागेश्वर राव
निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास शिमला-171005

वर्ष 2019–2020 का प्रतिवेदन

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान की स्थापना वर्ष 1860 के समिति पंजीकरण अधिनियम–21 (पंजाब संशोधित अधिनियम 1957) के अन्तर्गत 6 अक्तूबर 1964 को हुई थी। शिमला स्थित राष्ट्रपति निवास में यह संस्थान मूलतः मानवीय महत्व और सामाजिक विज्ञानों के गहन सैद्धान्तिक शोध के लिए समर्पित है। संस्थान के अकादमिक समुदाय में मुख्यतः रिहायशी अध्येता, अतिथि प्राध्यापक, अतिथि विद्वान तथा सह–अध्येता होते हैं जो अपना शोध–कार्य करने के अतिरिक्त परस्पर औपचारिक व अनौपचारिक विचार–विनिमय भी करते हैं। राष्ट्रपति निवास तथा इसकी परिसम्पदा प्रकृति के सुरम्य वातावरण में चिन्तनशील उच्च अध्ययन तथा मानवीय दशा के विभिन्न पहलुओं के अन्वेषण हेतु प्रेरक है।

संस्थान का संगम–ज्ञापन विभिन्न क्षेत्रों में शोध का मार्ग प्रशस्त करता है, जो निम्न प्रकार है–

(क) शोध के क्षेत्र ऐसे होने चाहिए जो अंतर्विधात्मक अनुसंधान का उन्नयन करें।

(ख) अनुसंधान की विषय–वस्तु गहन मानवीय महत्त्व की होनी चाहिए।

संगम–ज्ञापन में अध्ययन के विभिन्न क्षेत्र भी दर्शाए गए हैं जो इस प्रकार हैं–

(क) सामाजिक राजनैतिक और आर्थिक दर्शन;

(ख) तुलनात्मक भारतीय साहित्य (जिसमें प्राचीन मध्यकालीन, आधुनिक, लोक और आदिवासी–साहित्य भी हो);

(ग) दर्शन और धर्म का तुलनात्मक अध्ययन;

(घ) शिक्षा, संस्कृति और कला, जिसमें निष्पादन कलाएँ और हस्तशिल्प भी हों;

(ड) तर्क और गणित की मौलिक अवधारणाएँ एवं समस्याएँ;

(च) प्राकृतिक और जीवन विज्ञानों की मौलिक अवधारणाएँ और समस्याएँ,

(छ) प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण का अध्ययन,

(ज) एशियाई पड़ोसी देशों तथा विश्व के संदर्भ में भारतीय सभ्यता, और

(झ) राष्ट्रीय एकता और राष्ट्र निर्माण के संदर्भ में समसामायिक भारत की समस्याएँ।

ज्ञापन के अनुसार निम्न विषयों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए–

(क) विविधता में भारतीय एकता का विषय;

(ख) भारतीय चेतना का एकीकरण;

(ग) भारतीय प्ररिप्रेक्ष्य में शिक्षा का दर्शन;

(घ) प्राकृतिक विज्ञानों में उच्च अवधारणाएँ तथा उनके दार्शनिक पहलु;

(ड) विज्ञान और अध्यात्म के संश्लेषण में भारत और एशिया का योगदान;

(च) भारतीय तथा मानव एकता;

(छ) भारतीय साहित्य का सहचर;

(ज) भारतीय महाकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन; तथा

(झ) मानव पर्यावरण

संचालन एवं प्रशासन

प्रतिवेदन वर्ष के दौरान प्रोफेसर कपिल कपूर ने संस्थान की शासी निकाय तथा सोसाइटी की अध्यक्षता की। उन्हें संस्थान की शासी निकाय का अध्यक्ष तथा सोसाइटी का प्रधान मनोनीत किया गया था। भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान की सोसाइटी के प्रधान लब्धप्रतिष्ठित व्यक्ति होते हैं जिन्हें विभिन्न क्षेत्रों से चयनित किया जाता है। संस्थान की एक वित्त समिति है जिसमें शिक्षा मंत्रालय के सदस्यों के अतिरिक्त संस्थान की प्रबन्ध समिति के सदस्य भी होते हैं, जो प्रबन्ध समिति को वित्तीय मामलों में परामर्श देते हैं।

समीक्षा अवधि के दौरान प्रोफ़ेसर मकरंद आर. परांजपे संस्थान के निदेशक थे तथा कर्नल विजय कुमार तिवारी सचिव थे, जिन्हें विभिन्न अधिकारियों द्वारा रोजमर्रा के प्रशासनिक कार्यों में सहयोग प्रदान किया गया।

अध्येता

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला अपने अध्येतावृत्ति कार्यक्रम के लिए विश्व विख्यात है। राष्ट्रीय अध्येता, अध्येता तथा टैगोर अध्येता यहाँ रहकर अपनी शोध परियोजनाओं पर कार्य करते हैं। अध्येतावृति की उनकी अधिकतम अवधि दो वर्ष तक होती है। वे शोधकार्य की प्रगति स्वरूप व्याख्यान प्रस्तुत करते हैं तथा संस्थान में आयोजित अन्य संगोष्ठियों तथा व्याख्यानों में भी भाग लेते हैं। अध्येतावृत्ति समाप्त होने पर वे पाण्डुलिपि के रूप में अपने शोधकार्यों को प्रकाशन के लिए संस्थान में जमा करते हैं। प्रतिवेदन अवधि के दौरान निम्नलिखित राष्ट्रीय अध्येता, अध्येता तथा टैगोर अध्येता शोधरत थे–

राष्ट्रीय अध्येता

क्रमांक	अध्येता का नाम	शोध परियोजना
1.	प्रोफ़ेसर सुजाता पटेल	*सोसाअलजी इन इण्डिया : इट्स डिस्सिलिनरी हिस्ट्री।*
2.	प्रोफ़ेसर रमेश चन्द्र	*ए पैराडाइम ऑफ इंटैग्रल ह्युमनिज़म इन इण्डियन थॉट्स।*
3.	प्रोफ़ेसर महेन्द्र प्रताप सिंह	*फैडरलिज़म : द इण्डियन एक्स्पीरियंस : ए नियो– इन्स्टीटूशनल एनालसिस*
4.	प्रोफ़ेसर डी.आर. पुरोहित	*परफॉर्मिंग आर्टस एण्ड कल्चर ऑफ द सेंट्रल हिमालय*
5.	प्रोफेसर मेधा देशपाण्डे	*पावर्टी : कॉन्सेप्ट, मैपिंगस एण्ड पॉलिसीज*

टैगोर अध्येता

6.	प्रोफ़ेसर सी.के. राजू	*गणिता वर्सेज फॉर्मल मैथमैटिक्स : रि–एग्ज़ामिनिंग मैथमैटिक्स, इट्स पैडगोज़ी, एण्ड द इम्पलिकेशन फॉर द साइंस*
7.	प्रोफेसर विजया रामास्वामी	*वुमेन इनत मिल महाभारता एपिक एण्ड ऑरल ट्रेडिशन*
8.	डॉ. विक्रम कुलकर्णी	*महाभारत की घुमंतू जनजातियों की दृश्यकला परंपरा : एक सांस्कृतिक अध्ययन*

	अध्येता	
9.	प्रोफ़ेसर जे. रंगास्वामी	*A Translation of the ITU 36,000 Pati Commentary of Tiruvaymoli of Nammalvar by Vatakkuttiruvitipillai into English (1-110) Verses*
10.	डॉ. गिरिजा के.पी.	*नॉलेज एण्ड सब्जैक्टस : सिचुएटिंग आयुर्वेदा थ्रू लाइफ स्टोरीज ऑफ प्रैक्टीशनर्स*
11.	डॉ. अजय कुमार	*दलित अस्मितावादी इतिहास लेखन : वैकल्पिक अधीनस्थ समाजशास्त्र की तलाश में (एक समीक्षात्मक मूल्यांकन)*
12.	श्री आशुतोष भारद्वाज	*नॉवेल रिसर्च ऑन क्लासिकल एण्ड कंटेम्परेरी लिटरेरी थीअरीस एण्ड डिवाइसिस।*
13.	प्रोफ़ेसर डम्बरूधर नाथ	*निर्गुण भक्ति इन ईस्टर्न इण्डिया : आइडीआलजी, प्रोटैस्ट एण्ड आइडैंटिटी– स्टडी ऑफ मायामारा सब–सैक्ट ऑफ आसाम*
14.	डॉ. संघामित्रा संधू	*स्पिकिंग सब्जैक्टस : लाइफ– राइटिंग फ्रॉम बिलो*
15.	डॉ. मनीषा चौधरी	*द हिस्ट्री ऑफ थार : इन्वायरन्मेंट कल्चरल एण्ड सोसायटी*
16.	प्रोफ़ेसर रेखा चौधरी	*सोशल डाइवर्सिटी एण्ड पॉलिटिकल डाइवर्जेंश इन जम्मू एण्ड कश्मीर आइडैंटिफाइंग द कम्प्लैग्जिटी ऑफ कन्फ्लिक्ट सिचुएशन एण्ड द फार्मेट फॉर इट्स रेस्टोरेशन।*
17.	डॉ. रमा शंकर सिंह	*नेचुरल रिसोर्सिस एण्ड मार्जिनल कम्यूनिटीज : सोशल एण्ड कल्चर सिम्बोसिस ऑफ रीवरस एण्ड निषादास इन प्री–कलोनिअल इण्डिया*
18.	डॉ. सुतप्पा दत्ता	*डिसप्लिंड सब्जैक्ट्स : एजुकेशन एण्ड सब्जैक्टिविटी इन कलोनिअल बंगाल*
19.	डॉ. हरिप्रिया सोइबम	*द पोयट एज विटनेस : एन्काउंटरिंग एथनोग्राफी थ्रू पोइट्री*
20.	प्रोफेसर नारायण मुण्ढोली	*ए स्टडी ऑफ कुटियाट्टम, दी ट्रेडिशनल संस्कृत थियेटर ऑफ केरल*
21.	डॉ. निम्मी एच.एम.	*रीलिजन, लिटरेचर एण्ड द अदर : इन्टरप्शनस इन्टरवेन्शनस एण्ड इन्वेन्शन*
22.	डॉ. देबजानी हल्दर	*आर्ट, आर्टिस्टस एण्ड सोशल लाइफ : ए क्रिटिकल लुक एट इण्डियन पैरलल सिनेमा (1950 टू 1980)*
23.	डॉ. बिन्दु साहनी	*शिवालिक एरोसन एण्ड पैस्ट्रोरेलिस्टस गुज्जर ऑफ हिमाचल प्रदेश : ए स्टडी इन द लाइट ऑफ कलोनिअल पॉलिसिस इन द रीज़न*
24.	डॉ. अश्विन परिजात	*रि–एन्चांटिंग मॉडरनिटी : ए स्टडी ऑफ स्वामी विवेकानंदाज अमेरिकन एन्नोजमेंट*
25.	डॉ. शर्मिला छोटारे	*सिचुएशन पापुलर थियेटर इन वेरिड सोशल हिस्टरीज : ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ जात्रा इन बंगाल, ओड़िशा आसाम एण्ड त्रिपुरा*
26.	डॉ. अनिता सिंह	*द पोस्टकलोनिअल इण्डियन फैमिनिस्ट स्टेज इनवेस्टिगेटिंग द एम्बॉडिड प्रेजेंस एज पॉलिटिकल एक्ट*
27.	डॉ. सत्येन्द्र कुमार	*पापुलर डिमाक्रेसी इन नॉर्थ इण्डिया :एन एथनोग्राफिक स्टडी ऑफ कल्चर, आइडेंटिटी एण्ड पॉलिटिक्स अमंग द अदर बैकवर्ड क्लासिस*

28.	डॉ. इरिना कठोवा	*द डॉक्ट्राइन ऑफ लाइट एण्ड सिम्बलस ऑफ विंगड स्प्रिचुअल बींगस इन इस्लामिक आर्ट*
29.	डॉ. कुलदीप कुमार भान	*द आर्कियालजी ऑफ हड़पन क्राफ्ट एण्ड टेक्नॉलजी विद स्पेस्फिक रेफ्रेंस टू गुजरात, वेस्ट इण्डिया*
30.	डॉ. महेश्वर हजारिका	*टू ट्रांसलेट द व्याकरण महाभाष्य ऑफ पतांजलि इनटू आसामीज विद नोटस एण्ड एक्सप्लेशन*
31.	प्रोफेसर हितेन्द्र पटेल	*हिस्ट्री ऑफ हिन्दी लिटरेचर : ए स्टडी ऑफ पॉलिटिक्स हिस्ट्री ऑफ नॉर्थ इण्डिया (1920–1970) इन द राइटिंग ऑफ लिटरेरी राइटरस*
32.	प्रोफेसर एस.के. चहल	*हिन्दू सोशल रिफॉर्म : ए स्टडी ऑफ द फ्रेमवर्क ऑफ जोतिराव फुले*
33.	डॉ. पवित्रन नाम्बियर	*कल्चर, करप्शन एण्ड इन्सर्जेंसी : थ्रेटस एण्ड क्वेस्ट फॉर सर्वाइवल इन नागालैण्ड*
34.	डॉ. राजवीर शर्मा	*पॉलिटिकल फिलॉसफी ऑफ कौटिल्य : द अर्थशास्त्र एण्ड आफ्टर*
35.	डॉ. शर्मिला चन्द्रा	*इंटरप्रटेशन ऑफ मास्क मेकिंग एण्ड मास्क डांसिस इन द कंटेक्स्ट ऑफ हिन्दू मिथालजी : इन एथनो–कल्चरल स्टडी*
36.	डॉ. अभिषेक कुमार यादव	*ट्राइब्स ऑफ अरुणाचल प्रदेश एण्ड देयर लिटरेसी राइटिंग इन हिन्दी*
37.	डॉ. सैमसन कमेई	*सोशल आइडेंटिटी ऑफ रिलेशनस बिटवीन हिन्दू ऑर्गेनाइजेशनस एण्ड जैलियांगराँग रीलिजन*
38.	डॉ. अँजलि दुहान	*एडिफाइंग द रॉयल्टी : द्वादशा भावा– ए मुगल वर्जन ऑफ संस्कृत स्टोरी*
39.	डॉ. सुमनदीप कौर	*इकलॉजिकल कनसर्नस इन सलेक्ट पंजाबी फिक्शन*
40.	प्रोफेसर माधव सिंह हाडा	*पद्मिनी विषयक ऐतिहासिक कथा–काव्य की देशज परंपरा का विवेचनात्मक अध्ययन*
41.	डॉ. मुहम्मद आदिल सलाम	*इण्डिया इन कंटेम्परेरी अरेबिक लिटरेचर*
42.	डॉ. पीटर एम. स्कॉर्फ	*द स्ट्रक्चर ऑफ वर्बल कग्निशन ट्रांसलेशन एण्ड एनालसिस ऑफ कौंदभट्टाज व्याकरणाभूषणसारा*
43.	डॉ. बलराम शुक्ल	*प्राकृत कविता के चारुत्व के भाषिक प्रयोजक*
44.	श्री सी.एन. सुब्रमणियम	*चिदमबरम एण्ड गोपाल कृष्णा भारती : एंगेजमेंटस विद डिवोशन एण्ड सोशल एक्सक्लूशन*
45.	डॉ. अल्का त्यागी	*भावना (क्रिएटिव कंटेम्पलेशन) एण्ड भैरवा (सुपर रियल्टी) इन द विजननभैरवा तंत्रा इन कश्मीरी शैवा ट्रेडिशन*

अकादमिक कार्यक्रम

इस अवधि के दौरान संस्थान में निम्नलिखित अकादमिक कार्यक्रम आयोजित किए गए–

रवीन्द्रनाथ टैगोर स्मृति व्याख्यान

संस्थान में संस्कृति एवं सभ्यता के अध्ययन के लिए वर्ष 2012 में टैगोर केन्द्र की स्थापना की गई। इस केन्द्र के

अंतर्गत आयोजित गतिविधियों में वार्षिक टैगोर स्मृति व्याख्यान का आयोजन एक प्रमुख गतिविधि है। इस व्याख्यानमाला में किसी प्रख्यात विद्वान अथवा आमजन में किसी प्रज्ञावान व्यक्ति को बौद्धिक संबद्धता से जुड़े किसी ऐसे महत्त्वपूर्ण विषय पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया जाता है जिस उद्देश्य से टैगोर केन्द्र की स्थापना की गई है। इस व्याख्यान में संस्कृति, समाज तथा मानवीय अवस्था से संबंधित सभ्यता से जुड़े टैगोर के रूचिकर विषय हो सकते हैं।

भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री एम. वेंकैया नायडू छठा रवीन्द्रनाथ टैगोर स्मृति व्याख्यान देते हुए।

भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री एम. वेंकैया नायडू ने 17 दिसंबर 2019 को इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए), नई दिल्ली में 'न्यू विज़न ऑफ इण्डिया' विषय पर छठा रवींद्रनाथ टैगोर स्मृति व्याख्यान प्रस्तुत किया। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मकरंद आर. परांजपे ने स्वागत भाषण और परिचयात्मक टिप्पणी दी। संस्थान के अध्यक्ष प्रोफेसर कपिल कपूर ने समापन टिप्पणी दी तथा सचिव कर्नल (डॉ.) विजय के. तिवारी ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन स्मृति व्याख्यान

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन स्मृति व्याख्यान संस्थान की सबसे महत्त्वपूर्ण शैक्षणिक गतिविधियों में से एक है। 21 नवंबर 2019 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में परम पावन दलाई लामा द्वारा 'यूनिवर्सल एथिक्स' विषय पर 24वां डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन स्मृति व्याख्यान दिया गया।

पवन पावन दलाई लामा द्वीप प्रज्ज्वल के साथ राधाकृष्णन स्मृति व्याख्यान का शुभारंभ करते हुए

इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर के उपाध्यक्ष एवं जम्मू–कश्मीर के पूर्व राज्यपाल श्री एन.एन. वोहरा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया तथा संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मकरंद आर. परांजपे ने परिचयात्मक टिप्पणी प्रस्तुत की। संस्थान के उपाध्यक्ष प्रोफेसर चमन लाल गुप्त ने मुख्य अतिथि का परिचय दिया। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के अध्यक्ष एव विशिष्ट अतिथि डॉ. विनय सहस्रबुद्धे, ने भी इस अवसर पर अपने विचार रखे। संस्थान के अध्यक्ष प्रोफेसर कपिल कपूर ने समापन भाषण प्रस्तुत किया तथा सचिव कर्नल (डॉ.) विजय के. तिवारी, ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

संगोष्ठियां, सम्मेलन, परिसंवाद तथा गोलमेज

प्रतिवेदन अवधि के दौरान संस्थान द्वारा कई संगोष्ठियों और सम्मेलनों का आयोजन किया गया। ये आयोजन एक मानकित प्रक्रिया के तहत आयोजित किए जाते हैं। प्रस्तावित प्रत्येक संगोष्ठी के अवधारणा नोट को सर्वप्रथम शासी निकाय की एक अकादमिक समिति द्वारा अनुमोदित किया जाता है। तदोपरांत उसे संस्थान की वेबसाइट पर अपलोड किया जाता है और शोधपत्र किए जाते हैं। समन्वयकों द्वारा प्रस्तावित संगोष्ठी की विषय वस्तु में पहले से ही महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले प्रख्यात विद्वानों को आमंत्रित करने के अलावा, संबंधित विषय पर शोधकार्य करने वाले इच्छुक विद्वानों से भी शोधपत्र आमंत्रित किए जाते हैं। इस आमंत्रण के प्रत्युत्तर में काफी संख्या में युवा विद्वान भी उत्साहपूर्ण अपने शोधपत्र भेजते हैं। बढ़ते प्रचार–प्रसार के साथ, प्रतिक्रियाओं की गुणवत्ता में भी काफी सुधार हुआ है।

इस अवधि के दौरान संस्थान द्वारा निम्नलिखित संगोष्ठियों का आयोजन किया गया–

1. **'रेलवेंस ऑफ इण्डियन थीअरीस ऑफ आर्ट/लिटरेचर टूडे विद स्पेशल रेफ्रेन्स टू रसा, ध्वनि, औचित्य एण्ड भर्तृहरिज वाक्यपदीया' विषय पर अध्ययन सप्ताह (05–11 अप्रैल 2019)**

संस्थान में 05 से 11 अप्रैल 2019 तक 'रेलवेंस ऑफ इण्डियन थीअरीस ऑफ आर्ट/लिटरेचर टूडे विद स्पेशल रेफ्रेन्स टू रसा, ध्वनि, औचित्य एण्ड भर्तृहरिज वाक्यपदीया' विषय पर अध्ययन सप्ताह का आयोजन किया गया। पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में अंग्रेजी विभाग के प्राध्यापक, प्रोफेसर सुधीर कुमार इस अध्ययन सप्ताह के संयोजक थे। शुभारंभ अवसर पर उन्होंने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मकरंद आर. परांजपे ने उद्घाटन भाषण प्रस्तुत किया। समापन आवसर पर संयोजक की ओर से धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

मूलाधार– 'रस', 'ध्वनि, 'औचित्य' और वाक्यपदीय के विशेष संदर्भ में कला/साहित्य के भारतीय सिद्धांतों की प्रासंगिकता का प्रसार और आलोचनात्मक परीक्षण करना उपर्युक्त अध्ययन–सप्ताह का उद्देश्य था। भारतीय सभ्यता संबंधी परंपराओं में, कला/साहित्य के सिद्धांतों और प्रथाओं सहित ज्ञान या ज्ञान/विज्ञान की सभी प्रकार की भारतीय प्रणालियां दृढ़ता से 'धर्म' के नैतिक–आध्यात्मिक बहुकेंद्रीय विमर्शों पर आधारित हैं जो, अन्य बातों के साथ, धार्मिकता/कर्तव्य/नैतिकता/आध्यात्मिकता/न्याय आदि का प्रतीक है। साहित्य/कला के भारतीय सिद्धांतों के मूल में निहित एक अन्य निहितार्थ शब्द 'पुरुषार्थ' (या जीवन का प्राथमिक उद्देश्य) है। इसके अलावा, साहित्य या कला के सामाजिक–सांस्कृतिक–आध्यात्मिक महत्व को कला/साहित्य के अधिकांश सिद्धांतों में और मजबूत किया जाता है जो खुले तौर पर, साथ ही इस बात पर भी बल देते हैं कि साहित्यिक/कलात्मक प्रतिनिधित्व से मनुष्य को चार पुरुषार्थों (जीवन के मूल उद्देश्य यानी धर्म या धार्मिकता, अर्थ या राजनीतिक अर्थव्यवस्था जिसमें धन, काम या इच्छा, और मोक्ष या मुक्ति शामिल हैं) को प्राप्त करने में मदद करनी चाहिए। इसके अलावा, साहित्य/कला के भारतीय सिद्धांत, उनकी समग्र और समावेशी प्रकृति के कारण, दो विपरीत श्रेणियों – मार्ग (शास्त्र) तथा देसी (लोक) या शास्त्रीय और लोक में वर्गीकृत होने को स्वीकार नहीं करते हैं।

कहना न होगा कि साहित्य/कला के भारतीय सिद्धांतों में उन सभी मानवीय स्थितियों की प्रतिनिधित्वात्मक गतिशीलता शामिल है और उनकी व्याख्या की जाती है जहां जाति, वर्ग, धर्म, लिंग, नस्ल, स्थान, संस्कृति, राष्ट्र, पारिस्थिति

की आदि के प्रश्न समग्र रूप से जुड़े हुए हैं, न कि मानवकेंद्रित। इस प्रकार, कला/साहित्य (या भारतीय काव्य) के भारतीय सिद्धांत जैसे, 'रस', 'ध्वनि, 'औचित्य', तथा वक्रोक्तिजीवितम व वाक्यपदीय में वर्णित अर्थ के सिद्धांत अपनी आश्चर्यजनक तार्किक अवधारणा के साथ–साथ उनके विविध संदर्भों में सभी प्रकार की साहित्यिक/कलात्मक प्रासंगिकता के लिए अंतःविषयक हैं। इस अर्थ में साहित्य के भारतीय सिद्धांत, 'समग्र और एकात्म–जीवन–दर्शन' (अभिन्न और समग्र विश्वदृष्टि) पर बल देने और किसी भी तरह के वैचारिक पूर्वाग्रह या कट्टरता से मुक्ति की अपील के कारण सार्वभौमिक कहे जा सकते हैं। कहने के लिए पर्याप्त है, अर्थ/कला/साहित्य के भारतीय सिद्धांत हठधर्मी वैचारिक आख्यानों या 'वाद' के सर्जक नहीं हैं जो ऐसे यूरो–अमेरिका–केंद्रित आलोचनात्मक सिद्धांतों/दृष्टिकोणों को आधुनिकतावाद/उत्तर–आधुनिकतावाद/वाम/नए वाम/उदारवादी/नारीवाद के रूप में चिह्नित करते हैं। उत्तर नारीवाद/संरचनावाद/उत्तर–संरचनावाद/इतिहासवाद/नया–ऐतिहासिकवाद/उपनिवेशवउपनिवेशवाद/मानवतावाद/उत्तर–मानवतावाद/उत्तर–सत्यवाद/राष्ट्रवाद/उत्तर–राष्ट्रवाद या वैश्विकता आदि जो पूरी दुनिया में सीखने और अनुसंधान के संस्थागत ढांचे में यूरो–अमेरिका–केंद्रित सांस्कृतिक आधिपत्य को मजबूत करने और बनाए रखने के लिए केवल उपलब्ध सार्वभौमिक प्रवचन के रूप में लागू किए गए हैं।

विशेषज्ञ

- प्रोफेसर गुरपाल सिंह, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़
- डॉ. रामास्वामी सुब्रमणि, एसोसिएट प्रोफेसर–अंग्रेजी, अंग्रेजी विभाग, मदुरा कॉलेज, मदुरै (तमिलनाडु)
- प्रोफेसर श्रवण कुमार शर्मा, अंग्रेजी विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार (यू.के.)
- प्रोफेसर जगबीर सिंह, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- प्रोफेसर शंकर शरण, प्राध्यापक–राजनीति विज्ञान, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
- डॉ. बलराम शुक्ला, सहायक प्राध्यापक–संस्कृत, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- प्रोफेसर अंबिकादत्त शर्मा, प्राध्यापक–दर्शनशास्त्र, एच.एस. गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
- प्रोफेसर शंकरजी झा, प्राध्यापक एवं संकाय अध्यक्ष–संस्कृत, विश्वविद्यालय निर्देश, पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़
- डॉ. बीर पाल सिंह यादव, सहायक प्राध्यापक, हिंदी और तुलनात्मक साहित्य विभाग, महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
- प्रोफेसर प्रीति सागर, महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, गाँधी हिल्स वर्धा, महाराष्ट्र
- प्रोफेसर सी.के. राजू, टैगोर अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला –171005

प्रतिभागी

- सुश्री श्रद्धा सिंह, अनुसंधान विद्वान, अंग्रेजी व अन्य यूरोपीय भाषा विभाग, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय (केंद्रीय विश्वविद्यालय) सागर, (म.प्र.)
- सुश्री दुर्गावती सिंह, रिसर्च स्कॉलर, अंग्रेजी विभाग, डॉ. एच.एस. गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर, (म.प्र.)
- श्री शुभंकर रॉय, रिसर्च स्कॉलर, एडमास यूनिवर्सिटी, पश्चिम बंगाल।

- सुश्री ऋचा बिस्वाल, रिसर्च स्कॉलर, अंग्रेजी व आधुनिक यूरोपीय भाषा विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
- सुश्री दीपाली कुजूर, महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र
- डॉ. सुजीत कुमार सिंह, सहायक प्राध्यापक, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
- डॉ. संतोष टंडले, पंडित जवाहरलाल नेहरू कॉलेज, औरंगाबाद, महाराष्ट्र
- डॉ. प्रभा शंकर द्विवेदी, सहायक प्राध्यापक–अंग्रेजी, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान तिरुपति, तिरुपति
- प्रवीण शेखर, 105/14–बी, जवाहरलाल नेहरू रोड, जॉर्ज टाउन, इलाहाबाद/प्रयागराज
- डॉ अमितेश कुमार, सहायक प्राध्यापक– हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
- श्री रिंडन कुंडू, वरिश्ठ शोध अध्येता, तुलनात्मक साहित्य विभाग, जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता
- डॉ. सुब्रतो रॉय, 06, पुरुषोत्तम अपार्टमेंट, 18, शिलाविहार कॉलोनी, पुणे
- डॉ. सोनू जेसवानी, वीएमवी कॉलेज, आरटीएम नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर, महाराष्ट्र
- श्री कृष्ण मोहन, आर.एन. पांडे, गली नंबर 08, गंगानगर, राजापुर, इलाहाबाद
- श्री कदम गजानन साहेबराव, महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र
- डॉ. आशिमा श्रवण, सहायक प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग, श्री भगवान दास आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, हरिद्वार
- डॉ. अमित नरूला, डीएवी कॉलेज, चंडीगढ़

विशेषज्ञों ने इस अध्ययन सप्ताह के दौरान निम्नलिखित विषयों पर अपनी प्रस्तुतियां दीं–

प्रोफेसर सुधीर कुमार : *रेलवेंस ऑफ इण्डियन थीअरीस ऑफ लिटरेचर टूडे*

प्रोफेसर सुधीर कुमार : *रिविजिटिंग आनंदा कुमारस्वामीज 'आर्ट एण्ड स्वदेशी' इन कंटेम्परेरी कंटैक्स्ट*

प्रोफेसर सुधीर कुमार : *ऑन रसा : टैक्स्टस, कंटैक्स्टस, प्रोसेसिस : सम रिफ्लैक्शनस*

प्रोफेसर अंबिकादत्त शर्मा : *पोइटिक्स ऑफ सत्या एण्ड धर्मा : सम रिफ्लैक्शनस ऑन इण्डियन एपिक्स*

प्रोफेसर अंबिकादत्त शर्मा : *थ्योरीज़िंग द थ्योरीज़ ऑफ़ साहित्य : इंडियन पर्सपेक्टिव्स*

प्रोफेसर शंकर जी झा : *पंडित जगन्नाथाज व्यूस ऑन रसा : सम रिफ्लैक्शनस*

डॉ. रामास्वामी सुब्रमणि : *ऑन श्री अरबिंदोज द फ्यूचर पोएट्री*

डॉ. बलराम शुक्ल : *भर्तृहरि ऑन 'शब्द' एण्ड 'अर्थ'*

प्रोफेसर सी.के. राजू : *ऑन टाइम/काल*

डॉ. बलराम शुक्ला : *कॉमन इन्साइटस : संस्कृत एण्ड पर्शियन ग्रामर ट्रैडिशन*

डॉ. बीर पाल सिंह यादव : *साहित्य–समालोचना : आचार्य रामचंद्र शुक्ल के सन्दर्भ में*

प्रोफेसर कपिल कपूर : *द फंडामेंटलस ऑफ इण्डियन थीअरीज ऑफ मीनिंग/लिटरेचर*

प्रोफेसर प्रीति सागर : *दलित थीअरीज ऑफ लिटरेचर : कंटैक्स्टस एण्ड कंटैस्टेशन*

प्रोफेसर शंकर शरण : *अज्ञेयज पोएटिक्स : ए क्रिटिकल एप्रिसिएशन*

प्रोफेसर कपिल कपूर : *इण्डियन थीअरीज ऑफ मीनिंग वाक्यापदीय*

डॉ. बीर पाल सिंह यादव : *रस–मीमांसा विद स्पेशल रेफरेंस आचार्य रामचंद्र शुक्ल*

प्रोफेसर शंकर शरण : *लिटरेचर, सोसायटी एण्ड कल्चर : निर्मल वर्माज विजन ऑफ लिटरेचर एण्ड कल्चर*

प्रोफेसर जगबीर सिंह : *कॉन्सेप्ट ऑफ 'शब्द' एण्ड 'वाणी' इन द इण्डियन सिद्ध एण्ड सिख पोएटिक्स*

प्रोफेसर कपिल कपूर : *रति भक्ति एण्ड कथा ट्रेडिशन इन इण्डिया*

प्रोफेसर शरवण कुमार शर्मा : *सिग्निफिकेंस ऑफ ध्वनि/ वक्रोक्ति–सिद्धांत*

प्रोफेसर गुरपाल सिंह : *इण्डियन पोइटिक्स एण्ड गुरु ग्रंथ साहेब*

प्रोफेसर कपिल कपूर : *अंडरस्टेण्डिग शाह हुसैन : साहित्य, काल एण्ड समाज*

2. ''दी टोपोग्राफी ऑफ भक्ति : सोशल रिफॉर्म वाटरशेडस इन इण्डियन इंटलैक्चुअल हिस्ट्री'' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (22–24 अप्रैल 2019)

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान में 22–24 अप्रैल, 2019 को ''दी टोपोग्राफी ऑफ भक्ति : सोशल रिफॉर्म वाटरशेडस इन इण्डियन इंटलैक्चुअल हिस्ट्री'' विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ के डॉ. गुरपाल सिंह और दयाल सिंह कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय) के डॉ. रविंदर सिंह इस संगोष्ठी के संयोजक थे। पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ के प्रोफेसर सुधीर कुमार ने मुख्य भाषण प्रस्तुत किया। अध्यक्षीय भाषण संस्थान के अध्यक्ष प्रोफेसर कपिल कपूर, द्वारा दिया दिया जबकि डॉ. गुरपाल सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

मूलाधार– 'भक्ति' भारतीय विश्व–दृष्टिकोण के कई गैर अनूदित, परस्पर संबंध और सक्रिय सांस्कृतिक–आध्यात्मिक निर्देशांकों में से एक है जो भारत को एक जीवंत सभ्यता, हमारी 'पुण्यभूमि' (पवित्र स्थान) के साथ–साथ 'मातृ–पितृ–भूमि' के रूप में चित्रित करता है। भारतीय समाज और संस्कृति के मूल तत्वों में इसकी सर्वव्यापी उपस्थिति, शायद हमारे राष्ट्रीय जीवन के हर पहलू में– भौतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक, भारत के अर्थ को एक विशिष्ट 'रस' या स्वाद प्रदान करती है। धार्मिक, भाषाई, जातीय, विविधता के बीच भारतीय सभ्यता की अद्भुत एकता (एकता या एकात्मकाता) के महत्त्वपूर्ण सूत्रों में 'भक्ति' भी है जो भारत के अर्थ के केंद्र में स्थित है। भारत के लोगों ने 'भक्ति' को इतना पसंद किया कि उन्होंने इसे भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में 'भक्ति–योग' के रूप और सौंदर्यशास्त्र के क्षेत्र में, 'भक्ति–रस / भक्ति की सौंदर्य भावना' के रूप में जाना जाता है। भारतीय परंपरा में, 'भक्ति' हमेशा एक बहु–संयोजक शब्द और अनुभव रहा है, जो अन्य बातों के साथ–साथ, एक हिस्से या एक भाग, भक्ति, स्नेह, विश्वास, श्रद्धांजलि, पूजा, धर्मपरायणता, मोक्ष के साधन के रूप में प्रेम, साथ में कर्म और ज्ञान एक पंक्ति, एक श्रृंखला, जो किसी और चीज से संबंधित है, या निहित है" के साथ 'एकीकृत होने' की प्रक्रिया के महत्व को दर्शाती है। यहूदियों के विश्वासों के विपरीत, यह केवल हिंदू तथा अन्य भारतीय धर्मों– बौद्ध, जैन और सिख धर्म में है कि भक्त और भगवान (भक्त और भगवान) के बीच अद्वैत या गैर–द्वैतवादी पहचान को मुक्ति या सच्ची स्वतंत्रता प्राप्त करने की प्रक्रिया की एक प्रमुख विशेषता माना जाता है। इस संगोष्ठी के शीर्षक में भक्ति को जलविभाजक 'सामाजिक सुधार' के संयोजन के रूप में एक भौगोलिक रूपक के रूप में उपयोग किया गया है जिसका अर्थ है एक महत्त्वपूर्ण या निर्णायक कारक, समय या घटना जिसका

भारतीय जनता पर हमेशा व्यापक प्रभाव रहा है और उनकी सामूहिक सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना – उन्हें हर तरह के अन्याय का विरोध करने के लिए सशक्त बनाती है– चाहे वह आंतरिक सामाजिक–सांस्कृतिक बुराइयां हो या बाहरी आक्रमण हों। कहना न होगा कि जब भी भारत के लोग वशीभूत हुए या विस्फोट और अन्याय के शिकार हुए, तो भक्ति के माध्यम से कुछ महत्त्वपूर्ण सामाजिक–सांस्कृतिक–राजनीतिक आंदोलन उभरे और जिससे भारतीयों में बहुत साहस और उमंग भर दी।

उल्लेखनीय है कि भारत में भक्ति यात्रा सतत और महत्त्वपूर्ण रही है जो प्राचीन काल यानी ऋग्वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, बौद्ध थेरिगाथ, भागवत, संगम युग, नयनार और अलवर, आदि शंकराचार्य, संत–आचार्य–भक्त जैसे रामानुज, रामानंद, निम्बार्क, बसवा, अंडाल, अक्का महादेवी, लाल देड, (साथ ही कई स्त्री–भक्त), वल्लभाचार्य, लिंगायत, वीरशैव, तुकाराम, एकनाथ, शंकर देव, चौतन्य महाप्रभु, कबीर, तुलसी, सूर, सूफी जैसे शाह हुसैन, मीराबाई, गुरु नानक, गुरु तेग बहादुर, गुरु अर्जुन देव, गुरु गोबिंद सिंह, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद, टैगोर तिलक, गाँधी, आज तक, स्पष्ट और सशक्त रूप से सुझाव देते हैं कि 'भक्ति' की स्थलाकृति या स्थानिकता हमेशा अखिल भारतीय रही है और सामाजिक सुधार वाटरशेड (एक भौगोलिक रूपक और अवधारणा– एक क्रूर अर्थ सामाजिक रूप से महत्त्वपूर्ण या निर्णायक कारक, समय या घटना, मोड़ या ऐतिहासिक क्षण) हमारे राष्ट्रीय जीवन या संस्कृति के सबसे महत्त्वपूर्ण कारकों में से एक है। इस अर्थ में 'स्थलाकृति' शब्द का प्रयोग कर यह संगोष्ठी भारत के बौद्धिक इतिहास में 'भक्ति' की रूपरेखा और प्रवाह का खाका उतारने का एक प्रयास था। एक सभ्यता के रूप में भारत की यात्रा ज्ञात या अज्ञात, अभिलेखित या अलिखित इतिहास के चक्रव्यूह में रही है। ऋग्वेद से लेकर आज तक के भारतीय इतिहास के संदर्भ में एक स्थान से दूसरे स्थान पर हुए भक्ति–आंदोलन इस भावना का सुझाव देने के लिए ही यौगिक भक्ति आंदोलन का निर्माण किया गया था। लेकिन 'भक्ति' को भारत के सांस्कृतिक इतिहास लेखन में हमेशा जरअंदाज किया गया है जैसा कि भारतीय ज्ञानमीमांसा संबंधी परंपरा के अनुरूप 'भक्ति' हमेशा एक आंदोलन रही है! अब समय आ गया है कि हम आंदोलन में भक्तिके स्थान भक्ति आंदोलन पर चर्चा करें, क्योंकि भक्ति आंदोलन आंदोलन में भक्ति का एक स्वाभाविक विस्तार है! 'भक्ति' के माध्यम से ही भारत की जनता ने खुद को सामाजिक और राजनीतिक रूप से ठीक करने की कोशिश की है और धार्मिकता या धर्म और स्वराज के मार्ग पर चलने का प्रयास किया है! यही कारण है कि, 'भक्ति' और इसके विभिन्न रूपों ने इतने सारे 'सामाजिक सुधार जलविभाजक या महत्त्वपूर्ण कारकों– सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक या आध्यात्मिक को जन्म दिया है, जिन्होंने न केवल भातीयों की रक्षा की अपितु उन्हें एक बहादुर प्रतिरोध की पेशकश करने में सक्षम बनाया। लगभग एक हजार वर्षों के इतिहास में बार–बार और निरंतर सैन्य और सांस्कृतिक आक्रमण और नरसंहार होते रहे। सिख गुरु, इस बात को साबित करने के लिए, महान 'भक्त' और 'संत' थे – जिनके पास जबरदस्त 'शास्त्रबल' (ज्ञान की शक्ति) थी, लेकिन उन्होंने 'शस्त्रबल (सैन्य शक्ति) के मूल्य को भी समझा और उसे अपनाने पर बल दिया। कालातीत निरपेक्ष के प्रति उनकी अनन्य, निस्वार्थ 'भक्ति या भक्ति' ने उन्हें भारतीय इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण 'सामाजिक सुधारक बनाने में सक्षम बनाया।

हालांकि, एक आधुनिक भारतीय को जो पीड़ा होती है, वह लगभग भारत की बिना आलोचना के स्वीकृत सांस्कृतिक इतिहास–लेखन से जुड़ी है, और वर्तमान भारत में स्कूलों के साथ–साथ विश्वविद्यालय स्तर पर भी एक वैचारिक रूप से भरी हुई जिसे किसी न किसी रूप में शिक्षाशास्त्र के माध्यम से मान्यता प्रदान कर दी गई है। 'भक्ति' को आध्यात्मिक/पारलौकिक/धार्मिक स्थानों तक सीमित कर दिया ताकि इसे एक विशिष्ट 'प्राच्यवादी' विशेषता के रूप में प्रस्तुत किया जा सके, जो भारतीयों की तर्कहीन, अवैज्ञानिक, गैर–बौद्धिक और पिछड़ा–दिखाने वाली या गैर–प्रगतिशील प्रकृति या उनकी सामूहिक सांस्कृतिक चेतना को दर्शाती है। जैसा कि कार्ल मार्क्स ने इसे बिना इतिहास, संस्कृति और प्रगति के एक क्षेत्रीय अंतरिक्ष के रूप में में परिभाषित किया है, जो तर्कसंगत और वैज्ञानिक रूप से, केवल श्रेष्ठ पश्चिम/यूरोप द्वारा उपनिवेशित होने के लिए उपयुक्त है !!

प्रतिभागी

- डॉ अंजू जगपाल, एसोसिएट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अंबाला छावनी, हरियाणा
- डॉ. चित्रा श्रीधरन, फर्ग्यूसन कॉलेज, पुणे
- प्रोफेसर जगपाल सिंह, डीईएस–एमडीआरएल, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़
- डॉ. अंबुज कुमार पांडे, के.बी.पी.जी कॉलेज, मिर्जापुर, यूपी
- प्रोफेसर श्रवण कुमार शर्मा, अंग्रेजी विभाग, गुरुकुल कुंगरी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड
- प्रोफेसर जगबीर सिंह, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. धनंजय सिंह, सहायक प्रोफेसर–हिन्दी डॉ. एसआरके गवर्नमेंट आर्ट्स कॉलेज, यनम, पुडुचेरी
- प्रोफेसर विजय बहादुर सिंह, 29, निराला नगर, दुष्यंत कुमार मार्ग, भोपाल
- डॉ. एम.एस. सिद्दीकी, सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, विश्व भारती (एक केंद्रीय विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय महत्व का एक संस्थान), शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल
- सुश्री कंचन गोगेट, प्रधान संवाददाता और प्रतिलिपि संपादक द टाइम्स ऑफ इंडिया, पुणे
- प्रोफेसर पलानी अरंगस्वामी, 4, लक्ष्मी कॉलोनी, मेडिकल महाविद्यालय रोड़, तंजावुर
- प्रोफेसर सतिंदर सिंह, पूर्व सम कुलपति, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर
- डॉ अविषेक रे, सहायक प्रोफेसर, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान सिलचर, असम
- डॉ. मनजिंदर सिंह, सहायक प्रोफेसर, पंजाबी विभाग, गुरु नानक देव, विश्वविद्यालय, अमृतसर
- डॉ. रामकुमार, एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, शासकीय पीजी कॉलेज, अंबाला छावनी, हरियाणा
- श्री वैभव शर्मा, सेंटर फॉर लर्निंग फ्यूचर्स, अहमदाबाद विश्वविद्यालय, जीआईसीटी बिल्डिंग, सेंट्रल कैंपस नवरंगपुरा, अहमदाबाद
- डॉ. गैस्पर के.जे., दर्शनशास्त्र सरकारी महिला कॉलेज, त्रिवेंद्रम के सहायक प्रोफेसर विभाग
- प्रोफेसर कैलाश बराल, ईएफएल विश्वविद्यालय, हैदराबाद
- डॉ. वैभव शाह, अहमदाबाद विश्वविद्यालय, गुजरात में सहायक प्रोफेसर
- प्रोफेसर अशोक मोदक, राष्ट्रीय अनुसंधान प्रोफेसर, एमएचआरडी, भारत सरकार तथा चांसलर, गुरु घासीदास. केंद्रीय विश्वविद्यालय बिलासपुर, छत्तीसगढ़
- प्रोफेसर प्रीति सागर, डीन, साहित्य स्कूल एमजीएएचवी, वर्धा, महाराष्ट्र
- डॉ मनोज पंड्या, एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, गोविंद गुरु सरकारी कॉलेज, बांसवाड़ा, राजस्थान
- डॉ. बीर पाल सिंह यादव, सहायक प्रोफेसर, हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग एमजीएएचवी, वर्धा, महाराष्ट्र
- प्रोफेसर राजकुमार हंस, सेवानिवृत्त प्रोफेसर, इतिहास विभाग, गुजरात विश्वविद्यालय, बड़ौदा

- सुश्री निष्ठा सक्सेना, सहायक प्रोफेसर अंग्रेजी विभाग, गाँधी मेमोरियल नेशनल कॉलेज, अंबाला

संगोष्ठी में प्रतिभागियों ने निम्नलिखित विषयों पर प्रस्तुतियां दीं–

सत्र–1

- प्रोफेसर कैलाश बराल : *फ्रॉम द मेटाफोरिकल टू द मेटाफिजिकल एंड बियॉन्डः द पंचसखासी*
- डॉ. रामकुमार : *मध्यकाल भक्ति आंदोलन और नारी बौद्धिकता परंपरा के मुख्य आयामः एक अवलोकन डॉ निष्ठा सक्सेना : मेनिफेस्टिेशनस ऑफ स्प्रिच्युअलिटी : अंडरस्टैण्डिग भक्ति एज रति एण्ड भाक्ति इन अक्का महादेवीज वचनास एण्ड लाल देवज वख्स*
- डॉ. बीरपाल सिंह यादव : *मीरा का दर्शन*

सत्र–2

- डॉ. अंबुज कुमार पाण्डेय : *भक्ति आंदोलन और हिन्दी प्रदेश*
- डॉ अविषेक रे : *नॉमेडॉलजी एण्ड द एपिथेट ऑफ मैडनेस इन द कंटैक्स्ट ऑफ भक्ति*

सत्र–3

- प्रोफ़ेसर प्रीति सागर : *अखिल भारतीय भक्ति आंदोलन और स्त्री–भक्त*
- डॉ अंजू जगपाल : *फ्रॉम पीस टू पीस : द टोपोग्राफी ऑफ भक्ति इन पंजाब*
- डॉ. मनोज पंड्या : *लोक जागरण और हिंदी निगुण भक्ति काव्य : कबीर देशना के विशेष संदर्भ में*

सत्र–4

- प्रोफेसर विजय बहादुर सिंह : *भक्ति काल साहित्य की सामाजिक पृष्ठभूमि*
- डॉ. धनंजय सिंह : *धात्विक सामाजिक चेतना और आलवर–नयनार संत*
- डॉ. गैस्पर के.जे. : *भक्ति एज ए न्यू रेलिजियसिटी एण्ड अवेकनिंग ऑफ द : ए रीडिंग ऑफ श्री नारायण गुरुज व्यूस ऑन भक्ति*

सत्र–5

- कंचन गोगेट : *श्री रामकृष्णाज भक्ति एण्ड स्वामी विवेकानंदाज वेदांता : यूनिफिकेशन थ्रू परसोनिफिकशन व्यक्तित्व के माध्यम से एकीकरण*
- मो. एस. सिद्दीकी : *योगियों से सूफियों तक : भक्ति संस्कृति का सूफी साहित्य पर प्रभाव*

सत्र–6

- डॉ चित्रा श्रीधरन : *कर्म, भक्ति और ज्ञान– ब्रेकिंग बाउंड्स : रूमिनेशनस ऑफ ए इंग्लिश स्टूडेंट ..*
- श्री वैभव शर्मा : *भक्ति एण्ड इट्स इकोस इन 21स्ट सेंचरी इण्डिया*
- डॉ. वैभव शाह : *कन्सेप्चुअलाइजिंग भक्ति : ए सेमेंटिक–कन्सेप्चुअल एनालसिस*

3. 'लिटरेचर फरॉम नॉर्थईस्ट इण्डिया : टैक्स्टस एण्ड कंटैक्स्टस' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (06–07 मई 2019)

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला में 06–07 मई, 2019 को लिटरेचर फरॉम नॉर्थईस्ट इण्डिया : टैक्स्टस एण्ड कंटैक्स्टस विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। सेंटर ऑफ एक्सीलेंस इन पब्लिक पॉलिसी, इंडियन

इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, काशीपुर के अध्यक्ष प्रोफेसर के.एम. बहरुल इस्लाम इस संगोष्ठी के संयोजक थे। जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एम. असदुद्दीन ने मुख्य भाषण दिया। संगोष्ठी के संयोजक प्रोफेसर के. एम. बहारुल इस्लाम ने धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापित किया।

मूलाधार– अब तक हमने जिन विभिन्न साहित्यिक और सांस्कृतिक सिद्धांतों को अपनाया है, उन्होंने साहित्यिक ग्रंथों को पढ़ने, समझने और उनकी व्याख्या करने और उनके अंतर्निहित विश्व विचारों के विविध दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं। विद्वानों और आलोचकों के इस बारे में अलग–अलग विचार हैं कि जिस तरह से पाठक किसी विशेष विषय–वस्तु में प्रस्तुत परिवेश के संदर्भ में उस सामग्री को समझता है वैसे ही हमेशा वह उस ग्रंथ में अपनी अवधारणा बना लेता है। इन सिद्धांतों और दृष्टिकोणों ने पाठकों और लेखकों को अपने संदर्भों को फिर से बनाने और धीरे–धीरे मुख्यधारा के साहित्यिक विमर्शों के केंद्र में मार्गदर्शन करने में सक्षम बनाया है, जो आमतौर पर परिधि से उन अभिव्यक्तियों की उपेक्षा करता है। भारतीय साहित्यिक परिवेश में परिधि से आने वाली अभिव्यक्तियां सामाजिक, आर्थिक और यहां तक कि भौगोलिक हाशिये से आने वाले मत हैं जिनमें अन्य बातों के साथ–साथ पारभाषी, अल्पसंख्यक, दलित लेखकों के साथ–साथ पूर्वोत्तर जैसे दूरदराज के क्षेत्रों के लेखक भी शामिल हैं। ये लेखक एक परिधि बनाते हैं जिसे एंटोनियो ग्राम्स्की द्वारा 'सबाल्टर्न' (अधीनस्थ) कहा गया है और एक अलग 'संदर्भ' या विश्व दृष्टिकोण को चित्रित करने के लिए चल रहे प्रयास को उजागर करते हैं जिसे लेखक के अपने सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवेश से समझा जा सकता है और पर्याप्त रूप से उसकी व्याख्या की जा सकती है। इस तरह के लेखन, हालांकि हमारे महत्त्वपूर्ण साहित्यिक परिदृश्य में सीमित मात्रा में और दुर्लभ भी हैं, फिर भी जाति, समुदाय, स्थानिक अस्तित्व और आर्थिक हाशिए से उभरने वाली चेतना के एक वैकल्पिक मार्ग को रेखांकित करते हैं। यह हाशिए से मुख्यधारा की ओर बढ़ने के लिए लेखन के एक सूक्ष्म चल रहे संघर्ष को भी दर्शाता है। परिधि के लेखन, इसलिए, पहचान, संस्कृति और सामाजिक वास्तविकता के दावे का एक मामला है जो मुख्यधारा से अलग है और मुख्यधारा के किसी भी साहित्यिक आधिपत्य का विरोध करता है। इस प्रकार असम में पूर्वी बंगाल मूल के एक अनुवादक लेखक (ना असोमिया) असमिया में लिखते हैं या एओ नागा समुदाय के एक कवि सभी उन वास्तविक और काल्पनिक हाशिये के बारे में सवाल उठाते हैं और प्रतिरोध के मंच के रूप में अपने ग्रंथों का उपयोग करके पलटवार करने का प्रयास करते हैं। विडंबना यह है कि उनके ग्रंथों में हाशिए की केंद्रीयता को कभी–कभी हाशिए, इसकी साहित्यिक/कलात्मक प्रथाओं के साथ–साथ लिंग और कामुकता की आगे की सीमांत स्थिति के विनियोग के रूप में देखा जा सकता है।

बॉर्डियू और इवन–ज़ोहर जैसे विद्वानों द्वारा बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के दौरान साहित्यिक विषय–वस्तुओं और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के अन्य रूपों को सीमांत या परिधि में असत्य के रूप में देखा गया था जो किहाल के वर्षों में नई गति प्राप्त कर रहे हैं। कई कारकों ने इस आंदोलन को सुगम बनाया जिसमें सांस्कृतिक प्रतीकों का व्यावसायीकरण, इंटरनेट और सोशल मीडिया जैसे नए प्लेटफार्मों के आगमन से साहित्यिक स्थानों तक लोकतांत्रिक अभिगम्यता भी शामिल है। बॉर्डियू भाषा को एक सामाजिक संदर्भ में लेखक की संबंधपरक स्थिति को उजागर करने वाली शक्ति अभिकथन के एक तंत्र के रूप में मानते हैं। भाषा और सांस्कृतिक प्रतीकों, रूपकों और विशेष रजिस्टरों का विशिष्ट उपयोग विशेष संदर्भों से आता है और विषय–वस्तु और उसके अर्थ के बारे में पाठक की अपनी स्थिति विपरीत हो जाती है। भाषाई विमर्ष और साहित्यिक व्याख्याएं इसलिए पाठकों के हिस्से हैं जो व्यापक मुख्यधारा के सामाजिक स्थान और समझ के मापदंडों में प्रासंगिक स्थिति रखते हैं। पाठक के संदर्भों के आधार पर, लेखक की अभिव्यक्ति को इस प्रकार समझा और उसकी व्याख्या की जा सकती है। हाल के वर्षों में, सम–जोहर ने धन, शक्ति और संसाधनों के नियंत्रण के संदर्भ में बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक और केंद्र और परिधि की समस्याओं पर जोर दिया। उनका 'पॉलीसिस्टम सिद्धांत' साहित्य और भाषा के बीच संबंधों पर केंद्रित है जो सामाजिक–सांस्कृतिक प्रणालियों के जटिल विश्लेषण को दर्शाता है। परिधि से लेखन को समझने में ये सामाजिक–सांस्कृतिक प्रणालियाँ साहित्य के प्रति हमारे दृष्टिकोण को

हाशिये से पुनर्परिभाषित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

वैश्वीकरण और प्रौद्योगिकी अग्रणी सूचना समाज के उद्‌भव ने समकालीन दुनिया में कला और संस्कृति के रूपों और सामग्री को भी प्रभावित किया है। हालांकि, लेखन के कुछ अलग रुझान हैं जो अलग होने पर पनपते हैं, इस विचार को मान लेते हैं कि हर देश, और हर स्थानीय समुदाय विभिन्न संस्कृतियों और इतिहास के साथ और मुख्यधारा से दूर एक अंतराल बनाने की कोशिश करता है (जिसे एंटोनियो ग्राम्स्की 'सबाल्टर्न' कहा जाता है)। दो विशिष्ट संदर्भों – भाषा (ट्रांसलिंगुअल), समाज और स्थान (पूर्वोत्तर के आदिवासी समुदाय) से ऐसे लेखन के विभिन्न दृष्टिकोणों को सामने लाने के लिए यह संगोष्ठी महत्त्वपूर्ण थी। संगोष्ठी में न केवल पूर्व–मौजूदा, पूर्व–संकलित पारंपरिक साहित्यिक इतिहास वाले साहित्य का अन्वेशण किया गया, बल्कि जाति, वर्ग, अल्पसंख्यक, सीमांत और सर्वोत्कृष्ट 'सबाल्टर्न' के दृष्टिकोण से भी उनकी आलोचनात्मक समीक्षा की गई। ऐसे में यह संगोष्ठी एक नव अकादमिक प्रयोग था जिससे सैद्धांतिक और विश्लेषणात्मक ढांचे के विविध स्थितियों से साहित्यिक ग्रंथों के अध्ययन में नई अंतर्दृष्टि उत्पन्न हुई।

प्रतिभागी

- प्रोफेसर हिमाद्री रॉय, स्कूल ऑफ जेंडर एंड डेवलपमेंट स्टडीज, इग्नू, नई दिल्ली
- श्री मोहम्मद साकिब, रिसर्च स्कॉलर, अंग्रेजी विभाग, अलीगढ़, मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ (उ.प्र.)
- डॉ. हारिस कादिर, सहायक प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय।
- डॉ. मर्सी वुंगथियनमुआंग गुइटे, सहायक प्रोफेसर, जर्मन अध्ययन केंद्र, भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रोफेसर अंजलि डिमरी, अंग्रेजी विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी
- डॉ. एम. रामेश्वर सिंह, सहायक प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग, डी.एम. महाविद्यालय ऑफ आर्ट्स, डीएमयू, इंफाल, मणिपुर
- डॉ. प्रसनजीत दास, अंग्रेजी में एसोसिएट प्रोफेसर, केकेएचएसओयू, गुवाहाटी, असम
- डॉ. मानष प्रतिम बोरा, अंग्रेजी में सहायक प्रोफेसर, केंद्रीय हिमालयी संस्कृति अध्ययन संस्थान, दाहुंग, पश्चिम कामेंग जिला, अरुणाचल प्रदेश
- मोहम्मद शालीम मुक्तादिर हुसैन, अंग्रेजी विभाग, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेघालय
- डॉ. मृणाल ज्योति गोस्वामी, सहायक प्रोफेसर, असमिया विभाग, कृष्णा कांता हांडीकी राज्य मुक्त विश्वविद्यालय, गुवाहाटी, असम
- डॉ. संजीव साहू, एसोसिएट प्रोफेसर, अंग्रेजी और विदेशी भाषा विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, असम
- प्रोफेसर जयवंती डिमरी, पूर्व अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- सुश्री विपाशा भारद्वाज, सहायक प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग, पब कामरूप कॉलेज, बैहाटा चरियाली, असम
- प्रोफेसर जगदीश लाल डावर, पूर्व अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर बिप्लब लोहा चौधरी, पत्रकारिता और जन संचार केंद्र, विश्व भारती, शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल
- डॉ. इलिटो अचुमी, सहायक प्रोफेसर, सेंटर फॉर सोशियोलॉजी एंड सोशल एंथ्रोपोलॉजी, टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ

सोशल साइंसेज, गुवाहाटी कैंपस, असम

- डॉ. निजारा हजारिका, अंग्रेजी विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग, सोनापुर कॉलेज, सोनापुर, जिला कामरूप (एम) असम
- डॉ. पूनम पुनिया, सहायक प्रोफेसर और प्रमुख, अंग्रेजी विभाग, जेसीडी मेमोरियल (पीजी) कॉलेज, सिरसा (हरियाणा)
- मो. असदुद्दीन, अंग्रेजी विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली
- डॉ. जयंत एम. तामुली, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेघालय

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों ने निम्नलिखित विषयों पर प्रस्तुतियाँ दीं–

सत्र–1, लिटरेचर फरॉम नॉर्थईस्ट

- प्रोफेसर हिमाद्री रॉय : *लव इन द कॉन्फ्लिक्ट ज़ोनः नेगोशिएटिंग स्पेसेस इन डेविडसनज गे शॉर्ट स्टोरीज़*
- डॉ. एडेनौ लुइखम : *एन एक्सप्लोरेशन ऑफ मोटिफ्स इन जाह्नवी बरुआज नेक्स्ट डोर स्टोरीज ऐज अ रिप्रेजेंटेशन ऑफ द नॉर्थईस्ट*
- डॉ. मर्सी वी. गुइटे : *राइटिंग्स फ्रॉम द पेरीफेरी : फोकटेल्स टू अदर फॉर्म्स ऑफ लिटरेचर – ए क्रिटिकल अप्रोच*
- डॉ. अनुराग भट्टाचार्य : *कंटैक्स्चुलाइजिंग इश्यूज ऑफ आइडेंटिटी एण्ड मार्जिनलिटी इन लिटरेचर फरॉम नार्थईस्ट इण्डिया विद स्पेशल रेफरेंस टू सलेक्ट वर्क्स ऑफ टेम्सुला एओ एण्ड ईस्टरिन कियर*
- डॉ. इलिटो अचुमी : *टेल देम अवर स्टोरी : नागास, वर्ल्ड वार्स एण्ड द साइलेंस्ड पास्ट*

सत्र–2, कल्चरल एक्सप्रेशन इन दी राइटिंगस फरॉम परिफरी

- प्रोफेसर जगदीश लाल डावर : *रामबुईज लिटरेचर इन मिजोरम :जहां बांस फुलेते हैं*
- सुश्री विपाशा भारद्वाज : *''कैन द सबाल्टर्न स्पीक?'' 'विल द ऑप्रेसर लिसन? अंडस्टैण्डिग ऑफ मार्जिनल एक्स्पीरियंस इन सिद्धार्थ देबज प्वाइंट ऑफ रिटर्न*
- डॉ. मृणाल ज्योति गोस्वामी : *प्ले एण्ड परफॉर्मेंस इन 21स्ट सेंचरी असम : नैरेटिव्स फरॉम द मार्जिनस*

सत्र–3 परिफरी वायसिस

- डॉ. मानष प्रतिम बोराह : *ए रीडिंग ऑफ द डायलेक्टिस ऑफ पोजिशनिंग/पोजिशनेलिटी, आइडेंटिफिकेशन/आइडेंटिटी इन सलेक्ट पोयटिक वायसिस फरॉम नार्थईस्ट इण्डिया*
- डॉ. संजीव साहू : *द चार एंड द सिटी : रीडिंग मिया शायरी*
- डॉ. हारिस कादिर : *द ग्राउंड बिनीथ अवर फीट : मियां पोइट्री एण्ड पॉलिटिक्स ऑफ अदरिंग इन असम*
- मोहम्मद शालीम मुक्तादिर हुसैन : *पिट्टिंग आइरनी अगेन्स्ट एग्रेशन : मियां पोइट्री एज ए चैलेंज टू द डोमिनेंट असमीज डिस्कोर्स*

सत्र–4, कंटैक्स्चुलाइजिंग 'मार्जिनल' एक्स्पीरियंसिस

- प्रोफेसर अंजलि डिमरी : *फ्रॉम लीजेंड टू फिक्शन, द पॉलिटिक्स ऑफ रिप्रेजेंटेशन : ए स्टडी ऑफ इंदिरा गोस्वामीज थेंगफाखरी तहसीलदार तामोर तोरुवाल (2009) एण्ड विद्यासागर नारजारीज बीरगस्वरीनी थुंगरी*

(2004)

सत्र–5 री–विजिटिंग द सबाल्टर्न : क्रिटिकल अप्रोचिस टू द लिटरेचर फरॉम नार्थईस्ट

- डॉ. एम. रामेश्वर सिंह : *माइथोलॉजी, कंटेम्परेरी इश्यूज एंड राइटर्स रिस्पांस : द मणिपुरी एक्सपीरियंस*
- डॉ. निज़ारा हज़ारिका : *नेरेटिवजिंग एजिंग एण्ड डेमेंटिया : रीडिंग अनुराधा सरमा पुजारीज जलचाबी थ्रू लेंस ऑफ जेण्डरड जेरोन्टोलॉजी*
- डॉ. प्रसेनजीत दास : *लिटरेचर फरॉम नार्थईस्ट इण्डिया : द प्रॉब्लमस ऑफ कैटगराइजिंग*

सत्र–6, टिलरेचर एज सोसीओ–पॉलिटिकल एक्सप्रेशन

- प्रोफेसर जयवंती डिमरी : *द सबाल्टर्न गाँधीयन डिस्कोर्स इन वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्यज मृत्युंजय*
- डॉ जयंत एम. तामुली : *द रोड़ नॉट टेकन : एन अल्टरनेटिव अंडरस्टैंडिंग ऑफ द लिटरेचर फ्रॉम नॉर्थईस्ट इंडिया*
- मोहम्मद साकिब : *फरॉम एपोक्रिफल ओरैलिटी टू टेक्स्टुअल वेरसिटी : द ट्रांसलेशन ऑफ द सबाल्टर्न वॉयस इन ईस्टरिन कियर्स राइटिंग्स*

सत्र–7, समापन सत्र

- प्रोफेसर बिप्लब लोहो चौधरी : *बॉर्डर डायस्पोरा एंड लिटरेचर फ्रॉम द नॉर्थईस्ट*

4. 'गाँधीयन वे ऑफ नेशन–बिल्डिंग' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (20–22 मई 2019)

संस्थान में 20–22 मई, 2019 को 'गाँधीयन वे ऑफ नेशन बिल्डिंग' विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय में वरिष्ठ अध्येता प्रोफेसर आनंद कुमार इस संगोष्ठी के संयोजक थे। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मकरंद आर. परांजपे, तथा सचिव कर्नल डॉ. विजय कुमार तिवारी, स्वागत उद्‌बोधन प्रस्तुत किया। उद्‌घाटन भाषण श्री समीर बनर्जी, प्रमुख गाँधीवादी विचारक और लेखक द्वारा दिया गया। संगोष्ठी के संयोजक प्रोफेसर आनंद कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

मूलाधार– राष्ट्र–निर्माण किसी राष्ट्र–राज्य के नागरिकों में 'हम' की भावना पर आधारित एकजुटता को बढ़ावा देने की एक प्रक्रिया है। यह किसी राष्ट्र–राज्य की मूलभूत विशिष्टताओं पर निर्भर है जैसा कि उस राष्ट्र के संविधान में स्पष्ट रहता है। यह एक बहुस्तरीय अवधारणा है जहां विचारधारा, इतिहास, संस्कृति, राजनीति, अर्थव्यवस्था, क्षेत्र, जनसांख्यिकी और पारिस्थितिकी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसे राष्ट्रीय आदर्शों, मूल्यों और लक्ष्यों के एक समूह को संस्थागत बनाने के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। इस संदर्भ में प्रत्येक समाज में कुछ अनुकूल कारकों के साथ–साथ विभिन्न प्रकार की आंतरिक और बाहरी चुनौतियाँ होती हैं। इसलिए, आधुनिक विश्व–व्यवस्था में राष्ट्र–निर्माण के तरीकों में बहुत विविधता है। राष्ट्र–निर्माण का गाँधीवादी मार्ग एक समुदायवादी दृष्टिकोण है जिसमें दो बातों पर बल दिया गया है – क) समाज में पुरुषों और महिलाओं का चरित्र निर्माण, तथा ख) सत्य, अहिंसा, आध्यात्मिकता की एकता पर आधारित सामाजिक–सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक सुधार निस्वार्थ सेवा, स्वदेशी और सत्याग्रह। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में राष्ट्र निर्माण के गाँधीवादी मार्ग के अभ्यासियों तथा विश्लेषकों ने निम्न परिप्रेक्ष्य में एक सार्थक विमर्ष आयोजित किया गया–

1. इसकी शक्ति, प्रभाव और सीमाओं की व्यापक समझ; तथा
2. राष्ट्र निर्माण की कमियों के बारे में 21वीं सदी के भारत से पहले के अवसरों तथा चुनौतियों के संदर्भ में आगे का मार्ग खोजना।

प्रतिभागी

- प्रोफेसर गीता धर्मपाल, गाँधी रिसर्च फाउंडेशन, जलगांव
- प्रोफेसर चंद्रकला पाडिया, राजनीति विज्ञान विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- डॉ. शुभनीत कौशिक, इतिहास विभाग, सतीश चंद्र कॉलेज, बलिया
- डॉ. जॉर्ज मैथ्यू, अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली
- डॉ. रवि चोपड़ा, संस्थापक, जन विज्ञान संस्थान, देहरादून
- डॉ. अज़ीज़ुर रहमान आज़मी, समाजशास्त्री, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़
- श्री शाहिद जमाल, शोधार्थी, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली
- डॉ. आभा चौहान खिमटा, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला
- डॉ. मनोज कुमार राय, महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय, हिंदी विश्व विद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र
- प्रोफेसर अमरेंद्र नारायण यादव, कुलपति, बी.आर. अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार
- डॉ. रविंदर सिंह राठौर, राठौर निवास, खलिनी, शिमला
- प्रोफेसर राम चंद्र प्रधान, गाँधीवादी अध्ययन संस्थान, वर्धा, महाराष्ट्र
- डॉ. संजीव कुमार, जाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज, जवाहरलाल नेहरू मार्ग, नई दिल्ली
- डॉ. प्रमोद कुमार, हिंदी विभाग, एल.एस. कॉलेज, मुजफ्फरपुर, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, बिहार
- श्री सुरेंद्र कुमार, राष्ट्रीय सचिव, ग्रामीण विकास स्वैच्छिक एजेंसी संघ, मुजफ्फरपुर
- डॉ. जयाता रे, रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता
- श्री बिप्लोव कुमार, इतिहास विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक, सिक्किम
- श्री जसवीर सिंह, पूर्व अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. ए.के. अरुण, अध्यक्ष, अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद, संपादक, युवा संवाद, नई दिल्ली
- डॉ राजेश कुमार, राम लाल आनंद कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. सोपान शिंदे, महाराष्ट्र राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, वर्दा रोड़, नागपुर
- डॉ. आलोक टंडन, 03, आशराज टोला, हरदोई, उ.प्र
- डॉ. अकबर चौधरी, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़
- श्री बिपुल कुमार, 211, ए.एन. सिन्हा सामाजिक अध्ययन संस्थान, पटना
- श्री ओवैस सुल्तान खान, फ्यूचर काउंसिल, दिल्ली

संगोष्ठी के प्रतिभागियों का सामुहिक चित्र

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों ने निम्नलिखित विषयों पर प्रस्तुतियाँ दीं–

सत्र–1 कान्सेप्चुअल ऐस्पैक्टस ऑफ द गाँधीयन वे ऑफ नेशन–बिल्डिंग

प्रोफेसर रामचंद्र प्रधान : *आइडिअशनल रूट्स ऑफ द गाँधीयन वे ऑफ नेशन–बिल्डिंग*

प्रोफेसर चंद्रकला पाडिया : *गाँधीयन मॉडल ऑफ नेशन–बिल्डिंग : ए काग्निटिव शिफ्ट फरॉम मॉडरनाइजेशन पैराडाइम*

डॉ. प्रमोद कुमार : *विऔपनिवेशिकरण : राष्ट्र निर्माण के गाँधी मार्ग का वैचारिक आधार*

डॉ. जयाता रॉय : *व्हाट इज 'लिविंग' एण्ड 'डेड' इन गाँधीयन विज़न ऑफ नेशन–बिल्डिंग ?*

सत्र–2 बिल्डिंग ए नेशन–वायलेंट सोशल ऑर्डर इन कंटेम्परेरी इण्डिया

डॉ संजीव कुमार : *कन्क्वेस्ट ऑफ वायलेंस : एक्स्प्लोरिंग द गाँधीयन वे ऑफ*

डॉ अकबर चौधरी : *एन एपिस्टमॉलजिकल इन्क्वेरी इन टू गाँधीयन वे ऑफ नेशन–बिल्डिंग थ्रू फैनोनियन लेंस*

डॉ मनोज कुमार राय : *अभय और शील : राष्ट्र निर्माण के गाँधीवादी मूल्य*

सत्र–3 सेल्फ रियलाइजेशन, द इण्डियन इथोज एण्ड नेशन–बिल्डिंग

श्री सोपान शिंदे : *सेल्फ रियलाइजेशन एण्ड कन्स्ट्रक्टिव प्रोग्राम ऑफ नेशन–बिल्डिंग : टेकिंग गाँधी पर्सनली*

डॉ. आभा चौहान खिमता : *इन्डविजूअल एण्ड नेशन–बिल्डिंग : ए गाँधीयन पर्स्पेक्टिव*

डॉ. बिप्लव कुमार : *द मेलियोरिस्ट गाँधी : सेल्फ–प्यूरिफिकेशन एंड पूर्ण स्वराज*

सत्र–4 सोसीआलजिकल चैलेंजिस एण्ड द गाँधीयन वे ऑफ नेशन–बिल्डिंग

डॉ. निशिकांत कोलगे की ओर से डॉ. रमाशंकर सिंह : *कास्ट–बेस्ड इन्इक्वेलिटीस ऑफ नेशन–बिल्डिंग एण्ड गाँधीयन वे*

श्री ओवैस सुल्तान खान : *गाँधी, नेशन–बिल्डिंग एण्ड मेज्योरिटेरियनिज़्म*

डॉ. आलोक टंडन : *गाँधीयन वे टू कम्युनल हारमोनी*

डॉ. बिपुल कुमार : *सिचुएटिंग आदिवासी क्वेश्चन वीज़वी गाँधी एण्ड मारंग गोमेल जयपाल सिंह मुंडा*

सत्र–5 इकनॉमिक एस्पैक्टस ऑफ द गाँधीयन वे

श्री जसवीर सिंह : *इकनॉमिक इक्वैलिटी : एन इम्पॉरटेंट एस्पैक्ट ऑफ द गाँधीयन प्रोग्राम फॉर नेशन–बिल्डिंग*

डॉ. अज़ीज़ुर आर. आज़मी : *हैण्डलूम एण्ड रेलवेंस ऑफ गाँधीज इकनॉमिक फिलॉसफी*

सत्र–6 पॉलिटिकल फीचर ऑफ द गाँधीयन वे

डॉ. जॉर्ज मैथ्यू : *पंचायती राज एण्ड डिसेंट्रलाइजेशन*

डॉ. रवि चोपड़ा : *इंटेरोगेटिंग द डोमिनेंट मॉडल ऑफ डिवेल्पमेंट एण्ड द इमर्जिंग अल्टरनेटिवस*

श्री सुरेंद्र कुमार : *रिकन्सिडरिंग गाँधीयन इन्स्टिट्यूशनस*

डॉ. ए के अरुण : *हैल्थ, सैनिटेशन एण्ड स्वराज*

सत्र–7 एजुकेशन, लैंग्वेज प्रोब्लम एण्ड नेशन–बिल्डिंग

डॉ शाहिद जमाल : *एजुकेशन : द की टू स्वराज इन आइडियाज एण्ड एक्शन*

डॉ राजेश कुमार : *गाँधी का भाषा स्वराज और राष्ट्र निर्माण*

डॉ. शुभनीत कौशिक : *महात्मा और राष्ट्रभाषा : भाषा स्वराज की संकल्पना और भाषाई संगठनों के साथ गाँधीजी का जुड़ाव*

5. 'पॉलिटिकल इकनोमी ऑफ टेररिजम इन जम्मू एण्ड कश्मीर' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (3–4 जून 2019)

संस्थान में 03–04 जून, 2019 को *पॉलिटिकल इकनोमी ऑफ टेररिजम इन जम्मू एण्ड कश्मीर* विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संस्थान की अध्येता प्रोफेसर रेखा चौधरी इस संगोष्ठी की संयोजक थीं। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मकरंद आर. परांजपे ने स्वागत भाषण दिया। उद्घाटन भाषण मेजर जनरल ध्रुव कटोच, निदेशक, इंडिया फाउंडेशन और समापन व्याख्यान भारतीय सेना की उत्तरी कमान के पूर्व जनरल ऑफिसर कमांडिंग–इन–चीफ लेफ्टिनेंट जनरल डी एस हुड्डा ने दिया। प्रोफेसर रेखा चौधरी ने सभी सभासदों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

मूलाधार– पिछले तीन दशकों से सशस्त्र उग्रवाद और अलगाववाद की स्थिति में फंसी जम्मू और कश्मीर राज्य की राजनीतिक अर्थव्यवस्था एक बहुत ही जटिल और विरोधाभासी प्रकृति को दर्शाती है। यह एक 'कृषि क्षेत्र की प्रधानता', 'शहरीकरण की निम्न स्तरता, 'अपर्याप्त रूप से विकसित बुनियादी ढांचे', 'व्यापक निरक्षरता' और 'निवेश के निम्न स्तर' को रेखांकित करती हुए पिछड़ी अर्थव्यवस्था है। योजना आयोग, 2003, जम्मू और कश्मीर विकास रिपोर्ट के अनुसार दूर दराज, खराब संपर्क और सुरक्षा की स्थिति के चलते इसे पिछड़ेपन के जाल में धकेल दिया है जिससे यहां कम रोजगार और कम आय अर्जित करने की श्रेणी में रखा गया ह ै(टास्क फोर्स की रिपोर्ट, 2006)। हालांकि, अन्य राज्यों की तुलना में, यह राज्य गरीबी के स्तर और जीवन स्तर के मामले में काफी बेहतर स्थिति को दर्शाता है। जम्मू और कश्मीर के सांख्यिकीय डाइजेस्ट के अनुसार, 2011–12 में इस राज्य के लिए गरीबी के आंकड़े 10.4 फीसदी थे जो कि अखिल भारतीय गरीबी के आंकड़े 21.9 फीसदी से काफी कम थे। आय के स्तर के दृष्टिकोण से मूल्यांकन किया गया तो पाया गया कि यह राज्य कई अन्य राज्यों की तुलना में अपेक्षाकृत बेहतर है। कुल मिलाकर, उग्रवाद की स्थिति के कारण व्यवधानों के बावजूद, राज्य में आम तौर पर, विशेष रूप से कश्मीर घाटी में धन का प्रवाह देखा जा सकता है। विरोधाभासी रूप से ऐसा लगता है कि उग्रवाद की अवधि के दौरान प्रतिकूल आर्थिक परिस्थितियों ने कश्मीर में सभी प्रकार के लोगों पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं डाला और जबकि बड़ी संख्या में लोगों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा, उग्रवाद ने कुछ वर्गों के लिए एक प्रकार की समृद्धि भी पैदा की। यह विरोधाभास सामान्य रूप से कश्मीर की राजनीतिक अर्थव्यवस्था और विशेष रूप से संघर्ष की स्थिति की राजनीतिक अर्थव्यवस्था के बारे में महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठाता है।

हालांकि, 1947 के बाद की अवधि में आमूल–चूल भूमि सुधारों और अन्य जन–समर्थक नीतियों के लाभों के बावजूद, बड़ी संख्या में लोगों की स्थिति निर्वाह स्तर पर बनी हुई है और सामान्य रूप से राज्य की अर्थव्यवस्था संकटग्रस्त बनी हुई है। उदारीकरण से पहले, इसे स्पष्ट रूप से एक 'आश्रित अर्थव्यवस्था' के रूप में वर्णित किया गया था, जो एक ओर सब्सिडी और रियायतों और दूसरी ओर केंद्र से अनुदान और ऋण के आधार पर जीवित थी। यह प्रदेश उदारीकरण का लाभ भी नहीं उठा सका क्योंकि यह अवधि उग्रवाद की अवधि के साथ मेल खाती थी और इसलिए बढ़ती अर्थव्यवस्था के लाभों ने शेष भारत में आमूल–चूल परिवर्तन हुए मगर, इस राज्य को पूरी तरह से दरकिनार रहा।

सशस्त्र उग्रवाद और अलगाववाद द्वारा परिभाषित स्थिति ने कश्मीर में लोगों को कैसे प्रभावित किया? विडंबना यह है कि प्रतिकूल आर्थिक परिस्थितियों के बावजूद, समाज के सभी वर्ग समान रूप से प्रभावित नहीं हुए। कश्मीर में पर्याप्त संपन्नता थी, यह आतंकवाद के दौरान अंतहीन निर्माण प्रक्रिया से परिलक्षित होता था। श्रीनगर शहर का हर तरफ विस्तार हुआ और नई आवासीय कॉलोनियां, बहुमंजिला घर, शॉपिंग मॉल और शॉपिंग क्षेत्र बन कर सामने आए। इस बीच संपत्ति की कीमतों में जबरदस्त वृद्धि हुई। जब कोई कश्मीर का दौरा करता है तो यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि धन का प्रवाह हुआ है। यह अलग बात है कि धन के इस प्रवाह से कश्मीरियों को एक समान लाभ नहीं हुआ है। अमीर कश्मीरियों के शीर्ष वर्ग के अलावा, जिनमें से कई हस्तशिल्प व्यवसाय, होटल व्यवसायियों, निर्यातकों, बाग मालिकों आदि हैं, निश्चित रूप से एक समृद्ध मध्यम वर्ग और 'नए अमीर' वर्ग का उदय हुआ है। 'नए अमीरों' के इस वर्ग का अचानक उदय कश्मीर में अक्सर चर्चा का विषय होता है क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है कि ऐसे पारंपरिक वर्ग संबंधों पर विपरीत प्रभाव पड़ा है।

इसी जटिलता और विरोधाभास के संदर्भ में यह संगोष्ठी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में सामान्य रूप से जम्मू और कश्मीर में संघर्ष की स्थिति की राजनीतिक अर्थव्यवस्था और विशेष रूप से उग्रवाद और अलगाववाद से जुड़ी राजनीतिक अर्थव्यवस्था से संबंधित प्रासंगिक प्रश्न उठाए गए। आतंकवाद पूर्व काल में राज्य की राजनीतिक अर्थव्यवस्था की प्रकृति को समझते हुए, इसका उद्देश्य विभिन्न दृष्टिकोणों से राज्य की अर्थव्यवस्था पर उग्रवाद के प्रभाव का विस्तार से विश्लेषण करना था। जो प्रासंगिक प्रश्न उठाए गए उनमें उदारीकरण की प्रक्रिया और राज्य के लिए इसके निहितार्थों से संबंधित प्रश्न शामिल थे। चूंकि उदारीकरण की प्रक्रिया उग्रवाद की अवधि के साथ मेल खाती है, इसलिए 1990 के बाद आर्थिक विकास और भारत के विकास की कहानी के साथ राज्य के अलगाव की एक सूक्ष्म समझ विकसित करने का प्रयास किया गया। संगोष्ठी का एक महत्त्वपूर्ण बिन्दु समानांतर अर्थव्यवस्था थी जो राज्य की संघर्ष की स्थिति में विकसित हुई है, विशेष कर आतंकवाद काल में। हवाला चौनलों से निपटने में सरकार की क्या प्रतिक्रिया रही है और ये कहां तक सफल रहे हैं? विशेष रूप से, विमुद्रीकरण प्रक्रिया का उग्रवाद और अलगाववाद से निपटने पर क्या प्रभाव पड़ा है? संगोष्ठी में विमर्श पैसे के प्रवाह और समाज में परिणामी असमानता के इर्द–गिर्द केन्द्रित रहे। संगोष्ठी में क्रॉस–एलओसी व्यापार पर भी ध्यान केंद्रित किया गया और एक राजनीतिक सीबीएम के रूप में इसकी प्रभावकारिता और भूमिगत अर्थव्यवस्था के लिए इसके प्रभाव और इसके सुरक्षा निहितार्थ का विश्लेषण किया। संगोष्ठी में संघर्ष की स्थिति में पारदर्शिता, जवाबदेही और भ्रष्टाचार के सवालों का समाधान किया गया। संगोष्ठी का एक प्रमुख उद्देश्य राज्य में भ्रष्टाचार विरोधी संस्थानों की प्रभावशीलता में सुधार से संबंधित प्रश्न का समाधान करना था। अंत में, संगोष्ठी में कमजोर बुनियादी ढांचे के दृष्टिकोण से राज्य की अर्थव्यवस्था का विश्लेषण किया गया जिसमें विशेष रूप से 2015 में प्रधानमंत्री द्वारा 80,000 करोड़ रुपये के विकास पैकेज की घोषणा के बाद से आर्थिक विकास की प्रकृति पर प्रकाश डाला गया।

प्रतिभागी

- सुश्री सदफ गुल, इस्लामी विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जम्मू–कश्मीर

- मिस्टर डेविड देवदास, 90 ए, पॉकेट एफ, मयूर विहार, दिल्ली
- सुश्री आरती टी. सिंह, सी–12, भूतल, निजामुद्दीन पूर्व, नई दिल्ली
- सुश्री एलोरा पुरी, राजनीति विज्ञान विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू
- प्रोफेसर आर एल भट, जम्मू केंद्रीय विश्वविद्यालय, जम्मू
- डॉ अशोक भान, 26/6 चन्नी हिम्मत, जम्मू, जम्मू और कश्मीर
- श्री सरलल शर्मा, पीच और संघर्ष अध्ययन संस्थान, दिल्ली
- श्री रेयान नकाश, इकबाल कॉलोनी, ज़ैनकोट, श्रीनगर
- डॉ. जे. जेगाथन, राष्ट्रीय सुरक्षा अध्ययन विभाग, जम्मू केंद्रीय विश्वविद्यालय, जम्मू
- सुश्री दीपिका, राजनीति विज्ञान विभाग, शिवाजी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- मेजर जनरल ध्रुव चंद कटोच, इंडिया फाउंडेशन, नई दिल्ली

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों ने निम्नलिखित प्रस्तुतियां दीं–

सत्र–1

- प्रोफेसर आर. एल. भट्ट : *पॉलिटी इकानमी एण्ड टेररिजम – द जम्मू एण्ड कश्मीर स्टेट सिनारियो*
- सुश्री आरती टिक्कू सिंह : *ईकनामिक्स ऑफ टेररिजम इन कश्मीर*

सत्र–2

- डॉ. अशोक भान : *आर्म्ड कन्फिलिक्ट एण्ड गवर्नेंस डेफसिट इन जम्मू एण्ड कश्मीर*
- डॉ. एलोरा पुरी : *लिबरलाइजेशन एण्ड ईकनामिक फेडरलाइजेशन इन इण्डिया : लेसन फॉर जम्मू एण्ड कश्मीर*

सत्र–3

- श्री डेविड देवदास : *जॉबस एज पैट्रानेज : हाउ नेपोटिजम इन्सेंटिवाइजिस इन्स्टेबलिटी*
- श्री सरलल शर्मा : *पैरलल मिलिटेंसी इन जम्मू एण्ड कश्मीर : द करेंट कंटेक्स्ट*

सत्र–4

- डॉ. जगन नाथन : *जिओ–ईकनामिक्स ऑफ सब–रीजनल ट्रेड एण्ड कनैक्टिविटी : द केस ऑफ जम्मू एण्ड कश्मीर*

सत्र–5

- सुश्री गुल सदफ : *एंट्री टू पैराडाइज : हाइवे इन शाब्लस (ए स्टडी ऑफ इम्पेक्ट ऑन सोसीआ–ईकनामिक लाइफ ऑफ कश्मीर)*
- श्री रेयान नकाश : *द रोल ऑफ स्टीडी इनकमस फरॉम ऑर्चर्ड इन सस्टेनिंग कश्मीरज रूरल पापुलेशन ड्यूरिंग प्रलॉंगड अनरेस्ट*
- सुश्री दीपिका : *ए न्यू अजेंडा फॉर पार्टिसिपेटरी इन्क्लूसिव डिवेलप्मेंट : ए केस ऑफ जम्मू एण्ड कश्मीर*

6. 'रिफ्लेक्शन ऑन अर्थशास्त्रा एण्ड इट्स रेलवेंस इन द 21स्ट सेंचरी' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (09–10 जुलाई 2019)

संस्थान में 09–10 जुलाई, 2019 को 'रिफ्लेक्शन ऑन अर्थशास्त्रा एण्ड इट्स रेलवेंस इन द 21$^{स्ट}$ सेंचरी' विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कृष्ण मेनन स्टडी सेंटर फॉर इंटरनेशनल रिलेशंस, राजनीति विज्ञान विभाग, केरल विश्वविद्यालय के प्रोफेसर सुरेश रंगराजन तथा माननीय निदेशक, वी.के. इस संगोष्ठी के संयोजक थे। संस्थान के अध्यक्ष प्रोफेसर कपिल कपूर ने इस अवसर पर स्वागत भाषण दिया। संगोष्ठी के संयोजक प्रोफेसर सुरेश रंगराजन ने परिचयात्मक टिप्पणी दी। वाइस एडमिरल एम.पी. मुरलीधरन, पूर्व महानिदेशक, भारतीय तटरक्षक, कोच्चि ने उद्घाटन भाषण दिया। संस्थान के सचिव कर्नल (डॉ.) विजय के. तिवारी, ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

मूलाधार

परिचय

'अर्थशास्त्र' वह विज्ञान है जो पृथ्वी के अधिग्रहण और संरक्षण के साधन प्रदान करता है। अर्थ को मानव अस्तित्व के तीन लक्ष्यों में से एक माना गया है, अन्य दो धर्म और काम हैं। अर्थशास्त्र के दो मुख्य उद्देश्य हैं। सबसे पहले, यह दर्शाना कि शासक को अपने क्षेत्र की रक्षा कैसे करनी चाहिए। यह सुरक्षा मुख्यतः राज्य के प्रशासन को संदर्भित करती है। दूसरे, यह दर्शाता है कि किसी क्षेत्र का अधिग्रहण कैसे किया जाना चाहिए। यह अधिग्रहण मुख्य रूप से अन्य क्षेत्र की विजय को संदर्भित करता है। अर्थशास्त्र आंतरिक और साथ ही बाहरी क्षेत्र में राज्य के मामलों से निपटने का विज्ञान है या किसी राज्य कला का विज्ञान है।

अर्थशास्त्र नामक ग्रंथ का प्रथम भाग राजनीति विज्ञान के बारे में है जो कि मुख्य रूप से राजकुमार के प्रशिक्षण से संबंधित है जिसमें एक शासक के कर्तव्यों का उल्लेख किया गया है। इसके अंतर्गत एक राज्य के प्रशासन के लिए आवश्यक मंत्रियों और अन्य अधिकारियों की नियुक्ति के प्रश्न पर भी विचार किया गया है। इसमें एक उदार राजतंत्र की स्थापना के लिए पृष्ठभूमि तैयार की गई है। प्रजा के सुख में राजा का सुख निहित है और जो प्रजा के हित में है, मुख्य सूत्र है उसमें उसका अपना लाभ है। जो अपने को प्रिय है वह राजा के लिए हितकर नहीं है, लेकिन जो प्रजा को प्रिय है वह (उसे) हितकारी है। दूसरा भाग विभागाध्यक्षों के कार्यों से संबंधित है जिसमें राज्य के विभिन्न विभागों और राज्य के आंतरिक प्रशासिनक गतिविधियों का वर्णन है। तीसरे भाग में न्यायाधीशों का उल्लेख है जोकि मूलतः न्याय प्रशासन से संबंधित है। इसमें न्यायाधीशों के कर्तव्यों और कानून के बारे में उल्लेखित किया गया है। चौथे भाग में, अपराधियों के दमन के बारे में लिखा है जिसमें कानून–व्यवस्था के रखरखाव और विभिन्न आपराधिक अपराधों के लिए दंड का वर्णन है। पाँचवा भाग गुप्त आचरण पर आधारित है, छठे भाग में राजा को केन्द्रित किया गया है जो सात घटकों/प्राकृतों (राजा, मंत्री, देश, शहर, खजाना, सेना और सहयोगी) से संबंधित है। पुस्तक का सातवां भाग, विदेश नीति के छः तरीकों से संबंधित है, जो एक राज्य द्वारा विदेशी राज्यों के साथ अपने संबंधों में अपनाए जा सकते हैं जिसमें शांति/संधि, युद्ध/चोट, चुप रहना/उदासीन रहना, आगे बढ़ना/शक्ति में वृद्धि, आश्रय की तलाश/दूसरी और

दोहरी नीति को प्रस्तुत करना/शांति बहाल करना और युद्ध करना शामिल है। आठवां भाग, संविधान की आपदाओं के विषय से संबंधित है। भाग नौ में राजा की गतिविधि के बारे में वर्णन है। भाग दस, युद्ध के संबंध; भाग ग्यारह, कुलीन वर्गों की नीति; भाग बारह, कमजोर राजा के संबंध; पुस्तक तेरहवां भाग, एक किले के अधिग्रहण के साधन; पुस्तक चौदह, गुप्त प्रथाओं के संबंध और पुस्तक का पंद्रहवां और अंतिम भाग विज्ञान या तंत्र की विधि से संबंधित है।

कौटिल्य का अर्थशास्त्र, लगभग 321 ईसा पूर्व रचा गया था, जो राजतंत्र और कूटनीति, युद्ध, शांति, खुफिया, सुरक्षा और राजनीतिक अर्थव्यवस्था के मुद्दों पर सबसे पुराना और सबसे विस्तृत ग्रंथ है। राजनयिक एल.एन. रंगराजन ने अर्थशास्त्र के बारे में तर्क दिया है कि जहां तक मनुष्यों की प्रकृति समान है और राज्य पूर्व की भाँति व्यवहार करें तो कौटिल्य का अर्थशास्त्र प्रासंगिक है। इसी तरह, के एम पणिक्कर ने राजनयिक संबंधों में कौटिल्य के आचरण के नियमों की प्रासंगिकता और साम–दाम–दण्ड–भेद उनके सिद्धांत पर प्रकाश डाला। कौटिल्य के कुछ शास्त्रीय और स्थायी कहावतें हैं– 'जो प्रतिकूल परिणाम देता है वह खराब नीति है, यह एक ऐसी नीति है जिसे इसके द्वारा उत्पन्न परिणामों से आंका जाता है, और कूटनीति का संबंध आदर्शों से नहीं बल्कि राज्य के लिए व्यावहारिक परिणाम प्राप्त करने से है'। एक और उद्धरण कौटिल्य की एक सार्वभौमिक अपील है, "जब शांति और युद्ध से प्राप्त होने वाले लाभ समान हों, तो किसी को नुकसान के लिए शांति को प्राथमिकता देनी चाहिए जैसे कि शक्ति की हानि और धन की हानि हमेशा युद्ध में शामिल होती है। इसी प्रकार, यदि तटस्थता और युद्ध से प्राप्त होने वाले लाभ समान हैं, तो व्यक्ति को तटस्थता को प्राथमिकता देनी चाहिए'।

अर्थशास्त्र की प्रासंगिकता

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में प्रकट किए गए विचारों और सोचने के तरीकों का महत्व उपयोगी है क्योंकि कई मायनों में वर्तमान दुनिया उस दुनिया के समान है जिसमें कौटिल्य ने काम किया और मौर्य साम्राज्य की महानता का निर्माण किया। कौटिल्य के अर्थशास्त्र को शासक को शासन और राजनीति की विभिन्न पेचीदगियों के साथ सिखाने के लिए तैयार किया गया था। विषय–वस्तु एक 'कल्याणकारी राज्य' के विचारों को भी प्रकट करती है, जिसमें राज्य दैनिक जीवन के सभी पहलुओं को नियंत्रित और योगदान देता है, संसाधनों, लाभों और धन के वितरण में समानता और निष्पक्षता सुनिश्चित करता है। कौटिल्य का मानना था कि लोगों के प्रति उदार रहना, रोजगार देना, सड़कें, बंदरगाह और पार्क बनाना और लोगों की शिकायतों का तुरंत समाधान करना शासक के हित में था।

कौटिल्य, भारतीय राजनीतिक दार्शनिक, राजनेता थे, जिन्होंने चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में चंद्रगुप्त मौर्य को भारतीय इतिहास में पहला एकीकृत राज्य स्थापित करने में मदद की थी। उनका काम अर्थशास्त्र भारत को पहला कल्याणकारी राज्य बनाने की वैचारिक नींव रखता है। वह सभी क्षेत्रों में कल्याण पर बल देता है। उन्होंने न केवल मानव कल्याण की बात की बल्कि पशु कल्याण पर भी ध्यान दिया। वे कहते हैं, 'अपनी प्रजा के सुख में राजा का सुख निहित है, उनके कल्याण में उसका कल्याण निहित है। वह केवल उतना अच्छा नहीं मानेगा जितना कि उसे प्रसन्न करता है, बल्कि जो कुछ भी उसकी प्रजा को अच्छा लगता है, उसे उसके लिए लाभकारी मानता है "। वह कमजोर वर्ग की आजीविका की सुरक्षा, उपभोक्ता संरक्षण और यहां तक कि कैदियों के कल्याण की भी वकालत करता है। राजा का धर्म अपने लोगों की रक्षा करने में न्यायपूर्ण, निष्पक्ष और उदार होना है। अपने लोगों के प्रति उनका रवैया अपने बच्चों के प्रति पिता के समान होना चाहिए। कौटिल्य ने आदर्श शासक को, 'जो लोगों के कल्याण को बढ़ावा देने में सक्रिय है और जो जनता को समृद्ध करके और उनका भला करके खुद को प्रिय है' के रूप में परिभाषित किया है।

फिर से, वर्तमान दुनिया में, राष्ट्रीय सुरक्षा की चुनौतियां 300 ईसा पूर्व में मौर्य साम्राज्य को परेशान करने वाली चुनौतियों से अलग नहीं हैं। राष्ट्र–राज्यों की सुरक्षा के लिए गैर–राज्यीय तत्वों से उत्पन्न होने वाले गैर–पारंपरिक खतरों को केवल लोगों के समर्थन से ही प्रभावी ढंग से संबोधित किया जा सकता है। इस प्रकार राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने

के लिए लोगों को भी आतंकवादी नेटवर्क के बारे में जानकारी साझा करके सुरक्षा एजेंसियों के साथ मिलकर काम करना होगा। इस विचार को तटीय सुरक्षा योजना में अच्छी तरह से शामिल किया गया है, क्योंकि यह मछुआरों को तटीय सुरक्षा सांचे की 'आंख' और 'कान' के रूप में मानता है।

इस दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजकों का मानना था कि इस प्राचीन ग्रंथ अर्थशास्त्र में निहित ज्ञान पर कई चर्चाएँ हुई हैं और पुस्तकें प्रकाशित हैं मगर अर्थशास्त्र पर एक समग्र दृष्टिकोण अभी तक नहीं अपनाया गया है। इस प्रकार संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य अर्थशास्त्र, वाणिज्य, लोक प्रशासन, रक्षा, सुरक्षा अध्ययन, और दर्शनशास्त्र सहित सभी क्षेत्रों के विशेषज्ञों को अर्थशास्त्र में निहित विचारों पर प्रतिबिंबित करने और 21 वीं सदी में इसकी प्रासंगिकता को सिद्ध करना था। यद्यपि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं, लेकिन बुनियादी मानव प्रकृति में कोई समान परिवर्तन दिखाई नहीं दे रहा है। इसलिए सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सुरक्षा के क्षेत्र में कई चुनौतियाँ मौर्य साम्राज्य को परेशान करने वाली चुनौतियों से अलग नहीं हैं। हम मानते हैं कि इस प्राचीन ग्रंथ में राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सुरक्षा के क्षेत्र में हमारी वर्तमान की कई समस्याओं का समाधान अच्छी तरह से उजागर किया गया है।

संगोष्ठी के लिए सुझाए गए व्यापक उप–विषय

1. अर्थशास्त्र – राज्य शिल्प पर एक ग्रंथ
2. मंडल का सिद्धांत
3. अर्थशास्त्र में कल्याणकारी राज्य की अवधारणा
4. विदेश नीति और विदेश संबंध
5. समुद्री सुरक्षा सहित आंतरिक सुरक्षा और बाहरी सुरक्षा
6. अर्थशास्त्र और वाणिज्य का विज्ञान
7. कराधान प्रणाली और लोक कल्याण
8. सरकार और सुशासन की कला

प्रतिभागी

- प्रोफेसर राज कुमार सिंह, वाणिज्य विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला
- प्रोफेसर ममता मुक्ता, लोक प्रशासन विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला
- डॉ. मौसमी घोष, अर्थशास्त्र विभाग, बनवारीलाल भालोटिया कॉलेज, आसनसोल, पश्चिम बंगाल
- डॉ. जयश्री विवेकानंदन, दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- सुश्री जी पद्मजा, गाँधीवादी अध्ययन गीतम संस्थान, गीतम विश्वविद्यालय, विशाखापत्तनम
- प्रोफेसर हरीश के. ठाकुर, राजनीति विज्ञान विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला
- कर्नल प्रदीप कुमार गौतम (सेवानिवृत्त), स्वदेशी ऐतिहासिक ज्ञान परियोजना के सलाहकार, रक्षा अध्ययन और विश्लेषण संस्थान, नई दिल्ली
- सुश्री मेधा बिष्ट, दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

- डॉ. सौरभ मिश्रा, भारतीय विश्व मामलों की परिषद, नई दिल्ली
- सुश्री बी. पूर्णिमा, मणिपाल उच्च शिक्षा अकादमी, भू–राजनीति और अंतर्राष्ट्रीय संबंध विभाग, मणिपाल, कर्नाटक
- डॉ. नंदा किशोर, भू–राजनीति और अंतर्राष्ट्रीय संबंध विभाग, मणिपाल उच्च शिक्षा अकादमी, मणिपाल, कर्नाटक
- डॉ. संतोष भारती, सहायक प्रोफेसर (अंग्रेजी), दिल्ली कला और वाणिज्य कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- श्री यशवंत कुमार त्रिवेदी, पीएचडी, रिसर्च स्कॉलर, स्कूल ऑफ संस्कृत एंड इंडिक स्टडीज (एसएसआईएस), जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रोफेसर भवतोष इंद्र गुरु, अंग्रेजी और अन्य यूरोपीय भाषा विभाग, डॉ. एच.एस. गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर, म.प्र.
- ब्रिगेडियर जे.एस. राजपुरोहित, समूह मुख्यालय एनसीसी, कालेपुर, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश
- डॉ. एस. वेंकट कृष्णन, राजनीति और अंतर्राष्ट्रीय संबंध (एसएलएस) के सहायक प्रोफेसर और प्रबंध सीसीई (सतत शिक्षा केंद्र), उदार अध्ययन स्कूल, पंडित दीनदयाल पेट्रोलियम विश्वविद्यालय, गाँधीनगर, गुजरात
- डॉ. सुधीर कुमार सिंह, दयाल सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. पवित्रन नांबियार, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर राजवीर शर्मा, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला

प्रतिभागियों ने संगोष्ठी के दौरान निम्नलिखित विषय पर प्रस्तुतियाँ दीं–

सत्र–1, अर्थशास्त्र – राज्य शिल्प पर एक ग्रंथ

- डॉ जयश्री विवेकानंदन : *बिटवीन थीअरी एण्ड हिस्ट्री : फार्मूलेटिंग एन अल्टरनेटिव इंटरप्रेटेशन ऑफ कौटिल्य*
- डॉ. मेधा बिष्ट : *स्ट्रेटजिक विजडम इन अर्थशास्त्रा : फिलॉसफिकल रूटस एण्ड पॉलिटिकल इम्पलिकेशनस*

सत्र–2, द डॉक्ट्रिन ऑफ मंडला

- कर्नल प्रदीप कुमार गौतम : *द मंडला थीअरी रीविजिटिड*
- डॉ. नंद किशोर : *कौटिल्याज सप्तगुणा थीअरी इन अंडरस्टैण्डिंग कम्परिहेंसिव नेशनल पावर*
- सुश्री बी. पूर्णिमा : *इज़राइलज फॉरेन पॉलिसी : असेसिंग कोरिलेशन विद कौटिल्याज मण्डला थीअरी*

सत्र–3, वेलफेयर स्टेट कॉन्सेप्ट इन अर्थशास्त्रा : आर्ट ऑफ गवरन्मेंट एण्ड गुड गवर्नेंस

- प्रोफेसर राजवीर शर्मा : *गुड गवर्नेंस परस्पैक्टिवस इन द अर्थशास्त्रा :कौटिल्याज आइडियालजी एण्ड इट्स एप्लीकेबिलिटी इन द प्रेजेंट टाइम्स*
- डॉ. संतोष भारती : *वुमेन एण्ड स्टेट क्राफ्ट इन कौटिल्याज अर्थशास्त्रा*
- डॉ. एस. वेंकट कृष्णन : *अर्थशास्त्राज सिविक रिस्पॉसिबिलिटी– द नीड ऑफ द आवर*

सत्र–4, इंटरनल सिक्योरिटी एण्ड एक्स्टरनल सिक्योरिटी इन्क्ल्यूडिंग मेरिटाइम सिक्योरिटी फॉरेन पॉलिसी एण्ड फॉरेन रिलेशनस

- ब्रिगेडियर जे एस राजपुरोहित : *कंटेम्परेरी स्टेटक्राफ्ट इन अर्थशास्त्रा*
- सुश्री जी पद्मजा : *इण्डियाज इवॉल्विंग मैरिटाइम पॉलिसिस : सजेस्टिंग मेशरस फॉर देयर इफैक्टिव इम्पीमेंटेशन इन कंटक्स्ट ऑफ कौटिल्यज सप्तंग थीअरी एण्ड सद्गुण्य थीअरी*
- प्रोफेसर हरीश के ठाकुर : *लोकेटिंग कौटिल्य इन मॉडरन इण्डियन स्ट्रेटिजिक कल्चर*
- प्रोफेसर भवतोष इंद्र गुरु : *द इस्टि्टूशन ऑफ स्पाइस एकार्डिंग टू कौटिल्य*

सत्र–5, लॉ एण्ड पब्लिक वेलफेयर

- डॉ. सुधीर कुमार सिंह : *कौटिल्य एण्ड एवॉल्यूशन ऑ ह्यूमन राइट्स*
- डॉ. सौरभ मिश्रा : *रेस्क्यूइंग द कौटिल्य : इटस मीनिंग एण्ड अन्विक्षिति*

सत्र–6, साइंस ऑफ ईकनामिक्स एण्ड कॉमर्स टैक्सेशन सिस्टम

- डॉ मौसमी घोष : *ट्रेज़री इन अर्थशास्त्रा एण्ड इट्स रेलवेंस टूडे*
- श्री यशवंत कुमार त्रिवेदी : *टैक्स कुलैक्शन इन अर्थशास्त्रा एण्ड क्राइटेरिया ऑफ*

7. 'सोसायटी, कल्चर एण्ड द मेकिंग ऑफ लाइवलीहुड : द सिम्बोसिस ऑफ रीवर्स एण्ड निषाद इन नॉर्दर्न इण्डिया' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (22–24 जुलाई, 2019)

संस्थान में 22–24 जुलाई, 2019 को 'सोसायटी, कल्चर एण्ड द मेकिंग ऑफ लाइवलीहुड : द सिम्बोसिस ऑफ रीवर्स एण्ड निषाद इन नॉर्दर्न इण्डिया' विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संस्थान के अध्येता डॉ. रमा शंकर सिंह इस संगोष्ठी के संयोजक थे। उन्होंने संगोष्ठी से संबंधित परिचयात्मक टिप्पणी दी। जी.बी. पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद के निदेश प्रोफ़ेसर बद्री नारायण ने 'निषाद समुदाय का स्मृति लोक और नदी' विषय पर मुख्य भाषण दिया।

मूलाधार

संगोष्ठी के संदर्भ

इन दिनों, पानी की बढ़ती कमी और उसके सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभावों ने वैश्विक स्तर पर एक जबरदस्त विमर्ष को जन्म दिया है। जलाशय, तालाब, नदियां समुद्र और हिम आच्छादित पर्वत अब अक्सर अकादमिक और अन्य लोकप्रिय क्षेत्रों में चर्चा का विषय रहते हैं। नदियों के सामाजिक–सांस्कृतिक इतिहास, उनके प्रवाह, स्वास्थ्य और पारिस्थितिकी तंत्र के बारे में हाल ही में शोधकर्ताओं ने विशेष ध्यान दिया है। परिणामस्वरूप जल के साथ–साथ कई अन्य क्षेत्र भी उनके अध्ययन का मुख्य केन्द्र रहे हैं। अथर्ववेद में जल को पवित्र और शुद्ध करने वाला बताया गया है और सुख प्रदान करने के लिए इसका आह्वान किया गया है।[1] यहां, पानी एक 'अंतरिक्ष' है जहां 'सांस्कृतिक' रूप ग्रहण कर लेता है, और इतिहास निर्माण करता है क्योंकि समुदायिक जीवन इसके ईर्द–गिर्द विकसित होता है।

नदी के समुदायों में एक समुदाय, यानी निषादों का जीवन, भारत में बहने वाली कई नदियों से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है। इन समुदायों के जीवन को यदि करीब से देखा जाए तो हमें मानव की जल पर निर्भरता के व्यापकता का पता चलेगा जिससे एक विविध जगत का निर्माण होगा। प्रस्तावित संगोष्ठी इसी दिशा में एक प्रयास है। इतिहास को बारीकी से पढ़ने से इस बात का प्रमाण मिलता है कि भारत के हाशिए पर रहने वाले समुदायों ने देश की संस्कृतियों, समाजों और धर्मों की रूपरेखा को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। दुर्भाग्य से, भारत में सामाजिक इतिहास

1 पी.वी. केन (1953), हिस्ट्री ऑफ धर्मशास्त्रा, वॉ.4, भण्डारकर ऑरियंट रिसर्च इन्स्टि्टूट, पूना, पेज 555

का लेखन इससे पर्याप्त रूप से निपटने में विफल रहा है। विभिन्न जातियों और समुदायों की संस्कृतियों के निर्माण में सामाजिक और सांस्कृतिक आवासों की भूमिका को भी अक्सर सामाजिक विज्ञान के विमर्शों में नजरअंदाज कर दिया जाता है। इस संगोष्ठी का उद्देश्य नदियों और उनके समुदायों के बीच बहुस्तरीय संबंधों से उत्पन्न सामाजिक–सांस्कृतिक वातावरण और राजनीतिक अर्थव्यवस्था का पता लगाना और समझना है।

आधुनिक भारत में 1990 के दशक से गरीबी के मापन और आकलन के बारे में चर्चा, विशेष रूप से, भौतिक संपत्ति, शिक्षा और सार्वजनिक सुविधाओं की पहुंच तक केंद्रित रही है। समुदायों के जीवन में प्राकृतिक और सांस्कृतिक संसाधनों की भूमिका की उपेक्षा करने की प्रवृत्ति रही है। पहाड़ों, जंगलों और नदियों पर निर्भर विभिन्न समुदायों के बीच अभाव और गरीबी की प्रकृति निवास स्थान से भिन्न होती है। जब निषादों की नदी तक पहुंच प्रतिबंधित हो जाती है, तो इससे पूरे समुदाय पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। साथ ही, भारत में हमारा हालिया अनुभव बताता है कि आधुनिक तकनीकों और राज्य के नियमों ने भी निषादों और अन्य हाशिए के समुदायों की आजीविका के साधनों पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है। यह देखा गया है कि कारीगर जातियों और समुदायों पर प्रौद्योगिकी के प्रतिकूल प्रभाव को समझे बिना, हम भारत के लोगों के जीवन की सही जांच नहीं कर पाएंगे। सदियों से, मल्लाह, केवट और मांझी जैसी एक दर्जन से अधिक जातियाँ नदियों से अपनी आजीविका कमा रही हैं। इस संगोष्ठी इस बात पर ध्यान केंद्रित किया गया कि विकास गतिविधियों ने इन सांस्कृतिक और आर्थिक ईकाइयों को कैसे प्रभावित किया है और कैसे औपनिवेशिक राज्य ने नदियों पर अपनी पकड़ बढ़ाने की कोशिश की और इस तरह संबंधित समुदायों को नियंत्रित किया है।

दक्षिण एशिया के जल भण्डार के बारे में लिखते हुए, सुनील अमृत नदियों और जलवायु के महत्व पर प्रकाश डाला है। उन्होंने नदियों के संबंध में भारतीय सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विचारों के ताने–बाने तथा औपनिवेशिक व उत्तर–औपनिवेशिक राज्यों द्वारा नदियों के नामकरण और नियंत्रण के बारे जाँच करने का प्रयास किया है।[2]

एक निश्चित समय और स्थान में,[3] नदी के दृश्य सार्वजनिक स्थान बन जाते हैं जहां इतिहास, संस्कृति, धार्मिक विश्वास और राजनीति का विभिन्न स्तरों पर मेल होता है। चूंकि यह समाज को आकार देती है, इसलिए इतिहासकारों ने नदी को एक विषय के रूप में देखना शुरू कर दिया है। फर्नांड ब्राउडल जैसे प्रख्यात इतिहासकारों ने नदियों, पहाड़ों, पठारों और समुद्रों जैसे भौगोलिक और प्राकृतिक कारकों के ऐतिहासिक महत्व पर जोर दिया है। इसके साथ ही ब्रौडेल ने 'लोंगू ड्यूरी' में नदियों के इतिहास पर भी विचार किया[4]। मानव समाजों और नदियों के बीच ऐतिहासिक संबंधों पर पुनर्विचार करना महत्त्वपूर्ण है। इसके साथ अनुसंधान भी इस संगोष्ठी के दायरे में आता है। यह संगोष्ठी मुख्य रूप से इतिहास में नदी–मानव संबंधों में राज्य की भूमिका पर चर्चा के लिए केन्द्रित रही।

पहले बताए गए सभी कारणों से, अनुपम मिश्रा ने एक बार नदियों को 'समाज का तरल दर्पण' कहा था। इसके द्वारा मिश्रा का अर्थ नदियों के आर्थिक महत्व के अलावा सांस्कृतिक महत्व को जताना था।[5] संगोष्ठी का उद्देश्य नदियों और उनके समाजों के बीच संबंधों के विभिन्न पहलुओं को सहसंबद्ध करना था। उदाहरण के लिए, मेलों, त्योहारों और सभाओं और उन नदियों के बीच एक स्पष्ट संबंध है जिनके किनारे वे आयोजित किए जाते हैं।

विद्वानों का मानना है कि गंगा और अन्य नदियों पर स्थित धार्मिक स्थलों की तीर्थयात्रा हमेशा सामूहिक रही है। गंगा और यमुना नदियों के संगम पर प्रयाग (उत्तर प्रदेश) में कुंभ का मेला हमें एक खुले समाज के रूप में भारतीय

2 सुनील अमृत (2018) अनरूली वाटर : हाउ माउंटेंनस, रीवर्स एण्ड मानसून हैव शेपड साउथ एशियाज हिस्ट्री, पेंगुइन रैंडम हाउस, इण्डिया।

3 अस्सा डोरोन (2013), लाइफ ऑन द गंगा : बोटमेन एंड द रिचुअल इकोनॉमी ऑफ बनारस, कंबेडिज यूनिवर्सिटी प्रेस इंडिया, नई दिल्ली।

4 सुनील अमृत (2018)।

5 अनुपम मिश्रा (2019), पर्यावरणं के पथ : साक्षतकर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

उपमहाद्वीप की एक झलक देता है, जहाँ बच्चे, विधवाएँ, पथिक, तपस्वी, पुजारी, किसान, व्यापारी, सैनिक, राजा और जमींदार एक पल के लिए अपनी पंक्ति को तोड़ते हैं और एक दूसरे के साथ मिल जाते हैं।[6] मानव संगम के इन स्थानों ने एक अज्ञात, दुर्गम इलाके को एक परिचित धार्मिक स्थल में बदल दिया, जहां अलग–अलग क्षेत्र और समुदाय जुट सकते थे।[7] भारतीय संस्कृति का यह विषम जलाशय देश की छोटी और बड़ी नदियों के ऊपर देखा जा सकता है। इस संगोष्ठी में ऐसी घटनाओं के अन्वेशण में विशेष रूचि दिखाई गई।

हमारे जीवन में नदियों के महत्व के बावजूद, गंगा और भारत की अन्य प्रमुख नदियाँ हाल के दिनों में बहुत प्रदूषित हो रही हैं जिन्हें प्रदूषण मुक्त करना वश से बाहर है। नदियों में प्रदूषण ने न केवल उनके वनस्पतियों और जीवों के जीवन को खतरे में डाला है, बल्कि नदियों के पारिस्थितिकी को भी बुरी तरह प्रभावित किया है। नदियों पर निर्भर मानव जीवन भी खतरे में है। संगोष्ठी में नदियों के अध्ययन में सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टिकोण पर ध्यान देने के साथ–साथ प्रदूषण की इस समस्या से निपटने के पहलुओं पर भी विचार किया गया।

संगोष्ठी के उद्देश्य

1. प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहने वाले हाशिए के समुदायों के जीवन इतिहास का दस्तावेजीकरण करना।
2. भारतीय संस्कृति और इतिहास में नदी समुदायों के योगदान की ऐतिहासिक समझ विकसित करना।
3. नदी के किनारे रहने वाले समुदायों की संस्कृति और आजीविका के प्रश्न और उनके द्वारा लगे दैनिक सामाजिक–आर्थिक संघर्षों के बारे में सिद्धांत निर्माण करना।
4. उत्तरी भारत के लोगों के जीवन में नदियों के सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक पहलुओं का पता लगाना।
5. गंगा और उत्तर भारत की अन्य नदियों के किनारे आयोजित मेलों के सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक योगदान/प्रभावों की जांच करना।
6. नदियों और उनके समुदायों के बीच संबंधों में राज्य की भूमिका का परीक्षण करना।

संगोष्ठी के लिए सुझाए गए उप–विषय

1. पूर्व–औपनिवेशिक भारत में प्राकृतिक संसाधनों के साथ विभिन्न समुदायों के संबंध।
2. निषादों के जीवन, आजीविका और संस्कृति के निर्माण में नदी पारिस्थितिकी की भूमिका।
3. निषादों के विश्वदृष्टि के निर्माण में नदियों की भूमिका।
4. लोकप्रिय संस्कृति में गंगा और निषाद।
5. उत्तर भारत के कला रूपों में नदियों का निरूपण और लाक्षणिकता।
6. उत्तर भारतीय समाज में नदियों की सांस्कृतिक और धार्मिक भूमिका।
7. उपरोक्त विषयों से संबंधित कोई अन्य प्रासंगिक प्रश्न।

संगोष्ठी के सत्र

1. नदी और मानव : इतिहास लेखन, प्राकृतिक संसाधन और प्रारंभिक भारत के समुदाय।

6 सुदीप्त सेन (2019), गंगा : द मैनी पास्टस ऑफ ए रीवर, पेंगुइन रैंडम हाउस, इण्डिया, पृष्ठ 43।

7 बी.डी. चट्टोपाध्याय (2017), द कॉन्सेप्ट ऑफ भारतवर्षा एण्ड अदर ऐस्सेज, पर्मानेंट ब्लैक, रानीखेत, पृष्ठ 180; राम प्रताप त्रिपाठी 'शास्त्री' (1952), पुराणों में गंगा, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग भी देखें।

2. नदी, समाज और प्रतिनिधित्व : पूर्व–औपनिवेशिक उत्तर भारतीय सामाजिक व्यवस्था में निषादों की उपस्थिति।
3. पारिस्थितिक मानविकी, प्रकृति और समाज।
4. निषाद समुदायों के प्रतीक और सामाजिक पारिस्थितिकी।
5. संस्कृत, पाली, प्राकृत और उत्तर भारत के साहित्य में निषाद और नदियाँ।
6. भारत की वास्तुकला, मूर्तिकला और चित्रकला में नदियाँ।
7. लोक और मौखिक परंपराओं की कल्पना में नदी और इसके सांस्कृतिक अर्थ
8. फिल्मों में नदी और उसके लोग
9. तीर्थयात्रियों की दुनिया : नदियाँ, मेले और त्यौहार।
10. समुदाय, राज्य और आजीविका (नदियों में नौका विहार, मछली पकड़ने और रेत खनन के विशेष संदर्भ में)
11. नदियों में प्रदूषण।

प्रतिभागी

- श्री जितेंद्र सिंह, जी.बी. पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद, उ.प्र.
- प्रोफेसर आशीष त्रिपाठी, हिंदी विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- डॉ. बलराम शुक्ला, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- श्री जगन्नाथ दुबे, हिंदी विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- प्रोफेसर शेखर पाठक, संपादक, पहाड़, ग्राम पथकुरा (नकुद), पी, ओ. गंगोलीहाट, जिला पिथौरागढ़ वाया अल्मोड़ा, उत्तराखंड
- डॉ. शुभनीत कौशिक, इतिहास विभाग, सतीश चंद्र कॉलेज, बलिया
- श्री धीरेंद्र प्रताप सिंह, हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
- डॉ. खुशबू सिंह, जेडीवीएम कॉलेज, कानपुर
- डॉ. अजय कुमार, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. देबजानी हलदर, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. अश्विन पारिजात, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. शर्मिला चंद्रा, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ रुचि श्री, राजनीति विज्ञान विभाग, जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- सुश्री रागिनी कपूर, आधुनिक भारतीय भाषा और साहित्य अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- सुश्री कमलेश भटोइया, प्रदर्शन कला विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला
- डॉ राकेश तिवारी, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण से सेवानिवृत्त।
- सुश्री सीमा यादव, जी.बी. पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, प्रयागराज

- सुश्री गुंजन राजवंशी, जी.बी. पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद
- श्री गोविंद निषाद, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रगराजी
- सुश्री नेहा राय, एस.एस. खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद
- प्रोफेसर अर्चना सिंह, जी.बी. पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद
- प्रोफेसर महेंद्र पाठक, के.एस. साकेत पीजी कॉलेज, अयोध्या
- श्री अंकित पाठक, राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
- श्री लुटन राम, नेशनल एसोसिएशन ऑफ फिशरमेन, शिव गली, मुंबई
- श्री हरिशंकर बिंद, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- डॉ. ज्योति सिन्हा, महिला पी.जी. कॉलेज, जौनपुर
- सुश्री श्रुति मीमांसा, संस्कृत विभाग, एच.एन.बी. गढ़वाल विश्वविद्यालय, उत्तराखंड
- प्रोफेसर सुचेंद्र घोष, प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता
- प्रोफेसर अवधेंद्र शरण, सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ डेवलपिंग सोसाइटीज, दिल्ली
- श्री पुष्यमित्र, 306, तारा टॉवर, शास्त्री नगर, पटना
- प्रोफेसर डी.आर. पुरोहित, राष्ट्रीय अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर एस.के. चहल, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर विजया रामास्वामी, टैगोर अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर सुजाता पटेल, राष्ट्रीय अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. सतेंद्र कुमार, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर एम.पी. सिंह, राष्ट्रीय अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर हितेंद्र के. पटेल, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला

प्रतिभागियों ने संगोष्ठी के दौरान निम्नलिखित विषयों पर प्रस्तुतियाँ दीं–

सत्र–1, रीवर, पीपल एण्ड द स्टेट

- प्रोफेसर अवधेंद्र शरण : *पवित्र नदी, प्रदूषित नदी– कुछ विचार गंगा नदी के संदर्भ में।*
- डॉ. शुभनीत कौशिक : *नदी, राष्ट्र और इतिहास– भारतीय नदियाँ और आधुनिक भारत का निर्माण*

सत्र–2, रीवर्स, एण्ड पीपल इन द हिस्ट्री

- प्रोफेसर सुचंद्र घोष : *सिचुएटिंग द नौ व्यवहार जीवन एण्ड कैवर्तों इन द रूरल सेटलमेंटस ऑफ अर्ली मिडीवल असम*
- श्री राकेश तिवारी : *गंगा घाटी में मानव सभ्यताएं*
- डॉ. महेन्द्र पाठक : *सरयू नदी की धार्मिक एवं सांस्कृतिक पारिस्थितिकी*

सत्र–3, द लिटरेरी इमेजिनेशस, रीवर्स एण्ड कम्युनिटीस

- प्रोफेसर अशीष त्रिपाठी : *गंगा और उसका तटवर्ती समाज : हिन्दी साहित्य में निषाद–बनारस का संदर्भ*
- श्री धीरेन्द्र सिंह : *लोक संस्कृति में जलस्त्रोतों की भूमिका : स्थिति और भविष्य*
- श्री जगन्नाथ दुबे : पूर्व–औपनिवेशिक भारत में नदी, निषाद और परिधीय समुदायों की चेतना

सत्र–4, रीवर्स एण्ड संस्कृत टैक्स्टस

- डॉ. बलराम शुक्ल : *संस्कृत वाङ्मय में गंगापरक वर्णनों के पारिस्थितिकीय निहितार्थ*
- सुश्री श्रुति मीमांसा : *उत्तर भारत के परिप्रेक्ष्य में महाभारत में वर्णित नदियाँ तथा निषाद जाति*
- सुश्री रागिनि कपूर : *द सिमिओटिक्स ऑफ एकॉलजी इन द क्लासिकल इण्डियन टैक्स्टस : द रेप्रीज़ेटेशन ऑफ रीवर्स एण्ड निषादस इन रामायणा एण्ड महाभारता*

सत्र–5, रीवर, कम्युनिटी एण्ड सिनेमा

- डॉ. देबजानी हल्दर : *एन एपिक नैरेटिव : ए गैमुट ऑफ लाइफ एक्सपीरियंस ऑफ मालो इन घातकज तितास नादि नाम (1973)*
- श्री अंकित पाठक : *हिन्दी सिनेमा में नदियों से जुड़े समुदाय : प्रस्तुति और एब्सेंसिया का सवाल*

सत्र–6, वाटर एण्ड द वुमेन

- डॉ. अर्चना सिंह : *इंटरफेस ऑफ रीवर विद फेमिनिटी एण्ड फेस्टिविटी : द एवरीडे लाइफ ऑफ वूमन इन कुंभ*
- सुश्री नेहा राय तथा सुश्री सीमा यादव : *निषाद समुदाय की सामाजिक भौगोलिकी का अध्ययन : आजीविका और संस्कृति के संदर्भ में।*

सत्र–7, नेशन एण्ड रीवर्स

- डॉ. रूचि श्री : *एनालसिस ऑफ नेशनल वाटर पॉलिसिस इन इण्डिया : केस–स्टडी ऑफ निषाद कम्युनिटी एलॉग राप्ति एण्ड रोहिन रीवर्स इन ईस्टर्न यू.पी.*
- श्री पुष्यमित्र : *उत्तर बिहार की नदियाँ और मल्लाहों का जीवन*
- सुश्री गुंजन राजवंशी : *नदी, मेले और प्रदूषण : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन :*

सत्र–8, वायसिस फरॉम द मार्जिनस

- चौधरी लोटन राम निषाद : *उत्तर प्रदेश के निषाद*
- श्री हरिश्चन्द्र बिन्द : *वाराणसी जिले में गंगा के किनारे के निषाद : आधुनिक समय में निषाद समाज की आर्थिक दशा।*
- श्री गोविंद निषाद : *सरयू नदी और उसके किनारे बसे निषाद और उनका जीवन– एक गाँव का संदर्भ।*

सत्र–9, फार फरॉम द टैक्स्ट

- डॉ खुशबू सिंह : *नदियों का लोक एवं लोक की नदियाँ : अवधी और भोजपुरी गीतों में गंगा, यमुना और सरयू नदी।*

- डॉ. ज्योति सिन्हा : *काशी का एक अनूठा जलोत्सव : बुढ़वा मंगल का मेला।*
- सुश्री कमलेश कुमारी भटोइया : *उत्तर भारतीय समाज में नदियों की सांस्कृतिक और धार्मिक भूमिका*

सत्र–10, रिसोर्स एण्ड पॉलिटिक्स

- डॉ. अजय कुमार : *न्यायपूर्ण समाज की रणनीति : प्राकृतिक संसाधन और वैकल्पिक समाजशास्त्र में जलकेन्द्रित समुदाय*
- श्री जितेन्द्र कुमार : *निषाद समुदाय और प्राकृतिक संसाधनों पर हकदारी प्रतिरोधी चेतना के स्वर*

विदाई सत्र

- प्रोफेसर शेखर पाठक : *हिमालयन रीवर्स एण्ड देयर इकॉलजिकल रिलेशनशिप विद नॉर्थ इण्डिया*

8. 'हाउ गाँधी मैटरस : असैस्सिंग द रेलवेंस ऑफ गाँधीयन सॉल्यूशनस फॉर इण्डिया एण्ड द वर्ल्ड इन 21st सेंचरी' एट जीआरएफ, जलगाँव' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (22–25 अगस्त 2019)

संस्थान ने गाँधी रिसर्च फाउंडेशन (जीआरएफ) के सहयोग से 22–25 अगस्त, 2019 को , जलगांव में गाँधी रिसर्च फाउंडेशन (जीआरएफ), जलगांव में 'हाउ गाँधी मैटर्स : असेसिंग द रिलेवेंस ऑफ इंडिया एंड द वर्ल्ड इन द 21 सेंचुरी' विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी के संयोजक प्रोफेसर गीता धर्मपाल, डीन ऑफ रिसर्च, गाँधी रिसर्च फाउंडेशन, जलगांव तथा संस्थान के राष्ट्रीय अध्येता प्रोफेसर महेंद्र प्रसाद सिंह, थे। प्रोफेसर रामचंद्र गुहा, इतिहासकार और लेखक द्वारा 'गाँधी के साथ चार तर्क' विषय परमुख्य भाषण दिया गया। समापन भाषण प्रसिद्ध भारतीय इतिहासकार और लेखक प्रोफेसर सुधीर चंद्र द्वारा दिया गया।

मूलाधार— 'मोहनदास करमचंद गाँधी' (1869–1948), की एक अपरंपरागत राजनीतिक नेता और विचारक के रूप में, व्याख्या करना और उन्हें वर्गीकृत करना आसान नहीं है। फिर भी, सबसे पहले और सबसे महत्त्वपूर्ण बात है कि गाँधी एक लोकतांत्रिक मानवतावादी थे, जिनका प्रभाव एशियाई और अफ्रीकी दुनिया में उपनिवेशवाद विरोधी राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों के संदर्भ में 20वीं शताब्दी के भीतर और युद्ध के बाद की अवधि में बढ़ गया था। अतिराष्ट्रीय क्षेत्रीय एकीकरण और पूंजीवादी वैश्वीकरण के बाद के चरणों (शीत युद्ध और शीत युद्ध के बाद) में राष्ट्रवाद के विभिन्न परिवर्तनों के लिए उनका असाधारण योगदान प्रासंगिक बना हुआ है और हाल ही में वि–वैश्वीकरण के कारण पूरी दुनिया में दक्षिणपंथी राष्ट्रवाद के उदय से और भी प्रासंगिक है।

गाँधी ने भारतीय राजनीतिक मंच पर ऐसे समय में प्रवेश किया जब राजनीतिक समझ और कार्रवाई की प्रचलित वर्णनात्मक और व्याख्यात्मक श्रेणियां उभरकर आई थीं। एक ओर, कांग्रेस के नरमपंथी अप्रासंगिक और अप्रभावी साबित हुए थे; दूसरी ओर, कांग्रेस के उग्रवादियों को हिंसा और राजद्रोह का प्रचार करने के आरोप में शक्तिशाली दमनकारी औपनिवेशिक राज्य तंत्र द्वारा कानून और राजनीति के हाशिये पर ला दिया गया था। गाँधी राजनीतिक विचार और कार्रवाई की एक टिमटिमाती लौ के रूप में प्रकट हुए, अहिंसा, सत्याग्रह, और स्वराज और स्वदेशी के अपने लक्ष्यों की साहसी और अभिनव राजनीतिक रणनीति के साथ प्रतीत होता है कि उन्होंने अंधेरे और निराशाजनक परिदृश्य को हल्का कर दिया। कोई आश्चर्य नहीं कि गाँधी की एक परंपरावादी के रूप में, या वास्तव में एक साथ, एक आधुनिकतावादी के रूप में व्याख्या की गई है (वर्णाश्रम धर्म की रक्षा के मद्देनजर जाति व्यवस्था, या आधुनिकता की उनकी तीखी आलोचना), एक आधुनिकतावादी के रूप में (अर्थात उनका उपनिवेशवाद विरोधी राष्ट्रवाद और 'रचनात्मक राजनीति'), और एक उत्तर–आधुनिकतावादी के रूप में (सांस्कृतिक सापेक्षवाद और प्रासंगिक सत्य में उनके विश्वास को देखते हुए)। उनका 1909 का राजनीतिक घोषणापत्र, हिंद स्वराज या इंडियन होम रूल, एक व्याख्यात्मक व्याख्या के लिए खुला है जो रूढ़िवादी, उदार और कट्टरपंथी है – सभी एक में लुढ़के।

गाँधी अपने अद्वितीय व्यक्तिवाद और समुदायवाद को कैसे जोड़ते हैं, इसका उदाहरण उनकी आत्मकथा, द स्टोरी ऑफ माई एक्सपेरिमेंट्स विद ट्रुथ में मिलता है। विविध ज्ञानमीमांसीय प्रवचनों को आगे बढ़ाते हुए, उन्होंने एक ओर, दोनों साध्यों और साधनों की शुद्धता, दार्शनिक विरोधी–सांख्यिकीवाद और नागरिक समाज और कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तिवाद के विशेषाधिकार के बारे में मानक दार्शनिक अनिवार्यता को रेखांकित किया; दूसरी ओर, उन्होंने प्रासंगिक रूप से मान्य सत्यों की प्रयोगात्मक और व्यावहारिक खोज और असंख्य मुद्दों पर आकस्मिक समझौता करने की आवश्यकता पर बल दिया। अपने रचनात्मक कार्यक्रम के लिए प्रतिबद्ध, जो कि जमीनी स्तर की राजनीति का प्रतिनिधित्व करता था, उन्होंने हरिजनों की मुक्ति, हिंदुओं और मुसलमानों के बीच सांप्रदायिक सद्भाव, चरखा और खादी का व्यापक उपयोग, बुनियादी शिक्षा, प्राकृतिक स्वास्थ्य देखभाल की शुरूआत करने का प्रयास किया। और स्वच्छता, और राष्ट्रभाषा का प्रचार, बस उनकी कुछ प्रमुख पहलों का नाम लेने के लिए।

एरिक एच. एरिकसन (गाँधीज सत्य : द ओरिजिन्स ऑफ मिलिटेंट अहिंसा, 1969) गाँधी के अपने मनो–इतिहास में (इतिहास और राजनीति के लिए एक नव–फ्रायडियन दृष्टिकोण का उदाहरण) मानता है कि एक जन आंदोलन और करिश्माई राजनीतिक नेतृत्व की घटना की भविष्यवाणी की गई है मनुष्य और क्षण का मेल। संक्षेप में, गाँधी के व्यक्तित्व में, इतिहास में सन्निहित जीवनी वीरतापूर्ण ऐतिहासिक महत्व के एक जन आंदोलन का निर्माण करने में सफल होती है जो आज भी हमें चकित करती है।

इसके विपरीत, भारत की संविधान सभा के समक्ष अपने अंतिम प्रमुख भाषण में, इसके अध्यक्ष, बी.आर. अम्बेडकर ने, संविधान के मसौदे का बचाव करते हुए, विधानसभा से अतीत को पीछे छोड़ने और संविधान की भावना का पालन करने का आग्रह किया। इसलिए आगे, अम्बेडकर ने वकालत की कि सविनय अवज्ञा, सत्याग्रह और कानूनों को तोड़ने, जो अराजकता के व्याकरण का प्रतिनिधित्व करते थे, को भुला दिया जाना चाहिए। इस कानूनी विद्वान के प्रति उचित सम्मान दिखाते हुए, और अम्बेडकर की संवैधानिकता को पूरी तरह से स्वीकार करते हुए, फिर भी, हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि गाँधीवादी सविनय अवज्ञा की हमारी राष्ट्रीय वैचारिक विरासत विनोबा भावे, जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में कई लोकप्रिय जन आंदोलनों में खुद को मुखर करती रही है। और सुंदरलाल बहुगुणा, स्वतंत्रता के बाद के भारत के सबसे प्रमुख सत्याग्रहियों का नाम लेने के लिए। तर्कसंगत रूप से, संविधानवाद और सत्याग्रह की इन दोनों धाराओं ने भारत में लोकतंत्र की सफलता और वास्तव में अस्तित्व में योगदान दिया है।

सभी बातों पर विचार करें, गाँधी निश्चित रूप से आज न केवल भारत के लिए, बल्कि पूरे विश्व के लिए मायने रखते हैं। फिर भी उनके समकालीन वैश्विक महत्व को और अधिक स्पष्ट अभिव्यक्ति की आवश्यकता है जैसा कि दुनिया एक अनिश्चित भविष्य का सामना कर रही है, उदाहरण के लिए, वर्ग और क्षेत्रीय असमानताओं में भारी वृद्धि से निपटने के लिए, या लोकतंत्र की चुनौतियों का सामना करने के लिए गाँधीवादी विकल्पों का किस हद तक लाभ उठाया जा सकता है। पूंजीवादी वैश्वीकरण के लिए क्या सांप्रदायिक सद्भाव स्थापित करने में उनके विश्वव्यापी प्रयास धार्मिक कट्टरवाद और आतंकवाद को कम करने की दिशा में समाधान प्रदान करते हैं, जो अति–दक्षिणपंथी दलों और आंदोलनों के वैश्विक उदय से बढ़े हैं? क्या अहिंसा के इस पैगम्बर की विरासत हमें परमाणु प्रलय की दिशा में, या ग्लोबल वार्मिंग को कम करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण सुराग प्रदान करती है? हमारे समय की अस्तित्वगत समस्याओं के उत्तर खोजने के लिए, हमें सत्य और अहिंसा में गाँधी की प्रबल आस्था की अधिक कठोरता से जांच करने के लिए कहा जाता है। हमें धार्मिक बहुलवाद (सर्वधर्मसंभव) के लिए उनके गहरे सम्मान के निहितार्थ और परिणामों को समझने की जरूरत है, साथ ही नैतिक राजनीति के उनके उदाहरण के साथ–साथ लालच के बजाय आवश्यकता पर उनके जोर–आधारित उपभोग और स्वामित्व (अपरिग्रह के रूप में) और ट्रस्टीशिप), प्रकृति के साथ सामंजस्य में सरल जीवन और स्वास्थ्य देखभाल द्वारा परिभाषित। तब हमारा उद्देश्य उस तरीके का मूल्यांकन करना होगा जिसमें निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों में गाँधीवादी उपदेश और अभ्यास, वैश्विक गांव में स्वदेशी राष्ट्रवादियों द्वारा प्रचलित ग्रहों के अस्तित्व के लिए एक

सर्वदेशीय वैश्विक नागरिकता को तत्काल कर सकते हैं।

प्रतिभागी

- डॉ. निशिकांत कोलगे, विकासशील सामाजिक अध्ययन के लिए केंद्र, नई दिल्ली
- डॉ अमिताभ मुखर्जी, सहायक व्याख्याता, विश्व भारती, शांतिनिकेतन
- डॉ. सतीश के. झा, राजनीति विज्ञान विभाग, आर्यभट्ट कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- प्रोफेसर अनंत कुमार गिरि, मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज, चेन्नई
- प्रोफेसर राम चंद्र प्रधान, गाँधीवादी अध्ययन संस्थान, वर्धा, महाराष्ट्र
- डॉ. रामू मणिवन्नन, राजनीति और विभागाध्यक्ष–लोक प्रशासन विभाग, मद्रास विश्वविद्यालय, मद्रास
- श्री तेजराम पाल, डॉक्टरेट शोधार्थी, एच.एन.बी. गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर, उत्तराखंड
- प्रोफेसर सुदर्शन अयंगर, सदस्य, निदेशक मंडल, जीआरएफ, जलगांव
- सुश्री दीपिका, राजनीति विज्ञान विभाग, शिवाजी कॉलेज, नई दिल्ली
- डॉ. सुकन्या सरकार सस्मल, इतिहास विभाग, सरोजिनी नायडू महिला कॉलेज, कोलकाता
- डॉ. सिरशेंदु मजूमदार, अंग्रेजी विभाग, बोलपुर कॉलेज, बर्दवान विश्वविद्यालय
- डॉ. अंजना मंगलगिरी, सीनियर फेलो, सामाजिक विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली
- सुश्री चेतना जागृति, स्वतंत्र अनुसंधान विद्वान, सेक्टर–21, गुरुग्राम, हरियाणा
- डॉ. हिमांशु रॉय, वरिष्ठ अटल बिहारी वाजपेयी अध्येता, एनएमएमएल, नई दिल्ली
- डॉ. सोपान शिंदे, अंग्रेजी विभाग, राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, नागपुर
- डॉ. सरबंती चौधरी, सामाजिक विज्ञान स्कूल, नेताजी सुभाष मुक्त विश्वविद्यालय कलकत्ता
- श्री समीर बनर्जी, गाँधीवादी विद्वान
- डॉ. संजीव कुमार, राजनीति विज्ञान विभाग, जाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- श्री अभिषेक सौरभ, डॉक्टरेट शोधार्थी, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. बीर पाल सिंह यादव, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्व विद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र
- डॉ. श्रुति कपिला, इतिहास संकाय, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय
- डॉ. जॉन चेल्लादुरई, डीन ऑफ एकेडमिक्स, गाँधी रिसर्च फाउंडेशन, जलगांव
- डॉ. जगदीश एन. सिन्हा, सदस्य, अनुसंधान परिषद, राष्ट्रीय विज्ञान इतिहास आयोग, भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली
- श्री प्रिंस कुमार सिंह, डॉक्टरेट उम्मीदवार, गाँधी और शांति अध्ययन, महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

- सुश्री सुरभि उनियाल, रिसर्च स्कॉलर, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रोफेसर सविता सिंह, स्कूल ऑफ जेंडर एंड डेवलपमेंट स्टडीज, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रोफेसर पुरुषोत्तम बिलिमोरिया, विशिष्ट शिक्षण और अनुसंधान अध्येता, स्नातक धर्मशास्त्रीय संघ, बर्कले, कैलिफोर्निया

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों ने निम्नलिखित विषयों पर प्रस्तुतियां दीं–

सत्र–1, गाँधीज हिस्टॉरिकल कन्ट्रीब्यूशन : डिबेट एण्ड कन्ट्रोवर्सीस

- डॉ. निशिकांत कोलगे : *हाउ टू अंडरस्टैण्ड द लाइफ एण्ड फिलॉसफी ऑफ गाँधी : सम सजेशनस*
- डॉ अमिताभ मुखर्जी : *रीविजिटिंग महात्मा एजुकेशनल फिलॉस्फी इन द लाइट ऑफ द प्रेजेंट मिलेनियम*
- डॉ सतीश कुमार झा : *एथिक्स ऑफ रिन्यूनसिएशन एण्ड सत्याग्रह*
- प्रोफेसर अनंत कुमार गिरि : *रीथिंकिंग एण्ड ट्रांसफॉर्मिंग स्वदेश, स्वराज एण्ड सत्याग्रह ऑफ अवर कंटेम्परेरी टाइम्स : कंटीनजेंट हिस्टरीज, लर्निंग विद फेल्यरस एण्ड अल्टरनेटिव फ्यूचर*

सत्र–2, गाँधीज स्वराज एण्ड रेलवेंस टूडे

- प्रोफेसर राम चंद्र प्रधान : *इवॉल्यूशन ऑफ गाँधीज आइडिया ऑफ स्वराज एण्ड इटस प्रेजेंट रेलवेंस*
- डॉ. रामू मणिवन्नन : *गाँधीज हिंद स्वराज एण्ड द इण्डियन रिपब्लिक टूडे*
- श्री तेजराम पाल : *वर्तमान में गांधी के नीति–दर्शन की प्रासंगिकता*

सत्र–3, गाँधीयन ईकनोमिक्स एण्ड इकलॉजिकल सस्टेनेबिलिटी

- सुश्री दीपिका : *रीविजिटिंग गाँधीज आइडियास ऑफ कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सबिलिटी*
- डॉ. सुकन्या सरकार सस्मल : *गाँधीयन पोफेसीस एण्ड परसेप्टस : एन इकलाजिकल रीडिंग*
- डॉ. सिरशेंदु मजूमदार : आइडिया ऑफ स्वदेशी इन गाँधी एण्ड टैगोर

सत्र–4, गाँधीज सर्वधर्म संभव एण्ड हिज डिस्कोर्स ऑन सोशल–पॉलिटिकल जस्टिस : वाइएबल सॉल्यूशनस फॉर इण्डिया एण्ड द वर्ल्ड?

- सुश्री चेतना जागृति : *गाँधीज नोशन ऑफ रिलिजन एण्ड द क्वेश्चन ऑफ ट्रुथ*
- डॉ हिमांशु रॉय : *गाँधीज सेकुलरिजम*
- डॉ. सोपान शिंदे : *द गाँधीयन ह्यूमन राइट्स परस्पैक्टिव एण्ड ग्लोबल पीस*
- डॉ. सरबंती चौधरी : *ए सोसीऑलिजिकल अप्रेज़ल ऑफ गाँधीज लीविंग लैगेसी*

सत्र–5, स्कोप ऑफ सत्याग्रह इन द 21स्टसेंचरी

- डॉ. संजीव कुमार : *एक्स्प्लोरिंग गाँधीज मैथडस ऑफ द डॉयलॉजिकल ट्रूथ फोर्स ऑफ सत्याग्रह*
- श्री अभिषेक सौरभ : *21वीं सदी में भारत और विश्व के लिए गांधीवाद की प्रासंगिकता का आकलन*
- डॉ. बीर पाल सिंह यादव : *21वीं शताब्दी में गांधी सत्याग्रह की प्रासंगिकता*

- डॉ श्रुति कपिला : *गाँधी एण्ड द ट्रुथ ऑफ वायलेंस*

सत्र–6, गाँधी, साइंस एण्ड मॉडरनिटी : एन एम्बीवेलेंट रिलेशनशिप?

- डॉ. जे.एन. सिन्हाः *गाँधी, साइंस एण्ड एन्वायरन्मेंट : हाउ ही मैटरस टूडे*
- श्री प्रिंस कुमार सिंह : *प्रयोगकर्ता गांधी*
- सुश्री सुरभि उनियाल : *डिपेंडेंस ऑन टैक्नॉलजी : द रेलवेंस ऑफ गाँधीज व्यूस अगेन्स्ट टैक्नॉलजी*
- प्रोफेसर सविता सिंह : *कंटेम्पराइजिंग गाँधी : पोस्ट ऐम्प्रीसिस्ट साइंस एण्ड एक्स्प्रेसिविस्ट मॉडरनिटी*

कार्यशाला प्रस्तुति

- प्रोफेसर पुरुषोत्तम बिलिमोरिया : *गाँधी, अफ्रीकन अमरीकनस एण्ड द सिविल राइटस मूवमेंटस : टूवर्ड ग्लोबलाइजिंग नानवायलेंस*

9. 'काला पानी क्रॉसिंगस : इण्डिया इन कन्वर्सेशन' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (23–25 सितंबर, 2019)

संस्थान में 20–22 मई, 2019 को 'काला पानी क्रॉसिंग : इंडिया इन कन्वर्सेशन' विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संस्थान के अध्येता श्री आशुतोष भारद्वाज, और यूनिवर्सिटी पॉल–वैलेरी मोंटपेलियर 3, फ्रांस में एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. जूडिथ मिश्रही–बराक इस संगोष्ठी के संयोजक थे। संस्थान के उपाध्यक्ष प्रोफेसर चमन लाल गुप्त ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। संगोष्ठी के संयोजक श्री आशुतोष भारद्वाज ने परिचयात्मक टिप्पणी दी तथा संस्थान के सचिव कर्नल विजय कुमार तिवारी, ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

मूलाधार– "जब भारत में काला पानी का संदर्भ आता है तो अक्सर पोर्ट ब्लेयर की सेलुलर जेल से जोड़कर देखा जाता है, जहां स्वतंत्रता सेनानियों को भेजा जाता था। जब प्रवासी भारतीयों की बात की जाती है, तो यह 1830 के दशक में भारत से बड़े पैमाने पर प्रवासन को संदर्भित करता है, जब सैकड़ों हजारों भारतीय, स्वेच्छा से और अनिच्छा से, उपमहाद्वीप को छोड़कर उस ओर काला पानी चले गए। ये प्रवासन न केवल ब्रिटिश साम्राज्य में हुआ बल्कि फ्रेंच, डेनिश और डच उपनिवेशों में भी चीनी उपनिवेशों में गिरमिटिया मजदूरों, या बाध्य कुलियों के रूप में काम करने के लिए गए। 1834 में कानूनी रूप से अफ्रीकी दासता को समाप्त करने और 1838 में पूरी तरह से दासता समाप्त होने के बाद ये प्रवासी बागानों में मजदूरी करने लगे। 1.25 मिलियन प्रवासियों को फिजी और मॉरीशस के साथ–साथ ब्रिटिश, फ्रेंच और डच कैरिबियन ले जाया गया। भारतीयों को बाद में 19वीं और 20वीं शताब्दी में दक्षिण और पूर्वी अफ्रीका में रेलवे और अन्य उद्योगों में काम करने के लिए भर्ती किया गया था, जो मुख्य रूप से केन्या, युगांडा और तंजानिया जा रहे थे। 1890 के दशक के अंत में नेटाल में गिरमिटिया मजदूरों के साथ महात्मा गाँधी की भागीदारी के कारण इस प्रवासन का विस्तृत अभिलेख तैयार हुआ।

भले ही काला पानी को अफ्रीकी और अमेरिकी तटों की ओर पार करने, आने वाले क्रोलाइज़ेशन और साहित्य तथा इससे निकलने वाली कलाओं के इतिहास पर कई दशकों तक अच्छी तरह से शोध किया गया हो, लेकिन यह ज्यादातर प्रवासी भारतीयों से ही जाना जाता रहा है। गिरमिटिया मजदूर जिन देशों में गए और बस गए, उनका दृष्टिकोण भारत में ही केंद्रित नहीं रहा है। आम जनता इस बारे में भली–भाँति नहीं समझती और न यह स्कूल या विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम का हिस्सा है। यह भारत में प्रवासी त्योहारों का हिस्सा नहीं भी नहीं है। भारत या दक्षिण एशिया में स्थित कुछ शिक्षाविद इस विषय में शोध करते हैं या भारत के दृष्टिकोण से इसके बारे में लिखते हैं, उनमें से केवल कुछ ने ही प्रवासन का अध्ययन किया है। शायद ही किसी लेखक, फिल्म निर्माता या कलाकार ने काली पानी की जटिलताओं आदि का अन्वेषण किया हो।

अभिप्राय और उद्देश्य

संस्थान में आयोजित इस संगोष्ठी का अर्थ भारतीय परिप्रेक्ष्य से काला पानी के इतिहास और साहित्य पर अधिक प्रकाश डालना था क्योंकि कुछ लोगों कर मानना है कि काला पानी के बारे में फिर से अध्ययन करना भारतीय इतिहासलेखन को विकृत करना होगा।

बौद्धिक रूप से संलग्न होने और प्रवासी भारतीयों में तुलनात्मक दृष्टिकोण से भारत के विद्वानों के बीच एक अकादमिक बहस शुरू करने, बाधाओं और चुनौतियों की जांच करने, इस तरह की उपेक्षा के कारणों की जांच करने और नई शोध दिशाओं को उजागर करने का यह संगोष्ठी एक सही अवसर थी, जिसके निम्न उद्देश्य थे–

- इतिहास के उन पन्नों को न सिर्फ प्रवासी भारतीयों के नजरिए से बल्कि भारत के नजरिए से भी फिर से खोलना क्यों जरूरी है?
- वे कौन सी विशिष्ट परिस्थितियाँ हैं जिनमें भारतीय चले गए?
- व्यक्तिगत इतिहास और पौराणिक कथाओं के इन अध्यायों को औपनिवेशिक संस्करणों से कैसे पुनः प्राप्त किया जा सकता है?
- काला पानी प्रवास से निकला प्रवासी आज भारत के लिए सॉफ्ट पावर के एजेंट के साथ–साथ प्रशांत और कैरिबियन के कई क्षेत्रों में भारत के लिए प्रवेश द्वार है : भारत के लिए इस इतिहास के रूप में पहचान करना कितना महत्त्वपूर्ण है? इस तरह के पुनरावलोकन से क्या प्राप्त किया जा सकता है?
- भारत और उसके प्रवासियों के बीच वर्तमान संबंधों पर इस तरह के पुनःप्राप्ति का क्या प्रभाव हो सकता है? क्या यह मौजूदा संबंधों को बढ़ावा देने या जटिल बनाने की संभावना है?

संगोष्ठी का महत्व

इस संगोष्ठी से प्रवासी भारतीयों में भारत–आधारित विद्वानों और विद्वानों के बीच एक अकादमिक विमर्ष को प्रोत्साहन मिला जो भारत में कभी नहीं हुए। इससे इतिहासलेखन पर फिर से विचार होगा और हिंद महासागर के दोनों किनारों पर इस तरह के महत्त्वपूर्ण इतिहास का निर्माण कैसे किया जाए, इस पर भी विचार–विमर्ष किया गया।

इस संगोष्ठी में काला पानी के बारे में नए संदर्भ में विमर्ष किया गया और साथ एक थिंक टैंक का गठन किया जा सकता है, जिससे हमारे बहु–विषयक दृष्टिकोण में विस्तार हो सकता है। यह संगोष्ठी भारत और प्रवासी भारतीयों के प्रतिष्ठित विद्वानों को एक मंच पर लाने के लिए भी महत्त्वपूर्ण थी।

प्रतिभागी

- प्रोफेसर टी. विजय कुमार, अंग्रेजी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद
- प्रोफेसर कुसुम अग्रवाल, फ्रेंच और फ्रैंकोफोन साहित्य की प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय
- डॉ. अर्नब कुमार सिन्हा, अंग्रेजी विभाग, संस्कृति अध्ययन, बर्दवान विश्वविद्यालय, बर्दवान
- डॉ विनोद वर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, अंग्रेजी, महाराजा अग्रसेन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
- डॉ. नंदिनी धर, ओपी जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी, हरियाणा में साहित्य अध्ययन की एसोसिएट प्रोफेसर
- श्री अभिषेक सौरब, रिसर्च स्कॉलर, हिंदी विभाग, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

- श्री अनिर्बान बनर्जी, एम.फिल स्कॉलर, यूजीसी जूनियर रिसर्च फेलो, अंग्रेजी और संस्कृति अध्ययन विभाग, बर्दवान विश्वविद्यालय, बर्दवान
- सुश्री उदिता बनर्जी, एम.फिल विद्वान, अंग्रेजी और संस्कृति अध्ययन विभाग, बर्दवान विश्वविद्यालय
- प्रोफेसर अर्चना कुमार, अंग्रेजी विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- डॉ. अंबा पांडे, अंतरराष्ट्रीय अध्ययन में प्रोफेसर, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रोफेसर हिमाद्री लाहिड़ी, सेवानिवृत्त प्रोफेसर, अंग्रेजी और संस्कृति अध्ययन, बर्दवान विश्वविद्यालय
- डॉ. इस्सुर राजकुमारी, फ्रेंच अध्ययन विभाग, सामाजिक विज्ञान और मानविकी संकाय, मॉरीशस विश्वविद्यालय
- प्रोफेसर विजया लक्ष्मी राव, फ्रेंच और फ्रैंकोफोन अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- सुश्री सुपर्णा सेनगुप्ता, जूनियर फेलो, नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय, दिल्ली
- डॉ. रितु त्यागी, फ्रेंच और फ्रैंकोफोन अध्ययन विभाग, पांडिचेरी विश्वविद्यालय, पुडुचेरी
- सुश्री कंचन धर, स्वतंत्र शोधकर्ता, पांडिचेरी
- डॉ. जोशील के. अब्राहम, सहायक प्रोफेसर, अंग्रेजी, जी.बी. पंत इंजीनियरिंग कॉलेज, जीजीएस इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. रिधिमा तिवारी, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग, आईआईटी धारवाड़, धारवाड़
- डॉ अर्पित कोठारी, अंग्रेजी विभाग, मणिपाल विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान
- सुश्री दीप्ति लोकेश अरहा, रिसर्च स्कॉलर, अंग्रेजी विभाग, मणिपाल विश्वविद्यालय जयपुर
- डॉ. टी.एल.एस. भास्कर तीगेला, भारत प्रवासन केंद्र के सीएओ, विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली
- सुश्री विपिन चौधरी, हंस, 2/36, दरियागंज, नई दिल्ली
- डॉ. प्रवीण मिर्धा, अंग्रेजी विभाग, शासकीय कन्या महाविद्यालय, अजमेर
- प्रोफेसर विजय मिश्रा, अंग्रेजी और तुलनात्मक साहित्य के प्रोफेसर, मर्डोक विश्वविद्यालय, पर्थ, ऑस्ट्रेलिया

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों ने निम्नलिखित विषयों पर प्रस्तुतियाँ दीं–

सत्र–1, कनैक्टिंग हिस्ट्रीस, लिटरेचरस एण्ड कल्चरस

- डॉ. नंदिनी धर : *कनैक्टिड लिटरेरी एण्ड कल्चरल हिस्ट्रीस ऑफ सुगर एण्ड टी : कन्स्ट्रक्टिंग एन इडैन्च्यूरड पर्सनहुड इन इण्डिया एण्ड डायस्पोरा*
- डॉ. रितु त्यागी : *कनेक्टेड लिटरेचर्स एंड हिस्ट्रीज़ एर काला पानी : पर्सपेक्टिव्स फ़्रॉम इंडिया*

सत्र–2, कनैक्टिंग हिस्ट्रीस, लिटरेचरस एण्ड कल्चरस

- डॉ. टी.एल.एस. भास्कर तीगेला : *रीविजिटिंग इण्डियाज एंगेजमेंट विद द ओवरसीस इण्डियन कम्युनिटी*
- डॉ. अंबा पांडे : *द ग्रिम्ट डायस्पोरा एज ए फैक्टर इन इण्डियाज सॉफ्ट पॉवर स्ट्रेटजी*

सत्र–3, रिमेंम्बरिंग/फॉरगेटिंग/मेमोराइजिंग

- श्री अनिर्बान बनर्जी : *ऑफ जर्नी एंड एम्नेसियास : ए स्टडी ऑफ इंडेंटर्ड सर्विस एण्ड इट्स वेरिड कन्सीक्वेंसिस इन फिजी*

सत्र–4, फरॉम इण्डियन ओसीन एण्ड कैरिबियन एण्ड बैक

- डॉ. जोशील के. अब्राहम : *कास्ट ट्रेवलिंग पार द काला पानी : द केस ऑफ़ द अनबोर्न वी.एस. नायपॉल*
- सुश्री उदिता बनर्जी : *द पॉलिटिक्स ऑफ रिप्रेजेंटेशन एंड द इंटरफेस ऑफ साइकोरैक्स एंड द स्नेक वुमन : ए स्टडी ऑफ ओलिव सीनियर्स अराइवल ऑफ द स्नेक–वुमन*
- फिल्म स्क्रीनिंग : पेट्रीसिया मोहम्मद की *कुली पिंक एंड ग्रीन* (2009)

सत्र–5, रीएग्ज़ामनिंग काला पानी क्रश्वसिंग

- सुश्री सुपर्णा सेनगुप्ता : *द टेरर ऑफ काला पानी : ए कलानिअल मिथ?*
- कंचन धर : *एस्केप्ड और ट्रिक्ड? व्हाई इण्डियन वुमन क्रॉसड*

सत्र–6, अदर काला पानी क्रश्वसिंग, अदर वायसिस

- प्रोफेसर विजया लक्ष्मी राव : *द कल्ट ऑफ द्रौपदी एण्ड इट्स प्रोपोगेशन थ्रू इन्डेच्योर लेबर इन द फ्रेंच आयलैण्डस ऑफ द इण्डियन ओसीन*
- प्रोफेसर टी विजय कुमार : *न्यू वायसिस इन द काला पानी कन्वर्सेशन*

सत्र–7, रीरूटिंग/रीराइटिंग काला पानी क्रॉसिंग

- प्रोफेसर हिमाद्री लाहिड़ी : *पायनियर्स एक्रॉस काला पानी; रीडिंग गिरमिटिया स इन रमाबाई एस्पिनेटज द स्विंगिंग ब्रिज, गायत्रा बहादुरज कुली वुमन और तोताराम सनद्याज इयरस इन द फिजी आयलैण्ड*
- सुश्री कुसुम अग्रवाल : *कुली लाइफ राइटिंगस : लिटरेचर एण्ड एक्टिविजम*

सत्र–8, साउंड एण्ड इमेजिस

- डॉ कुमारी इस्सुर : *ए पैसेज टू मॉरीशस– द एब्ब एण्ड फ्लो ऑफ काला पानी इन हिंदुस्तानी सिनेमा*
- डॉ विनोद वर्मा : *द थम्ब इम्प्रेशन*

फिल्म स्क्रीनिंग : विनोद वर्मा की *काला पानी नोट्स और बीट्स*

वक्ताओं के लिए गोलमेज : ए ट्रांसनेशनल काला पानी नेटवर्क?

सत्र–9, वुमन ऑन द स्टेज (1)

- डॉ. प्रवीण मिर्धा : *एक्ज़िलिक ट्रैजेक्टोरिज़ ऑफ क्रॉसिंग द काला पानी – लोकेटिंग फीमेल सब्जेक्टिविटी इन द राइटिंगस ऑफ रमाबाई एस्पिनेट एण्ड गायत्रा बहादुर*
- डॉ. अर्नब कुमार सिन्हा : *रीराइटिंग द हिस्ट्री ऑफ कुली वुमन : हिस्टॉरिग्राफी रिसर्च एण्ड द रोल ऑफ एजेंसीस इन रमाबाई एस्पिनेटज द स्विंगिंग ब्रिज एण्ड पैगी मोहनज जहांजिन*

सत्र–10, वुमन ऑन द स्टेज (2)

- सुश्री दीप्ति लोकेश अरहा : *ए क्रिटीक ऑन मार्जिनलाइजड फीमेल वायसिस इन अमिताव घोषज सी ऑफ पॉपीज़*

- सुश्री विपिन चौधरी : *पोस्ट कलोनिअल फैमिनिजम : इन रेफरेंस टू इंडो–कैरेबियन डायस्पोरा*

सत्र–11 देयर वर साँगस (1)

- श्री अभिषेक सौरब : *फोक लोर एण्ड फार्मलैण्डस ऑफ बिहार : रीविजिटिंग काला पानी*
- डॉ. रिधिमा तिवारी : *आई विल सर्वाइव ऑन ए सेर ऑफ साग द फुल इयर? अनकवरिंग वुमनज वर्क, बिलांगिंग एण्ड काला पानी इन बिदेसिया साँगस*

सत्र–12, देयर वर साँगस (2)

- प्रोफेसर अर्चना कुमार : *सिंगिंग द पेन ऑफ़ इंडेंट्योर*
- प्रोफेसर विजय मिश्रा : *फोक साँगस ऑफ द ट्रबल्ड ब्लैक वाटरस*

10. एक्स्प्लोरिंग पॉलिसी इश्यूज इन डिजिटल टैक्नॉलजी एरिना' विषय पर सम्मेलन (10–11 **अक्तूबर** 2019)

राष्ट्रीय लोक वित्त और नीति संस्थान, (एनआईपीएफपी) नई दिल्ली ने भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला में 10–11 अक्टूबर 2019 को 'एक्स्प्लोरिंग पॉलिसी इश्यूज इन डिजिटल टैक्नॉलजी एरिना' विषय पर एक सम्मेलन का आयोजन किया।

11. 'गाँधीज ईकनामिक आइडियास : स्वराज, स्वदेशी, सर्वोदय' विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन (15–16 **अक्तूबर** 2019)

15–16 अक्टूबर, 2019 को संस्थान में गाँधीज ईकनामिक आइडियास : स्वराज, स्वदेशी, सर्वोदय' विषय पर एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह सम्मेलन नेहरू मेमोरियल संग्रहालय और पुस्तकालय, नई दिल्ली के सहयोग से आयोजित किया गया। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मकरंद आर. परांजपे ने स्वागत भाषण दिया। उद्घाटन भाषण एनएमएमएल के पूर्व निदेशक श्री शक्ति सिन्हा ने दिया। राष्ट्रीय लोक वित्त एवं नीति संस्थान के प्रोफेसर अजय शाह ने मुख्य भाषण दिया।

मूलाधार– मोहनदास करमचंद गाँधी ने न केवल ब्रिटिश उपनिवेशवाद के खिलाफ भारत के संघर्ष का नेतृत्व किया, बल्कि वे एक ऐसे व्यक्ति भी थे जिन्होंने अपने समय में अपने ही लोगों और पूरी दुनिया के दिमाग में भारत के बारे में सबसे अधिक प्रभाव डाला था। राष्ट्रपिता कहे जाने वाले महात्मा के जीवन और शिक्षाओं में शिक्षा, अर्थशास्त्र और आध्यात्मिकता से लेकर राजनीति तक, सामाजिक जीवन के सभी पहलु सम्मिलित हैं। उनके जन्म के 150 साल बाद भी, ये विचार, नीतियों को प्रभावित करते हैं और आने वाली पीढ़ी के नेताओं और विचारकों में प्रेरणा पैदा करते हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी में परिवर्तनकारी प्रगति और हर दिन उभर रहे सामाजिक विज्ञानों में अभूतपूर्व शोध को देखते हुए, गाँधी के जीवन, कार्य और विचार को एक नए दृष्टिकोण से फिर से देखने और फिर से जांच करने की आवश्यकता है। 'गाँधी के अर्थशास्त्र : स्वराज, स्वदेशी, सर्वोदय' गाँधी की 150 वीं वर्षगांठ समारोह के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रमों की एक शृंखला का एक हिस्सा है।

'गाँधी के अर्थशास्त्र' शब्द का श्रेय जेसी कुमारप्पा को जाता है जिन्होंने गाँधीवादी आर्थिक विचार (1951) नामक एक पतली किताब में इसकी मुख्य धारणाओं और सिद्धांतों को व्यक्त किया। गाँधी का मानना था कि वैध मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति के बजाय अंतहीन इच्छाओं की संतुष्टि को आर्थिक विचार और योजना का आधार होना चाहिए। गाँधी के लिए अर्थशास्त्र में नैतिकता का उतना ही महत्व है जितना कि राजनीति के लिए नैतिकता का। एक नैतिक समाज में, जिसे उन्होंने 'स्वराज' कहा है, तर्कमूलक व्यावहारवादी लापरवाही से उपभोग करने और पर्यावरण को नष्ट करने के बजाय अपने सहयोगी मनुष्यों तथा अन्य जीवों के लिए आत्म–संयम और जिम्मेदारी का प्रयोग करेंगे। गाँधी पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं और मानव श्रम के दोहन और पूंजी को नियंत्रित करने के विशाल यंत्रीकृत साधनों के

खिलाफ थे। जैसे, वे अपने समय के अर्थशास्त्र के दोनों प्रमुख मॉडल, यानी पूंजीवाद और समाजवाद के आलोचक थे।

पूंजीवाद और समाजवाद के बीच एक मध्य मार्ग का संचालन करते हुए, गाँधी स्वदेशी या स्थानीय उत्पादन के साथ–साथ आर्थिक आत्मनिर्भरता के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने परिकल्पना की कि ग्रामीण और जमीनी स्तर की संस्थाएं भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रेरक शक्ति हो सकती हैं। उन्होंने पारंपरिक ग्राम कुटीर उद्योगों के संरक्षण पर बहुत बल दिया। आज गाँधीवादी अर्थशास्त्र के विचार एक मान्यता प्राप्त संस्थान के रूप में उभरे हैं जो गाँधी की आध्यात्मिकता और उनके सामाजिक आर्थिक विचारों के मिश्रण के रूप में देखे जा सकते हैं। जैसा कि आज दुनिया, जलवायु परिवर्तन, असमानता, भ्रष्टाचार आदि अस्तित्व संबंधी दुविधाओं का सामना कर रही है, इन मुद्दों पर गाँधी के विचारों का पता लगाना श्रेष्ठकर है। इसके अलावा, इन विचारों को केवल दोहराने या उनकी प्रशंसा करने के बजाय अन्वेषण और बहस करना महत्त्वपूर्ण है।

इस सम्मेलन के निम्नलिखित उप–विषय थे–

1. गाँधी के ट्रस्टीशिप से जुड़े विचार बनाम परोपकार के समकालीन विचार
2. स्थानीय उत्पादन के माध्यम से आत्मनिर्भरता (आर्थिक विकेंद्रीकरण बनाम पूंजीवाद)
3. स्वदेशी एक आर्थिक अवधारणा के रूप में– बड़े पैमाने पर उत्पादन की तुलना में 'लघुता में सुंदरता'
4. गाँधी की उपभोग के प्रति आलोचना।
5. अर्थशास्त्र और पारिस्थितिकी
6. जीवन स्तर और रोटी मजदूरी
7. सर्वोदय (सभी का कल्याण) और अंत्योदय (अंतिम व्यक्ति का कल्याण) पर गाँधी और दीनदयाल उपाध्याय
8. उपभोक्तावाद के युग में जरूरतों के बजाय जरूरतों के आधार पर अर्थव्यवस्था का गाँधी का विचार
9. गाँधी का धार्मिक अर्थशास्त्र बनाम नेहरू का समाजवाद
10. मशीनें बनाम हाथ; मनुष्य को मशीन में बदलने के बजाय मानव आत्मा को ऊपर उठाने के रूप में अर्थशास्त्र।

प्रतिभागी

- प्रोफेसर एच.एम. देसरड़ा, पूर्व सदस्य, महाराष्ट्र राज्य योजना बोर्ड
- प्रोफेसर रामचंद्र प्रधान, गाँधीवादी अध्ययन संस्थान, वर्धा, महाराष्ट्र
- प्रोफेसर आनंद कुमार, वरिश्ठ फेलो, एनएमएमएल, नई दिल्ली
- प्रोफेसर मनिन्द्र ठाकुर, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रोफेसर मनोहरलाल शर्मा, पूर्व निदेशक एवं और प्रमुख, गाँधीवादी और शांति अध्ययन विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय
- डॉ. हिमांशु रॉय, अटल बिहारी वाजपेयी अध्येता, एनएमएमएल, नई दिल्ली
- डॉ. विनायक देशपांडे, समकुलपति, आरटीएम नागपुर विश्वविद्यालय
- प्रोफेसर राजवीर शर्मा, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर आर.सी. प्रधान, राष्ट्रीय अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला

- प्रोफेसर हितेंद्र पटेल, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर मेधा देशपांडे, राष्ट्रीय अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. सतेंद्र कुमार, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. रमा शंकर सिंह, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ अश्विन पारिजात, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर एम.पी. सिंह, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ मनीषा चौधरी, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. बिंदु साहनी, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला

प्रतिभागियों ने संगोष्ठी के दौरान निम्नलिखित विषयों पर प्रस्तुतियाँ दीं–

वक्ता

प्रोफेसर मनोहरलाल शर्मा : *गाँधीज व्यूस ऑफ स्वदेशी एण्ड देयर रेलवेंस इन प्रेजेंट कंटेक्स्ट*

चर्चा करने वाले विद्वान

प्रोफेसर राजवीर शर्मा

वक्ता

प्रोफेसर आनंद कुमार– *सर्वोदयी स्वराज ऑफ महात्मा गाँधी एण्ड इट्स चैलेंजरस*

चर्चा करने वाले विद्वान

प्रोफेसर आर.सी. प्रधान, राष्ट्रीय अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला

वक्ता

प्रोफेसर रामचंद्र प्रधान : *गाँधीयन थॉट्स ऑन स्वदेशी*

चर्चा करने वाले विद्वान

डॉ अश्विन पारिजात, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला

वक्ता

प्रोफेसर मनिंद्र ठाकुर : *गाँधी एण्ड इंटलेक्चुअल ट्रेडिशन ऑफ अर्थशास्त्रा*

चर्चा करने वाले विद्वान

डॉ. सतेंद्र कुमार तथा डॉ. हितेंद्र पटेल

वक्ता

प्रोफेसर एच एम देसरड़ा : *टूवर्डस एन इकलाजिकल सिविलाइजेशन : ए गाँधीयन परस्पैक्टिव*

चर्चा करने वाले विद्वान

डॉ. बिंदु साहनी और डॉ. मनीषा चौधरी

वक्ता

डॉ. विनायक देशपांडे : *हाउ रेलवेंट आर गाँधीयन थॉट्स : स्वराज, स्वदेशी, सर्वोदय?*

चर्चा करने वाले विद्वान

प्रोफेसर मेधा देशपांडे

वक्ता

प्रोफेसर राजवीर शर्मा : *लुकिंग इनटू ए सस्टेनेबल फ्यूचर*

चर्चा करने वाले विद्वान

प्रोफेसर एम. पी. सिंह

वक्ता

डॉ. हिमांशु रॉय : *गाँधीज आइडिया स्वराज*

चर्चा करने वाले विद्वान

डॉ. रमा शंकर सिंह

12. 'ट्रेडिशनल हिन्दू/इण्डियन वर्च्यू एथिक्स इन टूडेज परस्पैक्टिव : शेयरिंग आइडियास बिटवीन ईस्ट एण्ड वेस्ट' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (17–19 अक्तूबर 2019)

संस्थान में 17–19 अक्टूबर, 2019 को 'ट्रेडिशनल हिन्दू/इण्डियन वर्च्यू एथिक्स इन टूडेज परस्पैक्टिव : शेयरिंग आइडियास बिटवीन ईस्ट एण्ड वेस्ट' विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। न्यू कॉलेज, टोरंटो विश्वविद्यालय के प्रोफेसर सीतांसु चक्रवर्ती, और प्रोफेसर निर्मल्या नारायण चक्रवर्ती, दर्शनशास्त्र विभाग, रवींद्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता इस संगोष्ठी के संयोजक थे। स्वागत भाषण संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मकरंद आर. परांजपे ने दिया। प्रोफेसर सीतांसु चक्रवर्ती, संयोजक ने परिचयात्मक टिप्पणी दी और प्रोफेसर ए. चटर्जी ने मुख्य विषय–वस्तु पर विचार प्रस्तुत किए। संस्थान के सचिव कर्नल (डॉ.) विजय के. तिवारी द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव दिया गया।

मूलाधार– इस संगोष्ठी के आयोजन के दो प्रमुख लक्ष्य थे–

(1) आधुनिक पश्चिमी दर्शन के विश्लेषणात्मक उपकरणों, विशेष रूप से सदाचार नैतिकता का उपयोग करते हुए, व्यापक रूप से वेदांत को परिप्रेक्ष्य में रखते हुए, हिंदू/भारतीय नैतिकता की संरचना के लिए सद्गुण समत्व, सद्भाव, गाँधी द्वारा सम–मस्तिष्क के रूप में अनुवादित, नैतिक संरचना का आधार है, जिसका संवर्धन अन्य आवश्यक नैतिक गुणों जैसे साहस, परोपकार, सहानुभूति या सहानुभूति की ओर ले जाती है। सोच–समझकर किया जा गया सद्भाव, एक चरित्र के भीतर गुण सद्भाव का संचय गायब होने पर सद्भाव का निर्माण करता है, और इसे पहले से ही बनाए रखता है। भारतीय दृष्टिकोण के अनुसार, नैतिक आधार इस प्रकार प्रकृतिवादी है, क्योंकि यह मनुष्य की मनोवैज्ञानिक प्रकृति से संबंधित है जो सद्भाव के इर्द–गिर्द केंद्रित है। यह इस बिंदु पर केन्द्रित है कि हिंदू नैतिकता, आध्यात्मिकता के साथ संबंध रखती है, जहां तक हम मनुष्य सूक्ष्म और व्यष्टि दोनों स्तरों पर स्थिरता के लिए तैयार नैतिक क्रिया–कलापों को अग्रसर करने में सक्षम होने के लिए चरित्र में सद्गुण सद्भाव पैदा करने में स्वयं को शामिल करते हैं। (समत्वम योग उच्चचते (गीता, 2/48); योगः कर्मसु कौशलम (उक्त, 2/50))। यहां आदर्श नेता राजर्षि की नैतिक–आध्यात्मिक अवधारणा उभरती है, जिन्होंने अपने सामाजिक कार्यों का संतोषजनक ढंग से निर्वहन करने के लिए पर्याप्त रूप से सद्गुण सद्भाव को ग्रहण किया है, – एक अवधारणा जो दार्शनिक राजा के करीब आती है, और फिर भी उससे

आगे निकल जाती है। यहां आध्यात्मिकता एक विशिष्ट विश्वास से नहीं बंधी है, लेकिन प्रकृतिवादी होने में औपचारिक रूप से धर्मनिरपेक्ष है, और दूसरे छोर तक मिलती है, जो हिंदू धर्म की समावेशी भावना को दर्शाती है, जो बहुलवाद के साथ जाती है। चीजों को देखने के भारतीय तरीके में पाया जाने वाला नैतिक बल, यूमास, लोवेल के अर्थशास्त्री बलबीर सिहाग को कौटिल्य के अर्थशास्त्र (जिसे वह आधुनिक अर्थशास्त्र के सच्चे संस्थापक के रूप में प्रदर्शित करता है, न कि एडम स्मिथ के रूप में) को 'नैतिक विज्ञान' के रूप में चित्रित करने के लिए प्रेरित करता है। उपरोक्त विचारों को सारांशित करने के लिए, सद्भाव के तीन पहलू हैं– (अ) सद्भाव, जो कि गुण है; (ब) मनुष्यों के बीच सद्भाव – अपने समाज और पूरे सामाजिक संसार में – जो कि पुण्य से संबंधित है, और उसे बढ़ावा देने में मदद करता है; और (स) प्राकृतिक दुनिया के साथ व्यक्ति और हर समाज का सामंजस्य, जिसे मनुष्य भी सद्गुण के आधार पर बढ़ावा देने में प्रसन्न होते हैं। निश्चित रूप से भारतीय नैतिकता अरस्तू से परे है। भारतीय स्थिति की व्याख्या करने वाले पुण्य नैतिकता पर चक्रवर्ती के शोधपत्र के जवाब में रोज़लिंड हर्स्टहाउस की दार्शनिक रूप से प्रासंगिक ईमेल टिप्पणियां यहां उद्धृत करने योग्य हो सकती हैं–

... मैं घर पर पूरी तरह से महसूस करता हूं और विशेष रूप से दिलचस्प पाया ... जिस तरह से सद्भाव का गुण, गुणों की एकता का एक बहुत ही गैर–अरिस्टोटेलियन वर्णन प्रदान करता है। बेशक प्लेटो मानव मानस को सामंजस्य में लाने के रूप में पुण्य की बात करता है, लेकिन यह मानस के (संदिग्ध) त्रिपक्षीय विभाजन के सामंजस्यपूर्ण होने की पतली धारणा से ज्यादा कुछ नहीं है। और अरस्तू के पास इसका एक संकेत है, लेकिन कोई कह सकता है कि वह और भी हल्का है क्योंकि इससे सिर्फ वांछनीय और तर्कसंगत भागों में सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है। लेकिन आप सभी पारंपरिक गुणों को सद्भाव के तहत प्रदर्शित करते हैं, और इस तरह एक महत्त्वपूर्ण, सामग्री–समृद्ध, अवधारणा प्रदान करते हैं जिसका अधिक उपयोगी प्रयोग किया जा सकता है ...।

(2) हिंदू/भारतीय दृष्टिकोण से सदियों पुराने दृष्टिकोण के साथ आज की सदाचार नैतिकता में योगदान करना। माइकल स्लॉट भावुकतावादी विविधता का अनुसरण करते हुए सदाचार नैतिकता का समर्थन करते हैं क्योंकि वह भावना को नैतिकता के निर्माण खंड के रूप में मानते हैं। कहने की आवश्यकता नहीं है कि भीतरी सद्गुण सद्भाव, हिंदू की आध्यात्मिक खोज में स्पष्ट रूप से मौजूद एक सौंदर्यपूर्ण आयाम है। इस प्रकार भावुकता भारतीय सद्गुण नैतिकता का एक हिस्सा और भूखण्ड है जिसका आधार आध्यात्मिकता है। आधुनिक समय में टैगोर ने हिंदू धर्म के इस धर्मनिरपेक्ष नैतिक–आध्यात्मिक आयाम को एक नई ऊंचाई पर पहुंचाया है। (उदाहरण के लिए, द किंग ऑफ द डार्क चौंबर, द साइकिल ऑफ स्प्रिंग।) कोई आश्चर्य नहीं, विट्गेन्स्टाइन कवि के दो नाटकों में से पहले से बेहद प्रभावित थे। आंतरिक स्वतंत्रता की स्थापना में और उसके माध्यम से सहज आनंद, या आनंद का अनावरण, जहां स्वतंत्रता बाहरी, मुख्य रूप से राजनीतिक, बल द्वारा शारीरिक और मानसिक के अधीनता का विरोध नहीं है, वह प्रक्रिया में शामिल धर्मनिरपेक्ष आध्यात्मिकता है। आज के प्रमुख लोकतांत्रिक देशों के राष्ट्रगान, उदाहरण के लिए, अमेरिकी, ब्रिटिश और कनाडा के राष्ट्र–राज्यों के लिए राजनीतिक स्वतंत्रता की प्रशंसा में गाते हैं। टैगोर द्वारा रचित भारत का राष्ट्रगान, राष्ट्रीय स्वतंत्रता का गुण नहीं गाता है, बल्कि एक साथ रहने, सद्भाव में रहने के गुण तथा आंतरिक सद्भाव को आत्मसात करता है, जो राजनीतिक स्वतंत्रता से परे है। स्लॉट इस तथ्य का कोई रहस्य नहीं बनाते हैं कि आधुनिक समय के सदाचार नैतिकता को पारंपरिक चीनी विविधता से बहुत कुछ सीखना है जबकि पूर्व के लिए प्रेरणा ग्रीस के प्राचीन ज्ञान से आई है। भारतीय परंपरा में, जैसा कि ऊपर बताया गया है, और भी बहुत कुछ हो सकता है कि इस संगोष्ठी से मानव जाति के लाभ के लिए स्लॉट के साथ सामजस्य किया जा सकता है, साथ ही साथ उससे सीखा भी सकता है। हम भाग्यशाली हैं कि वे भारत में आयोजित एक संगोष्ठी में भाग लेने के इच्छुक हैं, जैसा कि वे अक्सर चीन में करते हैं।

हर्स्ट हाउस और रोनाल्ड सैंडलर दोनों ही मानव जाति के लिए विकास के चरण में उपयुक्त प्राकृतिक अंत की तलाश में हैं क्योंकि एक अंत 'हमारे लिए उपयुक्त मनुष्य, हमारी तर्कसंगतता के आधार पर हम विकासवादी प्रक्रिया में तर्कसंगत

जीवों के रूप में उभरे हैं (हर्स्ट हाउस, ऑन सदाचार नैतिकता, पृष्ठ 218)। हिंदू दृष्टिकोण से, यह भीतर सद्भाव प्राप्त करने में स्वतंत्रता का आनंद है जो अस्तित्व के अर्थ को इंगित किए बिना सद्भाव के निर्माण और बनाए रखने की ओर ले जाता है जिसे इस तरह के अंत के रूप में लिया जा सकता है। हालाँकि, यह एक तर्कसंगत अंत नहीं है क्योंकि यह एक कड़ाई से लागू तर्कसंगत प्रक्रिया का परिणाम नहीं है। हालाँकि यहाँ बुद्ध योग का उल्लेख करते समय एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में कारण बहुत अधिक शामिल है, जैसा कि गीता बताती हैं, जिसका अनुवाद श्री अरबिंदो ने 'बुद्धिमान इच्छाशक्ति का योग' के रूप में किया था। सद्गुण सहानुभूति का संचालन जो स्लॉट के भावुकतावादी सदाचार नैतिकता की आधारशिला है वह सद्गुण के भीतर सद्भाव स्थापित होने और उसका संचालन करने की एक भावुक प्रक्रिया है, वह एक भावुक गुण होने के भीतर जो सामंजस्य है, वी सही दिशा में न्यायसंगत और नियंत्रित करता है। प्रस्तावित संगोष्ठी में विचार–विमर्श करने का भारतीय परिप्रेक्ष्य में अवसरों के लिए उपयुक्त कार्य करता है, जरूरी नहीं कि वह सक्रिय मार्ग के माध्यम से हो। पश्चिमी अकादमिक पाठ्यक्रम में 'अन्य दर्शन' को स्वीकार करने के लिए पश्चिम में हाल ही में एक आंदोलन के आधार पर विचार–विमर्श विघटन प्रक्रिया का हिस्सा नहीं है, बल्कि एक प्रमुख गैर जीवंत अतीत पर एक नज़र है। पश्चिमी संस्कृति, आधुनिक समय में पश्चिम में सदाचार की शैली की पालना करते हुए, आज जीवन को दिशा प्रदान करती है। हालाँकि, बहुलवादी दृष्टिकोण नैतिकता में सापेक्षवाद को समायोजित करने के लिए तैयार नहीं है। नैतिकता का व्यापक सिद्धांत संस्कृतियों में उनकी सार्वभौमिकता के लिए एक प्राथमिकता है, जबकि उनकी आकस्मिकता पूछताछ और अक्सर उल्लंघन में उनके भेद की व्याख्या करती है। इस प्रकार, वे क्रिपकेन की अवधारणा के उदाहरण हैं।

आज स्कूलों में बढ़ती दादागिरी, निर्दोष लोगों की सभाओं पर बड़े पैमाने पर अकारण गोलीबारी, और एक महामारी ओपिओइड संकट, जो एक व्यापक, गहरा है, जो पूरे समाज में अवसादग्रस्तता की पीड़ा में प्रतीकात्मक है, हमारे लिए उपयुक्त नैतिक–आध्यात्मिक उपायों की मांग करता है जबकि हम पारंपरिक तौर–तरीके अपनाकर विफल हो गए हैं। उम्मीद की गई थी कि यह सम्मेलन एक सैद्धांतिक रूप से ध्वनि सद्गुण नैतिकता के निर्माण के माध्यम से मानवता के लिए खोई हुई जमीन को पुनः प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करेगा जो एक व्यावहारिक नैतिकता की ओर ले जाकर कार्य करेगी। प्रस्तावित संगोष्ठी का उद्देश्य भारत में सभी के लाभ के लिए इस दिशा में आगे बढ़ना है।

मिशेल स्लॉट, मियामी विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र के एक प्रमुख सदाचार नीतिशास्त्री हैं, जिन्होंने भारत में होने वाली एक अकादमिक बैठक में भाग लेने में गहरी रुचि व्यक्त कर एक अन्य प्राचीन संस्कृति, जैसे चीनी, के दृष्टिकोण को समायोजित करने की प्रासंगिकता दिखाई है। इस संगोष्ठी में एक उपयोगी वार्ता की दिशा में हिंदू/भारतीय दृष्टिकोण को समायोजित करने का प्रयास किया गया। प्रशासन का वह क्षेत्र जिसमें राजर्षि की अवधारणा सामजस्य स्थापित करती है उसे शामिल किया गया। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में आर्थिक विचारों को सद्गुण नैतिक दृष्टिकोण से भी शामिल किया गया। नैतिकता पर टैगोर के दार्शनिक अवलोकन पर प्रस्तुति दी गई, जो उनके संग्रह की खोज के शीर्ष पर जीवन में उनकी विभिन्न भागीदारी से जुड़ा है। महाभारत, गीता और वेदों में मौजूद लोगों के साथ स्वामी विवेकानंद और श्री अरबिंदो के विचारों से निपटा जाएगा। आज के कारोबारी जगत में, मैकिन्से के पूर्व निदेशक, डोमिनिक बार्टन के विचारों को, जो व्यापार करने के पूर्वी तरीकों का विशेष उल्लेख करते हुए व्यावसायिक नेतृत्व में चरित्र पर एक स्पष्ट मूल्य रखते हैं, सदाचार नैतिकता के दृष्टिकोण से प्रभावित होंगे। .

यह संगोष्ठी प्राचीन भारत के विचारों को आधुनिक पश्चिमी विचारकों के साथ सदाचार नैतिकता के मंच पर साझा करने का एक प्रयास था, जो ऐतिहासिक रूप से आधुनिक समय में अपने खिलाफ पश्चिम का विद्रोह है। संगोष्ठी पूर्व और पश्चिम में एक दूसरे से सीखने वाला एक उपक्रम है। चूँकि भारत में अभी तक अकादमिक रूप से सदाचार नीति का व्यापक रूप से अनुसरण नहीं किया गया है, इसलिए प्रस्तुतकर्ताओं के चयन में उत्कृष्टता देश के कोने–कोने में संभावित वक्ताओं के वितरण के बजाय निर्णायक कारक रही है।

प्रतिभागी

- प्रोफेसर रूपा बंद्योपाध्याय, दर्शनशास्त्र विभाग, जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता
- प्रोफेसर वी. कुमार मूर्ति, गणित, टोरंटो विश्वविद्यालय
- प्रोफेसर इंद्राणी सान्याल, सेवानिवृत्त प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र, जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता
- प्रोफेसर संजय मुखर्जी, भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम) शिलांग
- प्रोफेसर शेफाली मोइत्रा, सेवानिवृत्त प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र, जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता
- अयोन महाराज, अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, रामकृष्ण मिशन विवेकानंद विश्वविद्यालय, बेलूर
- श्री आनंद रूप चक्रवर्ती, निदेशक, केपीएमजी इंटरनेशनल, लंदन
- प्रोफेसर बलबीर सिहाग, प्रोफेसर एमेरिटस, अर्थशास्त्र, यूमास, लोवेल
- श्री अजय जायसवाल, पीएच.डी. रिसर्च स्कॉलर, सेंटर फॉर फिलॉसफी, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. लिसा विडिसन, व्याख्याता, दर्शनशास्त्र विभाग, हवाई विश्वविद्यालय
- प्रोफेसर शरद देशपांडे, 13, खगोल वैज्ञनिक एचएसजी सोसाइटी, 38/1, पचवती, पाषाण, पुणे
- प्रोफेसर एम.पी. सिंह, राष्ट्रीय अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर आर.सी. प्रधान, राष्ट्रीय अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला

प्रतिभागियों ने संगोष्ठी के दौरान निम्नलिखित विषयों पर प्रस्तुतियाँ दीं–

प्रोफेसर सीतांसु एस चक्रवर्ती : *हिन्दू वर्च्यू एथिक्स फॉर वाइबल इन्वायन्मेंटल एथिक्स– ए मॉडल वैन्च्योर टू डिमान्स्ट्रेट हिन्दू वर्च्यू एथिक्स, इप्लीकेशन टू नॉर्मेटिव एथिक्स*

श्री आनंद चक्रवर्ती : *हिन्दू वर्च्यू एथिक्स एज रिलेटिंग टू द कार्पोरेट वर्ल्ड*

डॉ. अयोन महाराज : *मॉडरन हिन्दू वर्च्यू एथिक्स शेपड बाय थॉटस ऑफ स्वामी विवेकानंद विद वर्ल्डवाइड इम्पीकेशनस*

प्रोफेसर रूपा बंद्योपाध्याय : *ऑन वर्च्यू एथिक्स इन द गीता : पुरुशा, प्रकृति, द गुणास : पैसिविटी एण्ड एक्टिविटी फरॉम डाइवर्स ऐंगल*

श्री अजय जायसवाल : *ड्यूटी, अरेटे एण्ड पतांजलिज योगा : टूवर्डस ए हॉलिस्टिक एथिक्स*

प्रोफेसर बलबीर सिहाग : *ऑन कौटिल्याज ईकनामिक्स विद इट्स रूट्स इन वर्च्यू एथिक्स*

प्रोफेसर संजय मुखर्जी : *ऑन राजर्षि द हिंदू मॉडल ऑफ ए फिलॉस्फर किंग*

प्रोफेसर इंद्राणी सान्याल : *वर्च्यू एथिक्स इन श्री अरबिंदोज लाइट*

प्रोफेसर वी कुमार मूर्ति : *स्प्रिच्युलिटी एण्ड साइंस–म्यूअल डिपेंडेंस*

प्रोफेसर शेफाली मोइत्रा : *वर्च्यू एथिक्स एण्ड टैगोर : हिज कन्ट्रीब्यूशन टू द वर्ल्ड ऑफ आइडियास*

मिस लिसा वाडिसन : *इमोशन कॉन्सेप्ट फॉर वर्च्यू थीअरी : फरॉम एस्थेटिक्स टू एपिस्टेमिक एण्ड मॉरल*

विशेष प्रस्तुति : प्रोफेसर माइकल स्लॉट (स्काइप के माध्यम से)

प्रोफेसर डेनिस विट्मर की प्रस्तुति (स्काइप के माध्यम से)

प्रोफेसर निर्मल्य नारायण चक्रवर्ती : *वर्च्यू एथिक्स रिलेटिंग टू द महाभारता*

समापन सत्र– एक अंतिम स्थायी नोट पर पहुंचने का प्रयास

विदाई सत्र : प्रोफेसर मकरंद आर. परांजपे, निदेशक, भा.उ.अ.सं., शिमला

13. 'रीविजिटिंग गुरू नानक देव, हिज बाणी एण्ड विज़न' विषय पर वार्षिक एकीकरण सम्मेलन

संस्थान में 25–26 नवंबर, 2019 को 'रीविजिटिंग गुरू नानक देव, हिज बाणी एण्ड विज़न' वार्षिक एकीकरण सम्मेलन आयोजित किया गया। प्रोफेसर जगबीर सिंह, पूर्व प्रोफेसर और प्रमुख, दिल्ली विश्वविद्यालय और प्रोफेसर परमजीत सिंह सिद्धू, पूर्व प्रोफेसर और अध्यक्ष , जीएनडीयू, अमृतसर इस सम्मेलन के संयोजक थे। स्वागत भाषण संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मकरंद आर. परांजपे, द्वारा दिया गया। सम्मेलन के संयोजक प्रोफेसर जगबीर सिंह ने मुख्य भाषण दिया। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के चांसलर, प्रोफेसर एच.एस. बेदी ने विशिष्ट अतिथि के तौर पर अपनी बात रखी। समापन भाषण प्रोफेसर गुरपाल सिंह संधू, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ द्वारा दिया गया। संस्थान के सचिव कर्नल (डॉ.) विजय कुमार तिवारी ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।

मूलाधार– गुरु नानक देव सिख धर्म के संस्थापक हैं, जो भारतीय उपमहाद्वीप में निहित भारतीय सभ्यता (अर्थात, सनातन धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म और सिख धर्म) की चार प्रमुख धर्म परंपराओं में से एक के रूप में विकसित हुआ है। इस सभ्यता की सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि यह धर्म केन्द्रित और ज्ञान प्रधान है। यह दुनिया की सबसे प्राचीन और जीवित सभ्यताओं में से भी एक है। धर्म शब्द भारतीय परंपरा में कई अर्थों के साथ एक महत्त्वपूर्ण अवधारणा है। इसका वैचारिक अर्थ धर्म से काफी अलग है। मुख्य रूप से, यह ब्रह्मांड में काम कर रहे ब्रह्मांडीय नैतिक आदेश (रीतम) और जीने के एक सही तरीके को संदर्भित करता है। उपरोक्त सभी चार धर्म परंपराएं 'अनेकता में एकता' के उत्कृष्ट मॉडल का उदाहरण देती हैं। वे वास्तविकता, ब्रह्मांड और मानव अस्तित्व की समग्र एकीकृत दृष्टि प्रस्तुत करते हैं। वे विश्व दृष्टिकोण, जीवन शैली और भारतीय सभ्यता के मूल ज्ञान सरोकारों का निर्माण भी करते हैं। अपने समय के एक प्रख्यात धर्म प्रवर्तक के रूप में, गुरु नानक भारतीय सभ्यता और इसकी धर्म परंपराओं में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

एक नए विश्वास के संस्थापक होने के अलावा, गुरु नानक एक प्रसिद्ध संत–कवि भी हैं, जिन्होंने मध्य युग के दौरान अखिल भारतीय भक्ति आंदोलन द्वारा शुरू किए गए पुनर्जागरण की भावना को आत्मसात किया। भारतीय इतिहास का यह घटनापूर्ण युग विदेशी आक्रमणकारियों के हाथों सदियों की अधीनता और दमन के बाद भारतीय मन की सांस्कृतिक जागृति और आत्म–पुष्टि के एक शक्तिशाली क्षण का प्रतीक है। (इस अवधि के दौरान अरब, तुर्क, मुगल और अफगान कब्जे वाली शक्यिों के हाथों नरसंहार और मूल आबादी के जबरन धर्मांतरण के हमारे पास काफी प्रमाण हैं।) गुरु नानक ने स्वयं सैदपुर (वर्तमान ईमानाबाद) में बाबर के आक्रमण की भयानक घटना देखी।) वे अपनी बाणी में इस आक्रमण के बड़े पैमाने पर विनाश का एक चित्रण प्रस्तुत करते हैं–

खुरासान खसमाना कीआ हिंदुसतानु डराइआ ॥
आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चड़ाइआ ॥
एती मार पई करलाणे तैं की दरदु न आइआ ॥१॥

(खुरासान पर आक्रमण करने के बाद बाबर ने हिन्दुस्तान को भयभीत कर दिया।

निर्माता स्वयं दोष नहीं लेता है, लेकिन मुगल को मौत का दूत बनाकर भेजा है।

इतना कत्लेआम हुआ कि लोग चीख पड़े। या आपको दया नहीं आई? –1)

गुरु नानक अपने समकालीन समय की तुलना पौराणिक कलियुग से करते हैं, नैतिक विघटन का अंधकारमय युग जहां धर्म ने पंख ले लिया था और उड़ गया था–

कलि काती राजे कासाई धरमु पंख करि उडरिआ ॥

कूड़ु अमावस सचु चंद्रमा दीसै नाही कह चड़िआ ॥

हउ भालि विकुंनी होई ॥आधैरै राहु न कोई ॥

(कलियुग का अंधकार युग छुरी है, और राजा कसाई हैं; धर्म ने पंख लिए और उड़ गया। असत्य की इस काली रात में सत्य का चन्द्रमा कहीं दिखाई नहीं देता। मैंने व्यर्थ में खोजा है, और मैं बहुत भ्रमित हूँ।)

इस दृश्य पर संत–कवि और सिख गुरु हमारी सभ्यता और संस्कृति के शाश्वत मूल्यों और मानवीय सरोकारों के रक्षक के रूप में उभरे। उनकी प्रेरणा का प्राथमिक स्रोत भारतीय ज्ञान परंपरा का शास्त्रीय ज्ञान था, जो लोक स्मृति में निष्क्रिय पड़ा था। उन्होंने लोगों की प्रचलित भाषा में आध्यात्मिक ज्ञान के अपने संदेश का प्रचार किया, जिसके परिणामस्वरूप लोकप्रिय चेतना में सार्वभौमिक प्रेम की एकीकृत और मुक्ति शक्ति को फिर से प्रज्वलित किया गया।

गुरु नानक देव का जन्म 1469 में वर्तमान पाकिस्तान में लाहौर शहर के पास स्थित तलवंडी (अब ननकाना साहिब के नाम से जाना जाता है) गांव में एक हिंदू खत्री परिवार में हुआ था। दुनिया भर के सिख कार्तिक (अक्तूबर–नवंबर) के चंद्र महीने में पूर्णिमा के दिन (पूर्णमासी) पर गुरु नानक देव की जयंती के शुभ अवसर का जश्न मनाते हैं। गुरु नानक देव के पिता मेहता कालू पेशे से व्यापारी थे। अपने बेटे को व्यापार में दक्षता प्राप्त करने की इच्छा रखते हुए, उसने अपने बेटे की शिक्षा के लिए विद्वान शिक्षकों की व्यवस्था की। ये शिक्षक संस्कृत, फारसी और अरबी में उपलब्ध पारंपरिक शिक्षा और शास्त्रीय ज्ञान में पारंगत थे। बालक नानक असाधारण रूप से उज्ज्वल थे। उनके चिन्तनशील मन की आध्यात्मिक ज्ञान में गहरी रुचि थी। वह अक्सर अपने ज्ञान की गहराई और उदात्तता से अपने शिक्षकों को आश्चर्यचकित करता था। उनके तर्कसंगत दिमाग ने पारंपरिक धार्मिक प्रथाओं और खाली कर्मकांडों पर सवाल उठाया। यद्यपि उन्होंने इन प्रथाओं और अनुष्ठानों की निंदा नहीं की, उन्होंने उनमें वास्तविक आध्यात्मिक अर्थ का परिचय देने की कोशिश की।

गुरु नानक के जीवन के इस प्रारंभिक काल से संबंधित एक दिलचस्प घटना है, जो उनकी पारंपरिक आत्मकथाओं (जनम सखियों) में वर्णित है। गुरु नानक के पिता, मेहता कालू, अपने बेटे की नई अर्जित शैक्षिक दक्षता का परीक्षण करना चाहते थे। उसने उसे बीस रुपये की राशि के साथ एक बाजार में भेज दिया और उससे सच्चा सौदा (सच्चा सौदा) करने को कहा। उनका मतलब एक लाभदायक व्यापारिक सौदा था। नानक ने अपने आध्यात्मिक मन के साथ, जरूरतमंदों के लिए भोजन पर पूरी राशि खर्च की। उनके लिए यही 'सच्चा सौदा' था। मेहता कालू जाहिर तौर पर सांसारिक दृष्टि से इस 'मूर्खतापूर्ण' व्यवहार से निराश थे। अपने बेटे को ऐसी दुनिया–निरोधक प्रवृत्तियों से दूर करने के लिए और उसे एक जिम्मेदार सांसारिक व्यक्ति बनाने के लिए उसने उसकी शादी के साथ–साथ रोजगार की भी व्यवस्था की।

युवा नानक का विवाह बटाला की सुलखानी से हुआ था और उनके दो पुत्र श्री चंद और लखमी दास थे। अपने देवर की मदद से उन्होंने सुल्तानपुर में सरकारी अन्न भंडार में एक भण्डारी की नौकरी की। कुछ समय के अंतराल के बाद, एक सुबह, वह हमेशा की तरह बैनी नदी में स्नान करने और ध्यान करने के लिए नीचे चले गए। यह गुरु नानक जी के जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना साबित हुई। गुरु नानक ने नदी में प्रवेश किया और अपने साथियों की दृष्टि से अचानक गायब हो गए, जिन्होंने उन्हें हर जगह खोजा। नानक के डूब जाने के डर से साथी मायूस होकर घर

लौट आए। लेकिन एक वास्तविक चमत्कार हुआ। तीन दिनों के बाद नानक नदी के तट पर फिर से प्रकट हुए। वह आध्यात्मिक रूप से रूपांतरित लग रहा था। वे कुछ देर चुप रहे, फिर अचानक उन्होंने एक रहस्यमय वाक्य कहा– 'न कोई हिंदू न मुसलमान'

जनम सखियों ने इस घटना के इर्द–गिर्द एक पौराणिक कथा बुनी है जो प्रतीकात्मक रूप से इसे आत्मज्ञान के क्षण के रूप में उजागर करती है। नानक जी ने अपनी नौकरी छोड़ दी और अपना सब कुछ गरीबों में बांट दिया। नानक चार दिशाओं में अपनी आध्यात्मिक यात्रा पर निकल पड़े। उन्होंने भारतीय उपमहाद्वीप की लंबाई और चौड़ाई में फैले लगभग सभी प्रसिद्ध हिंदू धार्मिक केंद्रों के साथ–साथ दक्षिण एशिया, तिब्बत और अरब में लगभग 30,000 किलोमीटर की दूरी तय की।

अपने जीवन के बाद के वर्षों में, गुरु नानक ने पंजाब में रावी नदी के तट पर करतारपुर (वर्तमान में पाकिस्तान में) की एक बस्ती की स्थापना की और एक गृहस्थ के रूप में बस गए। यहाँ, उन्होंने एक किसान के वस्त्र धारण किए, भूमि पर खेती करके अपना ईमानदार जीवन यापन किया। गुरु को सुनने के लिए दूर–दूर से अनुयायी आते थे। उन्होंने करतारपुर में लंगर की स्थापना की, सभी लोगों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति की परवाह किए बिना बुनियादी समानता की स्थापना की। उनके निधन से कुछ समय पहले, गुरु नानक ने अपने अनुयायी भाई लहना को अगले सिख गुरु के रूप में स्थापित किया।

गुरु नानक ने भक्ति कवियों द्वारा नियोजित शैली में अपनी काव्य रचनाओं की रचना की, जिसे सिख परंपरा में बानी या गुरबाणी के नाम से जाना जाता है। गुरु नानक देव की यह बानी सिख धर्म के पवित्र ग्रंथ में शामिल है, जिसे गुरु ग्रंथ साहिब के नाम से जाना जाता है। जैसा कि हम जानते हैं, गुरु ग्रंथ साहिब काव्य कथनों का एक संकलन है, जो प्रेरित आत्माओं के दार्शनिक ध्यान को दर्शाता है। इस पवित्र संकलन में न केवल गुरु नानक देव और अन्य सिख गुरुओं की बानी शामिल है, बल्कि विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं से संबंधित अन्य मध्यकालीन भारतीय संत–कवि भी हैं। इन संत कवियों में प्रमुख हैं जयदेव, नामदेव, शेख फरीद, कबीर और रविदास। कालानुक्रमिक रूप से ये संत–कवि पांच शताब्दियों (12 वीं से 17 वीं) के विशाल विस्तार से संबंधित हैं और भौगोलिक रूप से वे भारतीय उप–महाद्वीप की क्षेत्रीय और सांस्कृतिक विविधता का प्रतिनिधित्व करते हैं।

गुरु नानक की बाणी, जैसा कि गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल है, में लगभग 974 भजन शामिल हैं, जिनमें जपजी साहिब, आसा दी वार, बरह महा, सिद्ध गोष्ठी और ओंकार (दखनी) जैसी कुछ लंबी रचनाएं शामिल हैं। उनकी बाणी की विशेषता यह है कि इसके भजन विभिन्न शास्त्रीय और लोक साहित्यिक रूपों और लय में रचे गए हैं। ये भजन ज्यादातर गेय और अभिव्यक्ति के उपदेशात्मक तरीकों को नियोजित करते हैं। इन्हें उन्नीस शास्त्रीय भारतीय रागों में इधर–उधर की लोक धुनों के संकेत के साथ व्यवस्थित किया गया है। वास्तव में, कविता और संगीत इसके प्रवचन के अभिन्न अंग हैं। वे संदेश के अर्थ और आयात में गहराई के आयाम का परिचय देते हैं। हालाँकि, गुरु नानक की कविता को सामान्य अर्थों में शुद्ध और सरल कविता के रूप में नहीं लिया जा सकता है। यह मुख्य रूप से ब्रह्म (परम वास्तविकता) की प्रकृति और अनुभव पर ध्यान है–

गावहु गीतु न बिरहड़ा नानक ब्रहम बीचारो ॥८॥३॥

(मैं सिर्फ एक गीत या एक बिरहरा नहीं गाता। हे नानक, मैं ब्रह्म पर चिंतन करता हूं।)

वास्तव में गुरु नानक एक दार्शनिक–कवि हैं। परम वास्तविकता (ब्रह्म) की प्रकृति पर उनका ध्यान मानव अस्तित्व के अंतिम अर्थ की खोज है। लेकिन परम वास्तविकता (परमार्थ चेतना) की यह चेतना मानव जीवन के अस्तित्वगत सामाजिक सरोकारों को फिर से परिभाषित करने के लिए एक उत्कृष्ट सहूलियत और एक मुक्त दृष्टि प्रदान करती है। गुरु नानक समाज के उत्पीड़ित वर्गों की वैचारिक स्थिति लेते हैं–

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥

नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥

जिथै नीच समालीअनि तिथै नदरि तेरी बखसीस ॥४॥३॥

(जो जाति में नीच, नीच से नीच, नानक उन लोगों की संगति चाहते हैं, उसे महान से प्रतिस्पर्धा करने की कोशिश क्यों करनी चाहिए? हे प्रभु, तेरी कृपा बरसती है, क्या दीन लोगों की देखभाल की जाती है।)

गुरु नानक का बाणी या प्रवचन सभी के हृदय में रहने वाले दिव्य प्रकाश की चिंगारी का विचार प्रस्तुत करता है, जैसा कि निम्नलिखित श्लोक में दर्शाया गया है–

जाति बरन कुल सहसा चूका गुरमति सबदि बीचारी॥१॥

(जाति, बरन और कुल के भेद मिट जाते हैं, जब हम गुरु के वचन पर विचार करते हैं।)

गुरु नानक की बाणी प्रबुद्ध जीवन के दर्शन को प्रस्तुत करती है। यह सिर्फ एक आध्यात्मिक अटकलें नहीं है। यह कार्रवाई का एक दर्शन बन गई है जो साझा सांप्रदायिक अनुभव और सामाजिक सरोकारों में उद्देश्यपूर्ण भागीदारी पर जोर देती है।

गुरु नानक ब्रह्म की वैदिक अवधारणा को इसके मूल सिद्धांतों में से एक के रूप में पुनः संदर्भित करते हैं और सत्य और वास्तविकता से संबंधित भारतीय सभ्यता की समग्र बहुलवादी दृष्टि का अनुसरण करते हैं। यह परम वास्तविकता को आसन्न और पारलौकिक दोनों के रूप में मानता है और खाली कर्मकांड की तुलना में नैतिक गुणों और सच्चे आचरण (सच्चियार) पर बहुत जोर देता है। गुरु नानक का काव्य प्रवचन एक क्रांतिकारी मानवीय दृष्टि वास्तविकता और समाज को प्रस्तुत करता है। यह महत्त्वपूर्ण 'ज्ञान पाठ' के रूप में उभरता है जिसमें मानव अस्तित्व की शाश्वत सत्यता पर गहन दार्शनिक ध्यान के साथ–साथ मानव समानता और गरिमा को बनाए रखने वाली एक क्रांतिकारी दृष्टि शामिल है। इस दृष्टि की मौलिकता और अतीत और वर्तमान के साथ इसका संवादात्मक संबंध सिख धर्म की अनूठी पहचान स्थापित करता है।

वर्ष 2019 में गुरु नानक की 550वीं जयंती थी। विभिन्न संस्थाओं ने इस शुभ अवसर को मनाया। भारत सरकार ने भी इस आयोजन को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाने का फैसला लिया था। इस अवसर पर यह ऐतिहासिक घटना उनके जीवनी लेखों, उनकी बाणी और दार्शनिक और सामाजिक दृष्टि को हमारे समकालीन संदर्भ में उनके महत्व को समझने के लिए एक सार्थक है।

अभिप्राय और उद्देश्य

- समकालीन स्थिति में गुरु नानक देव के दर्शन और विचारधारा को समझना और उनका पुनः संदर्भ देना।
- गुरु नानक बाणी के सामाजिक–सांस्कृतिक और आध्यात्मिक प्रतिमानों को समझना।
- गुरु नानक देव की लोक परंपराओं और भौगोलिक वृत्तांतों को सझना।
- भारत की साहित्यिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक परंपराओं पर फिर से विचार करने के लिए गुरु नानक देव के जीवन और शिक्षाओं के बारे में एक आख्यान तैयार करना।
- गुरु नानक बाणी की साहित्यिक और संगीत अभिव्यक्ति की प्रकृति, संरचना और आयामों को समझने के लिए।
- गुरु नानक बाणी के भाषाई उपकरणों और अर्थ संरचनाओं को समझने के लिए।

- भारतीय ज्ञान परंपरा में गुरु नानक देव के योगदान को समझने और सराहना करने के लिए।

गुरु नानक देव सिख पंथ (सिख धर्म) के संस्थापक और सार्वभौमिक धर्म के रक्षक हैं। वे स्वयंभू कवि और दार्शनिक हैं। उन्होंने दूर–दूर तक यात्रा की और भारतीय उपमहाद्वीप और मध्य पूर्व में पूजा और आध्यात्मिक शिक्षा के प्रमुख स्थानों का दौरा किया। एक कवि–दार्शनिक के रूप में, वे मध्यकालीन भारतीय पुनर्जागरण के प्रमुख व्यक्तित्वों में से एक हैं। भारतीय इतिहास के इस युग को भारतीय सभ्यता की भावना और इसकी ज्ञान परंपरा के पुनः जागरण के क्षण के रूप में जाना जाता है। गुरु नानक देव की बाणी को भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रतीक माना जा सकता है। संगोष्ठी की कार्यवाही से करिश्माई व्यक्तित्व गुरु नानक देव जी, उनके विश्व दृष्टिकोण और मानवीय दृष्टि के बारे में एक नई अंतर्दृष्टि उत्पन्न हुई। गुरु की दार्शनिक दृष्टि की समकालीन प्रासंगिकता और इसके क्रांतिकारी सामाजिक–सांस्कृतिक महत्व पर अधिक बल दिया गया। यह संगोष्ठी गुरु नानक देव की जीवनी और आध्यात्मिक ग्रंथों पर व्याख्यान भारतीय समाज के समकालीन वर्णक्रम के संदर्भ में गुरु नानक देव के बारे में एक नया आख्यान बनाने में सहायक सिद्ध हुई। यह संगोष्ठी अखिल भारतीय और अखिल एशियाई दृष्टिकोण से गुरु के जीवन और उनके सार्वभौमिक मानवीय संदेश को समझने में भी सहायक सिद्ध हुई।

सुझाए गए विषय

1. गुरु नानक : सामाजिक–धार्मिक जीवनी
2. गुरु नानक : एक आध्यात्मिक तमाशा
3. गुरु नानक : अखिल भारतीय और अखिल एशियाई आध्यात्मिक प्रवचन
4. गुरु नानक बाणी के काव्य
5. गुरु नानक बाणी की राग प्रणाली
6. गुरु नानक बाणी का सामाजिक–सांस्कृतिक महत्व
7. गुरु नानक वाणी का रहस्यवादी–नैतिक पहलू
8. गुरु नानक : सामाजिक–धार्मिक परिवर्तन के संस्थापक
9. गुरु नानक देव की मानवीय विचारधारा
10. गुरु नानक बाणी में वैचारिक संरचनाओं के शब्दार्थ

प्रतिभागी

- प्रोफेसर कुलदीप चंद अग्निहोत्री, कुलपति, हि.प्र. केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला।
- प्रोफेसर जसबीर सिंह सबर, पूर्व अध्यक्ष, गुरु नानक अध्ययन विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर
- डॉ मनमोहन सिंह, आईपीएस, आईबी, चंडीगढ़
- डॉ. हरपाल सिंह, पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष, सिख नेशनल कॉलेज, बंगा, पंजाब
- डॉ. रविंदर सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर दयाल सिंह कॉलेज, नई दिल्ली
- श्री अमरजीत सिंह ग्रेवाल, लुधियाना

- साध्वी योगंजली चौतन्य पुरी, गुरबानी व्याख्याशास्त्र की पारंपरिक विदुशी
- डॉ. मनजिंदर सिंह, सहायक प्रोफेसर, पंजाबी अध्ययन संस्थान, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर
- डॉ. रमनप्रीत कौर, पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बठिंडा
- प्रोफेसर अनंत कुमार गिरि, मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज
- प्रोफेसर करमजीत सिंह, रजिस्ट्रार, पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़
- प्रो. सुधीर कुमार, प्राध्यापक– अंग्रेजी, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़
- डॉ. निवेदिता उप्पल, प्रोफेसर, संगीत विभाग, पूर्व डीन और प्रमुख, पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला
- प्रोफेसर गुरपाल सिंह संधू, डीईएस–एमडीआरसी, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़

सम्मेलन के दौरान प्रतिभागियों ने निम्नलिखित विषयों पर प्रस्तुतियां दीं–

सत्र–1, गुरु नानक : सोसीओ–रिलिजस कन्सर्न्स

- प्रोफेसर जसबीर सिंह सबर : *सोसीओ–रिलिजस रेलवेंस ऑफ गुरु नानकज फिलॉस्फी : मॉडरन कंटैक्स्ट*
- साध्वी योगंजली चौतन्य : *श्री गुरु नानकदेव जी द्वारा सामाजिक और धार्मिक स्तर पर एक क्रान्तिकारी परिवर्तन का प्रवर्तन*

सत्र–2, गुरु नानक : पैन–इण्डियन डिस्कोर्स

प्रोफेसर करमजीत सिंह

डॉ निवेदिता उप्पल : *म्यूजिकल स्ट्रक्चर ऑफ गुरु नानक बाणी : सोसीओ–कल्चरल कंटैक्स्ट।*

प्रोफेसर अनंत गिरी : *टूवर्डस ए न्यू गार्डन ऑफ सबद और वाणी : गुरु नानकज चैलेंजिंग बॉर्डर क्रॉसिंग, सत्याग्रह एण्ड न्यू इकॉलजी एण्ड हरमेन्यूटिक्स ऑफ फ़ेथ एण्ड होप।*

सत्र–3, सोसीओ–कल्चरल सिग्निफिकेंस ऑफ गुरु नानक बाणी

डॉ. मनमोहन सिंह

सत्र–4, एथिकल एण्ड हिस्टॉरिकल एस्पैक्टस ऑफ गुरु नानक बाणी

श्री अमरजीत सिंह ग्रेवाल

सत्र–5, गुरु नानक बाणी : कंटेम्परेरी कन्सर्न्स

- डॉ. हरपाल सिंह : *द इसेंसियल मैसेज ऑफ गुरु नानक*
- डॉ. मनजिंदर सिंह : *गुरु नानक बानी : यूनिवर्सल सेन्सिविटी गुरु नानक*

सत्र–6, ह्यूमैनिटेरियन आइडीऑलजी ऑफ गुरु नानक

डॉ. रविंदर सिंह : *गुरु नानक बाणी : कंटेम्परेरी चैलेंजिस एण्ड रेलवेंस*

डॉ. रमनप्रीत कौर : *द कन्सेप्चूअल स्ट्रक्चर ऑफ 'गुरु' इन गुरु नानक*

14. 'ऑटॉनमस कॉलेजिस इन इण्डिया : द रोड़ अहैड' विषय पर कार्यशाला (7–8 जनवरी 2020)

07–08 जनवरी 2020 को संस्थान द्वारा बी.के. बिरला कॉलेज, कल्याण, मुंबई के सहयोग से मुंबई में 'ऑटॉनमस कॉलेजिस इन इण्डिया : द रोड़ अहैड' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। डॉ. नरेश चंद्रा, निदेशक, बी.के. बिड़ला कॉलेज, कल्याण, और डॉ. अविनाश पाटिल, प्राचार्य, बी.के. बिड़ला महाविद्यालय कल्याण इस कार्यशाला के संयोजक थे। बी.के. बिरला महाविद्यालय के अध्यक्ष, प्रोफेसर ओ.आर. चितलांगे ने स्वागत भाषण दिया। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मकरंद आर. परांजपे ने परिचयात्मक टिप्पणी दी। कार्यशाला के संयोजक डॉ. नरेश चंद्र ने विषयवस्तु और अतिथियों का परिचय दिया। विशेष संबोधन प्रोफेसर सुहास पेडनेकर, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई के माननीय कुलपति द्वारा प्रस्तुत किया गया। अध्यक्षा, आदित्य बिड़ला सेंटर फॉर कम्युनिटी इनिशिएटिव्स एंड रूरल डेवलपमेंट पद्म भूषण श्रीमती राजश्री जी बिड़ला ने अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत किया। उद्घाटन भाषण श्री भगत सिंह कोश्यारी जी, माननीय राज्यपाल, महाराष्ट्र तथा महाराष्ट्र राज्य में विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति द्वारा प्रस्तुत किया गया था। मुख्य भाषण प्रोफेसर भूषण पटवर्धन, माननीय उपाध्यक्ष, यूजीसी, नई दिल्ली द्वारा दिया गया था। बी.के. बिड़ला महाविद्यालय के प्राचार्य तथा कार्यशाला के सह संयोजक डॉ. अविनाश पाटिल धन्यवाद ज्ञापित किया।

मूलाधार– स्वायत्त महाविद्यालय और राष्ट्रीय शिक्षा नीति

यह सच है कि उच्च शिक्षा संस्थानों के शैक्षणिक, प्रशासनिक और शासन के ढ़ांचे में बड़े सुधारों की आवश्यकता है। जब देश के भविष्य की बात आती है तो शिक्षा को निवेश का सबसे अच्छा स्रोत माना जाता है। यदि हम भारत में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना चाहते हैं, तो निकट भविष्य में स्वायत्त महाविद्यालयों की भूमिका महत्त्वपूर्ण होगी।

यूजीसी द्वारा जारी दिनांक 28.06.2019 को अद्यतन सूची के अनुसार देश में 708 महाविद्यालय स्वायत्त हैं, जिनमें विभिन्न धाराओं के तहत बड़ी संख्या में छात्र पढ़ाई करते हैं।

स्वायत्त महाविद्यालयों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) स्पष्ट रूप से कहती है कि स्नातक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने का एकमात्र सुरक्षित और बेहतर तरीका है कि अधिकांश महाविद्यालयों को संबद्धता संरचना से अलग कर दिया जाए। अकादमिक और परिचालन स्वतंत्रता वाले महाविद्यालय बेहतर कर रहे हैं और उनकी विश्वसनीयता अधिक है। ऐसे महाविद्यालयों को वित्तीय सहायता स्वायत्त उच्च शिक्षण संस्थानों को मजबूत करेगी।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत स्वायत्त महाविद्यालयों की कुछ मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं–

- स्वायत्त महाविद्यालयों को अपने पाठ्यक्रम का आधुनिकीकरण करने या रोजगार को बढ़ावा देने के लिए उन्हें विश्व स्तर पर सक्षम, स्थानीय रूप से प्रासंगिक और कौशल उन्मुख बनाने की स्वतंत्रता होगी।
- एक स्वायत्त महाविद्यालय एक नई डिग्री या स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम/पीएचडी शुरू करने के लिए स्वतंत्र है। महाविद्यालय की अकादमिक परिषद और संबंधित वैधानिक परिषद के अनुमोदन के साथ, जहां भी आवश्यक हो, बशर्ते डिग्री का नामकरण यूजीसी अधिसूचना (स्वायत्त महाविद्यालयों के अंतिम संशोधित दिशा–निर्देश दिनांक 19.01.2018) के अनुरूप हो, डिग्री की विशिष्टता पर, (2014) समय–समय पर संशोधित।
- यूजीसी मानदंडों के अनुसार महाविद्यालय अकादमिक परिषद के अनुमोदन के साथ समय–समय पर संशोधित डिग्री की विशिष्टता पर यूजीसी अधिसूचना, (2014) के अनुसार एक स्वायत्त महाविद्यालय मौजूदा पाठ्यक्रम का नाम बदल सकता है। विश्वविद्यालय को इस तरह की कार्यवाही के बारे में विधिवत सूचित किया जाना चाहिए।
- कई नवीन सुधार पेश किए जा सकते हैं। नवनियुक्त शिक्षकों को महाविद्यालय की कार्य संस्कृति के बारे में जागरूक करने के लिए एक प्रेरण प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जा सकता है। संकाय सदस्यों को यूजीसी प्रायोजित उन्मुखीकरण कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्त किया जा सकता है जो समाज के मुद्दों पर

विशेष रूप से उच्च शिक्षा और इसकी भूमिका के बारे में जागरूकता पैदा करेगा। उन्हें अपने विशेषज्ञता के क्षेत्र से संबंधित विभिन्न संगोष्ठियों और कार्यशालाओं में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जा सकता है, ताकि वे क्षेत्र के अन्य शोधकर्ताओं के साथ विमर्ष कर सकें और प्रख्यात शिक्षाविदों और वैज्ञानिकों से प्रेरित हो सकें।

- भविष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त लचीलेपन के साथ भविष्य के विकास को सक्षम करने वाले छात्रों की अधिक रोजगार क्षमता के लिए पाठ्यक्रम को संशोधित किया जा सकता है।
- आकलन पैटर्न 60:40 हो सकता है। आंतरिक मूल्यांकन पीपीटी, ट्यूटोरियल, असाइनमेंट, प्रोजेक्ट, मॉडल मेकिंग, फील्ड वर्क, बुक रिव्यू, वैज्ञानिक पेपर पढ़ने आदि पर आधारित होगा।
- यूजीसी/रूसा/अन्य फंडिंग एजेंसी से अनुदान प्राप्त करने के बाद महाविद्यालय को वित्तीय मोर्चे पर कोई कठिनाई नहीं होगी।
- कौशल विकास केंद्र को उद्योगों और पेशेवरों के साथ मजबूत गठजोड़ बनाने के लिए लगातार उच्च मानकों की कौशल पहल के प्रमुख और गतिशील केंद्र के रूप में संचालित किया जा सकता है, जिससे नौकरी प्रशिक्षण और रोजगार पर उन्नत ज्ञान प्राप्त करने के लिए छात्रों के लिए अवसर पैदा करना। इसका उद्देश्य छात्र के समग्र व्यक्तित्व में सुधार करना और अन्य व्यक्तित्व लक्षणों जैसे स्मार्टनेस, संचार कौशल और सामान्य जागरूकता आदि को विकसित करना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) ने 2035 तक जीईआर को कम से कम 50 प्रतिशत तक बढ़ाकर देश भर में विश्व स्तरीय बहु–विषयक उच्च शिक्षा संस्थानों को बनाने के लिए उच्च शिक्षा प्रणाली में सुधार करते हुए गुणवत्ता वाले विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों पर नीति प्रदान की है। उच्च शिक्षा को अच्छा, अच्छी तरह से विकसित करना चाहिए ताकि बौद्धिक जिज्ञासा, सेवा की भावना और एक मजबूत नैतिक कम्पास के साथ गोल और रचनात्मक व्यक्ति का निर्माण हो।

योग्यता मानदंड के आधार पर संकाय सदस्यों (सहायक प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर और प्रोफेसर) के तीन चरणों के अलावा, एक निश्चित अवधि पर 3–5 साल की अवधि के लिए शिक्षण सहायक/शिक्षक/प्रदर्शनकारी (व्यावहारिक विषयों में) का पद हो सकता है। वेतन। इस अवधि के दौरान, उन्हें अपने शिक्षण/व्यावहारिक कार्यों के अलावा सहायक प्रोफेसर बनने की पात्रता प्राप्त करनी होगी। सभी स्तरों पर संकाय सदस्यों को सार्वजनिक या निजी संस्थानों के बावजूद सभी संस्थानों में समान रूप से वेतन का भुगतान किया जाना चाहिए।

राज्यों के उच्च शिक्षा विभागों के परामर्श से संघ लोक सेवा आयोग की तर्ज पर एक आयोग द्वारा शिक्षकों की नियुक्ति की जानी चाहिए। प्रवेश स्तर पर एक बार शिक्षकों का चयन हो जाने के बाद, उन्हें न्यूनतम छह महीने का गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम (मुख्य विषय, शिक्षक शिक्षा, आईटी कौशल, राष्ट्र निर्माण के प्रति प्रतिबद्धता, आदि) प्रदान किया जाना चाहिए। चरण–1 से चरण–4 तक आगे की पदोन्नति को पारदर्शी प्रतिक्रिया तंत्र के साथ जोड़ा जाना चाहिए।

अभिप्राय और उद्देश्य

स्वायत्तता के व्यापक दायरे और परिप्रेक्ष्य को समझने के लिए, देश में चयनित स्वायत्त महाविद्यालयों के निदेशकों/प्राचार्यों को अपने संस्थानों में अपनाई जाने वाली सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने के लिए आमंत्रित किया गया।

चर्चा के प्रमुख क्षेत्र –

- मौजूदा पाठ्यक्रमों/कार्यक्रमों की समीक्षा करना और उभरते क्षेत्रों में अध्ययन और पाठ्यक्रम के अपने पाठ्यक्रम/कार्यक्रमों का पुनर्गठन, पुनः डिजाइन और निर्धारण करना।
- डिग्री की विशिष्टता (2014) और समय–समय पर संशोधित के अनुसार यूजीसी द्वारा निर्दिष्ट नामकरण के भीतर

नए पाठ्यक्रम/कार्यक्रम तैयार करना।

- छात्रों के प्रदर्शन, परीक्षाओं के संचालन और परिणामों की अधिसूचना के मूल्यांकन के तरीके विकसित करना, परिणाम घोषित करना, अंक पत्र जारी करना, प्रवास और अन्य प्रमाण पत्र जारी करना; हालाँकि, विश्वविद्यालय द्वारा डिग्री प्रमाण पत्र पर महाविद्यालय के नाम के साथ डिग्री प्रदान की जाएगी।

कार्यशाला का महत्व – कैसे नया ज्ञान पैदा होगा या अनुशासन में योगदान देगा?

यह कार्यशाला उच्च शिक्षण संस्थानों को महिमा और उत्कृष्टता की नई ऊंचाइयों को प्राप्त करने के लिए बढ़ने में मदद और दिशा प्रदान कर सकती है/प्रेरित और मार्गदर्शन कर सकती है। कार्यशाला का आयोजन सचिव (शिक्षा मंत्रालय)/अध्यक्ष/उपाध्यक्ष विश्व विद्यालय अनुदान आयोग, रूसा, महाराष्ट्र के अधिकारियों और प्रख्यात विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में किया गया।

कई अकादमिक प्रशासकों ने व्यक्त किया कि 'स्वायत्त महाविद्यालयों के भविष्य' पर विस्तृत चर्चा होनी चाहिए, जिसमें एचईआई, स्वायत्त कॉलेजों, रूसा अनुदान प्राप्त करने वाले महाविद्यालयों, एनईपी, आदि से संबंधित मुद्दों पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

यह महसूस किया गया था कि विभिन्न आमंत्रित विशेषज्ञों और प्रमुख हितधारकों की उपस्थिति में उच्च शिक्षा से संबंधित पूर्वोक्त मुद्दों पर विचार–विमर्ष योजनाबद्ध समयरेखा में एक दस्तावेज को सबसे कुशल और प्रभावी तरीके से विकसित करने के अपने उद्देश्य की पूर्ति करेगा। कार्यशाला की कार्यवाही विचारार्थ सक्षम प्राधिकारियों को प्रस्तुत की गई। यह माना गया कि इस कार्यशाला के आयोजन से उच्च शिक्षण संस्थानों की बेहतरी के लिए नीति बनाने वाली संस्था द्वारा इस पर अनुकूल रूप से चर्चा की जा सकती है।"

प्रतिभागी

- प्रोफेसर वसुधा कामत, पूर्व कुलपति, एसएनडीटी महिला विश्वविद्यालय, मुंबई
- डॉ. आर. जी. परदेशी, प्राचार्य, फर्ग्यूसन कॉलेज, पुणे
- प्रोफेसर जॉन वर्गीज, प्राचार्य, सेंट स्टीफंस कॉलेज, दिल्ली
- डॉ. सुरेशा के.वी., प्राचार्य, जेएसएस महिला कॉलेज, मैसूर
- डॉ. उदय सालुंखे, समूह निदेशक, वीस्कूल, मुंबई
- डॉ स्नेहलता देशमुख, पूर्व कुलपति, मुंबई विश्वविद्यालय
- डॉ. विजय खोले, पूर्व कुलपति, यूओएम
- डॉ. एस टी गदाडे, सचिव, जेबीएसटी संस्था, पनवेली
- डॉ. गीता उन्नीकृष्णन, बी.के. बिरला कॉलेज, कल्याण
- डॉ. पी. बेबी शकीला, प्राचार्य, श्रीकृष्ण कॉलेज, कोयंबटूर
- रेव फादर जी.एम. विक्टर इमैनुएल, प्रिंसिपल, आंध्र लोयोला कॉलेज, आंध्र प्रदेश
- डॉ. पांडियाराजा डी, प्राचार्य, त्यागराज कॉलेज, मदुरै
- डॉ. राजेंद्र शिंदे, प्राचार्य, सेंट जेवियर्स कॉलेज, मुंबई

- डॉ. धनराज माने, निदेशक (एचई), पुणे (एमएस)
- डॉ. एग्नेलो मेनेजेस, पूर्व प्राचार्य, सेंट जेवियर्स कॉलेज, मुंबई
- डॉ मीता भोट, बी.के. बिरला कॉलेज, कल्याण
- रेव डॉ. रॉय अब्राहम पी, प्रिंसिपल, मैरियन कॉलेज, इडुक्की, केरल
- डॉ. के.एम. नसीर, प्राचार्य, फारूक कॉलेज, केरल
- डॉ. अविनाश पाटिल, प्राचार्य, बी.के. बिड़ला कॉलेज, कल्याण
- डॉ. अल्फोंसा मैथ्यू, आईक्यूएसी समन्वयक, सेंट थॉमस कॉलेज, त्रिशूर
- डॉ. राजन वेलुकर, पूर्व कुलपति, यूओएम,
- डॉ. विजय जोशी, मुख्य सलाहकार, रूसा, महाराष्ट्र
- डॉ. माधवी ठाकुरदेसाई, बी.के. बिड़ला कॉलेज, कल्याण
- डॉ. विजय जोशी, मुख्य सलाहकार, रूसा, महाराष्ट्र
- डॉ स्वप्ना समेल, बीके बिड़ला कॉलेज, कल्याण
- डॉ. जी. गिडवानी, प्राचार्य, सेंट मीरा कॉलेज, पुणे
- डॉ. सीनियर एलिजाबेथ सी.एस., प्रिंसिपल, ज्योति निवास कॉलेज, बैंगलोर
- डॉ. अतिमा शर्मा द्विवेदी, प्राचार्य, कन्या महाविद्यालय, जालंधर
- डॉ. अनुश्री लोकुर, प्राचार्य, रुइया कॉलेज, मुंबई
- प्रोफेसर वी.एन. राजशेखरन पिल्लई, माननीय कुलपति, सोमैया विद्याविहार विश्वविद्यालय
- डॉ. अन्सी जोस, प्राचार्य, खंडवाला कॉलेज, मुंबई
- डॉ. एम.के. धालीवाल, बी.के. बिड़ला कॉलेज, कल्याण
- डॉ स्नेहलता नाडियार, प्राचार्य एनएमकेआरवी कॉलेज, बेंगलुरू
- प्रोफेसर के.बी. शर्मा, प्राचार्य, एस.एस जैन सुबोध पीजी कॉलेज, जयपुर
- डॉ. एन.एन. सावंत, प्राचार्य पार्वतीबाई चौगुले कॉलेज, गोवा
- डॉ. अन्सी जोस, प्राचार्य, खंडवाला कॉलेज, मुंबई
- डॉ. वी. एन. मगरे, सम उपकुलपति, एसएनडीटी महिला विश्वविद्यालय
- डॉ. राजपाल हांडे, प्राचार्य, मीठीबाई कॉलेज, मुंबई
- डॉ स्वप्ना समेल, बीके बिड़ला कॉलेज, कल्याण
- डॉ. पी. हेमलता रेड्डी, प्राचार्य, श्री वेंकटेश्वर कॉलेज, दिल्ली
- डॉ. सांद्रा जोसेफ, उप–प्राचार्य, स्टेला मैरिस कॉलेज, चेन्नई
- डॉ. आई. अन्नपूर्णा, समन्वयक, आईक्यूएसी, चौ. एस. डी. सेंट थेरेसा कॉलेज, ए. पी.

- डॉ. राजपाल हांडे, प्राचार्य, मीठीबाई कॉलेज, मुंबई
- डॉ. शशिकला वंजारी, कुलपति, एसएनडीटी महिला विश्वविद्यालय
- डॉ. संजय जगताप, संयुक्त. निदेशक, कोंकण क्षेत्र, पनवेली
- डॉ. सुवर्णा जाधव, बी.के. बिड़ला कॉलेज, कल्याण
- डॉ. फादर लैंसलॉट डीश्क्रूज, प्रिंसिपल, सेंट जेवियर्स कॉलेज, अहमदाबाद
- डॉ. सीनियर बीना टीएल, वाइस प्रिंसिपल, विमला कॉलेज, त्रिशूर
- डॉ. अशोक वाडिया, प्राचार्य, जय हिंद कॉलेज, मुंबई
- डॉ. रवींद्र कुलकर्णी, प्रो वाइस चांसलर, यूओएम
- डॉ. बी.बी. शर्मा, प्राचार्य, वी.जी. वेज़ कॉलेज, मुंबई
- डॉ. अनुराधा हस्तक, बी.के. बिड़ला कॉलेज, कल्याण
- डॉ. आनंद अमृत महल, प्राचार्य, सोफिया कॉलेज, मुंबई
- डॉ. संजय जगताप, संयुक्त निदेशक, कोंकण क्षेत्र, पनवेली
- श्री. बी एस पोनमुदिराज, उप सलाहकार, नैक, बैंगलोर
- श्री. सौरभ विजय, आईएएस, प्रमुख सचिव, उच्च और तकनीकी शिक्षा विभाग, एमएस

कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों ने निम्नलिखित विषयों पर प्रस्तुतियां दीं–

सत्र–1

- प्रोफेसर वसुधा कामत : *ऑटोनमस कॉलेजिस इन इण्डिया : द रोड़ अहैड, विद स्पेशल रेफरेंस टू एनईपी*

सत्र–2

- डॉ. आर.जी. परदेशी : *बेस्ट प्रैक्टिसिस एण्ड इन्नोवेशन*
- प्रोफेसर जॉन वर्गीज : *माइंडिंग द गैप : पॉलिसी एंड प्रैक्टिकल इम्प्लीमेंटेशन – द केस ऑफ ऑटोनॉमी*
- डॉ. सुरेशा के.वी. : *बेस्ट प्रैक्टिसिस एण्ड इन्नोवेशन*
- डॉ. उदय सालुंखे : *को–क्रिएशन ऑफ फ्यूचर*

सत्र–3

- डॉ. पी. बेबी शकीला : *बेस्ट एजुकेशनल प्रैक्टिसिस एण्ड फैकल्टी डिवेलप्मेंट– ए विज़न फॉर फास्ट शिफ्टिंग डिजिटल इरा*
- रेव फादर जी.एम. विक्टर इमैनुएल : *बेस्ट प्रैक्टिसिस एण्ड इन्नोवेशन*
- डॉ. पांडियाराजा डी : *बेस्ट प्रैक्टिसिस एण्ड इन्नोवेशन*
- डॉ. राजेंद्र शिंदे : *बेस्ट प्रैक्टिसिस एण्ड इन्नोवेशन*

सत्र–4

- रेव डॉ. रॉय अब्राहम पी : *इन्नोवेशन इन टीचिंग, लर्निंग एण्ड इवॉल्यूशन फॉर रीयलाइजिंग आउटकम बेसड एजुकेशन*
- डॉ. के.एम. नसीर : *बेस्ट प्रैक्टिसिस एण्ड इन्नोवेशन*
- डॉ अविनाश पाटिल : *बेस्ट प्रैक्टिसिस एण्ड इन्नोवेशन*
- डॉ. अल्फोंसा मैथ्यू : *बेस्ट प्रैक्टिसिस एण्ड इन्नोवेशन*

सत्र–5

- डॉ. जी. गिडवानी : *बेस्ट प्रैक्टिसिस एण्ड इन्नोवेशन*
- डॉ. सीनियर एलिजाबेथ सी.एस. : *बेस्ट प्रैक्टिसिस एण्ड इन्नोवेशन*
- डॉ. अतिमा शर्मा द्विवेदी : *द जर्नी टूवर्डस एक्सीलेंस : अवर चैलेंजिस एण्ड स्ट्रेन्थस बींग एन ऑटोनमस इन्स्टिट्यूशनस*
- डॉ. अनुश्री लोकुर : *बेस्ट प्रैक्टिसिस एण्ड इन्नोवेशन*

सत्र–6

- डॉ स्नेहलता नाडियार : *बेस्ट प्रैक्टिसिस एण्ड इन्नोवेशन*
- प्रोफेसर के.बी. शर्मा : *बेस्ट प्रैक्टिसिस फॉलोड एण्ड द रोड़ अहैड*
- डॉ. एन. एन. सावंत : *स्टूडेंट सेंट्रिक लर्निंग मैथड़ालजीस : एक्स्प्लोरिं पॉसिबिलिटीस एण्ड शेयरिंग रिसर्च आउटकमस इन एन ऑटोनमस कॉलेज*
- डॉ. एन्सी जोस : *बेस्ट प्रैक्टिसिस एण्ड इन्नोवेशन*

सत्र–7

- डॉ. पी. हेमलता रेड्डी : *बेस्ट प्रैक्टिसिस एण्ड इन्नोवेशन*
- डॉ सैंड्रा जोसेफ : *सर्वोत्तम अभ्यास और नवाचार*
- डॉ. आई. अन्नपूर्णा : *बेस्ट प्रैक्टिसिस एण्ड इन्नोवेशन*
- डॉ. राजपाल हांडे : *सर्वोत्तम अभ्यास और नवाचार*

सत्र–8

- डॉ. फादर लेंसलॉट डी. क्रूज़ : *बेस्ट प्रैक्टिसिस एण्ड इन्नोवेशन*
- डॉ. सीनियर बीना टीएल : *बेस्ट प्रैक्टिसिस एण्ड इन्नोवेशन*
- डॉ. अशोक वाडिया : *बेस्ट प्रैक्टिसिस एण्ड इन्नोवेशन*

विदाई सत्र

स्वागत तथा कार्यशाला के परिणाम – डॉ. नरेश चंद्रा द्वारा टिप्पणी

डॉ. संजय जगताप और डॉ. विजय जोशी द्वारा टिप्पणियां

श्री बी.एस. पोनमुदीराज और डॉ. विजय खोले का उद्‌बोधन

श्री सौरभ विजय द्वारा विदाई भाषण

15. 'इण्डिया, एशिया एण्ड ऑस्ट्रेलिया : आसीनिक इन्काउंटरस एण्ड एक्स्चेंजिस' विषय पर बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के सहयोग से वाराणसी में अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (29–31 जनरवरी, 2020)

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू), वाराणसी में, बीएचयू, वाराणसी, इंडियन एसोसिएशन फॉर द स्टडी ऑफ ऑस्ट्रेलिया, नई दिल्ली तथा वसंत महिला कॉलेज, वाराणसी के सहयोग से 29–31 जनवरी 2020 को 'इण्डिया, एशिया एण्ड ऑस्ट्रेलिया : ओसीनिक इन्काउंटरस एण्ड एक्स्चेंजिस' विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में अंग्रेजी विभाग के विभागाध्यक्ष एव कला संकाय प्रोफेसर आनंद प्रभा बारात तथा भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला की अध्येता प्रोफेसर अनीता सिंह, इस सम्मेलन के संयोजक थे। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में कला संकाय के संकायाध्यक्ष प्रोफेसर अशोक सिंह ने स्वागत भाषण दिया। उद्घाटन भाषण संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मकरंद आर. परांजपे, द्वारा प्रस्तुत किया गया। प्रोफेसर एपी बारात ने सम्मेलन की अवधारणा पेश की। प्रोफेसर प्रदीप त्रिखा, महासचिव, आईएएसए, नई दिल्ली द्वारा विषय–वस्तु पर विशेष टिप्पणी प्रस्तुत की गई। इस अवसर पर बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर राकेश भटनागर ने भी प्रतिभागियों को संबोधित किया। संस्थान की अध्येता एवं सम्मेलन की सह–संयोजक प्रोफेसर अनीता सिंह, द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव दिया गया।

मूलाधार

ग्रीक भूगोलवेत्ता, इतिहासकार और दार्शनिक 'स्ट्रैबो' (63 ईसा पूर्व– 24 ईस्वी) ने काफी समय पहले जोर देकर कहा था कि महासागर केवल एक खाली जगह नहीं है बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक लेनदेन के लिए एक संभावित दर्शनीय स्थल है। उसके काफी देर बाद फर्नांड ब्राउडेल (1902 – 1985) ने भूमध्य सागर को समुद्र का 'विशाल, जटिल विस्तार' कहा जहां मनुष्य कार्य करता है। उन्होंने आगे समुद्र और भूमि के जटिल रूपों की भी खोज की। 16वीं सदी के ओशिनिया के अन्वेषणों, उपनिवेशों और बस्तियों की दीर्घ अवधि के दौरान भाषा, धर्म, व्यापार प्रथाओं और साझा ज्ञान के सांस्कृतिक तौर–तरीकों को सक्षम करने के साथ खुद को 'वैश्विक अर्थव्यवस्था' के रूप में मुखर करना जारी रखा। व्यापारिक संबंधों के माध्यम से स्थापित अंतरराष्ट्रीय पहचान ने विशिष्ट पहचान का निर्माण किया। लेकिन, आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से जटिल तरीकों से उलझन और आदान–प्रदान के केंद्र में अक्सर विवाद, टकराव और असहमति होती है, लेकिन इसके वाबजूद संवाद, पारस्परिक प्रभाव और अंततः पारस्परिक परिवर्तन भी होता है। इस सम्मेलन में ओशिनिया के बहु–विषयक/अंतःविषय समकालीन मुद्दों पर सारगर्भित चर्चा की गई।

राजनीति, इतिहास नृविज्ञान और अंतरराष्ट्रीय संबंधों, इतिहास, साहित्य, पुरातत्व, रक्षा अध्ययन और आनुवंशिकी में अन्य विषयों के बीच अनुशासनात्मक और क्षेत्रीय अध्ययन काम करता है और सभी अवधियों के लिए हिंद महासागर के हिस्सों की समझ विकसित करने में प्रभावशाली भूमिका निभा रहा है। यह सब और कई अन्य चिंताएं हमें इस बात पर बहस करने के लिए मजबूर करती हैं कि भारत, एशिया और ऑस्ट्रेलिया में हिंद महासागरीय आदान–प्रदान कैसे, क्यों और क्या हमें एक साथ खींचते हैं और हिंद महासागर क्षेत्र को परिभाषित करते हैं। यह वैश्वीकरण की घटना को फिर से परिभाषित करने और वैश्वीकरण को एक अवधारणा के रूप में और क्या अवशेष मूर्त या अन्यथा उन राष्ट्रों के बीच सामंजस्य लाने का समय है जो महासागर पर प्रभाव डालते हैं। सम्मेलन में भारत, एशिया, ऑस्ट्रेलिया और हिंद महासागर क्षेत्र के अन्य देशों के साहित्यिक, सांस्कृतिक और संबंधित क्षेत्र पर चर्चा और विचार–विमर्ष करने के लिए मानविकी, सामाजिक विज्ञान और रक्षा अध्ययन के क्षेत्र के विद्वानों को आमंत्रित करने का प्रस्ताव था।

इस संदर्भ में, यह संगोष्ठी एशियाई, या अधिक विशेष रूप से, भारतीय–एशियाई और ऑस्ट्रेलियाई अध्ययनों के लिए एक नए अनुशासनात्मक प्रतिमान या संस्थागत तंत्र का एक निर्माण या कम से कम अन्वेषण करना था। इस अर्थ में, एशिया का प्रतिनिधित्व करने के लिए इसे कैसे समझा जाता है या अध्ययन किया जाता है, इसके अलावा इस तरह

की प्रक्रिया में खुद को एक इच्छुक या हितधारक के रूप में घोषित करने के लिए प्रतिस्पर्धा करनी होगी या चुनौती देनी होगी। उदाहरण के लिए, एशिया का शाही प्रतिनिधित्व करना और उसके लिए एक विकल्प प्रदान करना। इस सम्मेलन में पूर्वी एशिया, चीन, भारत और पश्चिम एशिया के विशेषज्ञ शामिल थे, जिन्होंने पूंजी, ऑस्ट्रेलिया के विभिन्न क्षेत्रों, उनके अंतर–संबंधों और वैश्विक प्रवाह के साथ उनके संस्कृति और विज्ञान और प्रौद्योगिकी संबंधों का प्रतिनिधित्व करने की चुनौती का समाधान करने का प्रयास किया।

जहां तक भारत का संबंध है, यह एक बड़े महासागरीय हिस्सा रहा है जिसे सांस्कृतिक गठन और परिसंचरण के पुराने, शिथिल, और अधिक तरल हिंद महासागर क्रॉस–धाराओं के हिस्से के रूप में अधिक उपयोगी रूप से देखा जा सकता है। साम्राज्यवाद के अंत और हिंद महासागर प्रणाली में स्वतंत्र राष्ट्रों के उदय के साथ इन नेटवर्कों को आज लगभग भुला दिया गया है, फिर भी, यदि हम बेहतर समझ रखना चाहते हैं और उन्हें हिंद महासागर के एक स्थानिक–राजनीतिक स्थान के रूप में पुनर्जीवित नहीं करना चाहते हैं, तो उन पर पुनर्विचार करना महत्त्वपूर्ण है। हिंद महासागर के तटवर्ती राष्ट्रों को एक महासागरीय संकरता के रूप में महाद्वीपीय मजबूरियों द्वारा आकार दिया गया था। वे एक विशेष प्रकार के साम्राज्य–विरोधी सर्वदेशीयवाद को मूर्त रूप देने के लिए उभरे हुए हैं। जिस स्थान ने इस तरह के विमर्षों को जन्म दिया, वह पश्चिमी साम्राज्यवाद से पहले की दुनिया और भविष्य की वैश्वीकृत दुनिया के बीच एक महत्त्वपूर्ण कड़ी का निर्माण करता है जिसे हम पश्चिमी आधिपत्य के बाद अपनी आंखों के सामने अस्तित्व में आने के रूप में मान सकते हैं।

उप विषय

- अतीत, वर्तमान और भविष्य में सांस्कृतिक आदान–प्रदान
- स्मृतियों की अभिव्यक्ति
- क्षेत्रीय सहयोग और मतभेद
- समुद्री सांस्कृतिक परिदृश्य
- सांस्कृतिक बहुलवाद
- अंतरराष्ट्रीय मुद्दे
- लिटरेरी कॉमन्स
- भारत एशिया
- क्षेत्रीय, आर्थिक और सामाजिक–सांस्कृतिक आदान–प्रदान
- प्रवासी अध्ययन
- साझा ज्ञान प्रणाली
- पारिस्थितिकी, पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन
- आदिवासी अध्ययन
- स्वयं और अन्य के पैटर्न

21वीं सदी में एशिया एक निर्विवाद भू–राजनीतिक शक्ति के रूप में उभरा है। यह निश्चित रूप से एशिया की बढ़ती आर्थिक शक्ति के कारण है। राइजिंग एशिया ऑस्ट्रेलिया के लिए एक चुनौती और अवसर दोनों हैं, और ऐसी बदलती

भू–राजनीतिक स्थितियों में, ऑस्ट्रेलिया और एशिया (विशेष रूप से भारत) के बीच मजबूत आर्थिक और सांस्कृतिक संबंध अनिवार्य हो जाते हैं।

जब हम एशिया के साथ ऑस्ट्रेलिया के संबंधों पर विचार करते हैं, तो यह हिंद महासागर है जो हमारे दिमाग में तुरंत आ जाता है। चूंकि एशिया के साथ ऑस्ट्रेलिया के प्राचीन संबंध हमेशा समुद्री रहे हैं, इसलिए ऑस्ट्रेलिया और एशिया दोनों के दृष्टिकोण से यह महत्त्वपूर्ण है कि आर्थिक, सुरक्षा, समुद्री, सहयोग और मित्रता की संभावनाओं का पता लगाया जाए।

प्रतिभागी

- प्रोफेसर संतोष के. सरीन
- सुश्री उपासना गुप्ता
- सुश्री रितिका कुमारी
- प्रोफेसर बिल एशक्रॉफ्ट
- प्रोफेसर पीटर गेल
- डॉ निर्बन मन्ना
- सुश्री कविता सिंह
- श्री मनीष कुमार गुप्ता
- निरोजिता गुहा
- अक्षता भट्टा
- विलियम डी सूजाब
- इप्सिता सेनगुप्ता
- सोनिया सिंह कुशवाहा
- ए एस कुशवाहा
- आरती निर्मल
- सौरभ मीणा
- श्री साबिर मिर्जा
- सुश्री निधि जायसवाली
- प्रोफेसर पॉल शारराड
- प्रोफेसर अलका सिंह
- डॉ मालथी एच.
- सुश्री अंजलि

- सुश्री अर्पणा कुमारी
- श्री कमलजी
- मिस्टर स्वेतानी
- मिस्टर माइकल एटकिंसन
- सुश्री कुमारी प्रीति
- डॉ. प्रवीण पटेल
- सुश्री अग्रिमा मिश्रा
- श्री विशाल सिंह
- सुश्री अलीना मनोहरन
- श्री पी. मिश्रा
- श्री एन कुमार
- सुश्री रितु पारीक
- सुश्री मीनाक्षी जैन
- सुश्री शिप्रा सिंह
- सुश्री आई एस घटक
- श्री आर सामली
- डॉ. मंजरी झुनझुनवाला
- डॉ. गीतांजलि सिंह
- सुश्री ज़ेबा खान
- सुश्री रेणुका सिंह
- श्री आशीष कुमार श्रीवास्तव
- श्री चंद्रबोली गांगुली
- सुश्री दीप्ति तिवारी
- श्री अविषेक देब
- सुश्री ईशा सीगर
- सुश्री जसमीत गिल
- सुश्री लिपिका कांकरिया
- श्री सुतनुका बनर्जी
- डॉ. अमित उपाध्याय

- डॉ सौराह क्र. सिंह
- श्री कीर्ति चंदन आज़ादी
- श्री सुरजीत महता
- सुश्री टी एस कविता
- सुश्री नेहा मिश्रा
- श्री महेश शर्मा
- मिस्टर रिचिक बनर्जी
- डॉ मालथी ए.
- श्री जयजीत सरकार
- सुश्री अंजलि सिंह
- डॉ विवेक सिंह
- डॉ. प्रवीण एस राणा
- श्री शैलेश कुमार सिंह
- श्री मनीष कुमार गुप्ता
- श्री दुर्बादल भट्टाचार्य
- श्री पद्मनाभ त्रिवेदी
- सुश्री स्मिता झा
- सुश्री रेणुका सिंह
- श्री विश्व भूषण
- डॉ मीनाक्षी जैन
- डॉ. हरिओम सिंह
- सुश्री सोनाली भट्टाचार्जी
- सुश्री अर्पिता सहाय
- श्री रोहन कुमार
- सुश्री मेघा चौधरी
- कुमार गौतम आनंद
- प्रोफेसर अंगशुमान कारी
- प्रोफेसर चंद्रकला पडिया
- सुश्री पयोली

सम्मेलन के दौरान प्रतिभागियों ने निम्नलिखित विषय पर प्रस्तुतियां दीं–

आधार व्याख्यान–1

प्रोफेसर पीटर गेल : *इन डिफेंस ऑफ डेमोक्रेसी : रिप्रेजेंटेशन ऑफ द नेशनल एंड द ग्लोबल एंड द स्पेस बिटवीन*

सत्र–1

निरोजिता गुहा : *लिटरेरी ओशिनिया : ए निसोलॉजिकल स्टडी ऑफ द पैसिफिक अक्षता भट्टा एण्ड विलियम डी सूजाबः रीथिंकिंग द डिस्कोर्स ऑफ मैरिन स्पेशलिटी थ्रू ए कम्पेरिटेव, कन्ट्रेसिव एण्ड सबर्सिव एनालसिस ऑफ सलेक्ट टैक्स्टस फरॉम एशिया एण्ड ऑस्ट्रेलिया*

इप्सिता सेनगुप्ता : *ऑन इंडियन ओशन आसा क्रिएटिक्स ऑफ ऑल्टरिटीज : री–इमेजिनिंग ऑस्ट्रेलियननेस एंड इंडो–ऑस्ट्रेलियन लिंक्स इन अर्ली ट्वेंटीथ सेंचुरी : द फिक्शन ऑफ मोली स्किनर*

सोनिया सिंह कुशवाहा और ए.एस. कुशवाहा : *आसीनिक कान्शसिसनेस : ए स्टडी ऑफ द सिनेमेटिक एडाप्शन ऑफ लाइफ ऑफ पीएल*

आरती निर्मल : *कॉन्सेंट्रिकिटी ऑफ इमेजिनेशन : द इंडियन एंड ऑस्ट्रेलियन मंडलिक लिटरेरी कॉन्टेक्स्ट*

सौरभ मीणा : *दलित एण्ड एबरिजिनलस : मार्निनलाइज्ड वायसिस एक्रॉस द इण्डियन ओसीन*

आधार व्याख्यान–2

पॉल शारद : *इण्डिया, एशिया एण्ड ऑस्ट्रेलिया : एन्काउंटर एण्ड डाइवर्जन*

प्रदीप त्रिखा : *टेंगलिंग ओशनिक करंट ऑस्ट्रेलियन एक्विलिटीस ऑन गाँधी एण्ड कृष्णामूर्ति*

सत्र–2, क

अंजलि : *लोकेटिंग, रिलोकेटिंगश : एन एक्सप्लोरेशन ऑफ इंडियन वीमेन्स कल्चरल आइडेंटिटी इन रोना गोंसाल्वेस द परमानेंट रेजिडेंट*

अर्पणा कुमारी : *फॉलो द रैबिट– प्रूफ फेंस : ए डॉक्यूमेंट ऑफ एगोनी ऑफ द एबोरिजिनल द स्टोल जेनरेशन*

श्री कमलजी : *सस्टेनेबिलिटी : विजडम ऑफ द ट्राइब्स ऑफ नॉर्थ ईस्टर्न इंडिया एंड द एबोरिजिन्स ऑफ ऑस्ट्रेलिया*

श्वेतानंद : *फोकलोर मिथ एण्ड ऑरल ट्रेडिशन इन द इण्डिजीनिश लैंग्वेज ऑफ ऑस्ट्रेलिया*

माइकल एटकिंसन : *ऑस्ट्रेलियन आइडेंटिटी एण्ड इण्डिया : कल्चरल चैलेंज, कल्चरल ऑप्रच्युनिटी*

कुमारी प्रीति : *ग्लास वालस, स्टोरीस ऑफ टॉलरेंस एण्ड इन्टॉलरेंस फरॉम द इण्डियन सबकंटीनेंट एण्ड ऑस्ट्रेलियाः ए पैनॉरमिक व्यू*

सत्र–2 ख

अलीना मनोहरन : *ऑक्यूपिंग लिमिनल स्पेस : डायस्पोरिक इमेजिनेशन इन ऑस्ट्रेलिया*

पी. मिश्रा और एन कुमार : *वोकल बॉडीज : ए काइन्सियोलॉजिकल इन्वेस्टिगेशन ऑफ ह्यूमन रिसोर्सेज इन एंजेला सैवेज की मदर ऑफ पर्ल*

रितु पारीक : *नॉस्टेलगिक इन मेना अब्दुल्लाज टाइम्स ऑफ पीकॉक*

मीनाक्षी जैन : *रोमांस ट्रैवर्सिंग ओशन्स : फ्लोइंग अहिस्ता विथ पंकज उधासी*

शिप्रा सिंह : *गन आइलैंड : रिफ्लेक्टिंग क्लाइमेट चेंज एंड द रिफ्यूजी क्राइसिस : मिथ, लेजेंड एंड हिस्ट्री*

आइ.एस घटक और आर. सामल : *कल्चरल प्लूरलिजम इन इण्डिया : ए स्टडी थ्रू द लेंस ऑफ बोटस*

सत्र–3, अ

आशीष कुमार श्रीवास्तव : *इकोमिस्टिसिजम एण्ड सेक्सइकॉलजी इन इण्डिया एण्ड ऑस्ट्रेलिया : ए स्टडी ऑफ डिफरेंट इकलॉजिकल परस्पैक्टिवस विद स्पेशल रेफरेंस टू गिफ्ट इन ग्रीन बाई सराह जोसेफ एण्ड द ट्री ऑफ मैन बाई पैट्रिक व्हाइट*

चंद्रबोली गांगुली : *होमवार्ड–बाउंड : कम्पेरिंग द कन्सेप्ट ऑफ होम एण्ड कल्चर इन डोरिस पिलकिंगटनज फॉलो द रैबिट–प्रूफ फेंस एण्ड झुम्पलाहिरीज नॉवेल, द नेमसेक*

दीप्ति तिवारी : *ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ इकॉलजिकल कन्सर्न्स इन द हंगरी टाइट एण्ड शैडोस*

अभिषेक देब : *सिग्निफिकेशन ऑफ यूनाइटस एण्ड यूनियनस : ए सलेक्ट स्टडी ऑफ उत्पलदत्त एण्ड जेम्स क्रॉफोर्ड*

ईशा सीगर : *ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ इमेजरी इन डी होप एण्ड निसिम एजेकेइल*

जसमीत गिल : *डेलनीटिंग वर्ल्ड लिटरेचर फरॉम द इन्डो–ऑस्ट्रेलियन परस्पैक्टिव : ट्रांस्कल्चरल इंटरस्टाइसिस एण्ड लिटरेरी कंटैक्टस*

लिपिका कंकारिया और सुतनुका बनर्जी : *फिल्मी फ्लेमबोयांट : विजुअल ईकनोमीस ऑफ द इण्डियन एण्ड ऑस्ट्रेलियन मॉडरन गल्स इन पॉपुलर कल्चर*

सत्र–3 ब

टी.एस. कविता : *ऑस्ट्रेलियन इंडिजेनस मिथस एण्ड इन्वायरन्मेंटल इमेजिनेशन : ए केस स्टडी ऑफ एलेक्सिस राइटज नॉवेलस*

नेहा मिश्रा : *द हंटिंग ऑफ़ सरोब्रियर्ले : ए स्टडी ऑफ़ लॉस्ट एंड फाउंड मेमोरी*

महेश शर्मा : *रीविजिटिंग द अर्बन स्लम्स ऑफ ऑस्ट्रेलिया : ए कॉस्मोपोलिटन रीडिंग ऑफ मरलिंडाबोबिस द सोलेमन लैंटर्न मेकर*

रिचिक बनर्जी : *ए स्टडी आफ ऑकल्ट सिंबोलिजम इन पैट्रिक व्हाइटज द सॉलिड मंडला*

डॉ. मालथी ए : *द पोएट एज़ ट्रांसलेटर : सुगाथाकुमारी ट्रांसलेशन ऑफ़ जूडिथ राइट*

जयजीत सरकार : *एशिया एण्ड एशियाबोध : लुकिंग फॉर इन अल्टरनेटिव अंडरस्टैण्डिग*

अंजलि सिंह : *कार्टोग्राफ़ीज़ ऑफ़ इंडेंट्योर : क्रॉसिंग द काला पानी*

सत्र–4, क

दुर्बादल भट्टाचार्य : *एक्स्पलोरिंग द हॉरर ऑफ वार : ए रीडिंग रिचर्ड फ्लैंगनज द नैरो रोड टू डीप नॉर्थ*

पद्मनाभ त्रिवेदी और स्मिता झा : *ए डीप इकॉलजिकल स्टडी ऑफ द भगवद्गीता : अनरवेलिंग द इन्वायरन्मेंट डिस्कोर्स*

रेणुका सिंह : *ओशनिक एनकाउंटर्स एंड एक्सचेंज : ए रिलिजियो–कल्चरल स्टडी ऑफ द डिस्कोर्सेस ऑफ डेथ एंड*

डाइंग

विश्व भूषण : *क्लाइमेट चेंज एण्ड इट्स इम्पैक्ट ऑन इण्डिया*

सत्र–4 ख

रोहन कुमार : *एक्सप्रेशन ऑफ़ मेमोरीज़ : रीविजिटिंग द ग्लोरियस इण्डिया– ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट राइवल्री बिटवीन 1996 से 2003 वर्ल्ड कप*

मेघा चौधरी : *रोमांटिसिजम ऑफ डिस्इल्यूजनमेंट : डिकन्स्ट्रटिंग जीत थायिलज नार्कोपोलिस एण्ड अम्बर्टो इकोज न्यूमेरो ज़ीरो*

कुमार गौतम आनंद : *ग्रेगरी डेविड रॉबर्टज शांताराम : डिकोडिंग द डेवलपमेंट गैप*

पयोली : *कल्चरल प्लूरलिजम*

विदाई सत्र

अंगशुमान कर : *इण्डियन परस्पैक्टिव ऑन द स्टडी ऑफ ऑस्ट्रेलिया : ट्रेंडस एण्ड कन्सर्न्स*

16. 'रिथिंकिंग इण्डोलॉजी' विषय पर गोलमेज परिचर्चा (13 मार्च 2020)

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान में 13 मार्च 2020 को 'रिथिंकिंग इंडोलॉजी' विषय पर एक गोलमेज परिचर्चा आयोजित की गई थी। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मकरंद आर परांजपे, ने इस अवसर पर स्वागत भाषण प्रस्तुत किया और परिचयात्मक टिप्पणी प्रोफेसर शरद देशपांडे, पुणे विश्वविद्यालय के पूर्व प्राध्यापक एवं दर्शनशास्त्र के विभागाध्यक्ष द्वारा प्रस्तुत की गई। संस्थान के सचिव कर्नल (डॉ.) विजय तिवारी ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

प्रतिभागी

- प्रोफेसर सी.के. राजू, टैगोर फेलो, भा.उ.अ.स., शिमला
- प्रोफेसर केनेथ ज़िस्क, प्राध्यापक एवं इंडोलॉजी के विभागाध्यक्ष, क्रॉस–सांस्कृतिक और क्षेत्रीय अध्ययन विभाग, कोपेनहेगन विश्वविद्यालय, डेनमार्क
- प्रोफेसर डॉ. हेराल्ड विसे, प्राध्यापक–अर्थशास्त्र, अर्थशास्त्र एवं व्यवसाय प्रशासन के संकायाध्ययक्ष, लीपज़िग विश्वविद्यालय, जर्मनी
- प्रोफेसर डोमिनिक वुजास्तिक, प्रोफेसर प्रेम अध्यक्ष, इतिहास और शास्त्रीय विभाग, अल्बर्टा विश्वविद्यालय, कनाडा
- डॉ. बलराम शुक्ल, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. पीटर शार्फ, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला

परिचर्चा के दौरान प्रतिभागियों ने निम्नलिखित विषयों पर प्रस्तुतियां दीं–

सत्र–1

- प्रोफेसर केनेथ ज़िस्क : *क्रॉस–कल्चरल एस्पैक्टस ऑफ इंटलेक्चुअल लाइफ इन एन्शट इण्डिया : इण्डियन गोष्ठी एण्ड ग्रीक सिम्पोज़ियन*
- डॉ. बलराम शुक्ल : *फारसी सीखने के लिए पाणिनियन मॉडल का अनुप्रयोग*

सत्र–2

- प्रोफेसर डोमिनिक वुजास्तिक : *रेव्युलेशन इन इंडोलॉजी*
- डॉ. पीटर शार्फ : *रि–ऑरियंटिंग ओरियंटलिज़्म*

सत्र–3

- हेराल्ड विसे : *डिसिजन थीअरी एण्ड प्रोबेबिलिटी थीअरी : पास्कलज वैगर एण्ड प्रि–मॉडरन इण्डिन लॉटरजी*
- सी के राजू : *प्रीकलोनिअल एप्रोपरिएशनस ऑफ इण्डियन गणिता : एपिस्टेमिक लेसनस*

अध्येताओं द्वारा प्रस्तुत साप्ताहिक संगोष्ठियां

सम्पूर्ण समीक्षावधि के दौरान संस्थान के अध्येताओं द्वारा साप्ताहिक संगोष्ठियां प्रस्तुत की गईं। इन साप्ताहिक संगोष्ठियो में संस्थान के अन्य विद्वान, आईयूसी सह–अध्येता तथा हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के प्राध्यापक भी सह–भागिता करते हैं। ये संगोष्ठियां संस्थान के अध्येताओं की शोध परियोजनाओं के विषयों से संबंधित होती हैं और इससे विद्वानों को परस्पर औपचारिक विमर्श का अवसर मिलता है। प्रतिवेदन की अवधि के दौरान अध्येताओं द्वारा निम्नलिखित साप्ताहिक संगोष्ठियां आयोजित की गईं–

1. प्रोफेसर मुंडोली नारायणन : *फिजिकल स्पेस एण्ड द कल्चर ऑफ इलेबोरेशन इन कुटियाट्टम* (04 अप्रैल 2019)
2. डॉ. बिंदु साहनी : *शिवालिक एरॉजन एण्ड पैस्टरलिस्टस गुज्जर ऑफ हिमाचल प्रदेश : ए स्टडी इन द लाइट ऑफ कलोनिअल पॉलिसिस इन द रीज़न* (18 अप्रैल 2019)
3. प्रोफेसर जे. रंगास्वामी : *A Translation of the ITU 36,000 Pati Commentary of Tiruvaymoli of Nammalvar by Vatakkuttiruvitipillai into English (1-110) Verses* (25 अप्रैल 2019)
4. डॉ. देबजानी हलदर : *'नागरिक' (1952) टू 'उत्तरायणम' (1974) : डिकन्स्ट्रक्टिंग द कॉन्सेप्ट आफ मेन एण्ड मैस्कुलिनिटीज इन पोस्ट पार्टीशन अल्टरनेटिव इण्डियन सिनेमा* (02 मई 2019)
5. डॉ. सतेंद्र कुमार : *कास्ट एण्ड माइक्रो पॉलिटिक्स ऑफ इलेक्टरल डिमाक्रेसी* (09 मई 2019)
6. डॉ. अश्विन पारिजात : *री–एंचांटिंग मॉडर्निटी : ए स्टडी ऑफ विवेकानंद्स अमेरिकन एंगेजमेंट* (16 मई 2019)
7. डॉ. गिरिजा के.पी. : *नॉलेज एण्ड सब्जैक्टस : सिचुएटिंग आयुर्वेदा थ्रू लाइफ स्टोरीस ऑफ प्रैक्टिशनर्स* (23 मई 2019)
8. डॉ शर्मिला छोटारे : *जात्रा परफॉर्मेंस ट्रेडिशन : ऑरिजन एण्ड इवॉल्यूशन इन प्री–कलोनिअल एण्ड कलोनिअल बंगाल* (30 मई 2019)
9. प्रोफेसर अनीता सिंह : *फेमिनिजम एण्ड फोक एपिक : द्रौपदी, धर्मा, परफॉर्मेंस एण्ड प्रोटैस्ट इन तीजन बाइज पाण्डवानी* (06 जून 2019)
10. डॉ. इरीना कटकोवा : *डॉक्टराइन ऑफ लाइट एण्ड एमेजिस ऑफ विंगड स्प्रिचुअल बीइंगस इन इस्लामिक आर्ट* (13 जून 2019)
11. प्रोफेसर सी.के. राजू : *गणित वर्सेस फार्मल मैथमैटिक्स : री–एग्ज़ामिनिंग मैथमैटिक्स, इट्स पैडगॉजी एण्ड द इम्प्लीकेशनस फॉर साइंस* (13 जून 2019)

12. डॉ. कुलदीप कुमार भान : *द आर्कियोलॉजी ऑफ हड़प्पा क्राफ्ट एंड टेक्नोलॉजी विद स्पेसिफिक रेफरेंस टू गुजरात, वेस्टर्न इंडिया* (20 जून 2019)

13. डॉ. महेश्वर हजारिका : *टू ट्रांसलेट द व्याकरण महाभाष्य ऑफ पतंजलि इनटू असमीज विद नोट्स एण्ड एक्स्प्लेशन* (20 जून 2019)

14. प्रोफेसर एम.पी. सिंह : *इण्डियन फेडरलिजम इन ए कम्पेरेटिव परस्पैक्टिव विद सपेशल रेफरेंस टू जुडिशल फेडरलिजम* (27 जून 2019)

15. डॉ पवित्रन नांबियार : *कल्चर, करप्शन, एण्ड इन्सर्जेंसी : थ्रेटस एण्ड क्वेस्ट फॉर सर्वाइवल इन नागालैण्ड* (04 जुलाई 2019)

16. प्रोफेसर हितेंद्र कुमार पटेल : *हिस्ट्री ऑफ़ हिंदी लिटरेचर : ए स्टडी ऑफ़ पॉलिटिक्स हिस्ट्री ऑफ़ नॉर्थ इंडिया (1920–1970) राइटिंग्स ऑफ़ लिटरेरी राइटर्स* (04 जुलाई 2019)

17. प्रोफेसर एस.के. चहल : *हिंदू सोशल रिफार्मस : ए स्टडी ऑफ द फ्रेमवर्क ऑफ ज्योतिराव फुले* (11 जुलाई 2019)

18. डॉ. अजय कुमार : *ज्ञान और अनुभव की दुनिया से निकलता दलित समाजशास्त्र* (18 जुलाई 2019)

19. प्रोफेसर मेधा देशपांडे : *पॉवर्टी, कॉन्सेप्ट, मैपिंगस एण्ड पॉलिसिस* (01 अगस्त 2019)

20. प्रोफेसर विजया रामास्वामी : *वुमेन इन क्रिटिकल एडिशनस एण्ड आउट ऑफ देम : सम रिफ्लेक्शनस ऑन सिचुएटिंग तमिल वुमेन इन एपिक्स एण्ड ऑरल ट्रेडिशन* (08 अगस्त 2019)

21. प्रोफेसर राजवीर शर्मा : *पॉलिटिकल फिलॉसफी ऑफ कौटिल्य : द अर्थशास्त्रा एण्ड आफ्टर* (22 अगस्त 2019)

22. डॉ शर्मिला चंद्रा : *इंटरप्रटेशन ऑफ मास्क मेकिंग एण्ड मास्क डांसिस इन द कंटैक्स्ट ऑफ हिन्दू मिथालजी : एन एथनो–कल्चर स्टडी* (22 अगस्त 2019)

23. डॉ. विक्रम वी. कुलकर्णी : *महाराष्ट्र के घुमन्तु जन जातियों की सम्बन्धित चित्र परम्पराएं और सांस्कृतिक अध्ययन* (29 अगस्त 2019)

24. श्री आशुतोष भारद्वाज : *सेवन वेरिएशनस ऑन सोलिच्यूड : ए पार्शल बायोग्राफी ऑफ वुमेन इन इण्डियन नॉवेलस* (05 सितंबर 2019)

25. प्रोफेसर डी.आर. पुरोहित : *फोक थिएटर ऑफ सेंट्रल हिमालय : इट्स कल्चर एण्ड परफॉर्मेटिव कंटैक्स्ट* (12 सितंबर 2019)

26. डॉ. सैमसन कमेई : *सोशल आइडेंटिटी ऑफ रिलेशनस विटबीन हिन्दू ऑर्गेनाइजेशनस एण्ड जेलियांग्रोंग रिलिजनस* (19 सितंबर 2019)

27. डॉ. अभिषेक कुमार यादव : *अरूणाचल प्रदेश में हिन्दी का विकास और उसके साहित्य की रूपरेखा* (19 सितंबर 2019)

28. डॉ देबजानी हलदर : *ताहादर कोठा : द बनारीस बिटवीन पब्लिक–प्राइवेट : डिपक्शिन ऑफ रिफ्यूजी वुमेन ब्रेडविनस इन पोस्ट–कलोनिअल बंगाली सिनेमा (1950 टू 1970)* (20 सितंबर 2019)

29. डॉ अंजलि दुहन : *इन्ट्रोड्यूसिंग द द्वादश भाव* (24 अक्टूबर 2019)

30. प्रोफेसर रेखा चौधरी : *सोशल डाइवर्सिटी एण्ड पॉलिटिकल डाइवर्जेंस इन जम्मू एण्ड कश्मीर : आइडेंटिफाइंग द*

कम्प्लेग्जिटी ऑफ कन्फिलिटिक सिचुएशन एण्ड द फार्मेट फॉर इटस रेजल्यूशन (31 अक्टूबर 2019)

31. प्रोफेसर महेश्वर हजारिका : *श्रीमद्भगवतपतंजलिविराचिता व्याकरण–महाभाष्या* (07 नवंबर 2019)
32. डॉ मनीषा चौधरी : *द हिस्ट्री ऑफ थार : इन्वायन्मेंट, कल्चर एण्ड सोसायटी* (14 नवंबर 2019)
33. प्रोफेसर हितेंद्र कुमार पटेल : *द पॉलिटिक्स ऑफ नेशनलिजम इन लिटरेरी इमेजिनेशन (1920–1960) : ए स्टडी ऑफ सलेक्ट हिन्दी प्रैक्टिकल नॉवेलस* (21 नवंबर 2019)
34. प्रोफेसर सी.के. राजू : *गणित वर्सेस फॉर्मल मैथ* (28 नवंबर 2019)
35. प्रोफेसर एस.के. चहल : *द मेकिंग ऑफ महात्मा फुले : लाइफ, इन्फ्लुएंस एंड माइंड* (05 दिसंबर 2019)
36. डॉ. रमा शंकर सिंह : *नदी की सांस्कृतिक अर्थव्यवस्थाः समुदाय, जीविका एवं राजनीति* (09 दिसंबर 2019)
37. डॉ पवित्रन नांबियार : *कल्चर, करप्शन, एण्ड इन्सर्जेंसी : थ्रेटस एण्ड क्वेस्ट फॉर सर्वाइवल इन नागालैण्ड* (12 दिसंबर 2019)
38. डॉ. बिंदु साहनी : *शिवालिक एरॉजन :ब्रिटिश पॉलिसिज एण्ड द इन्ट्रोडक्शन ऑफ चोज एक्ट (1900)* (02 मार्च 2020)
39. डॉ शर्मिला चंद्रा : *ए जनरलाइज्ड व्यू ऑफ क्राफ्टिंग एण्ड मॉर्फोलजी ऑफ मास्कस एण्ड मास्कड परफॉर्मेंसिस इन इण्डिया (एक्स्क्लयूडिंग द बंगाल रीजन) – एन इन्साइट इनटू फोक कल्चर* (05 मार्च 2020)
40. डॉ सुतापा दत्ता : *कंटेंटस एण्ड कंटैक्स्ट ऑफ टैक्स्टबुकस इन बंगाल* (06 मार्च 2020)
41. डॉ. विक्रम वी. कुलकर्णी : *मरीआई वाले : भक्त से भिखारी तक* (09 मार्च 2020)
42. डॉ. कुलदीप कुमार भान : *द आर्कियोलॉजी ऑफ हड़प्पा क्राफ्ट एंड टेक्नोलॉजी विद स्पेसिफिक रेफरेंस टू गुजरात, वेस्टर्न इंडिया सीए 2600–1900 बीसीई* (11 मार्च 2020)
43. प्रोफेसर विजया रामास्वामी : *मैनी तमिल महाभारताज : ए सर्वे फरॉम प्री–कलोनिअल टू कलोनिअल इरा* (12 मार्च 2020)
44. प्रोफेसर रमेश चंद्र प्रधान : *द मैटाफिजिक्स ऑफ कन्शिसनेस प्रोब्लमस एण्ड प्रोस्पैक्टस* (18 मार्च 2020)
45. प्रोफेसर अनीता सिंह : *स्टेजिंग फेमिनिजमस : जेण्डर, वायलेंस एण्ड परफॉर्मेंस इन कंटेम्परेरी इण्डिया* (19 मार्च 2020) (ऑनलाइन)
46. प्रोफेसर सुजाता पटेल : सोसीआलजी इन इण्डिया : इट्स डिसिप्लीनरी हिस्ट्री (26 मार्च 2020) (ऑनलाइन)
47. प्रोफेसर मुंडोली नारायणन : द बॉडी एज़ लाइव आर्काइव : द कल्चर ऑफ़ ट्रेनिंग ऑफ़ कुटियाट्टम (30 मार्च 2020) (ऑनलाइन)

अध्येताओं से प्राप्त पाण्डुलिपियाँ

1. प्रोफेसर डंबरूधर नाथ : *निर्गुण भक्ति इन ईस्टरन इण्डिया : आइडियॉलज, प्रोटैस्ट एण्ड आइडेंटिटी* (ए स्टडी

ऑफ द मायामारा सब–सैक्ट ऑफ असम)।

2. प्रोफेसर जे. रंगास्वामी : *A Translation of the ITU 36,000 Pati Commentary of Tiruvaymoli of Nammalvar by Vatakkuttiruvitipillai into English (1-110) Verses*

3. डॉ सोइबम हरिप्रिया : *द पोएट ऐज़ विटनेस : एनकाउंटरिंग एथ्नोग्राफी थ्रू पोएट्री*

4. डॉ. गिरिजा के.पी. : *नॉलेज एण्ड सब्जैक्टस : सिचुएटिंग आयुर्वेदा थ्रू लाइफ स्टोरीस ऑफ प्रैक्टिशनर्स* (25 जून 2019)

5. डॉ. अजय कुमार : *दलित अस्मितावादी इतिहास लेखनः वैकल्पिक अधीनस्थ समाजशास्त्र की तलाश में (एक समीक्षात्मक मूल्यांकन)* (01 अगस्त 2019) (प्रारूप)

6. डॉ. देबजानी हलदर : *आर्ट–आर्टिस्ट एंड सोशल लाइफ : ए क्रिटिकल लुक इन इंडियन पैरेलल सिनेमा (1950–1980)* (11 सितंबर 2019)

8. डॉ मनीषा चौधरी : *द हिस्ट्री ऑफ थार : इन्वायन्मेंट, कल्चर एण्ड सोसायटी* (07 नवंबर 2019)

9. प्रोफेसर रेखा चौधरी : *सोशल डाइवर्सिटी एण्ड पॉलिटिकल डाइवर्जेंस इन जम्मू एण्ड कश्मीर : आइडेंटिफाइंग द कम्प्लेग्जिटी ऑफ कन्फिलिटिक सिचुएशन एण्ड द फार्मेट फॉर इटस रेजल्यूशन* (26 नवंबर 2019)

10. डॉ मैथ्यू अक्कनद वर्गीस : *ग्लोबलाइजिंग स्टेटस : द मैटफोर फरॉम इकॉलॉजीस इन द मेकिंग* (20 जनवरी 2020)

11. डॉ. करिश्मा के. लेप्चा : *रिलिजन, कल्चर एण्ड आइडेंटिडी ऑफ द लेप्चा इप ईस्टर्न हिमालया* (15 जनवरी 2020)

12. श्री आशुतोष भारद्वाज : *द एनकाउंटर ऑफ द इंडियन नॉवेल विद मॉडर्निटी एंड नेशनलिज्म एज़ रिफ्लेक्टेड थ्रू इट्स वुमन कैरेक्टर्स/द जेंडर पॉलिटिक्स ऑफ द इंडियन नॉवेल* (31 जनवरी 2020)

13. प्रोफेसर अनीता सिंह : *स्टेजिंग फेमिनिजमस : जेण्डर, वायलेंस एण्ड परफॉर्मेंस इन कंटेम्परेरी इण्डिया* (26 फरवरी 2020)

14. डॉ. बिंदु साहनी : *शिवालिक एरॉजन एण्ड पैस्टोरेलिस्टस गुज्जर ऑफ हिमाचल प्रदेश : ए स्टडी इन द लाइट ऑफ कलोनिअल पॉलिसीस इन द रीज़न* (05 मार्च 2020)

15. प्रोफेसर रमेश चंद्र प्रधान : *फरॉम माइंड टू सुपरमाइंड : इन सर्च ऑफ ए मेटाफिजिक्स ऑफ कॉन्शियसनेस* (08 मार्च 2020)

16. डॉ. रमा शंकर सिंह : *नेचुरल रिसोर्सिस एण्ड मार्जिनल कम्युनिटीस : सोशल एण्ड कल्चरल सिम्बायोसिस ऑफ रीवर्स एण्ड निषादस इन प्री–कलोनिअल इण्डिया* (08 मार्च 2020)

17. डॉ सुतापा दत्ता : *डिसिप्लिंड सब्जैक्टस : एजुकेशन एण्ड सब्जैक्टिविटी इन कलोनिअल बंगाल* (17 मार्च 2020)

18. प्रोफेसर सुजाता पटेल : *सोसीआलजी इन इण्डिया : इट्स डिसिप्लीनरी हिस्ट्री* (23 मार्च 2020)

19. प्रोफेसर मुंडोली नारायणन : *स्पेस, टाइम एण्ड वेस ऑफ सीइंग इन परफॉर्मेंस : ए स्टडी ऑफ कुटियाट्टम, द ट्रेडिशन संस्कृत थिएटर ऑ केराला* (31 मार्च 2020)

विशिष्ट व्याख्यान शृंखला

1. श्री संजीव सान्याल ने 1 अप्रैल 2019 को *हीरोइक हिस्ट्रीस : द फॉर्गेटन रेवल्यूशनरीस ऑफ इण्डिया एण्ड देयर कंट्रीब्यूशन टू द फ्रीडम स्ट्रगल* विषय पर व्याख्यान दिया।

2. प्रोफेसर आदरणीय समधोंग रिनपोछे ने 22 अप्रैल 2019 (सोमवार) को *द पावर ऑफ धर्मा इन कंटेम्परेरी वर्ल्ड* विषय पर व्याख्यान दिया।

3. श्री विवेक अग्निहोत्री, भारतीय फिल्म निर्देशक, निर्माता और पटकथा लेखक ने 22 जून 2019 को *आर्ट एण्ड ट्रुथ* विषय पर एक व्याख्यान दिया और फिल्म *द ताशकंद फाइल्स* का प्रदर्शन किया।

4. दिल्ली विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के पूर्व प्रोफेसर प्रोफेसर हरीश त्रिवेदी ने 8 जुलाई 2019 को *लोकेटिंग किप्लिंग इन इण्डिया– इन शिमला, लाहौर इलाहबाद, बॉम्बे एण्ड राजस्थान* विषय पर व्याख्यान दिया।

5. प्रोफेसर भूषण पटवर्धन, उपाध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने 14 अगस्त 2019 को *हाउ टू इम्प्रूव रिसर्च एण्ड पब्लिकेशन स्टैण्डर्डस इन इण्डिया : ए यूजीसी परस्पैक्टिव* विषय पर व्याख्यान दिया।

6. डॉ. संजीव चोपड़ा, निदेशक, लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी (एलबीएसएनएए), मसूरी ने 26 सितंबर 2019 को *सरदार पटेल एण्ड मेकिंग ऑफ इण्डियन एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विसिस* विषय पर व्याख्यान दिया।

7. लेफ्टिनेंट जनरल सैयद अता हसनैन, (सेवानिवृत्त) पीवीएसएम, यूवाईएसएम, एवीएसएम, एसएम, वीएसएम और बार ने 1 अक्तूबर 2019 को *महात्मा गाँधी, जम्मू एण्ड कश्मीर एण्ड नेशनल इंटेग्रेशन* विषय पर व्याख्यान दिया।

बेस्ट माइंड्स ऑफ़ इंडिया शृंखला

1. बेस्ट माइंड्स ऑफ़ इंडिया व्याख्यान शृंखला के अंतर्गत भारतीय सांस्कृतिक परिषद के अध्यक्ष, सांसद एवं भाजपा के उपाध्यक्ष डॉ. विनय सहस्रबुद्धे ने 17 जून 2019 को *बियॉंड पॉपुलिज़्म : डेसिफेरिंग द 2019 इलैक्टरल वर्डिक्ट* विषय पर उद्घाटन व्याख्यान दिया।

2. श्री अदूर गोपालकृष्णन (भारत के सबसे प्रशंसित फिल्म निर्माताओं में से एक) ने निम्नलिखित फिल्मों की स्क्रीनिंग की–

   - एलीपथायम (27 जून, 2019)
   - मथिलुकल (28 जून 2019)
   - विधेयं (01 जुलाई 2019)
   - कथापुरुषन (02 जुलाई 2019)

अतिथि प्राध्यापक

1. प्रोफेसर सुधीर चंद्र, प्रसिद्ध इतिहासकार और गांधीवादी विद्वान ने निम्नलिखित विषयों पर व्याख्यान दिए–
   - *रिजेक्शन ऑफ द इण्डिया ऑफ गाँधीज ड्रीम* (29 मार्च 2019)
   - *पार्टीशन एण्ड इट्स आफ्टरमैथ* (3 अप्रैल 2019)
   - *नॉन–वायलेंस : द इम्पॉसिब्लिटी पॉसिब्लिटी ऑफ एन अर्जेंट इम्पेरेटिव* (9 अप्रैल 2019)
2. प्रोफेसर लीना अब्राहम, प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, सेंटर फॉर स्टडीज इन सोशियोलॉजी ऑफ एजुकेशन, टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज, देवनार, मुंबई ने निम्नलिखित व्याख्यान दिए–
   - *फेमिनाइजिंग ऑफ ए मेडिकल फील्ड : डिवेलप्मेंटस इन ट्वेंटीथ सेंचरी आयुर्वेदा* (16 अप्रैल 2019)
   - *टूवर्डस ए कॉस्मोपोलिटन आयुर्वेदा कंट्रीब्यूशनस ऑफ वुमेन आयुर्वेदा फिजिशनस* (26 अप्रैल 2019)
   - *ग्लोबलाइजेशन ऑफ ए रीज़नल मेडिसिन : डिवेल्पमेंटस इन आयुर्वेदो इन केरला* (3 मई 2019)
3. डॉ. एच.एस. गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) से पधारे प्रोफेसर अंबिका दत्ता शर्मा, दर्शनशास्त्र विभाग, ने निम्नलिखित विषय पर तीन व्याख्यान दिए–
   - *भारतीय ज्ञान का वि–औपनिवेशिकरण : प्रमाणिक संस्कृतात्म के प्रत्याभिज्ञान की कार्ययोजना* (10, 14 और 19 जून, 2019)
4. प्रोफेसर एचआर मीरा, एनआईएएस, बैंगलोर ने निम्नलिखित व्याख्यान दिए–
   - *रेलवेंस ऑफ व्यंजना इन कंटेम्परेरी लिंग्विस्टिक स्टडीज* (18 नवंबर 2019)
   - *द स्पैक्ट्रम ऑफ नॉन–लिटरल यूजिस एज सीन इन शास्त्रिक फ्रेमवर्क* (22 नवंबर 2019)
   - *कांटेक्स्ट एण्ड व्यंजना* (03 दिसंबर 2019)
5. अर्थशास्त्र एवं व्यवसाय प्रशासन के संकाय, लीपज़िग विश्वविद्यालय, जर्मनी से पधारे अर्थशास्त्र के प्राध्यापक, प्रोफेसर डॉ. हेराल्ड विसे ने निम्नलिखित व्याख्यान प्रस्तुत किया–
   - *प्री–मॉडरन इण्डियन परस्पैक्टिवस ऑन गिविंग, गिफ्टिंग एण्ड सैक्रीफाइस : द किंग* (16 मार्च 2020)

अतिथि विद्वान

संस्थान में अतिथि विद्वानों की श्रेणी है जिसके तहत प्रतिष्ठित विद्वानों को एक सप्ताह के लिए आमंत्रित किया जाता है। वे अपनी पसंद के विषय पर व्याख्यान देते हैं। प्रतिवेदन अवधि के दौरान, पधारे अतिथि विद्वानों तथा उनके द्वारा दिए गए व्याख्यानों का विवरण निम्न प्रकार है–

1. श्रीमती स्मिता बरूआ ने 02 अप्रैल 2019 को *यूथ एण्ड एडिक्शन* विषय पर वार्ता प्रस्तुत की।
2. डॉ. गोपाल कृष्ण शाह, सहायक प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने 8 अप्रैल 2019 को *टाइम थीअरी इन इण्डिन रागा* विषय पर प्रस्तुति सहित व्याख्यान दिया।
3. डॉ. आशिमा सूद, फेलो, सेंटर फॉर लर्निंग एंड मैनेजमेंट प्रैक्टिस, इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस, हैदराबाद ने 30 अप्रैल 2019 को *स्पैकुलेटिंग अर्बनाइजेशन इन इण्डिया* विषय पर व्याख्यान दिया।

4. नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकाल, नई दिल्ली में वरिष्ठ अध्येता डॉ. नंदिनी भट्टाचार्य पांडा ने 14 मई 2019 को *कलोनाइजेशन ऑफ 'लॉ' इन नॉर्थईस्ट इण्डिया : ट्रेडिशन, कस्टम एण्ड एम्पायर* विषय पर व्याख्यान दिया।

5. भारतीय विज्ञान शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, मोहाली में पोस्ट–डॉक्टोरल फेलो (एनपीडीएफ) डॉ. जयंत दत्ता ने 17 मई 2019 को *द इवाल्यूशन ऑफ अवर यूनिवर्स फरॉम बिग बैंग (एन इंट्रोडक्शन टू फर्स्ट सोर्स ऑफ लाइट इन द यूनिवर्स)*

6. गांधी रिसर्च फाउंडेशन, जलगांव, महाराष्ट्र में डीन ऑफ रिसर्च प्रोफेसर गीता धर्मपाल, ने 27 मई 2019 को *महात्मा गाँधी एण्ड इस्लाम : एन रिलेशनशिप बाई एफिनिटी, फासिनेशन, क्राइसिस एण्ड रैप्चर* विषय पर व्याख्यान दिया।

7. कैलिफोर्निया स्टेट यूनिवर्सिटी, फ्रेस्नो के दर्शनशास्त्र विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. वीना आर. हॉवर्ड ने 31 मई को *क्वीन गांधारीज मैपिंग द बैटलफील्ड थ्रू द ''डिवाइन आई'' शिफ्टिंग द गेज फरॉम मैसकुलिन वरिलिटी टू फेमिनन वल्नेरबिलिटी* विषय पर व्याख्यान दिया।

8. रॉकफेलर यूनिवर्सिटी, न्यूयॉर्क में स्वतंत्र अध्येता डॉ. आर्किशमैन राजू ने 25 जून 2019 को *गांधी मस्ट फॉलरू एन एफ्रो–अमेरिकन पर्सपेक्टिव* विषय पर व्याख्यान दिया।

9. स्कूल ऑफ कम्युनिकेशन, क्लीवलैंड स्टेट यूनिवर्सिटी, क्लीवलैंड में एसोसिएट प्रोफेसर, डॉ. अनूप कुमार, ने 5 जुलाई 2019 को *पॉपुलिजम एज ए पॉलिटिकल प्रैक्टिस : इट इज नॉट कंटेंट, बट रिपेरटरी दैट यूनाइटस शैडस ऑफ पॉपुलिजम* विषय पर व्याख्यान दिया।

10. हैदराबाद विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग में सहायक प्रोफेसर, डॉ. वी.जे. वर्गीज ने *मेकिंग एण्ड अनमेकिंग ऑफ ए कुटियाट्टक्करन : कल्चरल रिप्रेजेंटेशनस एण्ड माइग्रेंट सब्जैक्टिविटी इन केरला* विषय पर व्याख्यान दिया।

11. दयाल सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग में सहायक प्रोफेसर डॉ. कमल नयन चौबे ने 5 अगस्त 2019 को *द फारेस्ट ट्राइबल लाइफ एण्ड इंट्रीकेट लीगल स्ट्रक्चर : फरॉम सब्जैक्टहुड टू क्वेस्ट फॉर जस्टिस एण्ड सिटिजनशिप राइट्स* विषय पर व्याख्यान दिया।

11. फायरफ्लाइज आश्रम के संस्थापक श्री सिद्धार्थ ने 16 अगस्त 2019 को *इको–स्प्रिचुअलिटी, फूड सोवरेंटी एण्ड क्लाइमेट जस्टिस* विषय पर व्याख्यान दिया।

12. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर में मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग में प्रोफेसर नचिकेता तिवारी ने 13 सितंबर 2019 को *मैथमेटिकल रिलेशनशिपस बिटवीन पाणीनिज कन्सोनेंटस* विषय पर व्याख्यान दिया।

13. दर्शनशास्त्र विभाग, रामकृष्ण मिशन विवेकानंद शैक्षिक और अनुसंधान संस्थान, बेलूर से पधारे श्री अयोन महाराज, ने 21 अक्तूबर 2019 को *स्वामी विवेकानंदाज रिकन्सेप्चुलाइजेशन ऑफ अद्वैता वेदांता इन द लाइट ऑफ श्री रामकृष्णा* विषय पर व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान के दौरान लेफ्टिनेंट जनरल केजे सिंह, राज्य सूचना आयुक्त, पंजाब विशिष्ट अतिथि थे।

14. मद्रास इन्स्टिट्यूट ऑफ डिवेल्पमेंट स्टडीज से आए प्रोफेसर अनंत गिरि ने 2 दिसंबर 2019 को *सोशल साइंसिस एण्ड रीजनल इमेजिनेशन ऑफ इण्डिया : सोशल थीअरी, एशियन डायलॉग एण्ड प्लेनेटरी कन्वर्सेशनस* विषय पर व्याख्यान दिया।

सह–अध्येता (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के तहत अंतर–विश्वविद्यालय केन्द्र – आईयूसी)

प्रतिवेदनाधीन अवधि के दौरान आईयूसी सह–अध्येताओं द्वारा निम्नलिखित प्रस्तुतियां दी गईं–

मई 2019

1. डॉ. डी. सुरेंद्र नाइक : *जोतिराव फुले : ए रेडिकल रिफॉर्मर* (24.05.2019)
2. डॉ. अमरेंद्र दास : *रेटरिक, आइडिआलजी एण्ड फ्रेम्स इन कॉरपोरेट बर्सेस ब्लेम–कॉर्पोरेट सस्टेनेबिलिटी कम्युनिकेशन* (24.05.2019)
3. डॉ. सुबिज्ञान गड़तिया : *स्क्वेर रूट फार्मूला इन द सल्बसूत्रास* (24.05.2019)
4. डॉ. मृदुला शारदा : *ट्राइबल इश्यूज ऑफ इण्डिया : विद स्पेशल रेफरेंस टू हिमाचल प्रदेश* (24.05.2019)
5. डॉ. राधामणि सी. : *हिंदी और मलयालम कहानियों में अभिव्यक्त ट्रांसजेंडरों की समस्याएँ* (27.05.2019)
6. डॉ. मौसमी गुहा बनर्जी : *गीतांजलि : एन एग्जाल्टिड मैनिफेस्टेशन ऑफ बुद्धिस्ट एस्थेटिक्स, द सेक्शन : बुद्धिस्टि एस्थेटिक्स, मॉडरन इण्डियन लिटरेचर, मॉडरन बंगाली लिटरेचर एण्ड द एस्थेट रवींद्रनाथ* (27.05.2019)
7. डॉ. रिचर्ड रेगो : *सोशल मीडिया रिलेशनशिप : इफैक्टस ऑफ व्हाट्सएप यूज ऑफ सोशल रिलेशनस* (28.05.2019)
8. डॉ. अंतरा चटर्जी : *री–इमेजिनिंग कश्मीर : वायलेंस, ट्रॉमा एंड अल्टरनेटिव स्टोरीटेलिंग इन मलिक सज्जादज मुन्नू : ए बॉय फ्रॉम कश्मीर* (28.05.2019)
9. डॉ. उमेश भारते : *ए साइकलॉजिकल लुक एट कलोनिअलिजम* (29.05.2019)
10. डॉ. विल्बर गोंसाल्वेस : *लोकेटिंग एन्नीहिलेशलन एंग्जाइटी इन द साइकोसोशल एस्पैक्टस ऑफ फिजिकल डिसेबिलिटी* (29.05.2019)
11. डॉ. गिरीश चंद्र पांडेय : *पापुलर प्रोटेस्टस, मेमोरीस एण्ड द हिस्ट्री ऑफ बनारस ऑफ एटींथ एण्ड नाइनटींथ सेंचरीस* (29.05.2019)

जून

1. डॉ राजेश कुमार : *फोकलोरस ऑफ संथालस : कंटेक्स्चुअलाइजिंग फोक डांस–साँगस (डॉन सेरेन) एण्ड कल्चर* (21 जून 2019)
2. डॉ बसवराज तल्लूर : *द कॉन्सेप्ट ऑफ गॉड इन द वचनास ऑफ बसवन्ना* (21 जून 2019)
3. डॉ. पायल दत्ता चौधरी : *द बिलीफ इन द 'टाइगर–सोल' अमंग द नागास : टैक्स्टस एण्ड कंटैक्स्टस* (21 जून 2019)
4. डॉ. दशरथ : *कंस्ट्रक्टिंग जेंडर : ए स्टडी ऑफ मंजुला पद्मनाभनज लाइट्स आउट एण्ड गुरुचरण दास मीरा* (21 जून 2019)
5. डॉ. जगदीश कौर : *ट्रेडिशन ऑफ हाइकू पोइट्री एण्ड हाइकू इन पंजाबी* (21 जून 2019)
6. प्रोफेसर शैलजा बी. वाडीकर : *फेमनिन सेन्सिबिलिटी इन विजय तेंदुलकरज कमला* (24 जून 2019)
7. डॉ. दुर्गेश भाऊसाहेब रवंडे : *द प्ले ऑफ टैगोर : ए रिपोजिटरी ऑफ सिंबल (विद स्पेशन रेफरेंस टू द पोस्ट ऑफिस एण्ड मुक्ताधारा)* (24 जून 2019)

8. डॉ. विश्वधर आर. देशमुख : *द फेसेटस ऑफ इण्डियननेस इन इण्डियन लिटरेचर (विद स्पेशन रेफरेंस टू द सिलेक्ट इण्डियन राइटिंगस)* (24 जून 2019)

9. डॉ. विशाल देव : *इम्पैक्ट ऑफ मार्केट लिबरलाइजेशन ऑन इन्वायरन्मेंट इन इण्डिया : ए डेटा बेसड असैसमेंट* (24 जून 2019)

10. डॉ. कविता बी. हरिहर : *एक्स्प्लोरिंग 'एथिकल वैल्यूस' इन चार्ल्स डिकेंसज नावेल– डेविड कॉपरफील्ड* (24 जून 2019)

11. डॉ. सकून : *ए मेम इन ए ग्रीनरूमस ऑफ लाहौर : एन इवैल्यूशन ऑफ नोरा रिचर्ड्स कंट्रीब्यूशन टू मॉडरन पंजाबी थिएटर* (25 जून 2019)

12. डॉ. बिनुमोल अब्राहम : *लाफ्टर ऐज़ क्रिटिक : मैट्रीलिनी एण्ड इट्स डिस्कॉंटेटस इन कलोनिअल केरला* (25 जून 2019)

13. डॉ. रंजना कृष्णा : *हरसेल्फ डिफाइंड : द रेटरिक ऑफ इमेजिज्म* (25 जून 2019)

14. प्रोफेसर पूनम प्रकाश : *रोल ऑफ सिटी प्लानिंग इन मेकिंग द मॉडरन नेशन* (25 जून 2019)

15. डॉ. वीरेंद्र सिंह ढिल्लों : *ट्रेडिशन वर्सेज मॉडरनिटी : गाँधी एण्ड नेहरू ऑन टैक्नॉलजी फॉर रूरल डिवेलप्मेंट* (25 जून 2019)

16. डॉ. गार्गी भट्टाचार्य : *टू रिमूव ऑल लीगल ऑब्स्टैक्लस टू द मैरिज ऑफ हिंदू विडोज : एसास्ट्रिक डिबेट इन नाइनटींथ सेंचरी कलोनिअल बंगाल* (26 जून 2019)

17. डॉ. राजेंद्र बंडू शेजुल : *द 'ड्रीम इंडिया' ऑफ कस्टिटूशन मेकरस* (26 जून 2019)

18. डॉ. बृजेंद्र पांडे : *ट्रेडिशनल वर्ल–व्यू, इण्डियन ट्रेडिशन और अम्बेडकर : कंटिन्यूनिटी एण्ड डिसकंटिन्यूनिटी* (26 जून 2019)

19. अनिल कुमार तिवारी : *उदयनाचार्य ऑन बुद्धिस्ट डॉक्टराइन ऑफ मोमेंटरीनेस* (26 जून 2019)

20. डॉ. विजय साहेबराव कदम : *अंडरस्टैण्डिंग द 'डिसेबिलिटी' इन इण्डिया* (26 जून 2019)

जुलाई

1. डॉ. संजय स्वामी : *ऑर्गेनिक फार्मिंग : एन इको–फ्रेंडली सस्टेनेबल प्रोडक्शन* (25 जुलाई 2019)

2. डॉ. इंदु स्वामी : *#मी टू – सैड मदर नेचर : एनालाइजिंग इंटरक्नैक्शन बिटवीन वूमन एण्ड नेचर एक्स्प्लॉइटेशन* (25 जुलाई 2019)

3. डॉ. देवर्षि भट्टाचार्य : *स्टडी ऑन इम्पैक्ट ऑफ प्रेजेंस ऑफ एन ओपन बाउंडरी फॉरेन इन्क्लेव एण्ड ए 24–आवर ओपन कॉरिडोर फॉर फॉरेनरस इन्साइड इण्डियन टेरटरी* (25 जुलाई 2019)

4. डॉ. मदन लाल : *स्पेशल एनालसिस ऑफ वाटर सप्लाई सिस्टम ऑफ शिमला सिटी* (25 जुलाई 2019)

5. डॉ. देव नाथ पाठक : *आर्ट ऑफ डाइंग इन मैथिली फोक फिलॉसफी : मीनिंगस, मैटफोरस एण्ड व्हाट एक्चुअली मैटरस* (25 जुलाई 2019)

अगस्त

1. प्रोफेसर पुष्पम नारायण : *बिहार के व्यवसाय अथवा क्रिया गीतों का संरक्षण एवं संवर्द्धन* (28 अगस्त 2019)
2. डॉ. उमेश कुमार : *भारतीय लोक चित्रकलाओं में पर्यावरण की अपरिहार्यता* (28 अगस्त 2019)
3. डॉ. सपना संजय पंडित : *नेगोशिएटिंग द सबाल्टर्न स्पेस : रोहिंटन मिस्त्रीतज ए फाइन बैलेंस* (28 अगस्त 2019)
4. डॉ. एस. चिन्ना रेड्डैया : *स्पोर्टस एण्ड फिजिकल रिक्रिएशनस इन तेलुगु लिटरेचर (11थ सेंचरी टू 19थ सेंचरी)* (28 अगस्त 2019)
5. प्रोफेसर के. शारदा : *जैन सीर्स रिफ्लेक्शन ऑफ डेथ* (28 अगस्त 2019)
6. डॉ. सुनीला शर्मा : *लिंग्विस्टिक सर्वेस इन इण्डिया : ए स्टडी ऑफ पास्ट एण्ड प्रेजेंट* (29 अगस्त 2019)
7. डॉ विनोद कुमार विश्वकर्मा : *उत्तर आधनिक विमर्शों का सामाजिक प्ररिप्रेक्ष्य* (29 अगस्त 2019)

सितंबर

1. प्रोफेसर पदम कुमार जैन : *अंडरस्टैण्डिग महेश दत्तानीज प्ले तारा* (26 सितंबर 2019)
2. प्रोफेसर बहादुर सिंह परमार : *बुंदेली लोक साहित्य और महात्मा गाँधी* (26 सितंबर 2019)
3. डॉ. अनीता नायर : *मलयालम सिनेमा में स्त्री–संचेतनाः परिणयम के विशेष संदर्भ में* (26 सितंबर 2019)
4. डॉ. राजेश्वर प्रसाद यादव : *भगवद्गीता में योग के स्वरूप का सामाजिक यथार्थ* (27 सितंबर 2019)
5. डॉ. प्रवीण कुमार अंशुमन : *रीडिंग 'भीमायणा' इन इण्डियन क्लासरूम : द टैक्स्ट एण्ड द कंटैक्स्ट* (27 सितंबर 2019)
6. डॉ. ओइंड्रिला घोष : *डिस्कवरिंग थॉमस हार्डी कॉरेस्पोंडेंटस : ए केस सलेक्ट लैटरस* (27 सितंबर 2019)
7. डॉ. रवींद्र कुमार पाठक : *हिन्दी भाषा का स्त्री–संदर्भित विवेचन* (27 सितंबर 2019)

अक्तूबर

1. डॉ. मानस घोष : *लुकिंग एट बॉडी ऑफ महात्मा गांधी (एज ए नेशनलिस्ट डिस्कोर्स) विद स्पेशल रेफरेंस टू आनंद पटवर्द्धनस फिल्मस* (30 अक्टूबर 2019)
2. डॉ. रंजन कुमार स्वैन : *वुमेन इम्पावरमेंट थ्रू सेल्फ हैल्प ग्रुप्स इन मलकानगिरी डिस्ट्रिक ऑफ उड़ीसा* (30 अक्टूबर 2019)
3. डॉ. उत्तम लाल : *ड्रैगन इन द इंडियन बॉर्डर स्टेट्स : परसेप्शन ऑफ द बॉर्डरलैंडर्स* (30 अक्टूबर 2019)
4. डॉ संदीप कुमार यादव : *तिरुवल्लुवरज एपिग्राम और टाइमज टेलीग्राम : रि–रीडिंग ऑफ तिरुक्कुरल* (30 अक्टूबर 2019)

नवंबर

1. डॉ सतप्पा लहू चव्हाण : *भाषा अध्यापन में चिट्ठाकारिता (ब्लॉगिंग) की भूमिकाः वैचारिक परिप्रेक्ष्य* (27 नवंबर 2019)
2. डॉ. कर्ण सिंह : *सिंकरेटिक स्पेस एण्ड पिलग्रीमेज : मेकिंग ऑफ नेशन* (27 नवंबर 2019)
3. डॉ. अयूब खान : *गुमशुदा व्यक्तियों के परिवारों में अभावबोध एवं आवश्यकताएं* (27 नवंबर 2019)
4. डॉ. राम भरोसे : *हिन्दी दलित पत्रकारिताः प्रासंगिकता का सवाल* (27 नवंबर 2019)
5. डॉ. भीमजी खाचरिया : *गुजरात की कंठस्थ परंपरा में भजन* (27 नवंबर 2019)
6. डॉ. नंदजी रायः *प्राचीन भारतीय यातायात में स्थों का महत्व* (27 नवंबर 2019)
7. डॉ. पांचाली मजूमदार भट्टाचार्य : *सोशलिस्ट रीयलिजम ऑन डॉग्मा : द कन्स्ट्रशन ऑफ द बेलोमोर कैनल* (27 नवंबर 2019)
8. डॉ. अनिंद्य भट्टाचार्य : *सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट– स्टेट ऑफ बंगाल सिन्स 2000* (28 नवंबर 2019)
9. डॉ. प्रभाकर्ण नायर वी.आर. : *क्रेडिट मार्केट एण्ड रूरल इन्डेबिटनेस अंडर बैंकिंग रिफॉर्म्स इन इण्डिया* (28 नवंबर 2019)
10. डॉ. निकम संदीप जयभीम : *द एलिमेंट ऑफ इण्डियननेस इन निसिम ईजेकीलज सलेक्टिड पोइम्स : ए स्टडी* (28 नवंबर 2019)

मार्च 2020

1. डॉ. सुनीता जाखड़ : *फोस्टरिंग फेस्टिनेस ऑफ फेस्टिवलस एण्ड फेयरस ऑफ राजस्थान*
2. डॉ. लीना चौहान : *कृष्णवेणी : अन्तर्यात्रा*
3. श्री माइनस मलिक : *मेनस्ट्रीम आईआर थीअरीस एण्ड इण्डियाज फॉरेन पॉलिसी : ए सोशल कन्स्ट्रक्टिव अप्रोच*
4. सुश्री सुभाश्री परिदा : *पावर ऑफ पॉलिटिक्स वर्सेस पॉलिटिक्स ऑफ पॉवर : ए स्टडी ऑफ वुमेन रिप्रेजेंटिवस इन रूरल लोकल– सेल्फ गवर्नमेंट*
5. डॉ. (कप्तान) बिष्णु देव सिंह मल्लिक : *स्थानिक संसाधनों द्वारा आपदा प्रबंधन (प्राकृतिक आपदा के संदर्भ में)*
6. डॉ. सुनेत्रा मित्रा : *डिलेमा ऑफ रिकग्निशन एण्ड डेनियल : कार्विंग देयर ओन पाथस : बंगाली एक्ट्रेसिस ऑफ कलोनिअल पब्लिक थिएटर*
7. डॉ. एस.आर. श्रीकला : *समाजशास्त्रीय दृष्टि से हिन्दी और मलयालम के चुने हुये आदिवासी उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन*
8. डॉ. नुज़हत ज़मान : *सोसिओ–इकनॉमिक स्टेटस ऑफ वर्किंग मुस्लिम वुमेन इन मध्य प्रदेश*
9. डॉ. दीपक कुमार पांडेय : *स्टेट असैम्बली रेज्यूलेशनस अगेन्स्ट सिटिजनशिप अमेंडमेंट एक्ट (सीएए) एण्ड फैडरल स्ट्रक्चर*
10. डॉ. ज्योति स्वरूप दुबे : *ओशो की नववेदी दृष्टि*

अन्य कार्यक्रम

- 02 अगस्त 2019 को 'मीडिया एण्ड द नेशन : चेंजिंग लैण्डस्कैप' विषय पर पैनल चर्चा आयोजित की गई जिसमें श्री प्रफुल्ल केतकर और श्री अरुण आनंद वार्ताकार तथा श्री संदीपन देब सभापति थे।
- भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला ने 20 अक्टूबर को पहली बार अपना स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर ग्वालियर घराने की श्रीमती नीला भागवत ने प्रस्तुति दी।

खाते और बजट

क. वित्तीय वर्ष 2019–20 के लिए संशोधित आकलन और वित्तीय वर्ष 2020–21 के बजट आकलन इस प्रकार हैं –

(राशि लाख में)

योजना का नाम	**संशोधित आकलन** 2019–20	**बजट आकलन** 2020–21
ओएच–31	1715.69	1464.20
ओएच–35	138.30	779.00
ओएच–36	708.00	619.60
कुल	**2561.99**	**2862.80**

भारतीय लेखा परीक्षा तथा लेखा विभाग, कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय) चंडीगढ़ द्वारा वर्ष 2019–20 के लिए की गई संस्थान की लेखा परीक्षा पृष्ठ 88 से पृष्ठ 132 तक संलग्न हैं।

ख. आईयूसी खाते

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञानों के लिए अंतर्विश्वविद्यालय केन्द्र (आईयूसी) योजना के खातों की लेखा परीक्षा सनदी लेखाकार मेसर्स डोगर एंड कंपनी, शिमला की एक फर्म द्वारा की जाती है। वित्तीय वर्ष 2019–20 के लिए व्यय 65.58 लाख रुपए था।

वित्तीय वर्ष 2019–20 के लिए अंतर–विश्वविद्यालय केंद्र (आईयूसी) योजना के लेखाओं का लेखापरीक्षित विवरण पृष्ठ 133 से पृष्ठ 138 तक संलग्न है।

Speed Post

भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़

Indian Audit & Accounts Department

Office of The Director General of Audit (Central), Chandigarh

सत्यमेव जयते

No: डी.जी.ए (सी)/के. व्यय/SAR/I2019-20/ 2020-21/ IIAS-S/2022-23 / 279 दिनांक: 29.4.2022

सेवा मे,

सचिव,
उच्चतर शिक्षा विभाग,
शिक्षा मंत्रालय,भारत सरकार,
नई दिल्ली – 110001

विषय: **Indian Institute of Advanced Study, Shimla के वर्ष 2019-20 एंव 2020-21 के लेखाओं पर पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन**

महोदय,

कृपया Indian Institute of Advanced Study, Shimla के वर्ष 2019-20 एंव 2020-21 के लेखाओं पर पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन (Separate Audit Report) संसद के दोनों सदनों के समक्ष प्रस्तुत करने हेतु सलंग्न पाएं | संसद में प्रस्तुत होने तक प्रतिवेदन को गोपनीय रखा जाए |

संसद में प्रस्तुत करने के उपरांत प्रतिवेदन की पांच प्रतियाँ इस कार्यालय को भी भेज दी जाएं |

कृपया इस पत्र की पावती भेजें |

भवदीय,

संलग्न: उपरोक्त अनुसार

महानिदेशक

उपरोक्त की प्रतिलिपी वर्ष 2019-20 एंव 2020-21 की पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन की प्रति सहित आवश्यक कार्यवाही हेतु The Director, Indian Institute of Advanced Study, Shimla , Square Hall, IIAS Campus, Rashtrapati Niwas, PO Summerhill, Shimla, PIN 171005 को प्रेषित की जाती है |

निदेशक (केन्द्रीय व्यय)

प्लाट न. 20-21, सेक्टर – 17 ई, चण्डीगढ़ – 160017 Plot No. 20-21, Sector-17E, Chandigarh - 160017
दूरभाष/ Tel.No. 0172 – 2782020 फैक्स/ FAX No:0172 – 2782021 / 2783974 ई-मेल/ Email: pdacchandigarh@cag.gov.in

31 मार्च, 2020 को समाप्त वर्ष के लिए, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के लेखों के बारे में भारत के नियन्त्रक–महालेखा परीक्षक की पृथक लेखा परीक्षा रिपोर्ट।

1. हमने 31 मार्च, 2020 को भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के तुलन–पत्र, तथा उस तिथि को समाप्त वर्ष आय एवं व्यय लेखा/प्रप्तियां एवं भुगतान लेखों की नियन्त्रक–महालेखा परीक्षक के (कर्तव्य, शक्तियां एवं सेवा की शर्ते) अधिनियम, 1971 की धारा 20 (1) के अन्तर्गत लेखापरीक्षा की है। यह लेखापरीक्षा 2018–19 से 2022–23 तक की अवधि के लिए सौंपी गई है। इन वित्तीय विवरणों का उत्तरदायित्व संस्थान के प्रबन्धन का है। हमारा उत्तरदायित्व हमारी लेखापरीक्षा पर आधारित इन वित्तीय विवरणों पर मत व्यक्त करना है।

2. इस पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन में केवल वर्गीकरण, उत्तम लेखाकरण प्रथाओं के साथ अनुरूपता, लेखाकरण सम्बन्धी मानकों और प्रकटन मानकों आदि के सम्बन्ध में केवल लेखाकरण व्यवहार पर नियन्त्रक–महालेखापरीक्षक (सीएजी) की टिप्पणियां शामिल हैं। कानून, नियमों एवं विनियमों (औचित्य एवं नियमितता) तथा दक्षता एवं निष्पादन आदि के पहलुओं के अनुपालन में वित्तीय लेन–देन पर लेखापरीक्षा अभ्युक्तियां आदि कोई हों तो निरीक्षण प्रतिवेदनों/भारत के नियंत्रक महा–लेखापरीक्षक के लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों के माध्यम से अलग से सूचित की गई है।

3. हमने भारत में सामान्य रूप से स्वीकार किए गए लेखापरीक्षण मानकों के अनुसार अपनी लेखापरीक्षा की है। इन मानकों में अपेक्षित है कि हम इस विषय में समुचित आश्वासन प्राप्त करने के लिए कि क्या वित्तीय विवरण मिथ्या विवरणों से मुक्त हैं, योजना बनाते हैं और लेखापरीक्षा करते हैं। लेखापरीक्षा में नमूना के आधार पर जांच करना, राशियों का समर्थन करने वाले साक्ष्यों और वित्तीय विवरणों में किए गए प्रकटन शामिल होते हैं। लेखापरीक्षा में प्रयुक्त किए गए लेखाकरण सिद्धान्तों तथा प्रबन्धन द्वारा किए गए महत्त्वपूर्ण अनुमानों के निर्धारण और वित्तीय विवरणों के समग्र प्रस्तुतीकरण का मूल्यांकन भी शामिल है। हम विश्वास करते हैं कि हमारी लेखापरीक्षा हमारे मत के लिए समुचित आधार प्रधान करती है।

4. अपनी लेखापरीक्षा के आधार पर हम रिपोर्ट करते हैं कि –

   क) हमने अपनी सर्वोतम जानकारी तथा वि वास के अनुरूप लेखापरीक्षा के उद्देश्यार्थ आवश्यक सूचनाएं और स्पष्टीकरण प्राप्त कर लिये हैं।

   ख) इस प्रतिवेदन से सम्बन्धित तुलनपत्र और आय एवं व्यय लेखा/प्राप्तियाँ एवं भुगतान भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा जारी आदेश संख्या 29–4/2012–एफडी, दिनांक 17 अप्रैल 2015 में निर्धारित प्रारूप में तैयार किया गया है।

   ग) बही–खातों का निरीक्षण करने के उपरांत हमारी राय में भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला द्वारा लेखों का अभिलेख उपयुक्त बहियों और अन्य सम्बद्ध अभिलेखों के अनुरूप किया गया है।

   घ) हम आगे रिपोर्ट करते हैं कि–

अ. तुलन पत्र

निधि के संसाधन

अ.1 संग्रह/पूंजीगत निधि (अनुसूची–1) : ₹ 25.67 करोड़

अ.1.1 निर्धारित प्रारूप के अनुसार, प्रायोजित परियोजना के तहत खरीदी गई परिसम्पतियां जिनका स्वामित्व संस्थान के पास है, उन्हें अचल परिसम्पतियों के सदृश अतिरिक्त तौर पर संग्रह/पूंजीगत निधि के तहत शामिल किया

जाना चाहिए।

लेखा टिप्पणियों (अनुसूची 24) के क्रमांक 10 में दी गई टिप्पणी का संदर्भ ग्रहण करने पर पता चलता है कि वित्त पोषित इकाई यानी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अपेक्षा के अनुरूप अंतरविश्वविद्यालय केन्द्र का पृथक तुलन–पत्र तैयार किया गया। आईयूसी निधि की अचल संपत्ति रु. 0.87 करोड़ है।

अ.1.2 वर्ष 2017–18 तथा 2018–19 की पृथक लेखा परीक्षण रिपोर्टों में निर्दिष्ट किया गया है कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रायोजित परियोजना ''मानविकी एवं सामाजिक विज्ञानों के लिए अंतर–विश्वविद्यालय केन्द्र (आइयूसी) के लिए प्राप्त अनुदान का अप्रयुक्त शेष निधि की गणना संस्थान के खाते में निर्धारित लेखा प्रारूप के तहत नहीं की गई है।

आईयूसी के तुलन–पत्र के अनुसार दिनांक 31.3.2020 को यह बकाया निधि ₹ 0.46 करोड़ थी। हालांकि बताने के वाबजूद भी संस्थान द्वारा अनुपालना नहीं की गई क्योंकि आईयूसी परियोजना की बकाया निधि को तुलन पत्र में शामिल नहीं किया गया है। फलस्वरूप चालू देयताओं तथा चालू परिसम्पतियों में ₹ 0.46 करोड़ रुपए की न्यूनोक्ति हुई है।

अ.2 नामित / निर्दिष्ट / चंदा निधि (अनुसूची 2)

पूंजीगत सहायता अनुदान : ₹ 4.79 करोड़

विगत वर्ष की पृथक लेखा परीक्षा रिपोर्ट 2018–19 की टिप्पणी संख्या अ.1.1 में यह इंगित किया गया था कि संस्थान ने अचल संपत्तियों के निर्माण के लिए उपयोग की जाने वाली 4.79 करोड़ की पूंजी अनुदान नामित निधि में रखा थी, वह निर्धारित प्रारूप निर्देशों के विपरीत था क्योंकि यूजीसी से प्राप्त अनुदान को पूंजीगत व्यय के लिए उपयोग की गई सीमा तक भारत सरकार और राज्य सरकार को कॉर्पस/पूंजीगत निधि के अंतर्गत शामिल किया जाना चाहिए। संस्थान के उत्तर के सत्यापन पर विचार करने के बाद पाया गया कि ₹4.79 करोड़ की निधि में जो 0.05 करोड़ शामिल है वह वास्तव में निर्धारित/चंदा निधि से संबंधित है और ₹4.74 करोड़ की शेष राशि को पिछले वर्ष की अलग लेखा परीक्षा रिपोर्ट में इंगित किए जाने के बावजूद अभी भी संग्रह/पूंजीगत निधि में स्थानांतरित करके सुधारा नहीं गया था। अतः संस्थान द्वारा उक्त टिप्पणी का अनुपालन नहीं किया गया। इसके परिणामस्वरूप नामित निर्धारित निधियों को अधिक बताया गया है और संग्रह/पूंजीगत निधि को 4.74 करोड़ से कम बताया गया है।

अ.3 चालू देनदारियां तथा प्रावधान (अनुसूची–3)

अ.3.1 चालू देनदारियाँ : ₹ 27.76 करोड़

अनुप्रयुक्त अनुदान : ₹ 26.08 करोड

1. निर्धारित प्रारूप (पृष्ठ 88) के अनुसार, अनुदानों से राजस्व व्यय की गणना करते समय, सेवानिवृत्ति लाभों के लिए वर्ष में किए गए वास्तविक भुगतानों को शामिल किया जाना चाहिए और सेवानिवृत्ति लाभों के लिए वर्ष में किए गए प्रावधान को इसमें शामिल नहीं किया जाना चाहिए। तथापि, यह पाया गया है कि संस्थान ने प्राप्त अनुदान में से राजस्व व्यय की गणना करते समय ₹ 5.70 करोड़ (1.53+4.17) के सेवानिवृत्ति लाभों के प्रावधान को अनुसूची 3ग में शामिल किया है। इसलिए, संस्थान ने अनुसूची–10 में, राजस्व व्यय को ₹ 25.51 करोड़ के स्थान पर 19.81 करोड़ लिया गया है। इस प्रकार, संस्थान की ओर से अप्रयुक्त धन की न्यूनोक्ति हुई और संग्रह/पूंजीगत निधि ₹ 5.70 करोड़ अधिक बताया गया ।

   इस संदर्भ में, चूंकि पिछले वर्षों से भी इस लेखांकन उपचार का पालन किया जा रहा है, इसलिए इन वर्षों में व्यय

के रूप में बुक किए गए सेवानिवृत्ति लाभों के प्रावधान की राशि की गणना की जानी चाहिए और अनुदान शेष राशि में वापिस जोड़ दिया जाना चाहिए तथा सेवानिवृत्ति लाभों के लिए किए गए वास्तविक भुगतान में कटौती की जानी चाहिए। अनुदान शेष को सही करने के लिए और खातों में आवश्यक सुधार लेखा प्रविष्टियाँ की जानी चाहिए।

2. संस्थान ने 31.03.20 को अनुसूची 10 में अनुपयोगी अनुदान राशि को ₹ 12.06 करोड़[1] के स्थान पर ₹ 5.83 करोड़ के रूप में दर्शाया है। अनुसूची 10 में 6.23 करोड़ के अंतर को ठीक करने की आवश्यकता है जिसका विवरण नीचे दिया गया है–

   - विगत वर्ष की पृथक लेखा परीक्षा रिपोर्ट के अनुसार संस्थान ने पिछले वर्ष के अंत में अप्रयुक्त शेष राशि ₹ 12.11 करोड़ के स्थान पर अनुसूची 10 में ₹ 11.58 करोड़ का प्रारंभिक शेष लिया है। इस प्रकार संस्थान ने ₹ 0.53 करोड़[2] की कम राशि ली है।
   - जैसा कि ऊपर क्र.सं. अ (.2) अ की टिप्पणी में कहा गया है कि संस्थान ने अनुदान राशि से 5.70 करोड़ का अधिक व्यय दर्ज किया। इसलिए, अनुसूची–10 में अनुदान शेष को सुधारने की आवश्यकता है।
   - ऊपर दिए गए क्रमांक अ.3.1.2 (1) और (2), की टिप्पणियों के परिणामस्वरूप अप्रयुक्त अनुदानों को कम बताया गया था और संग्रह/पूंजीगत निधि को ₹ 6.23 करोड़ से अधिक बताया गया था। इसके अलावा, अनुदान/सब्सिडी के कारण आय ₹ 5.70 करोड़ से अधिक बताई गई थी। इस संबंध में टिप्पणी को वर्ष 2019–20 की पृथक लेखा परीक्षा रिपोर्ट में भी शामिल किया गया है।

ब. सामान्य

बी.1 वार्षिक लेखों पर लेखापरीक्षा टिप्पणियों का शुद्ध प्रभाव

31 मार्च 2020 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए संस्थान के वार्षिक लेखों की लेखापरीक्षा टिप्पणियों का शुद्ध प्रभाव निम्नानुसार है–

1. परिसम्पतियों को ₹1.33 करोड़ कम बताया गया है।
2. देनदारियों को ₹1.95 करोड़ से कम बताया गया।
3. संग्रह /पूंजीगत निधि को ₹0.62 करोड़ से अधिक बताया गया। इसके अलावा, अधिशेष ₹5.70 करोड़ अधिक बताया गया है।

बी.2 प्रावधान : ₹ 6.01 करोड़

खातों के निर्धारित प्रारूप के साथ–साथ आईसीएआई द्वारा जारी लेखा मानक 15 के अनुसार, संस्थान को बीमांकिक मूल्यांकन के आधार पर सेवानिवृत्ति लाभों के लिए प्रावधान करने की आवश्यकता है।

1. क्रमांक ग पर दी गई टिप्पणी के संदर्भ में
2. वर्ष 2018–19 की पृथक लेखा परीक्षा रिपोर्ट में 0.53 करोड़ अथशेष की न्यूवता है। अनुदान (ओएच–36) के तहत न्यूनता दर्शाने के स्थान पर व्यय आंतरिक उपार्जित आय से किया जाना चाहिए था मगर संस्थान ने प्राप्त अनुदान से अधिक व्यय किया है।

वर्ष 2018–19 की पृथक लेखापरीक्षा रिपोर्ट की टिप्पणी संख्या क.1.3(1) में बताया गया कि बीमांकिक प्रतिवेदन के अनुसार सेवानिवृत्ति पेंशन, उपदान एवं अवकाश नकदीकरण की देनदारी क्रमशः ₹ 49.31 करोड़, ₹2.80 करोड़ एवं ₹2.25 करोड़ आंकी गई थी। इसकी एवज में संस्थान ने क्रमशः ₹ 0.17 करोड़, ₹ 2.78 करोड़ एवं ₹ 1.93 करोड़ का प्रावधान किया है। संस्थान को भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान द्वारा जारी खातों के साथ–साथ लेखा मानक 15 के अनुसार, बीमांकिक मूल्यांकन के आधार पर सेवानिवृत्ति लाभों के लिए प्रावधान करने की आवश्यकता है। तथापि संस्थान द्वारा इस टिप्पणी की अनुपालना नहीं की गई।

यह भी पाया गया है कि वर्ष 2019–20 के वार्षिक लेखों में इन सेवानिवृत्ति लाभों का प्रावधान निर्धारित प्रारूप और लेखा मानक 15 में निहित निर्देशों के विपरीत बीमांकिक मूल्यांकन के आधार पर अनुमान के आधार पर किया गया है।

ब.3 शिक्षा मंत्रालय द्वारा जारी का.ज्ञा. क्रमांक, एफ. नं. 19–1/2017–आईएफडी दिनांक 27 जनवरी 2022 में उल्लेख है कि वित्त मंत्रालय ने स्पष्ट किया है कि स्वायत्त निकाय, श्रम और रोजगार मंत्रालय द्वारा प्रशासित ग्रेच्युटी भुगतान अधिनियम, 1972 को अपना सकते हैं और इसके कार्यान्वयन से संबंधित मुद्दे को ग्रेच्युटी अधिनियम का भुगतान सीधे श्रम और रोजगार मंत्रालय या शिक्षा मंत्रालय के माध्यम उठाया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त एकीकृत वित्त विभाग, उच्च शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, ने सभी स्वायत्त निकायों में एक समान स्थिति सुनिश्चित करने के लिए श्रम और रोजगार मंत्रालय के वार्षिक खातों की मंजूरी के लिए एक प्रस्ताव पेश किया है।

वर्ष 2019–20के खातों में एनपीएस के तहत आने वाले कर्मचारियों को ग्रेच्युटी के संबंध में ₹ 0.36 करोड़ रुपये की राशि का संचित प्रावधान है।

हालांकि, सभी के कर्मचारियों को ग्रेच्युटी तभी दी जा सकती है, जब श्रम और रोजगार मंत्रालय द्वारा अनुमोदित किया गया हो। इसलिए, उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए, इस तथ्य का खुलासा लेखों की टिप्पणियों में किया जाना चाहिए था।

ब.4 अनुसूची–23 के अनुसार लेखा बिंदु (सी) के अनुसार मूल्यह्रास, ह्रासित मूल्य पद्धति के अनुसार प्रदान किया गया है हालांकि अनुसूची–4 के अनुसार अचल परिसंपत्तियों के एसएलएम पद्धति का वास्तव में प्रयोग किया जाता है जो कि शिक्षा मंत्रालय द्वारा निर्धारित प्रारूप के अनुसार है। इसलिए, लेखों की टिप्पणी को सही करने की आवश्यकता है।

द. सहायता अनुदान

दिनांक 31.3.2020 को संस्थान की अनुदान सहायता राशि का विवरण निम्न प्रकार है–

राशि ₹ करोड़ में

लेखा शीर्ष	वस्तुनिष्ठ शीर्ष– 31 सामान्य	वस्तुनिष्ठ शीर्ष– 35 पूंजीगत	वस्तुनिष्ठ शीर्ष– 36 वेतन	ब्याज	कुल
01.4.2019 को अथशेष	8.44	1.98	1.11	0.38	12.11
वर्ष के दौरान प्राप्त अनुदान	11.92	1.30	6.72	0.09	20.03
कुल राशि	20.36	3.28	7.83	0.47	32.14
व्यय	14.58	0.27	4.90	0.33	20.08
31.3.2020 को अप्रयुक्त बकाया राशि	5.78	3.01	2.93	0.14	12.06

स. प्रबंधकीय पत्र

लेखा परीक्षा रिपोर्ट में जिन कमियों को शामिल नहीं किया गया है, उन्हें पृथक प्रबंधन पत्र के माध्यम से संस्थान के प्रशासन के संज्ञान में सुधार/संशोधन हेतु प्रस्तुत किया गया है।

घ. पूर्ववर्ती परिच्छेदों में हमारी अभ्युक्तियों के अनुसार हम रिपोर्ट करते हैं कि इस प्रतिवेदन से सम्बन्धित तुलनपत्र और आय एवं व्यय लेखा/प्राप्तियां एवं भुगतान लेखा, लेखा–बहियों के अनुरुप हैं।

ङ. हमारी राय में और हमारी सर्वोत्तम जानकारी तथा हमें दिए गए स्पष्टीकरण के अनुसार लेखाकरण नीतियां एवं लेखाओं पर टिप्पणियों के साथ पठित तथा उपर्युक्त उल्लिखित महत्त्वपूर्ण मामलों और इस लेखापरीक्षा प्रतिवेदन के अनुबन्ध में उल्लिखित अन्य मामलों से सम्बधित उक्त वित्तीय विवरण भारत में सामान्यतः स्वीकृत लेखाकरण के सिद्धांतों के अनुरुप सही एवं उचित दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैः–

1. जहां तक 31 मार्च 2020 को भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के कार्यो के तुलन–पत्र से संबधित हैः तथा
2. जहां तक उस तिथि को समाप्त वर्ष के लिए 'घाटे' के आय एवं व्यय लेखे से संबधित है।

भारत के नियंत्रक–महालेखापरीक्षक की ओर से
हस्ता./
प्रधान निदेशक, लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)
चण्डीगढ़

स्थान : चण्डीगढ़
दिनांक : 29.4.2022

लेखा परीक्षण के साथ अनुलग्नक

(1) **आन्तरिक लेखापरीक्षा प्रणाली की पर्याप्तता**

संस्थान की आंतरिक लेखा परीक्षा सनदी लेखाकार द्वारा की गई है।

(2) **आन्तरिक नियंत्रण प्रणाली की पर्याप्तता**

क) देनदारों से बकाया राशि की पुष्टि का कोई तरीका नहीं है।

ग) उपभोग्य वस्तुओं के निश्चित स्टॉक का उच्चतम और निम्नतम स्तर का मदवार विवरण उपलब्ध नहीं करवाया गया।

(3) **अचल परिसम्पतियों का भौतिक सत्यापन**

अचल परिसम्पतियों का भौतिक सत्यापन किया गया है।

(4) **अचल परिसम्पतियों तथा वस्तु–सूचियों का भौतिक सत्यापन**

अचल परिसम्पतियों तथा वस्तु–सूचियों का भौतिक सत्यापन किया गया है।

(5) **सांविधिक देयताओं की अदायगी में नियमितता।**

संस्थान द्वारा सभी सांविधिक देयताओं को नियमित रूप से जमा करवाया गया है।

हस्ता./–
निदेशक

सुशील कुमार ठाकुर, आई.ए.ए.एस.

प्रधान–निदेशक, लेखा परीक्षा (केन्द्रीय)
चण्डीगढ़

दिनांकः 29.4.2022

प्रिय प्रोफेसर गुप्त,

31 मार्च 2020 तथा 31 मार्च 2021 को समाप्त वित्तीय वर्ष के आपके संस्थान के लेखों की लेखा परीक्षा की गई तथा की गई लेखा टिप्पणियों का उल्लेख पृथक लेखा परीक्षण रिपोर्ट में किया गया है। इस संदर्भ में आपका ध्यानाकर्षित किया जाता है कि पाई गई कमियों (वर्ष 2019–20 तथा 2020–21 के लिए क्रमशः अनुलग्नक–1 व 2 पर विस्तृत विवरण दिया गया है) को दूर करने के लिए सुधारात्मक कार्यवाही अमल में लाई जाए, जिनका पृथक लेखा परीक्षा रिपोर्ट/प्रबंधकीय पत्र (जैसा कि संलग्न अनुलग्नकों के भाग–क में संक्षिप्त किया गया है) में पुनः उल्लेख है। इसके अतिरिक्त कुछ और अन्य कमियां भी पाई गईं हैं, जिन्हें पृथक लेखा परीक्षा रिपोर्ट में शामिल नहीं किया गया है (अनुलग्नक के भाग–ख में विवरण है), मगर जिन्हें दूर करना अनिवार्य है। उन्हें दूर करने की ओर भी आपका ध्यान आकर्षित किया जाता है।

आपसे अनुरोध है कि इस दिशा में सुधारात्मक प्रयास किए जाने हेतु निर्देश जारी करें।

सादर,

भवदीय
हस्ता.
(सुशील कुमार ठाकुर)

प्रोफेसर चमन लाल गुप्त
निदेशक
भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला–171005

प्रबंधकीय पत्र के साथ अनुलग्नक (वर्ष 2019–20 के लिए)

भाग–क) पृथक लेखा परीक्षा रिपोर्ट में सम्मिलित स्थाई अनियमितताएं।

विगत वर्ष की पृथक लेखा परीक्षा रिपोर्ट में दी गई निम्मलिखित टिप्पणियों के संदर्भ में अनुपालना नहीं की गई थी। क्योंकि इन टिप्पणियों की अनुपालना नहीं की गई, इसलिए वर्ष 2019–20 की पृथक लेखा परीक्षा रिपोर्ट में उन टिप्पणियों की निम्न प्रकार से पुरावर्ती की गई है (कृपया पृथक लेखा परीक्षण रिपोर्ट देखें) –

क.1 मानविकी एवं सामाजिक विज्ञानों के लिए अंतर्विश्वविद्यालय केन्द्र (आईयूसी) के अनुदान का वार्षिक लेखों में लेखांकन नहीं किया गया है।

(पृथक लेखा परीक्षा रिपोर्ट 2019–20 की टिप्पणी संख्या क.1.1 तथा क.1.2)

(पृथक लेखा परीक्षा रिपोर्ट 2018–19 की टिप्पणी संख्या क.1.2.1)

(पृथक लेखा परीक्षा रिपोर्ट 2017–18 की टिप्पणी संख्या क.)

क.2 सेवानिवृति लाभों का बीमांकिक मूल्यांकनों के आधार पर गैर–प्रावधान

(पृथक लेखा परीक्षा रिपोर्ट 2019–20 की टिप्पणी संख्या क.3.2)

(पृथक लेखा परीक्षा रिपोर्ट 2018–19 की टिप्पणी संख्या क.1.3)

(पृथक लेखा परीक्षा रिपोर्ट 2017–18 की टिप्पणी संख्या ख.6)

क.3 रु. 4.79 करोड़ की पूंजीगत अनुदान राशि को स्थिर परिसम्पतियों के अर्जन के लिए प्रयोग किया संग्रह/पूंजीगत निधि के स्थान पर निर्दिष्ट निधि में किया गया।

(पृथक लेखा परीक्षा रिपोर्ट 2019–20 की टिप्पणी संख्या क.2)

(पृथक लेखा परीक्षा रिपोर्ट 2018–19 की टिप्पणी संख्या क.1.1)

भाग–2 : वर्ष 2019–20 के दौरान संस्थान के वर्षिक खातों में पाई गई अनियमितताएं, जिन्हें पृथक लेखा परीक्षा रिपोर्ट में सम्मिलित नहीं किया गया है।

ख. तुलन पत्र

ख.1 निधियों के संसाधन

चालू देनदारियां तथा प्रावधान (अनुसूची–3)

चालू देनदारिया : रु. 2776.46 लाख

संस्थान को शिक्षा मंत्रालय द्वारा रु. 1,000/– तथा रु. 500/– के मासिक किराए पर क्रमशः भवन तथा फर्नीचर आवंटित किए गए हैं, जिसका वर्ष 2019–20 के किराए का भुगतान उस वर्ष न कर वर्ष 2020–21 में किया गया। चूंकि 2019–20 में किराए का भुगतान नहीं किया गया था, उसी राशि के लिए 0.18 लाख रुपये की देनदारी वार्षिक खातों में दर्ज की जानी चाहिए थी। फलस्वरूप रु. 0.18 लाख की व्यय तथा चालू देनदारियों की न्यूनोक्ति हुई है।

ख.2 आय तथा व्यय लेखा

आय

अन्य आय : रु. 67.93 लाख

रिलायंस जियो इन्फरैटल प्रा.लि.को संस्थान परिसर में रु. 25,000/–के मासिक किराए/शुल्क के आधार पर 25 फरवरी 2019 से 24 फरवरी 2021 तक दूरसंचार उपकरण स्थापित करने की अनुमति दी गई थी। 25 फरवरी 2021 से 31 मार्च 2021 तक इसे 10 प्रतिशत वृद्धि यानी रु. 27500/– प्रतिमाह की दर से बढ़ाया गया। रिलायंस जियो इन्फरैटल प्रा.लि. ने अनुबंध के आधार पर फरवरी 2019 में अपने उपकरण स्थापित किए तथा दिनांक 14.1.2020 को यानी 25 फरवरी 2019 से 25 फरवरी 2021 तक 12 महीनों का रु 6.00 लाख किराया/शुल्क जमा करवाया।

मार्च 2020 तक प्राप्त राशि को आय के रूप में जमा किया जाना चाहिए था और शेष राशि को अग्रिम प्राप्ति के तौर पर माना जाना चाहिए था। मगर संस्थान ने प्राप्त कुल राशि रु. 6.00 लाख को वर्ष 2019–20 के दौरान आय के तौर पर माना। जिसके परिणामस्वरूप 01 अप्रैल 2020 से 24 फरवरी 2021 की अवधि के दौरान रु. 2.71 लाख की आय में अधिकता हुई तथा चालू देनदारियों में न्यूनोक्ति हुई।

ख.3 संस्थान के बचत खाते में रु. 417.28 लाख का नकद तथा बैंक शेष जिसमें रु. 0.33 लाख तथा रु. 0.30 सम्मिलित है संस्थान ने इसका कोई अभिलेख उपलब्ध नहीं करवाया। इस बारे में संस्थान द्वारा सूचित किया गया है कि यह राशि वर्ष 1975–76 से चली आ रही है, जिसका अभिलेख नष्ट हो गया है। जैसा कि यह राशि 1975–76 से बकाया है और इसके बारे में सूचित किया गया कि संबंधित अभिलेख मिल नहीं रहा है/नष्ट हो गया है तो संस्थान का प्रबंधन इन परिसम्पतियों को बट्टे में डालने पर विचार कर सकता है।

हस्ता./–
निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

तुलन-पत्र (31 मार्च, 2020)

राशि (रु./पै. में)

निधि के स्त्रोत	अनुसूची	चालू वर्ष 2019–20	विगत वर्ष 2018–19
संग्रह/पूंजीगत निधि	1	25,66,82,769.70	25,04,29,917.80
निर्दिष्ट/निश्चित/चंदा निधि	2	4,84,22,659.74	4,79,13,915.74
चालू देनदारियां तथा प्रावधान	3	33,77,04,317.05	36,10,05,188.79
कुल	कुल	64,28,09,746.49	65,93,49,022.33
निधियों की प्रयुक्ति	अनुसूची	चालू वर्ष 2019–20	विगत वर्ष 2018–19
स्थाई परिसंपत्तियां			
भौतिक परिसंपत्तियां	4	21,59,08,633.47	21,79,86,224.47
अभौतिक परिसंपत्तियां	4	8,564.00	14,273.00
पूंजी कार्य प्रगति पर		-	-
निश्चित/चंदा निधि से निवेश	5	-	-
दीर्घावधि		-	-
अन्य निवेश	6	-	-
चालू परिसंपत्तियां	7	31,60,88,135.02	31,01,30,244.86
ऋण, अग्रिम तथा जमा	8	11,08,04,414.00	13,12,18,280.00
कुल		64,28,09,746.49	65,93,49,022.33
महत्त्वपूर्ण लेखा पद्धतियां	23	-	-
संभाव्य देनदारियां तथा लेखाओं बारे में टिप्पणी	24	-	-

हस्ता./–	हस्ता./–	हस्ता./–
(राकेश कुमार शर्मा)	(कर्नल विजय तिवारी)	(मकरंद आर. परांजपे)
लेखा अधिकारी	सचिव	निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

31 मार्च 2020 को समाप्त वित्तीय वर्ष का आय–व्यय लेखा

राशि (रु./पै. में)

विवरण	अनुसूची	चालू वर्ष 2019–20	विगत वर्ष 2018–19
आय	9	-	-
अकादमिक प्राप्तियां	10	25,50,73,813.49	17,40,26,723.27
अनुदान/आर्थिक सहायता	11	-	-
निवेश से आय	12	-	-
अर्जित ब्याज	13	67,93,207.90	93,41,985.72
पूर्वावधि आय	14	-	-
पूंजीगत अनुदान सहायता को हस्तांतरित मूल्य ह्रास		-	43,56,080.00
कुल (क)		**26,18,67,021.39**	**18,77,24,788.99**
व्यय			
स्टाफ का भुगतान तथा लाभ	15	12,94,80,301.75	8,97,49,941.00
अकादमिक व्यय	16	3,95,12,202.00	3,34,89,867.20
प्रशासनिक तथा सामान्य व्यय	17	1,54,34,156.09	1,86,45,049.99
यातायात व्यय	18	4,17,808.00	3,97,765.00
मरम्मत और रखरखाव	19	7,16,06,321.50	3,17,02,705.18
वित्तीय लागतें	20	32,66,505.15	2,722.30
मूल्य ह्रास	4	40,51,664.00	46,97,590.00
अन्य व्यय	21	-	-
पूर्वावधि व्यय	22	(46,43,481.00)	38,672.60
कुल (ख)		**25,91,25,477.49**	**17,87,24,313.27**
व्यय पर आय की अधिक्य का संतुलन (क–ख)		27,41,543.90	90,00,475.72
निर्दिष्ट निधि को/से हस्तांतरण		-	-
भवन निधि		-	-
अन्य (विनिर्दिष्ट)		-	-
अधिक्य बकाया/(घाटा) पूंजीगत निधि में हस्तांतरित		-	-
महत्त्वपूर्ण लेखा पद्धतियां	23	-	-
सभांव्य देनदारियां तथा लेखाओं के बारे में टिप्पणी।	24	-	-

हस्ता./–	हस्ता./–	हस्ता./–
(राकेश कुमार शर्मा)	(कर्नल विजय तिवारी)	(मकरंद आर. परांजपे)
लेखा अधिकारी	सचिव	निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची–1, संग्रह/पूंजीगत निधि

राशि (रु./पै. में)

	विवरण		चालू वर्ष 2019–20	विगत वर्ष 2018–19
	वर्ष के आरंभ में बकाया राशि		25,04,29,917.80	24,27,45,672.08
जमा	संग्रह/पूंजीगत निधि में अंशदान		7,78,419.00	-
जमा	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, भारत सरकार तथा राज्य सरकार से पूंजीगत व्यय हेतु		27,32,889.00	-
जमा	निर्धारित निधि से परिसम्पतियों की खरीद		-	-
जमा	प्रायोजित परियोजनाओं से परिसम्पतियों की खरीद, जहां मालिकाना हक संस्थान के पास है।		-	-
जमा	दान की गई परिसम्पतियां/प्राप्त उपहार		-	-
जमा	अन्य योजन (प्रावधान प्रतिलिखित)		-	-
जमा	आय व व्यय लेखा से हस्तांतरित व्यय पर आय की अधिकता		27,41,543.90	90,00,475.72
कुल			**25,66,82,769.70**	**25,17,46,147.80**
(घटाना)		आय और व्यय खाते से घाटे का हस्तांतरण	-	-
(घटाना)		आयकर भुगतान	-	13,16,230.00
वर्ष के अंत में बकाया			25,66,82,769.70	25,04,29,917.80

हस्ता./–	हस्ता./–	हस्ता./–
(राकेश कुमार शर्मा)	(कर्नल विजय तिवारी)	(मकरंद आर. परांजपे)
लेखा अधिकारी	सचिव	निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची–2, निर्दिष्ट/निश्चित की गई/चंदा निधि/पूंजीगत अनुदान

राशि (रु./पै. में)

विवरण	निधिवार विच्छेद					कुल	
	पूंजीगत अनुदान सहायता	निधि क.क.क.	निधि ख.ख.ख.	निधि ग.ग.ग.	चंदा निधि	चालू वर्ष 2019–20	विगत वर्ष 2018–19
क.							
क) अथशेष	4,79,13,915.74						4,24,91,712.00
ख) वर्ष के दौरान जमा	-						97,78,283.74
ग) निधि के निवेश से प्राप्त आय							
घ) निवेश/अग्रिम राशि से उपार्जित ब्याज							
ङ) बैंक बचत से प्राप्त ब्याज							
च) अन्य आधिक्य (विशिष्ट प्रकृति के)	5,08,744.00						-
कुल (क)	**4,84,22,659.74**	**0**	**0**	**0**	**0**		**5,22,69,995.74**
ख							
प्रयोगिक/निधि के उद्देश्यों के प्रति व्यय							
पूंजीगत व्यय	-						-
आगम व्यय	-						-
न्यूनतर ह्रास मूल्य	-						43,56,080.00
कुल (ख)	-	0	0	0	0		43,56,080.00
वर्ष के अंत में शेष बकाया राशि (क–ख)	4,84,22,659.74						4,79,13,915.74
प्रस्तुतकर्ता							
नकद एवं बैंक शेष	-						-
निवेश							
उपार्जित ब्याज मगर देय नहीं							
स्थाई परिसम्पत्तियां	4,84,22,659.74						4,79,13,915.74
कुल							

हस्ता./–	हस्ता./–	हस्ता./–
(राकेश कुमार शर्मा)	(कर्नल विजय तिवारी)	(मकरंद आर. परांजपे)
लेखा अधिकारी	सचिव	निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची–3, चालू देनदारियां एवं प्रावधान

राशि (रु./पै. में)

	चालू वर्ष 2019–20	विगत वर्ष 2018–19
(क) चालू देनदारियां		
स्टॉफ द्वारा जमा		
अन्य द्वारा जमा	-	-
विविध लेनदार (क. वस्तुओं तथा सेवाएं, ख. अन्य के लिए)	14,92,687.00	3,12,234.00
जमा–अन्य (ईएमडी, सिक्योरिटी जमा)	10,91,250.00	11,250.00
वैधानिक देयताएं (जीपीएफ, टीडीएस, डब्ल्यूसी, सीपीएफ, कर, जीआईएसय, एनपीएस)	7,30,975.19	2,80,966.19
अ) अतिदेय	-	-
ब) अन्य	-	-
अन्य चालू देयताएं	-	-
क) वेतन	93,34,656.00	70,98,913.00
ख) प्रायोजित परियोजनाओं की एवज में प्राप्तियां	-	-
ग) प्रायोजित अध्येतावृत्तियों तथा छात्रवृत्तियों की एवज में प्राप्तियां	-	-
घ) अप्रयोगिक अनुदान	26,07,77,066.11	29,98,52,284.60
ङ) एमओसी का अप्रयोगिक अनुदान	2,02,157.00	2,02,157.00
च) अप्रयोग्य एनडीएल अनुदान	36.00	36.00
छ) अन्य देनदारियां (सेल्ज़ एवं ज.सं.अ. को प्रतिदाय)	9,470.00	9,372.00
ज) देय व्यय	39,12,054.00	44,15,534.00
झ) राहत कोष के लिए देय	95,877.00	-
कुल (क)	**27,76,46,228.30**	**31,21,82,746.79**
(ख) प्रावधान		
कराधान हेतु		
ग्रेच्यूटी	3,34,65,510.00	2,77,78,398.00
सेवानिवृत्ति/पैंशन	17,00,000.00	17,00,000.00
जमा अवकाश का नकदीकरण	2,48,92,578.75	1,93,44,044.00
व्यापार वारंटी/दावे	-	-
अन्य (विशेषतः)	-	-
कुल (ख)	**6,00,58,088.75**	**4,88,22,442.00**
कुल (क+ख)	**33,77,04,317.05**	**36,10,05,188.79**

हस्ता./–	हस्ता./–	हस्ता./–
(राकेश कुमार शर्मा)	(कर्नल विजय तिवारी)	(मकरंद आर. परांजपे)
लेखा अधिकारी	सचिव	निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची–3 (क), प्रायोजित परियोजनाएं

राशि (रु./पै. में)

परियोजना का नाम	अथशेष		वर्ष के दौरान प्राप्तियां/ वसूलियां	कुल	वर्ष के दौरान व्यय	अंतशेष	
	नामे	जमा				नामे	जमा
आईसी4एचडी	-	18,40,13,990.00	1,84,53,901.00	20,24,67,891.00	-	-	20,24,67,891.00
एमओसी	-	2,02,157.00	-	2,02,157.00	-	-	2,02,157.00
एनएलडी अनुदान	-	36.00	-	36.00	-	-	36.00
शिक्षा मंत्रालय भा.स.	-	11,58,38,294.60	20,02,77,583.00	31,61,15,877.60	25,78,06,702.49		5,83,09,175.11
कुल	**-**	**30,00,54,477.60**	**21,87,31,484.00**	**51,87,85,961.60**	**25,78,06,702.49**	**-**	**26,09,79,259.11**

हस्ता./–
(राकेश कुमार शर्मा)
लेखा अधिकारी

हस्ता./–
(कर्नल विजय तिवारी)
सचिव

हस्ता./–
(मकरंद आर. परांजपे)
निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची– 4 (क) सहायता अनुदान से उपार्जित स्थाई परिसम्पत्तियां
अ. संस्थान के आरंभ से स्थाई परिसम्पतियां

राशि (रु./पै. में)

विवरण	मूल्य ह्रास दर	दिनांक 01.04.19 को अथशेष	दिनांक 01.04.2019 से 31.03.2020 तक जमा	दिनांक 01.04.2019 से 31.03.2020 तक विलोपन	दिनांक 31.3.2020 को अंतिम स्टॉक	वार्षिक मूल्य ह्रास	दिनांक 31.03.2020 को बट्टे में डाली गई रकम
श्रव्य दृश्य उपकरण	-	4,22,500.00	-	-	4,22,500.00	-	4,22,500.00
वर्ड प्रोसेसर	-	13,04,921.00	-	-	13,04,921.00	-	13,04,921.00
फर्नीचर एवं जुड़नार	-	74,39,798.75	-	-	74,39,798.75	-	74,39,798.75
पुस्तकालय पुस्तकें तथा वैज्ञानिक पत्रिकाएं	-	14,55,68,614.51	-	-	14,55,68,614.51	-	14,55,68,614.51
कार्यालय उपकरण	-	2,02,84,117.83		-	2,02,84,117.83	-	2,02,84,117.83
कारखाना एवं मशीनें	-	1,45,805.00	-	-	1,45,805.00	-	1,45,805.00
वाहन	-	28,38,064.64	-	-	28,38,064.64	-	28,38,064.64
उप योग (क)		**17,80,03,821.73**			**17,80,03,821.73**	**-**	**17,80,03,821.73**

स्थिर परिसम्पत्रियां							
(ख) योजना							
विवरण	मूल्य ह्रास दर	दिनांक 01.04.19 को अथशेष	दिनांक 01.04.2019 से 31.03.2020 तक जमा	दिनांक 01.04.2019 से 31.03.2020 तक विलोपन	दिनांक 31.3.2020 को अंतिम स्टॉक	वार्षिक मूल्य ह्रास	दिनांक 31.03.2020 को बट्टे में डाली गई रकम
श्रव्य दृश्य उपकरण	7.50	1,66,197.00	-	-	1,66,197.00	12,465.00	1,53,732.00
कम्प्यूटर तथा सहायक उपकरण	20.00	4,04,635.00	-	-	4,04,635.00	80,927.00	3,23,708.00

क्रॉकरी	7.50	9,18,719.00		-	9,18,719.00	68,904.00	8,49,815.00
पुस्तकालय पुस्तकें तथा वैज्ञानिक पत्रिकाएं	10.00	1,17,89,420.00	-	-	1,17,89,420.00	11,78,942.00	1,06,10,478.00
कार्यालय उपकरण	7.50	7,36,273.00	-	-	7,36,273.00	55,220.00	6,81,053.00
कारखाना एवं मशीनें	7.50	6,59,669.00		7,64,525.00	(1,04,856.00)	(1,08,723.00)	3,867.00
उप योग (ख)		**1,46,74,913.00**	**-**	**7,64,525.00**	**1,39,10,388.00**	**12,87,735.00**	**1,26,22,653.00**

(ग) गैर योजना							
विवरण	मूल्य ह्रास दर	दिनांक 01.04.19 को अथशेष	दिनांक 01.04.2019 से 31.03.2020 तक जमा	दिनांक 01.04.2019 से 31.03.2020 तक विलोपन	दिनांक 31.3.2020 को अंतिम स्टॉक	वार्षिक मूल्य ह्रास	दिनांक 31.03.2020 को बट्टे में डाली गई रकम
श्रव्य दृश्य उपकरण	5.00	34,988.00	-	-	34,988.00	1,749.00	33,239.00
कम्प्यूटर एवं सहायक उपकरण	20.00	1,81,660.00		-	1,81,660.00	36,332.00	1,45,328.00
फर्नीचर एवं जुड़नार	7.50	1,25,197.00		-	1,25,197.00	9,390.00	1,15,807.00
पुस्तकालय पुस्तकें तथा उपकरण	10.00	1,577.00	-	-	1,577.00	158.00	1,419.00
कार्यालय उपकरण	7.50	88,592.00		-	88,592.00	6,644.00	81,948.00
कारखाना एवं मशीनें	5.00	1,38,120.00	-	-	1,38,120.00	6,906.00	1,31,214.00
उप योग (ग)		**5,70,134.00**	**-**	**-**	**5,70,134.00**	**61,179.00**	**5,08,955.00**
घ. आईसी4एचडी के अंतर्गत स्थिर परिसम्पतियां							
विवरण	मूल्य ह्रास दर	दिनांक 01.04.19 को अथशेष	दिनांक 01.04.2019 से 31.03.2020 तक जमा	दिनांक 01.04.2019 से 31.03.2020 तक विलोपन	दिनांक 31.3.2020 को अंतिम स्टॉक	वार्षिक मूल्य ह्रास	दिनांक 31.03.2020 को बट्टे में डाली गई रकम
फर्नीचर एवं जुड़नार	7.50	1,23,343.00	-	-	1,23,343.00	9,251.00	1,14,092.00
पुस्तकालय पुस्तकें तथा वैज्ञानिक पत्रिकाएं	10.00	1,35,667.00	-	-	1,35,667.00	13,570.00	1,22,097.00
कार्यालय उपकरण	7.50	2,77,347.00	-	-	2,77,347.00	20,800.00	2,56,547.00
उप योग (घ)		**5,36,357.00**	**-**	**-**	**5,36,357.00**	**43,621.00**	**4,92,736.00**

ङ. स्थिर परिसम्पतियां (नया प्रारूप)							
विवरण	मूल्य ह्रास दर	दिनांक 01.04.19 को अथशेष	दिनांक 01.04.2019 से 31.03.2020 तक जमा	दिनांक 01.04.2019 से 31.03.2020 तक विलोपन	दिनांक 31.3.2020 को अंतिम स्टॉक	वार्षिक मूल्य ह्रास	दिनांक 31.03.2020 को बट्टे में डाली गई रकम
श्रव्य दृश्य उपकरण	7.50	7,86,857.74		-	7,86,857.74	59,014.00	7,27,843.74
श्रव्य दृश्य उपकरण	7.50	12,298.00			12,298.00	922.00	11,376.00
कम्प्यूटर तथा सहायक उपकरण	20.00	21,13,475.00	85,890.00	-	21,99,365.00	4,39,873.00	17,59,492.00
फर्नीचर एवं जुड़नार	7.50	8,87,346.00	4,98,011.00	-	13,85,357.00	1,03,902.00	12,81,455.00
फर्नीचर एवं जुड़नार	100.00		1,312.00	-	1,312.00	1,310.00	2.00
पुस्तकालय पुस्तकें तथा वैज्ञानिक पत्रिकाएं	10.00	1,14,81,992.00	15,99,205.00	-	1,30,81,197.00	13,08,120.00	1,17,73,077.00
कार्यालय उपकरण	5.00	10,03,048.00	2,73,513.00	-	12,76,561.00	63,828.00	12,12,733.00
कारखाना एवं मशीनें	7.50	2,32,834.00	62,973.00	-	2,95,807.00	22,186.00	2,73,621.00
वाहन	7.50	13,56,419.00	-	-	13,56,419.00	1,01,731.00	12,54,688.00
पूंजीगत परिसम्पतियां एस.सी.							
विवरण	मूल्य ह्रास दर	दिनांक 01.04.19 को अथशेष	दिनांक 01.04.2019 से 31.03.2020 तक जमा	दिनांक 01.04.2019 से 31.03.2020 तक विलोपन	दिनांक 31.3.2020 को अंतिम स्टॉक	वार्षिक मूल्य ह्रास	दिनांक 31.03.2020 को बट्टे में डाली गई रकम
श्रव्य दृश्य उपकरण	7.50	1,07,240.00	-		1,07,240.00	8,043.00	99,197.00
कम्प्यूटर तथा सहायक उपकरण	20.00	1,51,140.00	16,520.00		1,67,660.00	33,532.00	1,34,128.00
फर्नीचर एवं जुड़नार	7.50	49,327.00	-		49,327.00	3,700.00	45,627.00
पुस्तकालय पुस्तकें तथा वैज्ञानिक पत्रिकाएं	10.00	6,87,251.00	-		6,87,251.00	68,725.00	6,18,526.00
कार्यालय उपकरण	7.50	2,50,550.00	2,415.00		2,52,965.00	18,972.00	2,33,993.00
कार्यालय उपकरण	100.00	-	2,247.00		2,247.00	2,245.00	2.00
कारखाना एवं मशीनें	7.50	56,891.00	84,495.00		1,41,386.00	10,604.00	1,30,782.00

पूंजीगत परिसम्पतियां एस.टी.							
विवरण	मूल्य ह्रास दर	दिनांक 01.04.19 को अथशेष	दिनांक 01.04.2019 से 31.03.2020 तक जमा	दिनांक 01.04.2019 से 31.03.2020 तक विलोपन	दिनांक 31.3.2020 को अंतिम स्टॉक	वार्षिक मूल्य ह्रास	दिनांक 31.03.2020 को बट्टे में डाली गई रकम
श्रव्य दृश्य उपकरण	7.50	42,761.00	-	-	42,761.00	3,207.00	39,554.00
कम्प्यूटर तथा सहायक उपकरण	20.00	9,586.00	51,018.00	-	60,604.00	12,121.00	48,483.00
कम्प्यूटर तथा सहायक उपकरण	100.00	-	1,400.00	-	1,400.00	1,399.00	1.00
फर्नीचर एवं जुड़नार	7.50	40,810.00	-	-	40,810.00	3,061.00	37,749.00
पुस्तकालय पुस्तकें तथा वैज्ञानिक पत्रिकाएं	10.00	3,67,445.00	-	-	3,67,445.00	36,745.00	3,30,700.00
कार्यालय उपकरण	7.50	1,04,282.00	11,850.00	-	1,16,132.00	8,710.00	1,07,422.00
कारखाना एवं मशीनें	7.50	-	42,040.00	-	42,040.00	3,153.00	38,887.00
उप योग (ङ)		**1,97,41,552.74**	**27,32,889.00**	**-**	**2,24,74,441.74**	**23,15,103.00**	**2,01,59,338.74**
च. अमूर्त संपत्तियां	मूल्य ह्रास दर	दिनांक 01.04.19 को अथशेष	दिनांक 01.04.2019 से 31.03.2020 तक जमा	दिनांक 01.04.2019 से 31.03.2020 तक विलोपन	दिनांक 31.3.2020 को अंतिम स्टॉक	वार्षिक मूल्य ह्रास	दिनांक 31.03.2020 को बट्टे में डाली गई रकम
कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर	40.00	14,273.00	-	-	14,273.00	5,709.00	8,564.00
उप योग (च)		14,273.00	-	-	14,273.00	5,709.00	8,564.00
कुल योग (क+ख+ग+घ+ङ+च)		**21,35,41,051.47**	**27,32,889.00**	**7,64,525.00**	**21,55,09,415.47**	**37,13,347.00**	**21,17,96,068.47**

अनुसूची–4 (2) स्वनिधि से उपार्जित स्थिर परिसम्पतियां							
स्वनिधि से उपार्जित स्थिर परिसम्पतियां	मूल्य ह्रास दर	दिनांक 01.04.19 को अथशेष	दिनांक 01.04.2019 से 31.03.2020 तक जमा	दिनांक 01.04.2019 से 31.03.2020 तक विलोपन	दिनांक 31.3.2020 को अंतिम स्टॉक	वार्षिक मूल्य ह्रास	दिनांक 31.03.2020 को बट्टे में डाली गई रकम
श्रव्य दृश्य उपकरण	7.50	9,02,356.00	-	-	9,02,356.00	67,677.00	8,34,679.00
कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर	40.00	11,870.00	-	-	11,870.00	4,748.00	7,122.00
कम्प्यूटर तथा सहायक उपकरण	7.50	29,74,167.00	-	-	29,74,167.00	2,23,063.00	27,51,104.00
फर्नीचर एवं जुड़नार	7.50	4,99,203.00	-	-	4,99,203.00	37,440.00	4,61,763.00
कार्यालय उपकरण	7.50	22,305.00	-	-	22,305.00	1,673.00	20,632.00
कारखाना एवं मशीनें	7.50	49,545.00	-	-	49,545.00	3,716.00	45,829.00
उप योग (2)		**44,59,446.00**	**-**	**-**	**44,59,446.00**	**3,38,317.00**	**41,21,129.00**
कुल योग (भा.स.+स्वनिधी + मूर्त सम्पतियां)		**21,79,86,224.47**	**27,32,889.00**	**7,64,525.00**	**21,99,54,588.47**	**40,45,955.00**	**21,59,08,633.47**
कुल योग (मूर्त सम्पतियां + अमूर्त सम्पतियां)		**21,80,00,497.47**	**27,32,889.00**	**7,64,525.00**	**21,99,68,861.47**	**40,51,664.00**	**21,59,17,197.47**

हस्ता./–
(राकेश कुमार शर्मा)
लेखा अधिकारी

हस्ता./–
(कर्नल विजय तिवारी)
सचिव

हस्ता./–
(मकरंद आर. परांजपे)
निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची–5, निश्चित/चंदा निधियों से निवेश

राशि (रु./पै. में)

	चालू वर्ष 2019–20	विगत वर्ष 2018–19
केन्द्र सरकार की प्रतिभूतियां	-	-
राज्य सरकार की प्रतिभूतियां	-	-
अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियां	-	-
4. शेयर	-	-
5 ऋण पत्र तथा बॉड	-	-
6 बैंक में मियादी जमा	-	-
7 अन्य (निर्दिष्ट करने योग्य)	-	-
कुल	0	0

अनुसूची–5 (क), निश्चित/चंदा निधियों से निवेश (निधिवार)

क्रमांक	निधियां	चालू वर्ष 2019–20
1	एफडीआर	.
2	-	-
3	-	-
4	-	-
5	चंदा निधि निवेश	-
	कुल	0

हस्ता./–	हस्ता./–	हस्ता./–
(राकेश कुमार शर्मा)	(कर्नल विजय तिवारी)	(मकरंद आर. परांजपे)
लेखा अधिकारी	सचिव	निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची–6, अन्य निवेश

राशि (रु./पै. में)

	चालू वर्ष 2019–20	विगत वर्ष 2018–19
केन्द्र सरकार की प्रतिभूतियां	-	-
राज्य सरकार की प्रतिभूतियां	-	-
अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियां	-	-
शेयर	-	-
ऋण पत्र तथा बॉड	-	-
अन्य (निर्दिष्ट करने योग्य)	-	-
कुल	-	-

हस्ता./–	हस्ता./–	हस्ता./–
(राकेश कुमार शर्मा)	(कर्नल विजय तिवारी)	(मकरंद आर. परांजपे)
लेखा अधिकारी	सचिव	निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची–7, चालू परिसम्पत्तियां

राशि (रु./पै. में)

	चालू वर्ष 2019–20	विगत वर्ष 2018–19
स्टॉक		
क) भण्डार एवं अतिरिक्त	-	-
ख) खुले उपकरण		
ग) प्रकाशन	58,84,267.75	58,65,736.75
घ) प्रयोगशाला केमिकल, उपभोग्य तथा कांच की वस्तुएं	1,16,178.91	84,964.00
ङ) भवन सामग्री	-	-
च) विद्युत सामग्री	-	-
छ) उपभोग्य वस्तुएं	9,69,934.08	11,95,734.58
ज) जलापूर्ति पदार्थ	-	-
ञ) सोवनियर वस्तुएं	7,96,434.05	9,21,444.25
2. विविध लेनदार		
अ) छः माह से अधिक की अवधि के बकाया ऋण	4,41,707.00	5,48,221.75
ब) अन्य	63,037.00	-
3. नकद एवं बैंक में जमा राशि		
नकद	-	1,18,714.00
अ) अनुसूचित बैंक में जमा :	-	-
चालू खाते में	-	-
आवधिक जमा खाते में	26,60,64,980.00	25,50,44,871.00
बचत खाते में	4,17,27,940.23	4,63,18,714.53
ब) गैर–अनुसूचित बैंक में जमा	-	-
–अवधि जमा खाते	-	-
–बचत खाते में जमा	-	-
4. डाकघर बचत खाते में जमा	-	-
डाक टिकटों का स्टॉक	20,693.00	28,881.00
विविध अग्रिम राशि (आईसी4एचडी)	2,963.00	2,963.00
ड्राफ्ट तथा भा.पो.ऑ.	-	-
कुल	**31,60,88,135.02**	**31,01,30,244.86**

नोटः अनुलग्नक क बैंक खातों का विवरण दिखाता है
अनुलग्नक क

राशि (रु./पै. में)

i)	बचत बैंक खाते	
1	यूजीसी खाते से अनुदान	-
2	विश्वविद्यालय/संस्थान प्राप्ति खाता	94,16,962.00
3	छात्रवृत्ति खाता	-
4	शैक्षणिक शुल्क रसीद खाता	-
5	विकास (योजना) खाता	-
6	संयुक्त प्रवेश परीक्षा (सीबीटी) खाता	-
7	यूजीसी योजना फैलोशिप खाता	-
8	संग्रह निधि खाता	7,18,419.00
9	प्रायोजित परियोजना निधि खाता	-
10	प्रायोजित अध्येतावृत्ति खाता	-
11	बंदोबस्ती और अध्यक्ष खाता (ईएमएफ)	5,08,744.00
12	यूजीसी जेआरएफ फैलोशिप खाता (ईएमएफ)	-
13	एचबीए फंड खाता (ईएमएफ)	-
14	वाहन खाता (ईएमएफ)	-
15	यूजीसी राजीव गांधी राष्ट्रीय फैलोशिप खाता (ईएमएफ)	-
16	अकादमिक विकास निधि खाता (ईएमएफ)	-
17	जमा खाता	-
18	छात्र निधि खाता	-
19	छात्र सहायता कोष खाता	-
20	विशिष्ट योजनाओं के लिए योजना अनुदान	3,10,83,815.23
ii)	चालू खाता	
iii)	अनुसूचित बैंकों के साथ सावधि जमा	26,60,64,980.00
	कुल	**30,77,92,920.23**

हस्ता./–	हस्ता./–	हस्ता./–
(राकेश कुमार शर्मा)	(कर्नल विजय तिवारी)	(मकरंद आर. परांजपे)
लेखा अधिकारी	सचिव	निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची–8, ऋण, अग्रिम तथा जमा राशि

राशि (रु./पै. में)

	चालू वर्ष 2019–20	विगत वर्ष 2018–19
कर्मचारियों को भुगतान की अग्रिम राशि (गैर–ब्याज सहित)		
क) वेतन	-	-
ख) त्योहार	-	-
घ) चिकित्सा अग्रिम	-	-
ङ) अन्य (निर्दिष्ट)	-	58,000.00
च) डब्ल्यू.सी.ए.	-	450.00
छ) खराब जलवायु और बाढ़ के लिए अग्रिम राशि	431.00	431.00
कर्मचारियों को दीर्घकालीन अग्रिम राशि (ब्याज सहित)		
क) वाहन ऋण	4,000.00	29,000.00
ख) गृह ऋण	-	-
ग) अन्य (निर्दिष्ट)	24,44,442.00	24,44,442.00
घ) कम्प्यूटर के लिए अग्रिम राशि	4,55,071.00	1,34,004.00
अग्रिम राशि तथा नकद अथवा वस्तु के रूप में अथवा जिसका मूल्य प्राप्त होने वाला हो–		
क) पूंजीगत खाते	-	-
ख) आपूर्तिकर्ता	-	-
ग) अन्य i) के.लो.नि.वि.	10,14,39,054.00	12,19,95,859.00
ii) आईयूसी से प्राप्य	52,112.00	18,732.00
iii) भा.पु.सर्वेक्षण से प्राप्य	6,73,916.00	20,92,610.00
iv) जीएसटी, टीडीएस से प्राप्य	3,227.00	-
v) मैस से प्राप्य	2,19,050.00	96,878.00
vi) अतिथि गृह से प्राप्य	1,58,400.00	39,800.00
vii) टिकट बूथ से प्राप्य	70,634.00	1,06,219.00
viii) प्रबंधक भा.स्टेट बैंक	27,92,316.00	-
ix) फर्नीचर से प्राप्य	85,000.00	-
x) जियो से प्राप्य	1,08,000.00	
4. पूर्वदत्त व्यय		
क) अन्य व्यय (पूर्व भुगतान किये गए ई–जर्नल)	8,78,779.00	17,20,171.00
ग) पूर्व चुकता वार्षिक रखरखाव (आईसी4एचडी)	-	-
5. जमा		
क) दूरभाष	36,200.00	36,200.00

ख) दूरभाष विविध अग्रिम पेशगी	5,000.00	-
ग) टीडीएस वि.व. 2019–20	60,000.00	-
घ) एआईसीटीई, यदि लागू हो	-	-
ङ) अतिथि	2,400.00	2,400.00
च) विनीत गैस एजेंसी के पास प्रतिभूति	19,000.00	19,000.00
छ) नगर निगम के पास प्रतिभूति	980.00	980.00
ज) ईंधन के लिए जमा	1,00,000.00	1,00,000.00
झ) अन्य	4,633.00	4,633.00
ञ) वसूली योग्य नकद छुट्टी अतिरिक्त भुगतान	-	-
ट) वसूली योग्य टीडीएस	95,237.00	95,237.00
ठ) प्रकाशनाधीन पुस्तकें	30,612.00	1,04,114.00
ड) अग्रिम कर (वसूली योग्य)	10,00,000.00	20,53,200.00
ढ़) वसूली योग्य आयकर	65,920.00	65,920.00
मैस से वसूली योग्य	-	-
6. उपार्जित आय	-	-
क) निश्चित/चंदा निधियों से निवेश पर	-	-
ख) अन्य निवेश पर	-	-
ग) ऋण तथा अग्रिम राशियों पर	-	-
घ) अन्य (अप्राप्त देय आय)	-	-
7. अन्य– यूजीसी एवं प्रायोजित परियोजनाओं से प्राप्ति योग्य	-	-
क) प्रायोजित परियोजनाओं में जमा शेष	-	-
ख) अध्येतावृति तथा छात्रवृति में जमा शेष	-	-
ग) भारत सरकार से वसूली योग्य अनुदान	-	-
घ) यूजीसी से अन्य प्राप्य	-	-
8. दावे प्राप्ति योग्य (एनडीएल अनुदान से)	-	-
कुल	**11,08,04,414.00**	**13,12,18,280.00**

टिप्पणी– यदि चलायमान निधि को कर्मचारियों को गृह निर्माण, कम्प्यूटर तथा वाहन की खरीद हेतु अग्रिम धन के तौर पर दिया गया हो तो उक्त अग्रिम राशि निशिचित/चंदा के रूप में होगी। इस ब्याजयुक्त अग्रिम राशि का बकाया इस सूची में नहीं दर्शाया गया

हस्ता./–	हस्ता./–	हस्ता./–
(राकेश कुमार शर्मा)	(कर्नल विजय तिवारी)	(मकरंद आर. परांजपे)
लेखा अधिकारी	सचिव	निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची–9, अकादमिक प्राप्तियां

राशि (रु./पै. में)

विवरण	चालू वर्ष 2019–20	विगत वर्ष 2018–19
छात्रों से फीस		
अकादमिक		
1. ट्यूशन फीस	-	-
2. प्रवेश शुल्क	-	-
3. नामांकन शुल्क	-	-
4. पुस्तकालय प्रवेश शुल्क	-	-
5. प्रयोगशाला शुल्क	-	-
6. आर्ट एंड क्राफ्ट शुल्क	-	-
7. पंजीकरण शुल्क	-	-
8. पाठ्यक्रम शुल्क	-	-
कुल (क)	-	-
परीक्षा		
1. प्रवेश परीक्षा शुल्क	-	-
2. वार्षिक परीक्षा शुल्क	-	-
3. मार्क शीट, प्रमाण पत्र शुल्क	-	-
4. प्रवेश परीक्षा शुल्क	-	-
कुल (ख)	-	-
अन्य शुल्क		
1. पहचान पत्र शुल्क	-	-
2. जुर्माना/विविध शुल्क	-	-
3. चिकित्सा शुल्क	-	-
4. परिवहन शुल्क	-	-
5. छात्रावास शुल्क	-	-
कुल (ग)	-	-
प्रकाशनों की बिक्री		
1. एडमिशन फॉर्मों की बिक्री	-	-
2. सिलेबस और प्रश्न पत्र, आदि की बिक्री	-	-
3. प्रोस्पेक्टस प्रवेश फॉर्मों की बिक्री	-	-

कुल (घ)	-	-
अन्य अकादमिक प्राप्तियां		
कार्यशालाओं, कार्यक्रमों का पंजीकरण शुल्क	-	-
पंजीकरण शुल्क (अकादमिक स्टाफ कॉलेज)	-	-
कुल (ङ)	-	-
समग्र योग (क+ख+ग+घ+ङ)	-	-

टिप्पणी–प्रवेश शुल्क सदस्यता शुल्क आदि सामग्री रहे हैं और पूंजीगत प्राप्तियों की प्रकृति मे होते हैं, ऐसी राशि पूंजीगत निधि के रूप में मानी जानी चाहिए। अन्यथा इस तरह की फीस उचित रूप से इस सूची में शामिल की जाएगी।

हस्ता./–	हस्ता./–	हस्ता./–
(राकेश कुमार शर्मा)	(कर्नल विजय तिवारी)	(मकरंद आर. परांजपे)
लेखा अधिकारी	सचिव	निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची –10, अनुदान/रियायत (अचल अनुदान प्राप्ति)

राशि (रु./पै. में)

विवरण	सामान्य/पूंजी/वेतन		गैर योजना	चालू वर्ष 2019–20	विगत वर्ष 2018–19
	भारत सरकार	विशिष्ट योजनाएँ आईसी4एचडी	भारत सरकार		
				कुल	कुल
अथशेष अग्रानीत	11,58,38,294.60	18,40,13,990.00	-	29,98,52,284.60	31,62,65,171.68
जमा : वर्ष के दौरान प्राप्तियां	19,94,00,000.00	-	-	19,94,00,000.00	15,05,82,000.00
सहायता अनुदान पर उपार्जित ब्याज	8,77,583.00	1,53,47,462.00	-	1,62,25,045.00	1,68,10,119.93
पूर्व अवधि प्रविष्टि सुधार	-	31,06,439.00	-	31,06,439.00	-
कुल	31,61,15,877.60	20,24,67,891.00	-	51,85,83,768.60	48,36,57,291.61
न्यूनतर–यूजीसी/भा.स. से वापिसी			-	-	-
बकाया	31,61,15,877.60	20,24,67,891.00	-	51,85,83,768.60	48,36,57,291.61
न्यूनतर– पूंजीगत व्यय के लिए प्रयुक्त (क)	27,32,889.00	-	-	27,32,889.00	97,78,283.74
बकाया	31,33,82,988.60	20,24,67,891.00	-	51,58,50,879.60	47,38,79,007.87
न्यूनतर– राजस्व व्यय के लिए प्रयुक्त (ख)	25,50,73,813.49	-	-	25,50,73,813.49	17,40,26,723.27
बकाया अग्रनीत (ग)	5,83,09,175.11	20,24,67,891.00	-	26,07,77,066.11	29,98,52,284.60

हस्ता./–
(राकेश कुमार शर्मा)
लेखा अधिकारी

हस्ता./–
(कर्नल विजय तिवारी)
सचिव

हस्ता./–
(मकरंद आर. परांजपे)
निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची–11, निवेश से आय

राशि (रु./पै. में)

	निश्चित / चंदा निधि		अन्य निवेश	
विवरण	चालू वर्ष 2019–20	विगत वर्ष 2018–19	चालू वर्ष 2019–20	विगत वर्ष 2018–19
1. ब्याज				
क. सरकारी प्रतिभूतियों पर	-	-	-	-
ख. अन्य बॉण्ड/ऋणपत्र	-	-	-	-
2. मियादी जमा पर ब्याज	-	-	-	-
उपार्जित आय मगर कर्मचारियों की अग्रिम राशि की मियादी जमा ब्याज पर नहीं	-	-	-	-
4. बैंक बचत खाते पर ब्याज	-	-	-	-
5. अन्य (विनिर्दिष्ट)	-	-	-	-
कुल	0.00	0.00	0.00	0.00
निश्चित/दान निधि में हस्तांतरण				
शेष	Nil	Nil		

टिप्पणी– भवन निर्माण के लिए अग्रिम निधि, जमा मियादी निधि, सुविधा अग्रिम निधि और कम्प्यूटर अग्रिम निधि से उपार्जित ब्याज नहीं अपितु कर्मचारियों को मिलने वाली अग्रिम धनराशि के ब्याज (मद–3) भी यहां शामिल किए जाएंगे, जहां केवल ऐसी अग्रिम निधियों के लिए परिक्रामी निधि निर्धारित की गई है।

हस्ता./–	हस्ता./–	हस्ता./–
(राकेश कुमार शर्मा)	(कर्नल विजय तिवारी)	(मकरंद आर. परांजपे)
लेखा अधिकारी	सचिव	निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची–12, उपार्जित ब्याज

राशि (रु./पै. में)

विवरण	चालू वर्ष 2019–20	विगत वर्ष 2018–19
1. अनुसूचित बैंकों में बचत खाता पर	-	-
2 ऋण पर	-	-
क. कर्मचारी/स्टाफ	-	-
ख. अन्य (एफडीआर)	-	-
3. कर्जदारों तथा अन्य प्राप्तियों से	-	-
कुल		

टिप्पणी–कृप्या अनुसूची–10 का संदर्भ ग्रहण करें।

हस्ता./–	हस्ता./–	हस्ता./–
(राकेश कुमार शर्मा)	(कर्नल विजय तिवारी)	(मकरंद आर. परांजपे)
लेखा अधिकारी	सचिव	निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची–13, अन्य आय

राशि (रु./पै. में)

विविध आय में सम्मिलित पदार्थों की राशि में मदें अलग से विनिर्दिष्ट होनी चाहिए।

	चालू वर्ष 2019–20	विगत वर्ष 2018–19
क. भूमि और भवनों से आय		
1. छात्रावास कक्ष का किराया		
2. लाईसेंस शुल्क	-	-
3. सभागार/खेल का मैदान/सुविधा केन्द्र आदि से प्राप्त किराया	-	-
4. बिजली प्रभार की वसूली	-	-
5. जल प्रभार की वसूली	-	-
कुल	-	
ख. संस्थान के प्रकाशनों की बिक्री '	**9,80,059.30**	**12,48,617.37**
ग. आयोजनों से प्राप्त आय		
1. वार्षिक समारोह/खेल प्रतियोगिताओं के आयोजन से सकल प्राप्ति	-	-
न्यूनतरः वार्षिक समारोह/खेल प्रतियोगिताओं के आयोजन पर प्रत्यक्ष व्यय	-	-
2. त्योहारों से सकल प्राप्ति	-	-
न्यूनतरः त्योहारों के आयोजनों पर प्रत्यक्ष व्यय	-	-
3. शैक्षणिक दौरों से प्राप्त सकल प्राप्ति	-	-
न्यूनतरः दौरों पर प्रत्यक्ष व्यय	-	-
4. अन्य (निर्दिष्ट तथा पृथक दर्शाने योग्य)	-	-
कुल	-	-
घ अन्य		
1. परामर्श आय	-	-
2. सूचना के अधिकार से शुल्क	-	-
3. रॉयल्टी से प्राप्त आय	-	-
4. आवेदन पत्रों की बिक्री (भर्ती)	-	-
5. अन्य प्राप्तियां (टैण्डर फार्म, रद्दी आदि की बिक्री)	-	-
6. बिक्री से लाभ/परिसम्पतियों का निपटान	-	-
क) स्वाधिकृत परिसम्पतियां	-	-
ख) निःशुल्क प्राप्त परिसम्पतियां	-	-
7. संस्थानों, कल्याणकारी निकायों तथा अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से अनुदान/दान	-	-
8. अन्य (निर्दिष्ट)		
अन्य निर्दिष्ट सुविधा प्रसार का किराया	54,660.00	16,690.00

अतिथि गृह	7,43,249.00	4,59,170.00
वाहन का निजी प्रयोग	-	-
पौधों की बिक्री	17,070.00	17,950.00
पुस्तकालय सदस्यता	34,918.00	41,696.00
अप्रयोगिक वस्तुओं की बिक्री	-	-
आवेदन शुल्क	-	-
विविध आय	52,167.00	4,57,112.00
टिकट बूथ से प्राप्त शुद्ध आय	49,11,084.60	71,00,750.35
कुल अन्य (निर्दिष्ट)	-	-
कुल अन्य (8)	58,13,148.60	80,93,368.35
समग्र योग (क + ख + ग + घ)	**67,93,207.90**	**93,41,985.72**

हस्ता./–	हस्ता./–	हस्ता./–
(राकेश कुमार शर्मा)	(कर्नल विजय तिवारी)	(मकरंद आर. परांजपे)
लेखा अधिकारी	सचिव	निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची–14, पूर्व कालिक आय

राशि (रु./पै. में)

विवरण	चालू वर्ष 2019–20	विगत वर्ष 2018–19
1. अकादमिक प्राप्तियां	-	-
2. निवेश से आय	-	-
3. उपार्जित ब्याज	-	-
4. अन्य आय/समायोजन	-	-
कुल	**-**	**-**

अनुसूची–15, स्टाफ का वेतन तथा लाभ (व्यवस्थापन व्यय)

राशि (रु./पै. में)

शिक्षक और गैर–शिक्षक एवं तदर्थ कर्मचारियों का पृथक वर्गीकरण होगा। महंगाई भत्ते की वेतन वृद्धि की बकाया राशि को पृथक दर्शाया जाएगा।

	चालू वर्ष 2019–20	विगत वर्ष 2018–19
क. वेतन एवं मजदूरी	6,89,12,070.00	5,84,65,439.00
ख. भत्ते तथा बोनस	-	-
ग. भविष्य निधि/नई पेंशन योजना में योगदान	15,01,388.00	8,58,795.00
घ. अन्य निधि (विशिष्ट) पेंशन निधि में योगदान	-	-
ङ. कर्मचारी कल्याण व्यय	-	-
च. सेवानिवृति तथा सेवानिवृति लाभ	1,53,32,125.75	65,75,239.00
छ. एलटीसी सुविधा	2,85,724.00	1,03,897.00
ज. चिकित्सा सुविधा	4,10,674.00	4,93,000.00
झ. बच्चों का शैक्षणिक भत्ता	9,72,000.00	8,95,500.00
ञ. मानदेय	2,36,256.00	1,89,106.00
ट. अन्य (विशिष्ट) पेंशन	4,16,70,064.00	2,19,98,965.00
ठ. वर्दी	1,60,000.00	1,70,000.00
ड. आतिथ्य		-
कुल	**12,94,80,301.75**	**8,97,49,941.00**

हस्ता./–	हस्ता./–	हस्ता./–
(राकेश कुमार शर्मा)	(कर्नल विजय तिवारी)	(मकरंद आर. परांजपे)
लेखा अधिकारी	सचिव	निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची–15 क, कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति एवं पैन्शन लाभ

राशि (रु./पै. में)

	पैन्शन	ग्रेच्यूटी	अवकाश नकदीकरण	कुल
अथशेष				
जमा : अन्य संगठनों से प्राप्त योगदानों का पूंजी मूल्य	.	.	.	.
कुल (क)				
न्यूनतरः वर्ष के दौरान वास्तविक भुगतान (ख)	.	.	.	
दिनांक 31.3. को उपलब्ध बकाया शेष ग (क–ख)	.	.	.	
दिनांक 31.3. को बीमाकिक मूल्यांकन (घ) के अनुसार आपेक्षित प्रावधान	.	.	.	
क. चालू वर्ष के दौरान प्रावधान (घ–ग)	.	.	.	
ख. नई पेन्शन में योगदान	.	.	.	
ग. सेवानिवृति कर्मचारियों को चिकित्सा खर्च की अदायगी	.	.	.	
घ. सेवानिवृति पर होमटाउन का भुगतान	.	.	.	
ङ. संबंद्ध बीमा भुगतान जमा	.	.	.	
कुल (क+ख+ग+घ+ङ.)				

टिप्पणी

1. इस उप सूची में कुल (क+ख+ग+घ+ङ) अनुसूची 15 में सेवानिवृति तथा सेवानिवृति लाभ के अंतर्गत है।
2. ख, ग, घ तथा ङ मदों की गणना उपचय आधार पर की गई है तथा इसमें वरीयता प्राप्त बिलों को सम्मिलित किया गया है मगर 31.3. को उनका भुगतान शेष है।

हस्ता./–	हस्ता./–	हस्ता./–
(राकेश कुमार शर्मा)	(कर्नल विजय तिवारी)	(मकरंद आर. परांजपे)
लेखा अधिकारी	सचिव	निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची–16, अकादमिक व्यय

राशि (रु./पै. में)

क. प्रयोगशाला व्यय	-	-
ख. फील्ड संबंधी कार्य/सम्मेलनों में प्रतिभागिता		
ग. संगोष्ठियों/कार्यशालाओं पर व्यय	38,17,819.00	35,33,069.20
घ. आगंतुक संकाय को भुगतान	1,92,014.00	-
ङ. परीक्षा	-	-
च. छात्र कल्याण व्यय	-	-
छ. प्रवेश व्यय	-	-
ज. दीक्षांत समारोह व्यय	-	-
झ. प्रकाशन	6,69,872.00	5,17,782.00
ञ. वजीफा/संसाधन व योग्यता छात्रवृति	-	-
ट. अंशदान व्यय	-	-
i) अन्य (विशिष्ट) अध्येताओं को अध्येतावृति	3,48,32,497.00	2,94,39,016.00
ii) अध्येताओं को राष्ट्रीय अध्येतावृति	-	-
कुल	**3,95,12,202.00**	**3,34,89,867.20**

हस्ता./–	हस्ता./–	हस्ता./–
(राकेश कुमार शर्मा)	(कर्नल विजय तिवारी)	(मकरंद आर. परांजपे)
लेखा अधिकारी	सचिव	निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची–17, प्रशासनिक तथा सामान्य व्यय

राशि (रु./पै. में)

	चालू वर्ष 2019–20	विगत वर्ष 2018–19
अवसंरचना		
क. विद्युत एवं ऊर्जा	37,22,061.00	36,66,244.00
ख. जल प्रभार	(81,175.00)	11,14,098.00
ग. बीमा	1,10,576.00	99,341.00
घ. किराया, किराया तथा कर (सम्पति कर सहित)	22,72,264.00	17,75,110.00
संचार		-
ङ. डाक व लेखन सामग्री	74,676.00	1,12,361.00
च. दूरभाष, फैक्स तथा इंटरनेट प्रभार	2,15,312.00	2,49,259.00
अन्य		
छ. मुद्रण एवं लेखन (उपभोग)	7,04,371.00	10,74,991.49
ज. यात्रा एवं यातायात सुविधा व्यय	34,01,537.00	40,05,054.00
झ. आतिथ्य	3,14,599.00	4,47,889.00
ञ. लेखा परीक्षक मानदेय	80,405.00	1,20,643.00
ट. व्यावसायिक प्रभार	5,16,987.00	6,49,720.00
ठ. विज्ञापन एवं प्रचार–प्रसार	6,82,215.00	10,88,706.00
ड. पत्रिकाएं एवं जर्नल	6,99,618.00	11,70,302.00
ढ. ई–संसाधन अभिदान	19,63,231.00	17,54,968.00
ण. अन्य (विशिष्ट) दवाइयां	4,94,750.09	1,88,708.00
प. विविध व्यय	37,196.00	1,54,768.00
फ. पुस्तकों का प्रकाशन	2,25,533.00	9,72,887.50
कुल	**1,54,34,156.09**	**1,86,45,049.99**

हस्ता./–	हस्ता./–	हस्ता./–
(राकेश कुमार शर्मा)	(कर्नल विजय तिवारी)	(मकरंद आर. परांजपे)
लेखा अधिकारी	सचिव	निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची–18, यातायात संबंधी व्यय

राशि (रु./पै. में)

विवरण	चालू वर्ष 2019–20	विगत वर्ष 2018–19
वाहन (संस्थान द्वारा खरीदे गए)		
क. चालू व्यय	2,88,604.00	3,53,021.00
ख. मरम्मत एवं रखरखाव	1,29,204.00	44,744.00
ग. बीमा व्यय	-	
2 किराये/पटटे पर लिए गए वाहन	-	
क. किराये/पट्टे का व्यय	-	
3 वाहन/टैक्सी किराया	-	
कुल	**4,17,808.00**	**3,97,765.00**

अनुसूची–19, मरम्मत एवं रखरखाव

विवरण	चालू वर्ष 2019–20	विगत वर्ष 2018–19
क. भवन	6,94,23,151.00	3,04,57,481.00
ख. फर्नीचर एवं स्थिर वस्तुएं	-	-
ग. संयंत्र एवं मशीनरी	-	-
घ. कार्यालयी उपकरण	3,90,789.00	5,41,561.00
ङ. कम्प्यूटर	-	-
च. प्रयोगशाला तथा वैज्ञानिक उपकरण	-	-
छ. श्रव्य–दृश्य उपकरण	-	-
ज. सफाई संबंधी सामान तथा सेवाएं	-	-
झ. पुस्तक जिल्दबंदी शुल्क	-	-
ञ. बागवानी	3,22,554.00	4,02,375.00
ट. सम्पदा का रखरखाव	-	
ठ. अन्य (विशिष्ट) उपभोग्य भण्डार	14,69,827.50	3,01,288.18
ढ़) स्थिर परिसम्पतियां बट्टे में	-	
कुल	**7,16,06,321.50**	**3,17,02,705.18**

हस्ता./–	हस्ता./–	हस्ता./–
(राकेश कुमार शर्मा)	(कर्नल विजय तिवारी)	(मकरंद आर. परांजपे)
लेखा अधिकारी	सचिव	निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची–20, वित्तीय व्यय

राशि (रु./पै. में)

विवरण	चालू वर्ष 2019–20	विगत वर्ष 2018–19
क) बैंक प्रभार	5,358.22	2,722.30
ख) भा.स. के ब्याज की वापसी	32,61,146.93	-
कुल	**32,66,505.15**	**2,722.30**

अनुसूची–21, अन्य व्यय

विवरण	चालू वर्ष 2019–20	विगत वर्ष 2018–19
क. डूबी तथा संदिग्ध रकम/अग्रिम राशि का प्रावधान	-	-
ख. वसूल न होने बकाया बट्टे में डाली गई रकम	-	-
ग. अनुदान/अन्य संस्थानों/संगठनों को रियायत	-	-
घ. अन्य (विशिष्ट)	-	-
कुल	-	

अनुसूची–22, पूर्वावधिक व्यय

विवरण	चालू वर्ष 2019–20	विगत वर्ष 2018–19
1 सेवा निवृति लाभ	-	
2 अकादमिक व्यय	-	
3 प्रशासनिक व्यय	-	
4 यातायात व्यय	-	
5 मरम्मत एवं रखरखाव	(46,43,481.00)	
6 अन्य व्यय	-	38,672.60
कुल	(46,43,481.00)	**38,672.60**

हस्ता./–	हस्ता./–	हस्ता./–
(राकेश कुमार शर्मा)	(कर्नल विजय तिवारी)	(मकरंद आर. परांजपे)
लेखा अधिकारी	सचिव	निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

31.03.2020 को समाप्त वित्तीय वर्ष की प्राप्तियों एवं भुगतान के लेखे

राशि (रु./पै. में)

	प्राप्तियां	चालू वर्ष	विगत वर्ष	1	व्यय	चालू वर्ष	विगत वर्ष
1	अथशेष				क) स्थापना व्यय	13,06,98,393.00	10,40,08,688.00
	क) नकदी शेष	1,18,714.00	1,73,955.00		ख) अकादमिक व्यय	76,30,667.00	2,31,98,428.80
	ख) बैंक में जमा				ग) प्रशासनिक व्यय	3,02,95,321.22	2,35,63,546.06
	1) चालू खातों में				घ) परिवहन खर्च	2,93,682.00	3,62,702.00
	2) जमा खातों में	4,63,18,714.53	13,36,97,424.03		ङ) मरम्मत व रखरखाव	4,27,22,557.00	7,46,69,674.00
	3) बैंक में आवधिक जमा	25,50,44,871.00	22,07,62,795.00		च) पूर्व की अवधि व्यय/बैंक प्रभार	-	2,722.30
2	अनुदान प्राप्त			2.00	निर्दिष्ट/दान निधि की एवज में भुगतान	95.00	-
	क) भारत सरकार से						
	1) पूंजी अनुदान	1,30,00,000.00	56,81,000.00	3.00	अन्य से प्राप्य		
	2) राजस्व अनुदान	18,64,00,000.00	14,49,01,000.00	4.00	प्रायोजित फैलोशिप/छात्रवृत्ति की एवज में भुगतान		
	ख) संस्कृति मंत्रालय (भारत सरकार) से			5.00	निवेश और जमा क. निर्दिष्ट/चंदा निधि से) ख. स्वनिधि से (अन्य–निवेश)		
	ग) अन्य स्रोतों से (आईसी4एचडी के अंतर्गत बैंक की एफडीआर पर ब्याज)	1,53,47,462.00	1,35,48,973.00	6.00	अनुसूचित बैंकों में साथ नए सिरे से सावधि जमा		-
	ग) सहायता भारत सरकार से प्राप्य अनुदान			7.00	देय व्यय	41,39,511.00	-

3	अकादमिक प्राप्तियां				बैंक से प्राप्य	27,92,316.00	
4	विशिष्ट/दान निधि से प्राप्तियां	12,73,213.00	-				
5	आईसी4एचडी से प्राप्तियां						
6	प्रायोजित फैलोशिप एवं छात्रवृत्ति की एवज में प्राप्तियां				1) अनुदान सहायता में से	8,69,689.00	18,82,726.74
7	निवेश से आय क) निर्धारित/दान निधि ख) अन्य निवेश	-	-		ख) स्वनिधि से	-	-
8	प्राप्त ब्याज				इद्ध पूंजी कार्य–प्रगति		
	क) बैंक जमा				वैधानिक भुगतानों को मिलाकर अन्य भुगतान	-	-
	ख) ऋण और अग्रिम	-	-		अनुदान सहायता राशि पर ब्याज की वापसी	32,61,146.93	
	ग) बचत बैंक खाते	8,77,583.00	32,61,146.93	8.00	अनुदान		
9	निवेश नकदीकरण	-	-	9.00	क) स्टाफ	5,00,000.00	1,28,000.00
10	अनुसूचित बैंकों में आवधिक जमा परिपक्व	-	-	10.00	ख) अन्य	1,93,000.00	35,13,951.00
					अंतशेष		
11	अन्य आय (पूर्व अवधि आय सहित)	1,05,72,024.85	1,06,97,111.47	11.00	क) नकद राशि	-	1,18,714.00
12	जमा और अग्रिम	21,18,019.00	63,733.00	12.00	ख) बैंक में जमा राशि		
					चालू खातों में		
13	विविध प्राप्तियां	1,18,697.00	25,600.00		बचत खातों में	4,17,27,940.23	4,63,18,714.53
14	अन्य प्राप्तियां	-			बैंक में सावधि जमा	26,60,64,980.00	25,50,44,871.00
	कुल	**53,11,89,298.38**	**53,28,12,738.43**		कुल	**53,11,89,298.38**	**53,28,12,738.43**

हस्ता./–
(राकेश कुमार शर्मा)
लेखा अधिकारी

हस्ता./–
(कर्नल विजय तिवारी)
सचिव

हस्ता./–
(मकरंद आर. परांजपे)
निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

31.03.2020 को समाप्त वित्तीय वर्ष के लेखाओं की लेखा नीतियां तथा टिप्पणियां

लेखा नीतियां

(क) लेखा अवधारणाएं

वित्तीय विवरण सामान्यतः परम्परागत लागत रीति के अनुसार भारत में प्रचलित लेखा सिद्धांतों के आधार पर तैयार किये गये हैं।

सोसायटी सामान्यतः लेखा प्रणाली की उपचय पद्धति का अनुसरण करती है तथा संभूति के आधार पर आय और व्यय की महत्त्वपूर्ण मदों की पहचान करती है।

(ख) राजस्व मान्यता

1. अनुदान सहायता राशि का हिसाब प्राप्ति के आधार पर किया जाता है।
2. निवेश पर ब्याज से प्राप्त आय का लेखा अपचय आधार पर किया जाता है।
3. गृह निर्माण, वाहनों और कंप्यूटरों की खरीद के लिए कर्मचारियों को ब्याज वाले अग्रिमों पर ब्याज हर साल अपचय आधार पर लिया जाता है, हालांकि ब्याज की वास्तविक वसूली मूलधन के पूर्ण भुगतान के बाद शुरू होती है।

अचल सम्पत्ति

1. सोसायटी की अचल संपत्ति ऐतिहासिक लागत पर बताई गई है और इसमें सभी
2. आकस्मिक खर्च शामिल हैं। तुलन पत्र में दिखाई देने वाली अचल संपत्ति में मूल्यह्रास कम है। जिस भूमि और भवन में संस्थान चलायमान है, वह भारत सरकार द्वारा संस्थान को उपहार में दिया गया है। हालांकि, राजस्व रिकॉर्ड के अनुसार भूमि और भवन का स्वामित्व के.लो.नि.वि. के पास है। इसलिए बही–खातों में इसका वित्तीय मूल्य नहीं दर्शाया जाता।
3. पूंजीगत सहायता अनुदान से खरीदी गई अचल संपत्तियों को अचल संपत्तियों में वृद्धि के रूप में दिखाया गया है।

(ग) मूल्य ह्रास

1. विगत वर्ष की लेखा नीतियों के अनुसार संस्थान द्वारा दिनांक 31.3.2014 तक अचल संम्पत्ति पर कोई मूल्यह्रास नहीं दर्शाया गया है। हलांकि दिनांक 01.4.2014 के बाद अचल परिसम्पत्तियों की अधिक्य पर केन्द्रीय उच्च शैक्षणिक संस्थानों के लिए निर्धारित वित्तीय विवरण के प्रपत्र में निहित दरों के अनुरूप मूल्यह्रास दर्शाया गया है।

2. चूंकि पूर्ण स्वामित्व वाली भूमि और भवन को लेखा पुस्तकों में शामिल नहीं किया गया है, इस पर कोई मूल्यह्रास नहीं लगाया गया है।

3. संपत्ति, जिनमें से प्रत्येक का व्यक्तिगत मूल्य 2000/–रुपए या उससे कम है (पुस्तकालय की पुस्तकों को छोड़कर) उसे लघु मूल्य की संपत्ति के रूप में माना जाता है, वर्ष के अंत में ऐसी संपत्ति के संबंध में 100 प्रतिशत मूल्यह्रास प्रदान किया गया है, जिसे एक वर्ष के लिए उपयोगी माना गया और प्रति संपत्ति ह्रासित मूल्य 1/–रुपया है।

4. अनुदान सहायता से अचल अर्जित की स्थिति में मूल्यह्रास को पूंजीगत अनुदान सहायत में हस्तांतरित कर दिया गया है।

(घ) मूल्य निर्धारण/वस्तु सूची की पद्धति– प्रकाशनों (पुस्तकों), स्मृति चिन्ह उपभोग्य वस्तुएं, दवाओं का मूल्यांकन लागत या शुद्ध विश्वसनीय मूल्य के आधार पर किया गया है, जो भी कम हो।

(ङ) निवेशों का मूल्यांकन– निवेश का मूल्यांकन लागत जमा ब्याज पर किया जाता है।

(च) कर्मचारी सेवानिवृत्ति लाभों का प्रतिपादन– नियमित कर्मचारियों को सेवानिवृत्ति लाभों का भुगतान कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति के समय केंद्र सरकार द्वारा किया जाना है। वर्ष के दौरान किए गए प्रावधान का लेखा संस्थान के प्रशासन विभाग द्वारा उपलब्ध कराए गए गणना पत्र के आधार पर किया गया है। चूंकि सेवानिवृत्ति लाभों की गारंटी केंद्र सरकार द्वारा दी जाती है और बजट केंद्र सरकार द्वारा आवंटित किया जाता है। इसलिए तुलन पत्र में दिखाया गया प्रावधान बीमांकिक मूल्यांकन के अनुसार नहीं है और संस्थान के अनुसार बीमांकिक मूल्यांकन की कोई आवश्यकता नहीं है।

(छ) आयकर का प्रावधान; वर्ष के दौरान सोसायटी को आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 12 ए के तहत पंजीकृत हो गया है; लिहाजा वर्ष के दौरान आयकर का प्रावधान नहीं किया गया है।

लेखा रिपोर्ट के बारे में टिप्पणियां

1. आकस्मिक देयताएं– दिनांक 31.3.2020 को कोई भी आकस्मिक देयताएं नहीं हैं।

2. लेखे भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा जारी नए प्रारूप के अंतर्गत तैयार किए गए हैं ताकि समरूप लेखा पद्धति का अनुपालन सुनिश्चित हो सके।

3. सामान्य भविष्य निधि, आईयूसी निधि लेखा तथा मैस निधि के लिए पृथक तुलन पत्र तैयार किया गया है।

4. ग्रेच्यूटी तथा अवकाश नकदीकरण के प्रावधान का विवरण निम्न प्रकार है–

विवरण	दिनांक 31.3.2020 को	दिनांक 31.3.2019 को
ग्रेच्यूटी का प्रावधान	3,34,65,510.00	2,77,78,398.00
अवकाश नकदीकरण का प्रावधान	2,48,92,578.75	1,93,44,044.00

5. तुलन पत्र में चालू सम्पत्ति के अंतर्गत दर्शायी गई संस्थान के प्रकाशनों की राशि 58,84,267,75 रूपए (दिनांक 31.3.2019 को 58,65,736,75 रूपए) सेल्ज़ एवं जन सम्पर्क अधिकारी द्वारा उपलब्ध करवाई गई सूचना पर आधारित है। संस्थान के मतानुसार चालू परिसम्पत्तियां, ऋण तथा अग्रिम राशियां आंकित मूल्य के लगभग हैं, यदि प्रयोजन की सामान्य प्रक्रिया के अनुरूप किया गया हो। सभी प्रकार की ज्ञातव्य देनदारियों का प्रावधान पर्याप्त

है तथा न्योचित तौर पर आवश्यक राशि से अधिक नहीं है।

6. लेनदारों, देनदारों तथा अन्य खातों में नामे शेष तथा जमा शेष सत्यापन तथा मिलान का विषय हैं।

7. विभिन्न कर्जदारों के पास पड़ी कुल बकाया राशि 317125.00 रूपए को वसूली के लिए उपयुक्त मानी गई है।

8. पांच वर्षों से अधिक अवधि से 5,04,744.00 रूपए की विविध अग्रिम राशि विगत 5 वर्षों से बकाया है जो वसूली के लिए उपयुक्त मानी गई है।

9. वित्त पोषण एजेंसी यानी यूजीसी की आवश्यकता के अनुसार, आईयूसी निधि का अलग तुलन पत्र तैयार किया गया है। आईयूसी निधि की अचल संपत्ति 90,45,226.00 रुपए जिसका स्वामित्व संस्थान के पास है।

10. जहां आवश्यक समझा गया विगत वर्ष के दौरान आकड़ों को चालू वर्ष के तुल्य बनाने के लिए पुनः तैयार, पुनः वर्गीकृत तथा पुनः व्यवस्थित किया गया है।

11. टिप्पणी संख्या 1 से 24 तक तलुन–पत्र का आंतरिक भाग है तथा उसे पूर्णतः सत्यापित किया गया है

हस्ता./–	हस्ता./–	हस्ता./–
(राकेश कुमार शर्मा)	(कर्नल विजय तिवारी)	(मकरंद आर. परांजपे)
लेखा अधिकारी	सचिव	निदेशक

मानविकी और सामाजिक विज्ञानों के लिए अन्तर्विश्वविद्यालय केन्द्र (आई.यू.सी.)

DOGER & Co.
CHARTERED ACCOUNTANTS
(O) 0177-2656809, 2656162, (M) 98170-73000

लेखा परीक्षा रिपोर्ट

हमने मानविकी और सामाजिक विज्ञानों के अन्तर्विश्वविद्यालय केन्द्र (आई.यू.सी.) के तुलनपत्र के साथ उसकी प्राप्तियों व भुगतान तथा आय व व्यय का 31 मार्च, 2020 को समाप्त वर्ष का लेखा परीक्षण किया है तथा संबंधित रिपोर्ट संलग्न कर दी है।

वित्तीय विवरणों के लिए आई.यू.सी. प्रबन्धन जिम्मेवार है। हमारी जिम्मेवारी इन वित्तीय विवरणों के आधार पर लेखा परीक्षा के पश्चात् अपनी राय व्यक्त करना है।

हमने भारत के लेखा परीक्षा के मानकों के आधार पर लेखा परीक्षण किया है जो भारत में सामान्यतः स्वीकार्य हैं। इन मानकों के आधार पर हम लेखा परीक्षण करते हैं कि क्या वित्तीय विवरणीय स्पष्ट हैं और किसी प्रकार के गलत विवरणियाँ नहीं हैं। लेखा परीक्षण के आधार पर किया जाता है, तथा वित्तीय विवरणियों में रकमों के सबूत भी लिये जाते हैं। लेखा परीक्षण में लेखा सिद्वान्तों और विस्तृत आंकलन जोकि प्रबन्धन द्वारा तैयार किये जाते हैं उसका भी परीक्षण किया जाता है तथा वित्तीय विवरणियों का मूल्यांकन भी किया जाता है। हमें विश्वास है कि हमारा लेखा परीक्षण हमारी राय को व्यक्त करने में मूल आधार होता है।

पूर्ववर्ती टिप्पणियों के आधार पर हम रिपोर्ट प्रस्तुतग करते हैं–

1) लेखा परीक्षण के लिए अनिवार्य सभी सूचनायें और स्पष्टीकरण हमने अपनी पूर्ण जानकारी और विश्वास के आधार पर प्राप्त कर लिये हैं।
2) हमारे मत तथा जानकारी के अनुसार एवं हमें दिए गये स्पष्टीकरण तथा अनुलग्नक–2 में दिये गये मानकों के आधार पर इन लेखाओं की स्पष्ट स्थिति प्रकट होती हैः–
   क) तुलनपत्र में 31 मार्च, 2020 को समाप्त वर्ष के केन्द्र के कार्य कलाप हैं।
   ख) आय–व्यय लेखे में उस तिथि को समाप्त हुए वर्ष में प्राप्त सहायता अनुदान से उपयोग की गई रकम का लेखा–जोखा है।
   ग) प्राप्तियों तथा भुगतान के लेखों में उस तिथि को समाप्त हुए वर्ष का प्राप्तियाँ तथा भुगतान का लेखा–जोखा है।

कृते डोगर एण्ड कंपनी
सनदी लेखाकार
आईसीएआई नं. 019516एन

शिमला

(स.ले. मुनीष कौंडल)
पार्टनर एम. न. 508733
यूडीआइएन : 21508733AAAAEE959

कार्यालय– प्रथम मंजिल, पंचायत भवन मेन गेट के सामने, बस स्टैंड, शिमला (हि.प्र.)171001
ईमेल आईडी– *dogersachin@gmail.com*

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

(तुलन पत्र–31.3.2020)

देनदारियां	राशि (रुपयों में)	कुल (रुपए)		परिसम्पतियाँ राशि (रुपयों में)		कुल (रुपए)
पूंजी आरक्षित	74,88,354.00	86,87,236.00		स्थिर परिसम्पतियां		86,87,236.00
अथशेष	74,88,354.00			(अनुसूची–1 के अनुसार)		
जमा– वर्ष के लिए अनुवृद्धि	11,98,882.00					
				चालू परिसम्पतियां, ऋण तथा अग्रिम		45,70,184.51
चालू देनदारियां		45,70,184.51		भा.स्टेट बैंक (बचत खाता सं. 10116686391)	34,53,817.51	
अव्ययित सहायता अनुदान	40,84,678.51			यूजीसी से प्राप्य अनुदान सहायता	2,56,576.00	
				ड्राइवरों के लिए अग्रिम	5,50,000.00	
आईआईएएस को देय राशि (मुख्य खाता)	52,112.00			ऋण तथा अग्रिम (परिसम्पति)	3,09,791.00	
देय वेतन/मजदूरी	68,016.00					
देय व्यय	3,55,600.00					
देय लेखा परीक्षण शुल्क	9,778.00					
कुल (रुपए)		**1,32,57,420.51**		**कुल (रुपए)**		**1,32,57,420.51**

हस्ता./–
(राकेश कुमार शर्मा)
लेखा अधिकारी

हस्ता./–
(कर्नल विजय तिवारी)
सचिव

हस्ता./–
(मकरंद आर. परांजपे)
निदेशक

आज दिनांक तक हमारी रिपोर्ट के अनुसार'
कृते डोगर एण्ड कम्पनी
सनदी लेखाकार
आईसीएआई एफआरएन 019516एन
मुनीष कौंडल, सनदी लेखाकार
आईसीएआई नं. 019516एन
पार्टनर एम. न. 508733
यूडीआइएन : 21508733AAAAEE9598

स्थान : शिमला
दिनांक : 22.10.2021

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005
वित्तीय वर्ष 2019–20 के लिए स्थिर परिसम्पत्तियों की अनुसूची

अनुसूची.1

क्रमांक	वस्तु	दिनांक 01.4. 2019 को अथशेष	वर्ष के दौरान वृद्धि	वर्ष के दौरान विलोपन	दिनांक 31.3.2020 को अंतशेष
1	कम्प्यूटर	1764725.00	0.00	0.00	1764725.00
2	विद्युत उपकरण	876816.00	1198882.00	0.00	2075698.00
3	फर्नीचर और जुड़नार	1444317.00	0.00	0.00	1444317.00
4	पुस्तकालय व पुस्तकें	2809649.00	0.00	0.00	2809649.00
5	नया वाहन	592847.00	0.00	0.00	592847.00
	कुल योग	**7488354.00**	**1198882.00**	**0.00**	**8687236.00**

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005
31 मार्च 2020 को समाप्त वित्तीय वर्ष की प्राप्तियां तथा भुगतान

प्राप्तियां	राशि (रूपये में)	भुगतान	राशि (रूपये में)
अथशेष		राजस्व व्यय	
भा.स्टेट बैंक बचत खाता संख्या 10116686391	52,20,226.01	121 प्रशासन और डाक सहायता, चिकित्सा आदि	73,044.00
		127 कंप्यूटर सुविधाएं और अन्य इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरण	34,260.00
–प्राप्त राजस्व		145 रखरखाव भत्ता	8,74,425.00
–प्राप्त ब्याज	97,699.00	146 सह–अध्येताओं को यात्रा भत्ता	7,31,122.00
–विविध आय	2,967.00	147 शोध संगोष्ठी/अध्ययन सप्ताह/कार्यशाला	11,265.00
		150 विविध आकस्मिक व्यय	11,13,956.00
अन्य रसीदें		153 आईयूसी वाहन का रखरखाव	1,42,359.00
– एकत्रित मैस शुल्क	4,96,160.00	अनुबंधीय कर्मचारियों को वेतन/मजदूरी/समयोपरि भत्ता	23,21,338.00
– अनुदान सहायता	48,55,000.00		
– चालक द्वारा अग्रिम धनवापसी	1,655.00	अन्य भुगतान	
		– विविध अग्रिम राशि	7,99,149.00
		– आईआईएएस मेस के साथ जमा मेस शुल्क	4,96,160.00
		– लेखा परीक्षा शुल्क देय	9,681.00
		– मशीनरी की खरीद	5,94,133.00
		– बैंक प्रभार	265.50
		– आईआईएएस मुख्य खाते में किया गया भुगतान	18,732.00
		अंतशेष	
		– एसबीआई बचत खाता 10116686391	34,53,817.51
कुल	**106,73,707.01**	**कुल**	**106,73,707.01**

हस्ता./–
(राकेश कुमार शर्मा)
लेखा अधिकारी

हस्ता./–
(कर्नल विजय तिवारी)
सचिव

हस्ता./–
(मकरंद आर. परांजपे)
निदेशक

आज दिनांक तक हमारी रिपोर्ट के अनुसार'
कृते डोगर एण्ड कम्पनी
सनदी लेखाकार
आईसीएआई एफआरएन 019516एन

स्थान : शिमला
दिनांक : 22.10.2021

मुनीष कौंडल, सनदी लेखाकार
आईसीएआई नं. 019516एन
पार्टनर एम. न. 508733
यूडीआइएन : 21508733AAAAEE9598

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

31.3.2020 को मानविकी व सामाजिक विज्ञानों के लिए अन्तर–विश्वविद्यालय केन्द्र का आय–व्यय लेखा

व्यय	राशि (रूपये में)	आय	राशि (रूपये में)
		आय द्वारा रू	
– 121 प्रशासन और डाक, चिकित्सा आदि	73,044.00	– उपार्जित ब्याज	97,699.00
– 127 कंप्यूटर सुविधाएं और अन्य इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरण	34,260.00	– विविध आय	2,967.00
– 145 रखरखाव भत्ता	8,74,425.00	– सहायता अनुदान का उपयोग	52,58,555.50
– 146 सह–अध्येताओं को यात्रा भत्ता	7,31,122.00		
– 147 शोध संगोष्ठी/अध्ययन सप्ताह/कार्यशाला	-1,900.00		
– 150 विविध आकस्मिक व्यय	11,13,956.00		
– 153 आईयूसी वाहन का रखरखाव	1,42,359.00		
– व्यावसायिक व्यय	9,736.00		
– अनुबंधीय कर्मचारियों को वेतन/मजदूरी/समयोपरि भत्ता	23,81,954.00		
बैंक प्रभार	265.50		
वेतन व्यय			
– प्रशासनिक इकाई वेतन ओटीए, टीए /डीए / मानदेय	-		
कुल	**53,59,221.50**	**कुल**	**53,59,221.50**

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

31 मार्च, 2020 को समाप्त वित्तीय वर्ष की लेखा नीतियाँ

1. लेखा परिपाटी – वित्तीय विवरण ऐतिहासिक लागत परिपाटी के तहत अपचय आधार पर तथा आम तौर पर स्वीकृत लेखांकन सिद्धांतों एवं भारत में लागू लेखांकन मानकों के अनुसार तैयार किए गए हैं। वाहन व्यय के बीमा को छोड़कर जिनका लेखा नकद आधार पर किया गया है।

2. अचल परिसंपत्तियां– अचल संपत्ति ऐतिहासिक लागत पर दर्शाई गई है। इस लागत में किसी भी लागत को शामिल किया जाता है जो संपत्ति को उसके इच्छित उपयोग के लिए उसकी कार्यशील स्थिति में लाने के लिए जिम्मेदार होती है।

3. अचल संपत्तियों पर मूल्यह्रास– संस्थान द्वारा अपनाई गई लेखा नीति के अनुसार, अचल संपत्तियों पर कोई मूल्यह्रास नहीं लगाया गया है।

4. सेवानिवृत्ति लाभ– कर्मचारियों के सेवानिवृत्ति लाभों के प्रावधान को लेखा–बहियों में नहीं लिखा जाता क्योंकि सभी कर्मचारियों को अनुबंधीय आधार पर रखा गया है।

हस्ता./–	हस्ता./–	हस्ता./–
(राकेश कुमार शर्मा)	(कर्नल विजय तिवारी)	(मकरंद आर. परांजपे)
लेखा अधिकारी	सचिव	निदेशक

लेखा परीक्षा का अनुलंग्क

1. विगत वर्ष की लेखा परीक्षा रिपोर्ट की अनुपालनाः विगत वर्ष की लेखा परीक्षा रिपोर्ट की अनुपालना के बारे में हमें नहीं बताया गया। विगत वर्ष की रिपोर्ट में निहित लेखापरीक्षा पैरों को दुबारा लगाया है, जो निम्न प्रकार हैं–

   क) प्रोफेसर आर.एस. मिश्रा से वर्ष 94–95 से 18,475 रूपये की पेशगी की वसूली काफी समय से लेखा–बहियों में बकाया है। 25 वर्ष बाद भी इस राशि की वसूली के लिए कोई कारगर कदम नहीं उठाए गए। उक्त पेशगी के समायोजन/वसूली यथा शीघ्र प्रयास किए जाने चाहिए।

   ख) डॉ. वी.सी. थोमस को दिनांक 20.3.2004 को 100000.00 रूपये की अग्रिम राशि दी गई थी। इस अग्रिम भुगतान से संबंधित व्यय लेखापरीक्षा की तिथि तक लेखा पुस्तकों में दर्ज नहीं किया गया है। 16 साल बीत चुके हैं मगर राशि अभी भी बहीखातों में बकाया है। इसे यथाशीघ्र समायोजित/वसूल करने के लिए गंभीर प्रयास किए जाने की आवश्यकता है।

   ग) निदेशक आईसीएआर नई दिल्ली को अकादमिक संसाधन अधिकारी के द्वारा 15,000.00 रूपये संगोष्ठी के लिए दिये गए थे। इसमें से 10,000.00 रूपये की राशि बकाया है। जिसके लिए संबंधित व्यय लेखापरीक्षा की तिथि तक दर्ज नहीं किए गए हैं। इस राशि को समायोजित/वसूली करने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं। तथापि, हम यह कहना चाहते हैं कि इस राशि का समायोजन या तो राशि की वसूली की जानी चाहिए या फिर वास्तविकता के आधार पर संबंधित व्यय की बुकिंग की जानी चाहिए।

   घ) कुल सचिव जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय नई दिल्ली को अकादमिक संसाधन अधिकारी के द्वारा 2,75,000.00 रूपये की पेशगी 30.3.2007 को संगोष्ठी के आयोजन के लिए अकादमिक संसाधन अधिकारी द्वारा दी गई थी जिसमें से 94,884.00 रुपए की राशि संगोष्ठी के बाद बुक की गई मगर 1,80,116.00 रूपये अभी भी बकाया है, जिसके व्यय का विवरण संस्थान द्वारा प्राप्त किया जाना है। यह राशि लेखापरीक्षा की तिथि तक 13 वर्षों से बकाया है। हम यह कहना चाहते हैं कि इस राशि के समायोजन/वसूली के लिए शीघ्रातिशीघ्र सख्त निर्देश पारित किए जाएं।

कृते डोगर एण्ड कम्पनी
सनदी लेखाकार
आईसीएआईएफआरएन 019516एन

स्थान : शिमला

मुनीश कौंडल
पार्टनर
सनदी लेखाकार
आईसीएआई नं. 019516एन

पुस्तकालय

संस्थान के पुस्तकालय में अध्येताओं, आईयूसी सह–अध्येताओं, अतिथि प्राध्यापकों, अतिथि विद्वानों, परामर्शी सदस्यों और संगोष्ठियों के प्रतिभागियों को पुस्तकों, पत्रिकाओं की आदि सुविधा प्रदान की जाती है। राजपत्रित छुट्टियों को छोड़कर पुस्तकालय पूरे वर्ष खुला रहता है। पुस्तकालय में निम्न प्रकार की सुविधाएं व सेवाएं उपलब्ध हैं –

1. पुस्तकालय सेवाएं–पुस्तकालय ई–शोध सिंधु का सदस्य है और मानविकी और सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में सभी प्रमुख ई–संसाधनों तक इसकी अभिगम्यता है। पुस्तकालय पूरी तरह से स्वचालित है और पुस्तकों की सूची संस्थान की वेबसाइट पर उपलब्ध है। इंटरनेट का उपयोग करके, उपयोगकर्ता कहीं से भी 24x7 घंटे पुस्तकालय की पुस्तक सूची का उपयोग कर सकते हैं।

2. संस्थान की कॉपीराइट पुस्तकों का अंकरूपण– पुस्तकों के अंकरूपण की एक सतत प्रक्रिया है। पुस्तकालय ने कॉपीराइट पुस्तकों और संस्थान के मोनोग्राफों का अंकरूपण करने की पहल की है। पुस्तकालय अनुभाग द्वारा 11,848 पुस्तकों का डिजिटलीकरण किया गया है। पुस्तकालय ने सफलतापूर्वक डीस्पेस लेआउट को अनुकूलित किया है और पीडीएफ व्यूअर को कॉन्फ़िगर किया है, जो हमें कॉपीराइट पुस्तकों के डाउनलोड को प्रतिबंधित करने में सक्षम बनाता है। पुस्तकों की स्कैनिंग के लिए पुस्तकालय अनुभाग में एक अनुभवी समर्पित टीम काम कर रही है। हर दिन औसतन 1000 पृष्ठ स्कैन किए जा रहे हैं। इन स्कैन किए गए पृष्ठों को उपयुक्त सॉफ़्टवेयर का उपयोग कर संपादित किया जा रहा है; स्कैन की गई पुस्तकों का ओसीआर भी पुस्तकालय की इस टीम द्वारा किया जा रहा है। पुस्तकालय द्वारा डिजीटल पुस्तकों को अपलोड करने और खोजने के लिए एक उपयुक्त इंटरफेस भी विकसित किया गया है। विद्वान समुदाय द्वारा इस डिजीटल सामग्री का उपयोग वेबसाइटः http://14.139.58.199:8080/jspui/ से किया जा सकता है। प्रतिवेदन की अवधि के दौरान पुस्तकालय अनुभाग ने 2488 पुस्तकों का अंकरूपण किया है।

3. प्री–प्रिंट सर्वर– मानविकी और सामाजिक विज्ञान डिजिटल सामग्री को सृदृढ़ करने के लिए। पुस्तकालय ने 2020 में ओपन प्रीप्रिंट सिस्टम (ओपीएस) शुरू और स्थापित किया है। यह शोध पत्रों की पोस्टिंग के प्रबंधन के लिए एक ओपन–सोर्स प्रीप्रिंट सर्वर है। इसका उपयोग मानविकी और सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में प्रीप्रिंट सामग्री की मेजबानी के लिए किया जा रहा है। इसमें संस्थान के अध्येताओं और सहयोगियों द्वारा प्रस्तुत अप्रकाशित शोध पत्र शामिल किए हैं। अप्रकाशित लेखों को अपलोड करने, खोजने, देखने और डाउनलोड करने की सुविधा के लिए उपयुक्त ओपन–सोर्स सॉफ़्टवेयर का उपयोग किया जा रहा है। यह मंच संस्थान से जुड़े विद्वानों को समर्पित है और शोध के शुरुआती संस्करणों को स्थायी रूप से उपलब्ध कराता है। प्रीप्रिंट सर्वर स्थापित करने का उद्देश्य ज्ञान का प्रसार करना और इसे अकादमिक समुदाय के लाभ के लिए खोजने योग्य बनाना है। इसके तहत मानविकी और सामाजिक विज्ञान में अप्रकाशित शोध पत्रों की मेजबानी की सुविधा के लिए राष्ट्रीय स्तर पर प्रीप्रिंट सर्वर का विस्तार किया जाता है। इस संबंध में, उपयुक्त सॉफ्टवेयर और सर्वर को कॉन्फ़िगर किया गया है। ओपन प्रीप्रिंट सिस्टम (ओपीएस) को सफलतापूर्वक लागू करने वाला संस्थान का पुस्तकालय देश का पहला पुस्तकालय है। इसके तहत वर्तमान में 500 से अधिक शोध पत्र हैं। संस्थान के प्रीप्रिंट सर्वर की कोई भी, किसी भी समय, कहीं से भी वेबसाइट– http://14.139.58.200/ops/index.php/ips/ से अभिगम्यता कर सकता है।

4. संस्थान पत्रिकाओं की मेजबानी– संस्थान की ओपन एक्सेस नीति का कार्यान्वयन अपनी दो समीक्षा पत्रिकाओं– एसएचएसएस और समरहिल की शुरूआत के साथ ओपन जर्नल सिस्टम (ओजेएस) के उपयोग से साथ आगे बढ़ा। संस्थान वर्ष 1994 से इन दो समीक्षा पत्रिकाओं का प्रकाशन कर रहा है। वर्ष 2018 में इन पत्रिकाओं को ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर होस्ट करने के लिए एक बड़ी परियोजना मिली। पुस्तकालय ने ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर ओपन जर्नल

सिस्टम (ओजेएस) का उपयोग करके इन पत्रिकाओं (समरहिल और एसएचएसएस) को सफलतापूर्वक होस्ट किया है और उन्हें बिना किसी अवरोध के जनता के लिए सुलभ बनाया है। पुस्तकालय ने वाल्यूम–1 और नंबर–1 से शुरू होने वाले सभी अंकों का अंकरूपण कर दिया है। इस प्रक्रिया के दौरान, पुस्तकालय के कर्मचारियों ने इन अंकों को स्कैन, विभाजित और पीडीएफ प्रारूप में परिवर्तित किया है। इसके अलावा, लेख स्तर पर सभी अंकों को अनुक्रमित करने की एक विशेषता विकसित की है और अलग–अलग लेखकों के नाम और 1200 से अधिक लेखों से उनकी संबद्धता बनाई है। पुस्तकालय के कर्मचारियों द्वारा इस पूरे कार्य को सफलतापूर्वक निष्पादित किया गया है।

प्रकाशन

संस्थान का मुख्य उद्देश्य शोधकार्यों को प्रोत्साहित और प्रसारित करना है। विभिन्न श्रेणियों के अंतर्गत आने वाले शोधकर्ताओं के शोध परिणामों और यहां आयोजित विविध विषयों पर आयोजित संगोष्ठियों की कार्यवाही को संस्थान द्वारा पुस्तकों के रूप में प्रकाशित किया जाता है। ये प्रकाशन या तो पूरी तरह से संस्थान के प्रकाशनों के रूप में प्रकाशित होते हैं, या फिर ओरिएंट ब्लैकस्वान, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, परमानेंट ब्लैक, रूटलेज, सेज, प्राइमस, स्प्रिंगर आदि प्रमुख वाणिज्यिक प्रकाशकों के सहयोग से प्रकाशित किए जाते हैं। संस्थान द्वारा ऐसी 500 से अधिक पुस्तके प्रकाशित की गई हैं जो यहां स्थित फायर–स्टेशन कैफे की बुकशॉप में उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों संस्थान की वेबसाइट www.iias.ac.in, अमेजन, के माध्यम या संस्थान के बिक्री और जनसंपर्क अधिकारी को लिखित अनुरोध कर प्राप्त किया जा सकता है।

प्रतिवेदन की अवधि के दौरान संस्थान द्वारा निम्नलिखित पुस्तकें तथा पत्रिकाएं प्रकाशित की गईं–

1. डॉ. एनाक्षी रे मित्रा की पुस्तक– 'रेफरेंस एज एक्शन : स्पेस एण्ड टाइम इन लैटर विट्गेन्स्टाइन'।
2. डॉ. पी. नारायणन की पुस्तक– 'त्रिपुनिथुरा ग्रैंडावरी : ए स्टडी'।
3. प्रोफेसर बेटिना शारदा बाउमर की पुस्तक– 'द योगा ऑफ नेत्रा तंत्रा थर्ड आई एण्ड ओवकमिंग डैथ' (डी.के. प्रिंटवर्ल्ड के साथ सह–प्रकाशित)।
4. डॉ. अरुण कुमार द्वारा संपादित पुस्तक– 'नीड फॉर इन्क्ल्यूसिव रिफॉर्म्स : वेरियंग परस्पैक्टिवस'।
5. डॉ. योगेश स्नेही की पुस्तक– 'स्पेशलाइजिंग पॉपुलर सूफी श्राइनस इन पंजाब ड्रीम, मेमोरीज एण्ड टेरीटोरियलिटी' (रूटलेज के साथ सह–प्रकाशित)।
6. डॉ. अंबा कुलकर्णी की पुस्तक– 'संस्कृत पार्सिंग बेसड ऑफ द थीअरीस ऑफ भाब्दबोध' (डी.के. प्रिंटवर्ल्ड के साथ सह–प्रकाशित)।
7. डॉ. समीर बनर्जी की पुस्तक– 'ट्रेसिंग गांधी सत्यार्थी टू सत्याग्रही' (रूटलेज के साथ सह–प्रकाशित)।
8. डॉ. राजीव कुमारमकंडथ एवं डॉ. संजय श्रीवास्तव द्वारा संपादित पुस्तक– (ही) स्टोरीस ऑफ डिज़ायर सेक्सुअलिटीज़ एंड कल्चर इन मॉडरन इण्डिया' (कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस के साथ सह–प्रकाशित)।
9. डॉ. ए.पी. फ्रांसिस की पुस्तक– 'स्ट्रक्चरिंग अद्वैत डायलेक्टिक : ए स्टडी ऑन श्री हर्शाज खण्डनखण्डखाद्यम एण्ड नैषधीयचरितम् '।
10. डॉ. ज्योति सिन्हा की पुस्तक– 'बनारसी ठुमरी की परंपरा–ठुमरी गायिकाओं की चुनौतियाँ एवं उपलब्धियां'।

11. डॉ. जगदीश लाल डावर की पुस्तक– 'फूड इन द लाइफ ऑफ मिज़ोस : फरॉम प्री–कलोनिअल टाइम्स टू द प्रेजेंट'।

12. प्रोफेसर आर.एन. मिश्रा और प्रोफेसर पारुल दवे मुखर्जी द्वारा संपादित पुस्तक– 'रिथिंकिंग कम्पेरेटिव ऐस्थेटिक्स इन ए कंटेम्परेरी फ्रेम'।

13. श्री बिबेक देबरॉय द्वारा तेईसवां डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन स्मृति व्याख्यान पर आधारित पुस्तिका– 'द धर्मा ऑफ ट्रांसलेशन संस्कृत क्लासिकक्स इन कंटेम्परेरी टाइम्स'।

पत्रिकाएं

1. डॉ. अलबीना शकील द्वारा संपादित– समरहिल : आईआईएएस रिव्यू वॉल्यूम XX, नंबर 2, विंटर 2014

2. प्रोफेसर विभा अरोड़ा द्वारा संपादित– समरहिल : आईआईएएस रिव्यू वॉल्यूम XXIV, नंबर 2, विंटर 2018

3. प्रोफेसर अमिया सेन एवं प्रोफेसर आर.सी. प्रधान द्वारा संपादित– समरहिल : आईआईएएस रिव्यू वॉल्यूम XXV, नंबर 1, समर 2019

4. प्रोफेसर अमिया सेन एवं प्रोफेसर आर.सी. प्रधान द्वारा संपादित– समरहिल : आईआईएएस रिव्यू वॉल्यूम XXV, नंबर 2, विंटर 2019

5. डॉ. रमाशंकर सिंह एवं डॉ. मनीषा चौधरी द्वारा संपादित– हिमांजली : अंक –18 (जुलाई–दिसंबर 2018)।

6. डॉ. रमाशंकर सिंह एवं डॉ. मनीषा चौधरी द्वारा संपादित– हिमांजली : अंक–19 (जनवरी–जून 2019)।

राजभाषा

प्रतिवेदन की अवधि के दौरान संस्थान ने राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) और राजभाषा विभाग (शिक्षा मंत्रालय) द्वारा सरकारी कामकाज में हिंदी के व्यावहारिक उपयोग तथा प्रचार–प्रसार के लिए जारी दिशा–निर्देशों की अनुपालना स्वरूप निम्नलिखित प्रयास किए–

संस्थान द्वारा 21 जून 2019, 23 सितंबर 2019, 12 दिसंबर 2019 और 18 मार्च 2020 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक बैठकें आयोजित की गईं। बैठक की अध्यक्षता संस्थान के संस्थान के सचिव ने की जिसमें सभी अनुभाग प्रमुख उपस्थित थे। इन बैठकों में भारत सरकार के राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय और राजभाषा प्रभाग, शिक्षा मंत्रालय द्वारा निर्धारित सरकारी कार्यों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग विभिन्न बिन्दुओं पर चर्चा की गई और जारी दिशा–निर्देशों का पालन करने के लिए कदम उठाए गए।

प्रतिवेदन की अवधि के दौरान संस्थान द्वारा राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय), राजभाषा विभाग (शिक्षा मंत्रालय) और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, शिमला को समय पर तिमाही हिंदी प्रगति रिपोर्ट प्रेषित की गईं।

प्रतिवर्ष की भाँति हिन्दी दिवस समारोह बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर देश के प्रख्यात शिक्षाविद्, भाषाविद् और संस्थान के अध्यक्ष प्रोफेसर कपिल कपूर, सभी राष्ट्रीय अध्येता, अध्येता, आईयूसी सह–अध्येता तथा संस्थान के अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे। प्रोफेसर कपिल कपूर ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी हमारी राष्ट्रीय पहचान का प्रतीक है और हिन्दी तथा भारत की क्षेत्रीय भाषाओं में निहित ज्ञान अंग्रेजी भाषा से कमत्तर नहीं हैं, लेकिन हम अभी भी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से औपनिवेशिक मानसिकता के गुलाम हैं। लोकतंत्र की सफलता के लिए हिंदी

और भारत की अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का प्रचार और प्रसार बहुत आवश्यक है। राष्ट्रीय अध्येता प्रोफेसर रमेश चंद्र प्रधान ने कहा कि हिंदी हमारी आत्मा की भाषा है। राष्ट्रीय अध्येता प्रोफेसर एम.पी. सिंह ने हिंदी माध्यम से सामाजिक विज्ञान के क्षेत्रों का अध्ययन करने और देश की भाषा नीति तैयार करने की आवश्यकता पर बल दिया। प्रोफेसर मेघा देशपांडे ने हिंदी भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला और 'श्रृजनता' नामक अपनी कविता का पाठ किया। राष्ट्रीय प्रोफेसर दाता राम पुरोहित ने कहा कि हिंदी भाषा के विकास का सबसे अधिक श्रेय हिंदी सिनेमा उद्योग और हिंदी विद्वानों को जाता है। प्रोफेसर शरद देशपांडे ने कहा कि इस अवसर पर हिंदी के विकास और सामने आ रही चुनौतियों पर खुलकर चर्चा होनी चाहिए। डॉ. सत्येंद्र कुमार ने हिंदी भाषा को रोजगार से जोड़ने पर जोर दिया। प्रोफेसर हितेंद्र पटेल, डॉ. अभिषेक कुमार यादव, डॉ. बहादुर सिंह परमार और डॉ. अनीता नायर ने भी अपने व्याख्यान में हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति पर चिंता व्यक्त की। संस्थान के सचिव कर्नल (डॉ.) विजय तिवारी ने कहा कि हिंदी के विकास और प्रचार–प्रसार को लेकर चिंता की कोई बात नहीं है। आज कई भाषाएं सह–अस्तित्व में आ सकती हैं। सुदूरवर्ती, सीमावर्ती क्षेत्रों में रहने वाले देशवासी हिन्दी को अच्छी तरह समझते हैं और उन क्षेत्रों के ग्रामीण सेना से हिन्दी में अच्छी तरह संवाद करते हैं। इस अवसर पर संस्थान की अर्द्धवार्षिक हिंदी पत्रिका 'हिमांजलि' के 18वें अंक का भी लोकापर्ण किया गया।

माह सितंबर–अक्टूबर 2019 के दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया, जिनमें संस्थान के अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। प्रतियोगिताओं के विजेताओं तथा प्रतिभागियों को प्रोत्साहन राशि, प्रशस्ति पत्र तथा उपहार देकर पुरस्कृत किया गया।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा शुरू की गई हिंदी में नोटिंग/ड्राफ्टिंग के लिए प्रोत्साहन योजना के तहत हिंदी में अधिकतम काम करने के लिए 10 अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रोत्साहन राशि तथा प्रशस्ति–पत्र देकर सम्मानित किया गया।

विविध

बिक्री एवं जनसंपर्क

01 अप्रैल 2019 से 31 मार्च 2020 की अवधि के दौरान संस्थान में आए आगंतुकों ने संस्थान की बुकशॉप से 3,64,326.00 रुपए (मात्र तीन लाख चौंसठ हजार तीन सौ छब्बीस) की 1476 पुस्तकें खरीदीं। संस्थान ने देश भर के विभिन्न ग्राहकों को 1,84,016.00 रुपए (मात्र एक लाख चौरासी हजार सोलह रुपये मात्र) की मूल्य की 569 पुस्तकें भी बेचीं। इसके अलावा, संस्थान ने दिल्ली विश्व पुस्तक मेले (दिनांक 04.01. 2020 से दिनांक 12.01.2020 मे) में 1,09,887.00 (मात्र एक लाख नौ हजार आठ सौ सत्तासी) रुपए की 578 पुस्तकें बेचीं। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म जैसे अमेज़न, फ्लिप कार्ट और बिल्ड बाजार से 1,97,227.00 (मात्र एक लाख सतानवे हजार दो सौ सत्ताइस) रुपये की पुस्तकें भी बेचीं। इस प्रकार, सभी माध्यमों से संस्थान के प्रकाशनों की बिक्री से प्राप्त कुल 8,55,456.00 रुपए (मात्र आठ लाख पचपन हजार चार सौ छप्पन रुपए) की राशि प्राप्त हुई।

आलोच्य वर्ष के दौरान संस्थान में 2,20,999 पर्यटकों ने संस्थान का भ्रमण किया। जिस ऐतिहासिक भवन में संस्थान चलायमान है, उसे देखने आए पर्यटकों से प्रवेश शुल्क वसूल कर 99,89,850.00 रुपये (मात्र निन्यानवे लाख नवासी हजार आठ सौ पचास रुपये) की राशि अर्जित की। संस्थान ने मुख्य भवन तक आने वाले वाहनों से लिए जाने वाले प्रवेश शुल्क से 7,65,980.00 रुपये (मात्र सात लाख पैंसठ हजार नौ सौ अस्सी रुपए) की राशि भी अर्जित की। इस प्रकार उक्त अवधि के दौरान संस्थान को पर्यटक शुल्क और वाहन प्रवेश शुल्क से कुल 1,07,55,830.00 रुपये (मात्र एक करोड़ सात लाख पचपन हजार आठ सौ तीस रुपये) की राशि प्राप्त हुई।

संस्थान की बुकशॉप में एक पुस्तिका, टी–शर्टस, स्वेट–शटर्स, टोपियां, कॉफी मग, पिक्चर पोस्टकार्ड, फ्रिज मैग्नेट और ग्रीटिंग कार्ड आदि कुछ स्मारिका वस्तुएं बिक्री के लिए उपलब्ध हैं। इस अवधि के दौरान, संस्थान ने इन स्मारिका वस्तुओं की 4,20,595.00 रुपए (मात्र चार लाख बीस हजार पांच सौ पचानवे रुपये) की सकल बिक्री की और बिक्री से 1,32,178.00 रुपए (मात्र एक लाख बत्तीस हजार एक सौ अठहत्तर रुपये) की राशि का शुद्ध लाभ अर्जित किया।

सम्पदा

रिपोर्ट की अवधि के दौरान, केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग (सिविल और विद्युत) तथा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) ने संस्थान के दैनिक रखरखाव के कार्यों को करना जारी रखा, जिसका विवरण इस प्रकार हैं–

1. संस्थान ने माली लाइन–2 की मरम्मत और नवीनीकरण के लिए के.लो.नि.वि. (सिविल) को अनुमानित राशि 48,40,620.00 रुपये की एजव में 16,13,540.00 रुपये की राशि जारी की।
2. गैर–आवासीय भवनों के वार्षिक रखरखाव के लिए संस्थान ने के.लो.नि.वि. (सिविल) को 47,05,000.00 रुपए की राशि जारी की।
3. आवासीय भवनों के वार्षिक रखरखाव के लिए संस्थान ने के.लो.नि.वि. (सिविल) को 51,88,221.00 रुपए की राशि जारी की।
4. विभिन्न आवासी तथा गैर–आवासी भवनों में होने वाले कार्यों के लिए संस्थान ने के.लो.नि.वि. (सिविल) को वार्षिक रखरखाव योजना के तहत 51,88,221.00 रुपए की राशि जारी की।
5. संस्थान ने के.लो.नि.वि. (सिविल) को ए/आर एंड एम/ओ (आवासीय और गैर–आवासीय) कार्यों के लिए 62, 70,000.00 रुपए की राशि जारी की।
6. संस्थान ने के.लो.नि.वि. (सिविल) को काउ–शेड भवन में मेजेनाइन फर्श और सीमेंट कंक्रीट पेवर ब्लॉक के प्रावधान के लिए 22,04,300.00 रुपए की राशि जारी की।
7. संस्थान ने आवासीय और गैर–आवासीय भवनों के रखरखाव के लिए के.लो.नि.वि. (विद्युत) को 41,25,788.00 रुपए की राशि जारी की।
8. संस्थान ने आब्ज़रवेटरी कॉटेज में (वीआरएफ/वीआरवी सिस्टम) विद्युत अधिष्ठापन की मरम्मत और नवीनीकरण के लिए के.लो.नि.वि. (विद्युत) को 26,84,246.00 रुपये की राशि जारी की।
9. संस्थान ने डेलविला सर्वेंट क्वार्टरों के विद्युत अधिष्ठापन की मरम्मत और नवीनीकरण के लिए के.लो.नि.वि. (विद्युत) को 37,901.00 रुपये की राशि जारी की।
10. संस्थान ने मुख्य भवन में ईआई प्रदान करने, पुरानी वायरिंग के प्रतिस्थापन, डीबी, नए वायरिंग डीबी और स्विच लगाने के लिए के.लो.नि.वि. (विद्युत) को 8,09,993.00 रुपये की।
11. संस्थान ने अपने परिसर में स्थित के.लो.नि.वि. (विद्युत) के पूछताछ केन्द्र के सरिया स्टोर भवन के जीर्णोद्धार के लिए के.लो.नि.वि. (विद्युत) को 8,38,497.00 रुपये की राशि जारी की।
12. संस्थान ने मुख्य भवन में 4/6 यात्री (408 किग्रा.) लिफ्ट के प्रतिस्थापन के लिए के.लो.नि.वि. (विद्युत) को 37,31,971.00 रुपये की राशि जारी की।
13. संस्थान ने माली लाइन में उन्नयन और विद्युत स्थापना और जुड़नार के लिए के.लो.नि.वि. (विद्युत) को

6,94,537.00 रुपये की राशि जारी की।

14. संस्थान में स्थापित विद्युत प्रतिष्ठानों (एमओईआई) के रखरखाव के लिए के.लो.नि.वि. (विद्युत) को 16,49,340.00 रुपये की राशि जारी की।

15. संस्थान ने वर्ष 2019–20 की एमओईआई के लिए अतिरिक्त मांग की एवज ज्यादा व्यय के लिए 22,00,000.00 रुपये की राशि जारी की।

आपूर्ति एवं सेवा अनुभाग

प्रतिवेदनाधीन अवधि के दौरान आपूर्ति एवं सेवा अनुभाग ने संस्थान के कामकाज को सुचारू रूप से चलाने तथा शोधरत अध्येताओं के लिए 25,13,660/–रुपए (मात्र पच्चीस लाख तेरह हजार छः सौ साठ रुपये) की राशि के विभिन्न कार्यालय उपकरणों की खरीद की।

औषधालय

संस्थान में औषधालय है जिसमें एक आवासी चिकित्सा अधिकारी तथा एक फार्मासिस्ट है। प्रतिवेदन की अविध के दौरान औषधालय में आवासी चिकित्सा अधिकारी द्वारा 2874 रोगियों की जांच की गई तथा कार्यालयी समय के पश्चात 70 रोगियों को आपातकालीन चिकित्सा सुविधा प्रदान की गई। इसके अतिरिक्त दिनाँक 22.3.2021 से 24.3.2021 तक आयोजित स्वास्थ्य शिविर में अध्येताओं, स्थायी कर्मचारियों तथा उनके परिवारजनों के रक्त के नमूने लेकर जांच की गई।

संस्थान में 31 मई 2019 को विश्व तंबाकू निषेध दिवस मनया गया। इस अवसर पर तंबाकू और नशीली दवाओं के दुरुपयोग के हानिकारक प्रभावों पर एक व्याख्यान आयोजित किया गया था। सुश्री नूपुर खन्ना ने 4 सितंबर 2019 को अपशिष्ट प्रबंधन और स्वच्छता पर व्याख्यान दिया। इसके अलावा, क्रोध प्रबंधन, खुशी, ध्यान और भावनात्मक बुद्धिमत्ता जैसे विभिन्न मुद्दों पर व्याख्यान भी आयोजित किए गए।

18 एवं 19 जून 2019 को आयोजित रक्त परीक्षण एवं स्वास्थ्य जांच शिविर में संस्थान के अध्येताओं, अधिकारियों, कर्मचारियों तथा उनके परिवारजनों के कुल 132 परीक्षण किए दिनांक 6 से 14 अगस्त 2019 तक स्वास्थ्य और कल्याण सप्ताह मनाया गया। संस्थान द्वारा अध्येताओं, अधिकारियों और उनके परिवार के सदस्यों के लिए योग कक्षाएं भी शुरू की गईं। मार्च 2020 में कोविड 19 महामारी के दौरान आवश्यक स्वास्थ्य परामर्श जारी किए गए थे।

उद्यान

संस्थान में विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों से सुसज्जित एक सुंदर और विशाल उद्यान है, और इतनी ऊंचाई पर स्थित सबसे अच्छे प्राकृतिक उद्यानों में से एक है। मुख्य भवन की छत्त से बारिश के पानी को इकट्ठा करके पूरे साल उद्यान की सिंचाई की जाती है। उद्यान में तीन नर्सरी हैं जो संस्थान में साज–सज्जा की जरूरतों को पूरा करती हैं और जहां कुछ दुर्लभ हिमालयी पौधों को रोपित कर पोषण किया जाता है। संस्थान के उद्यान को शिमला के सबसे सुंदर और सुव्यवस्थित उद्यानों में से एक के रूप में मान्यता दी गई है। बागवानी में रूचि रखने वाली जनता के लिए यहां पौधे बिक्री के लिए भी उपलब्ध हैं।

समीक्षा अवधि के दौरान, उद्यान अनुभाग द्वारा संस्थान के विरासत उद्यान के रखरखाव और विकास में भरपूरर कार्य

किए हैं जिनमें रोपण, छंटाई, खाद, कीट प्रबंधन, मल्चिंग, पानी, निराई, जमीन की सफाई और सामान्य लॉन रखरखाव शामिल हैं।

उद्यान अनुभाग द्वारा संस्थान के मुख्य भवन के सामने और पीछे के लॉन/उद्यान, सिद्धार्थ–विहार, स्क्वॉयर हॉल, प्रॉस्पेक्टस हिल, बिलासपुर हाउस, रेड स्टोन, क्रेलविला, सेब का बाग, कीवी ब्लॉक, रोज गार्डन तथा अध्येताओं/अधिकारियों/कर्मचारियों के आवास परिसर में स्थित फूलों की क्यारियों का नियमित रखरखाव किया जाता है।

संस्थान के उद्यान में चिनार, मैगनोलिया, ऑर्किड, फुशिया, विस्टेरिया, टेकोमा, हनीसकल, क्लिविया लिली, अगपेंथस लिली, क्रिनम, कैला लिली, डे लिली, और दूसरी किस्मों के कई पौधे तथा बारहमासी फूल हैं।

रोजमर्रा के दैनिक कार्यों के अलावा उद्यान अनुभाग ने संस्थान के परिसर में स्थित सेब के बगीच में स्ट्रॉबेरी के लगभग 1500 पौधे लगाए और सेब के पेड़ों की पंक्तियों के बीच फूलगोभी के लगभग 450 पौधे लगाए गए।

वन महोत्सव

प्रतिवेदन अवधि के दौरान संस्थान ने प्रकृति और पर्यावरण की रक्षा के बारे में अपने अध्येताओं, सह–अध्येताओं, अधिकारियों व कर्मचारियों में जागरूकता पैदा करने क लिए वन महोत्सव बड़े उत्साह के साथ मनाया। संस्थान के सभी अध्येता, अधिकारी और कर्मचारी सदस्य संस्थान के विभिन्न स्थानों पर देवदार, हार्स चेस्टनट, क्वर्काकस के पौधे लगाए।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

संस्थान ने 21 जून 2019 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया। इस अवसर पर एक योग शिविर का आयोजन किया गया। योग प्रशिक्षिका सुश्री गायत्री अय्यर ने संस्थान के अध्येताओं, सह–अध्येताओं, अधिकारियों, कर्मचारियों और उनके परिवार के सदस्यों को विभिन्न योगासन सिखाए और शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए जीवन में योग के महत्व पर प्रकाश डाला।

आंतरिक शिकायत समिति

प्रतिवेदन की अवधि के दौरान संस्थान की आंतरिक शिकायत समिति को एक शिकायत प्राप्त हुई जिसका तत्काल निपटारा कर दिया गया।

सूचना का अधिकार

प्रतिवेदन की अवधि के दौरान, संस्थान को 'सूचना का अधिकार अधिनियम 2005' के तहत 35 आवेदन प्राप्त हुए। प्रत्युत्तर में आवेदकों को यथासमय वांछनीय जानकारी प्रदान की गई।

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

सोसाइटी

1. प्रोफेसर कपिल कपूर
   अध्यक्ष, सोसाइटी
   भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
   राष्ट्रपति निवास, शिमला–171005

2. प्रोफेसर चमन लाल गुप्त
   उपाध्यक्ष, सोसाइटी
   भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
   राष्ट्रपति निवास, शिमला–171005

3. प्रोफेसर मकरंद आर. परांजपे
   निदेशक
   भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
   राष्ट्रपति निवास, शिमला–171005

नियम 3 (क) संस्थागत सदस्य (पदेन)

1. श्री आर. सुब्रमण्यम, भा.प्र.से.
   सचिव
   उच्चतर शिक्षा विभाग
   मानव संसाधन विकास मंत्रालय
   कमरा नं. 127, सी–विंग
   शास्त्री भवन, नई दिल्ली–110015

2. श्री गिरीश चन्द्र, मुरमु भा.प्र.से.
   सचिव, व्यय एवं वित्त
   भारत सरकार
   व्यय विभाग
   वित्त मंत्रालय, नार्थ ब्लाक केन्द्रीय सचिवालय
   नई दिल्ली–110001

3. सुश्री सुखबीर सिंह संधु (एस, टीई एण्ड सीओओ)
   संयुक्त सचिव का अतिरिक्त प्रभार (उच्चत्तर शिक्षा एवं आईसीआर डिविजन½
   उच्चतर शिक्षा विभाग
   मानव संसाधन विकास मंत्रालय
   कमरा नं. 109–सी, शास्त्री भवन, नई दिल्ली–110015

4. प्रोफेसर डी.पी. सिंह
अध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली–110002

5. डा. शेखर सी. मान्डे
महानिदेशक
वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद
रफी मार्ग, नई दिल्ली–110001

6. डॉ. ब्रज बिहारी कुमार
अध्यक्ष
भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद
पोस्ट बाक्स न0 10528
अरूणा आसिफ अली मार्ग
नई दिल्ली–110067

7. प्रोफेसर अरविंद पी. जामखेड़कर
अध्यक्ष
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
35 फिरोजशाह मार्ग
नई दिल्ली–110001

8. प्रोफेसर रमेश चन्द्र सिन्हा
अध्यक्ष
भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद
36 तुगलकाबाद इन्स्टीच्यूशनल एरिया
मेहरोली बदरपुर मार्ग, नई दिल्ली–110062

9. श्री गोविंद प्रसाद शर्मा
अध्यक्ष
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरु भवन, इन्स्टीट्यूश्नल एरिया, फेज–II
वसंतकुंज, नई दिल्ली–110070

10. डॉ. चन्द्रशेखर कंबर
अध्यक्ष
साहित्य अकादमी
श्री सैम्पिज
नं. 44, प्रथम मेन
बनशंकरी तृतीय स्तर, चौथा ब्लॉक
बेंगलुरू– 560085

11. श्री शेखर सेन
अध्यक्ष
संगीत नाटक अकादमी
रवीन्द्र भवन, फिरोजशाह मार्ग
नई दिल्ली–110001

12. श्री उत्तम पचार्ने
अध्यक्ष
ललित कला अकादमी
फिरोजशाह मार्ग, नई दिल्ली–110001

13. श्री अजय कुमार सूद
अध्यक्ष
भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी,
बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली– 110002

14. डॉ. विनय प्रभाकर सहस्त्रबुद्धे
अध्यक्ष
भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद
एन–38, पंचशील पार्क
नई दिल्ली–110017

15. प्रोफेसर मणिकरॉव माधोरॉव सलुन्खे
अध्यक्ष, भारतीय विश्वविद्यालय परिषद
ए.आई.यू., हाउस
16 कामरेड इन्द्रजीत गुप्ता मार्ग (कोटला मार्ग)
राष्ट्रीय बाल भवन के सामने, आईटीओ के समीप
नई दिल्ली– 110002
एवं
कुलपति
भारती विद्यापीठ (मानद विश्वविद्यालय) पुणे

16. श्री ए.डी. चौधरी
महानिदेशक
राष्ट्रीय पुस्तकालय
वैलवैड्रे, अलीपुर
कोलकाता–700027

17. श्री प्रणव खुल्लर
महानिदेशक अभिलेखागार
राष्ट्रीय अभिलेखागार
जनपथ, नई दिल्ली–110001

18. श्री श्रीकांत बाल्दी, भा.प्र.से.
मुख्य सचिव
हिमाचल प्रदेश सरकार
हि.प्र. सचिवालय, शिमला–171002

यदि आवश्यक हो तो संस्थागत सदस्य बैठकों में अपने मनोनीत प्रतिनिधियों को भेज सकते हैं।

नियम 3 (ख) नामित सदस्य
नियम 3 (ख) (1) के अन्तर्गत केन्द्रीय सरकार द्वारा नामित भारतीय विश्वविद्यालयों के छः उप–कुलपति

1. प्रोफेसर कुलदीप चंद अग्निहोत्री
कुलपति
केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला
हिमाचल प्रदेश–176206

2. रिक्त

3. प्रोफेसर एस.के. श्रीवास्तव
कुलपति
नॉर्थ–ईस्टरन हिल यूनिवर्सिटी
शिलांग –793002

4. प्रोफेसर बी. थिम्मेगोड़ा
कुलपति
कर्नाटक राज्य ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विश्वविद्यालय
गड़क, रैता भवन, जनरल करियप्पा सर्कल, गड़क
कर्नाटक –582101

5. प्रोफेसर अप्पा राव पोडिल़
कुलपति
हैदराबाद विश्वविद्यालय
हैदराबाद–500046, तेलंगाना

6. प्रोफेसर वसंत शिंदे
कुलपति
दक्षिण महाविद्यालय, स्नातकोत्तर एण्ड शोध संस्थान
पुणे–411006,

नियम 3 (ख) (2) के अन्तर्गत केन्द्र सरकार द्वारा नामित 18 से 24 शिक्षाविद

1. प्रोफेसर कपिल कपूर
बी–2/332, एकता गार्डन
9–आईपी एक्सटेन्शन, मदर डायरी मार्ग, दिल्ली– 110092

2. प्रोफेसर चमन लाल गुप्त
विवके कुटीर, समरहिल
शिमला–171005

3. प्रोफेसर जी.के. करंथ
प्राध्यापक समाजशास्त्र
सामाजिक परिवर्तन एवं विकास अध्ययन केन्द्र
इन्स्टिट्यूट फार सोशल चेंज एण्ड डिवेलपमेंट
बंगलोर–560072

4. प्रोफेसर संजीव कुमार शर्मा
कुलपति
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय
कैम्प ऑफिस, रघुनाथपुर, मोतिहारी– 845401,
ओपी थाना के समीप, उत्तरी चम्पारण, बिहार

5. प्रोफेसर पवन कुमार शर्मा
प्राध्यापक एवं पूर्व विभागाध्यक्ष
राजनीति शास्त्र विभाग
अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय
मध्य प्रदेश– 462016

6. प्रोफेसर बी.के. कुठियाला
अध्यक्ष
हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद, हरियाणा

7. प्रोफेसर (डॉ.) जगबीर सिंह
डब्ल्यूजेड–707/सी, गली नं. 18, शिव नगर
जेल रोड़, नई दिल्ली– 110058

8. प्रोफेसर राकेश कुमार मिश्रा
202, साई अपार्टमेंटस, सी–40, जे पार्क–II
महानगर एक्सटेन्शन, लखनऊ– 226006

9. प्रोफेसर हिमाशुं प्रभा रॉय
603, आइवरी टॉवर, द रीट्रट कॉम्प्लैक्स
सैक्टर– 30, साउथ सिटी–1
गुड़गाँव– 122007, हरियाणा

10. प्रोफेसर डी. मुरली मनोहर
अंग्रेजी विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय
डाक. केन्द्रीय विश्वविद्यालय
हैदराबाद–500046, तेलंगाना

11. प्रोफेसर शरद देशपाण्डे
13 खगोल वैज्ञानिक, सहकारी हाउसिंग सोसाइटी
38/1 पंचवटी पाषाण पुणे– 411008

12. रिक्त

13. प्रोफेसर डी.एन त्रिपाठी
लीला निलायम, 99–ए, इंदिरा नगर
डाकघर– शियोपुरी, न्यू कलोनी
गोरखपुर–273016, उत्तर प्रदेश

14. प्रोफेसर प्रेमा नंद कुमार
श्री अरबिंदो विद्वान
स्वामी विवेकानंद चेयर
महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय, केरल– 686560

15. रिक्त

16. श्री राजीव मल्होत्रा
संस्थापक, द इन्फिनिटी फाउंडेशन
174 नस्साउ एसटी
पीएमबी 400, प्रिस्टन, एनजे 08542

17. डॉ. के.एस. कानन
107, विभावी
17थ मेन क्रॉस (न्यू 2बी क्रॉस)
मुनेश्वरा ब्लॉक, बंगलोर –560026

18. प्रोफेसर शांतिश्री धुलीपुडी पण्डित
राजनीति एवं लोक प्रशासन
पुणे विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र– 411007

19. प्रोफेसर जी. नागेश्वर राव
कुलपति
आन्ध्र प्रदेश विश्वविद्यालय
विशाखापटनम– 530003, आन्ध्र प्रदेश

20. प्रोफेसर गुरूराज कराजगी
संस्थापक एवं अध्यक्ष
अकैडमी फॉर क्रिएटिव टीचिंग (एसीटी),
बंगलुरू– 560032

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

शासी निकाय

1. प्रोफेसर कपिल कपूर
   अध्यक्ष, शासी निकाय
   भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
   राष्ट्रपति निवास, शिमला–171005

2. प्रोफेसर चमन लाल गुप्त
   उपाध्यक्ष, शासी निकाय
   भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
   राष्ट्रपति निवास, शिमला–171005

3. प्रोफेसर मकरंद आर. परांजपे
   निदेशक
   भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
   राष्ट्रपति निवास, शिमला–171005

मानव संसाधन विकास मंत्रालय तथा वित्त मंत्रालय से एक–एक प्रतिनिधि

1. श्री आर. सुब्रमणयम, भा.प्र.से.
   सचिव
   उच्चतर शिक्षा विभाग
   मानव संसाधन विकास मंत्रालय
   कमरा नं. 127, सी–विंग
   शास्त्री भवन, नई दिल्ली–110015

2. सुश्री दर्शन एम डबराल
   सयुंक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहकार
   माध्यम एवं उच्चतर शिक्षा विभाग
   मानव संसाधन विकास मंत्रालय
   120–सी, शास्त्री भवन, नई दिल्ली–110015

पांच संस्थागत सदस्य

1. प्रोफेसर डी.पी. सिंह
   अध्यक्ष
   विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
   बहादुरशाह ज़फर मार्ग
   नई दिल्ली–110002

2. डॉ. ब्रज बिहारी कुमार
अध्यक्ष
भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद
पोस्ट बाक्स न0 10528
अरूणा आसिफ अली मार्ग
नई दिल्ली–110067

3. प्रोफेसर रमेश चन्द्र सिन्हा
अध्यक्ष
भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद
36 तुगलकाबाद इन्स्टीच्यूशनल एरिया
मेहरोली बदरपुर मार्ग
नई दिल्ली–110062

4. डॉ. गिरीश साहनी
महानिदेशक
विज्ञान एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद
एवं सचिव डीएसआईआर अनुसंधान भवन
2, रफी मार्ग, नई दिल्ली– 110001

5. प्रोफेसर अरविंद पी. जामखेड़कर
अध्यक्ष
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
35 फिरोजशाह मार्ग
नई दिल्ली–110001

यदि आवश्यक हो तो संस्थागत सदस्य बैठकों में अपने प्रतिनिधि भेज सकते हैं।

नियम 3 (ख) (1) के अन्तर्गत केन्द्रीय सरकार द्वारा नामित दो उप–कुलपति

1. रिक्त

2. प्रोफेसर एस.के. श्रीवास्तव
कुलपति
नॉर्थ–ईस्टरन हिल यूनिवर्सिटी
शिलांग –793002

नियम 3 (ख) (2) के अन्तर्गत केन्द्र सरकार द्वारा नामित चार सदस्य

1. प्रोफेसर चमन लाल गुप्त
विवेक कुटीर, समरहिल
शिमला–171005

2. प्रोफेसर जी.के. करंथ
प्राध्यापक समाजशास्त्र
सामाजिक परिवर्तन एवं विकास अध्ययन केन्द्र
इन्स्टिट्यूट फार सोशल चेंज एण्ड डिवेलप्मेंट
बंगलोर–560072

3. प्रोफेसर संजीव कुमार शर्मा
कुलपति
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय
कैम्प ऑफिस, रघुनाथपुर
मोतिहारी– 845401, ओपी थाना के समीप
उत्तरी चम्पारण, बिहार

4. प्रोफेसर गुरूराज कराजगी
संस्थापक एवं अध्यक्ष
अकेडमी फॉर क्रिएटिव टीचिंग (एसीटी)
बंगलुरू– 560032

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

वित्त समिति

1. प्रोफेसर मकरंद आर. परांजपे
   निदेशक
   भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
   राष्ट्रपति निवास, शिमला–171005

2. सुश्री दर्शन एम डबराल
   सयुंक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहकार
   माध्यम एवं उच्चतर शिक्षा विभाग
   मानव संसाधन विकास मंत्रालय
   120–सी, शास्त्री भवन
   नई दिल्ली–110015

3. प्रोफेसर अरविंद पी. जामखेड़कर
   अध्यक्ष
   भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
   35, फिरोजशाह रोड़, नई दिल्ली–110001

4. प्रोफेसर (डॉ.) जगबीर सिंह
   डब्ल्यूजेड–707/सी, गली नं. 18, शिव नगर
   जेल रोड़, नई दिल्ली– 110058

5. प्रोफेसर शरद देशपाण्डे
   13 खगोल वैज्ञानिक, सहकारी हाउसिंग सोसाइटी
   38/1 पंचवटी पाषाण पुणे– 411008

ANNUAL REPORT
2019–20

Contents

SL. NO.	PARTICULARS	PAGE
	Foreword by Chairperson	161
	Director's Note	163
I	**General**	165
	Introduction	165
	Governance and Administration	166
II	**Fellows**	166
III	**Academic Activities**	169
	Rabindranath Tagore Memorial Lecture	169
	Dr. Sarvepalli Radhakrishnan Memorial Lecture	170
	Seminars, Conferences, Symposia and Round Tables	170
	Weekly Seminars by Fellows	242
	Monographs Received from Fellows	245
	Distinguished Lecture Series	246
	Best Minds of India Series	247
	Visiting Professors	247
	Visiting Scholars	248
	Associates in the UGC Inter-University Centre	250
	Other Programmes	255
IV	**Accounts and Budget**	256
	Audited Statement of Account of IIAS	267
	Audited Statement of Account of IUC	300
V	**Library**	306
VI	**Publication**	307
VII	**Official Language**	308
IX	**Miscellaneous**	309
	Annexures	
	List of IIAS Society, Governing Body and Finance Committee	313

FOREWORD

It is a great pleasure to write the Foreword for Annual Report for the Financial Year 2019-20 of the Indian Institute of Advanced Study (IIAS), Shimla. During the period under report, the Institute had implemented a number of academic activities and various administrative initiatives. Several Fellows joined and engaged themselves in serious research; various seminars and workshops had also been conducted over the year in different domains: fundamental as well as applied. I am sure this work reinforces the high reputation of the Institute.

The institute organized various events under the flagship of *Azadi Ka Amrit Mahotsav*, an initiative of the Government of India to celebrate and commemorate 75 years of independence.

We are obliged to the generous support of the Hon'ble Union Minister of Education, Secretary and other officials of the Department of Higher Education, Ministry of Education, Government of India.

Credits are due to the Hon'ble Director, all officials and staff of the Institute for their dedication and cooperation which enabled the Institute to fulfill the dreams of its founder, the venerated academician and former President of India, Professor Dr. S. Radhakrishnan.

It is a matter of delight that now the scholars can pursue their research work in any of the languages listed in the eighth schedule of Indian Constitution. Gladly the Institute is moving forward to fulfil its academic aims as enshrined in the Memorandum of Association (MoA).

I wish and pray that the Institute progresses in a positive direction and keeps moving to attain its objectives.

ShashiPrabha Kumar
President of Society
&
Chairperson, Governing Body

DIRECTOR'S NOTE

The Annual Report for the Financial Year 2019-20 of the Indian Institute of Advanced Study (IIAS) narrates the journey of another successful year in its quest for academic excellence.

While inaugurating the Institute way back in October 1965, the then President of India, Professor Sarvepalli Radhakrishnan imagined it as a place that would support a free and creative inquiry into the themes and problems of life and thought. The environment of the Institute is eminently suitable for academic pursuits, especially in the areas of the Humanities, Indian Culture, Religion, Literature, Philosophy and Social Sciences. However, from time to time, other fields of research have also been added.

Over the years, the IIAS has remained committed to its original objective of enabling outstanding scholars to explore fundamental concepts thereby advancing the frontiers of knowledge.

The Institute awards Fellowship to outstanding scholars in the country. Overseas scholars are also awarded fellowships. The Institute also invites eminent academicians to deliver lectures and organizes seminars/conferences etc. The Fellows at the end of their term submit the outcome of their research for publication. Lectures delivered by the Visiting Professor/Visiting Fellows and Guest Fellows are published in the Institute's Journals.

I am happy to mention that during the year under report the Institute has published 12 books, 06 editions of two journals and one Radhakrishnan Memorial Lecture. This apart, a large number of seminars, conferences, workshops and study weeks were organized offline as well online during the period.

The Library of the Institute is one of the finest in the country. I am extremely happy to share that many rare books of the library have already been digitized and many are in the pipeline.

Following the footsteps of the founder of the Institute Professor Sarvepalli Radhakrishnan, the Institute has been continuously trying to achieve the aims and objectives as was the intension of the illustrious founder.

I would fail in my duty if I do not express my heartfelt thanks to Professor Kapil Kapoor, former President of the Society and the Chairman of the Governing Body, and also Professor Makarand R. Paranjape, former Director of the Institute for making all out efforts in taking the Institute forward further during the year under report.

The Institute would remain ever indebted to the Union Ministry of Education for its continuous support without which the Institute would not have been able to achieve the desired results.

Director

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA - 171005

ANNUAL REPORT FOR THE YEAR 2019-20

The Indian Institute of Advanced Study Society was established on 6th October 1964, under the Societies Registration Act XXIof 1860 (Punjab Amendment) Act 1957. Located at the Rashtrapati Nivas, Shimla, the Institute is devoted to higher levels of research, primarily in the areas of Humanities and Social Sciences. The academic community at the Institute consists mainly of Fellows in residence, Visiting Professors, Visiting Scholars, and Associates etc. who pursue their individual research and interact with each other, both formally and informally. Rashtrapati Nivas itself, and the natural surroundings which constitute the estate, provides an ambience conducive to living a life of the mind and exploring the different facets of the human condition.

The Institute's Memorandum of Association offers its perspective on research which is that:

(a) The areas of investigation should promote inter-disciplinary research;

(b) The areas identified should have deep human significance.

The Memorandum of Association also spells out the areas of study, which are:

(a) Social, political and economic philosophy;

(b) Comparative Indian literature (including ancient, medieval, modern folk and tribal);

(c) Comparative studies in philosophy and religion;

(d) Education, culture, arts including performing arts and crafts;

(e) Fundamental concepts and problems of Logic and Mathematics;

(f) Fundamental concepts and problems of natural and life sciences;

(g) Studies in environment – both natural and social;

(h) Indian Civilization in the context of its Asian neighbours and the world; and

(i) Problems of contemporary India in the context of national integration and nation-building.

The Memorandum mentions that special attention should be given to:

(a) Theme of Indian unity in diversity;

(b) Integrality of Indian consciousness;

(c) Philosophy of education in the Indian perspective;

(d) Advanced concepts in natural sciences and their philosophical implications;

(e) Indian and Asian contribution to the synthesis of science and spirituality;

(f) Indian and human unity;

(g) 'Companions' to Indian Literature;

(h) Comparative studies of the Indian epics; and

(i) Human Environment.

GOVERNANCE AND ADMINISTRATION

During the year under report, the Indian Institute of Advanced Study, Society and its Governing Body were headed by Professor Kapil Kapoor. Professor Kapil Kapoor was nominated as Chairperson of the IIAS Governing Body and President of IIAS Society. The members of the Society and the Governing Body are eminent persons drawn from different walks of life. The Institute has a Finance Committee, which includes representatives from the Ministry of Human Resource Development, besides other members from the Society and Governing Body of the Institute to advise the Governing Body on financial matters.

The Institute is headed by a Director who is assisted by a Secretary and other officers. Professor Makarand R. Pranajape was the Director and Col. Vijay K. Tiwari was the Secretary of the Institute.

FELLOWS

The Fellowship programme is the flagship programme of the Institute. National Fellows/Fellows/ Tagore Fellows reside at the Institute and pursue research on their respective research projects. Their tenure is for a maximum period of two years. At the end of their term the Fellows submit a monograph which, if found suitable for publication, is published by the Institute. They are also required to take part in seminars, discussions and deliberations during their stay at the Institute. In 2019-20, the following National Fellows/Fellows/Tagore Fellows were in position:

NATIONAL FELLOWS

Sl. No.	Name	Project title
1.	Professor Sujata Patel	*Sociology in India: Its Disciplinary History*
2.	Professor Ramesh Chandra Pradhan	*From Mind to Supermind: In Search of a Metaphysics of Consciousness*
3.	Professor Mahendra Prasad Singh	*Federalism: The Indian Experience: A Neo-Institutional Analysis*

4.	Professor D.R. Purohit	*Performing Arts and Culture of the Central Himalaya*
5.	Professor Medha Deshpande	*Poverty: Concept, Mappings and Policies*

TAGORE FELLOWS

6.	Professor C.K. Raju	*Ganita vs formal mathematics: re-examining mathematics, its pedagogy, and the implications for science*
7.	Professor Vijaya Ramaswamy	*Women in Tamil Mahabharata Epic and Oral Tradition.*
8.	Dr. Vikram V. Kulkarani	महाराष्ट्र की घुमंतू जनजातियों की दृश्यकला परंपरा एक सांस्कृतिक अध्ययन

FELLOWS

9.	Professor J. Rangaswami	*A Translation of the ITU 36,000 Pati Commentary of Tiruvaymoli of Nammalvar by Vatakkuttiruvitipillai into English (1-110) Verses*
10.	Dr. Girija Kizhakke Pattathil	*Knowledge and Subjects: Situating Ayurveda through Life Stories of Practitioners.*
11.	Dr. Ajay Kumar	*Dalit Asmitavadi Etihas Lekhan: Vaklpik Adhinasth Smajshastr ki talash me (ek smikshatmk mulkyn)*
12.	Shri Ashutosh Bhardwaj	*Novel research on classical and contemporary literary theories and devices*
13.	Professor Dambarudhar Nath	*Nirgun Bhakti in Eastern India: Ideology, Protest and Identity –Study of the Mayamara Sub-sect of Assam*
14.	Dr. Sanghamitra Sadhu	*Speaking Subjects: Life –Writing in India From Below*
15.	Dr. Manisha Choudhary	*The History of Thar: Environment, Culture & Society*
17.	Professor Rekha Chowdhary	*Social Diversity and Political Divergence in Jammu and Kashmir: Identifying the Complexity of Conflict Situation and the Format for its resolution*
18.	Dr. Rama Shanker Singh	*Natural Resources and Marginal Communities: Social and Cultural Symbiosis of Rivers and Nishadas in pre-colonial India.*
19.	Dr. Sutapa Dutta	*Disciplined Subjects: Education and Subjectivity in Colonial Bengal*
20.	Dr. Soibam Haripriya	*The Poet as Witness: Encountering Ethnography through Poetry*
21.	Professor Narayanan Mundoli	*A Study of Kutiyattam, The Traditional Sanskrit Theatre of Kerala.*
22.	Dr. Nimmi Herath Mudiyanselage	*Religion, Literature and the Other: Interruptions Interventions and Inventions.*
23.	Dr. Debjani Halder	*Art, Artists and Social Life: A Critical Look at Indian Parallel Cinema (1950s' to 1980s')*

24.	Dr. Bindu Sahni	*Siwalik Erosion and Pastroralists Gujjar of Himachal Pradesh: A Study in the light of Colonial Policies in the Region*
25.	Dr. Ashwin Parijat	*Re-enchanting Modernity: A Study of Swami Vivekananda's American Engagement*
26.	Dr. Sharmila Chhotrary	*Situation Popular Theatre in varied Social Histories: A Comparative Study of Jatra in Bengal, Odisha Assam and Tripura*
27.	Professor Anita Singh	*The Postcolonial Indian Feminist Stage: Investigating the Embodied Presence as Political Act*
28.	Dr. Satendra Kumar	*Popular Democracy in North India: An Ethnographic Study of Culture, Identity and Politics among the Other Backward Classes*
29.	Dr. Irina Katkova	*The Doctrine of light and Symbols of Winged Spiritual Beings in Islamic Art*
30.	Dr. Kuldeep Kumar Bhan	*The archeology of Harappan Craft and Technology with specific reference to Gujarat, Western India.*
31.	Dr. Maheshwar Hazarika	*To Translate the Vyakarana Mahabhashya of Patanjali into Assamese with Notes and Explanation*
32.	Professor Hitendra Patel	*History of Hindi Literature: A Study of Politics Histroy of north India (1920-1970) in the Writings of Literary Writers*
33.	Professor S.K. Chahal	*Hindu Social Reform: A Study of the Framework of Jotirao Phule*
34.	Dr. Pavithran Nambiar	*Culture, Corruption and insurgency: Threats and Quest for Survival in Nagaland*
35.	Dr. Rajvir Sharma	*Political Philosophy of Kautilya. The Arthsastra and After.*
36.	Dr. Sharmila Chandra	*Interpretation f Mask Making and Mask Dances in the Context of Hindu Mythology: An Ethno-Cultural Study*
37.	Dr. Abhishek Kumar Yadav	*Tribes of Arunachal Pradesh and their Literacy writing in Hindi*
38.	Dr. Samson Kamei	*Social Identity of Relations Between Hindu Organizations and Zeliangrong Religions*
39.	Dr. Anjali Duhan	*"Edifying the Royalty: Dvadasa Bhava – A Mughal Version of a Sanskrit Story'*
40.	Dr. Sumandeep Kaur	*Ecological Concerns in Select Punjabi Fiction.*
41.	Professor Madhav Singh Hada	पद्मिनी विषयक ऐतिहासिक कथा-काव्य की देशज परम्परा का विवेचनात्मक अध्ययन
42.	Dr. Mohammad Aadil Salam	*India in Contemporary Arabic Literature*
43.	Dr. Peter M. Scharf	*The Structure of Verbal Cognition Translation and Analysis of Kaundabhatta's Vaiyakaranabhusanasara*
44.	Dr. Balram Shukla	प्राकृत कविता के चारुत्व के भाषिक प्रयोजक

45.	Shri C.N. Subramaniam	*Chidambaram and Gopala Krishna Bharati: Engagements with Devotion and Social Exclusion*
46.	Dr. AlkaTyagi	*Bhavana (Creative Contemplation) and Bhairava (Supreme Reality) in the VijnanabhairavaTantra in KasmirSaiva Tradition*

ACADEMIC ACTIVITIES

The following academic programmes were organized during the period under report:

Rabindranath Tagore Memorial Lecture

The Tagore Centre for the Study of Culture and Civilization was established at the Institute in 2012. Among the academic programmes to be organized as part of the activities of this Centre is an annual Tagore Memorial Lecture, which is to be delivered by a scholar of eminence or a public intellectual on any important theme related to the intellectual engagements around which the Tagore Centre has been established. These could include issues concerning culture, society and Tagore's overarching interest in civilizational issues pertaining to the condition of humankind.

(Hon'ble Vice President of India Shri Venkaiah Naidu delivering the 6th RTML)

Hon'ble Vice President of India Shri Venkaiah Naidu delivered the 6th Rabindranath Tagore Memorial Lecture on "*Vision for New India*"at the Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA), New Delhi on 17th December 2019. Professor Makarand R. Paranjape, Director, IIAS delivered the welcome address and introductory remarks. Professor Kapil Kapoor, Chairperson, IIAS gave the concluding remarks. Col. (Dr.) Vijay K. Tiwari, Secretary of the Institute proposed the Vote of Thanks.

Dr. Sarvepalli Radhakrishnan Memorial Lecture

The Dr. Sarvepalli Radhakrishnan Memorial Lecture is amongst the most important academic activities of the Institute. The 24th Dr. Sarvepalli Radhakrishnan Memorial Lecture on '*Universal Ethics*' was delivered by His Holiness, The Dalai Lama, at the India International Centre, New Delhi on 21 November 2019.

(His Holiness, The Dalai Lama, Inaguring the RKML with lamp lighting)

Professor Makarand R. Paranjape, Director, IIAS delivered the introductory remarks While the welcome address was delivered by Shri N.N. Vohra, President IIC and former Governor Jammu and Kashmir. Introduction of Speaker and Chief Guest was delivered by Professor Chaman Lal Gupta, Vice Chairman of IIAS. Address was also made by the Guest of Honor Dr. Vinay Sahasrabuddhe, President, ICCR. Professor Kapil Kapoor, Chairman of the Institute gave the concluding remarks. Col. (Dr.) Vijay K. Tiwari, Secretary, IIAS proposed the Vote of Thanks.

SEMINARS, CONFERENCES, SYMPOSIA AND ROUND TABLES

Several seminars and conferences were organized by the Institute during this period. The concept note of each seminar is placed on the website of the Institute and a call for papers is announced simultaneously on the website. In addition to inviting eminent scholars who have already made significant contribution to the subject matter of the proposed seminar, an effort is also made to reach out to interested scholars working on the concerned topic. The number of younger scholars responding to this call for papers has been quite good. With growing publicity, the quality of responses has also improved considerably. They are listed below along with the academic rationale that was spelt out in the concept note prepared by the respective conveners/ co-conveners. Also mentioned with each report of the seminar are the names of participants and the sessions that were organized in each seminar.

The following seminar was organized by the Institute during this period:

1. Study Week on 'Relevance of Indian Theories of Art/Literature Today With Special Reference to Rasa, Dhvani, Auchitya and Bhartrihari's *Vakyapadiya"* (05-11 April 2019)

A Study Week was organized on 'Relevance of Indian Theories of Art/Literature Today, with Special Reference to Rasa, Dhvani, Auchitya and Bhartrihari's Vakyapadiya' on 5-11 April 2019 at IIAS. Professor Sudhir Kumar, Department of English, Punjab University, Chandigarh was the Convener. He delivered the Welcome Speech. Professor Makarand R. Paranjape, Director, IIAS, delivered the Inaugural Address. The convener offered the vote of thanks.

Rationale: The above-mentioned study-week is aimed at disseminating and critically examining the relevance of Indian theories of art/literature with special reference to "Rasa", "Dhvani", "Auchitya" and *Vakyapadiya*. In Indic civilizational traditions, all kinds of Indian systems of knowledge or jnana/vijnana, including theories and practices of art/literature are firmly grounded in the ethical-spiritual polycentric discourses of "dharma" (one of the untranslatable terms that characterise the Indic worldview) that, inter alia, signifies, righteousness/duty/morality/ spirituality/justice etc. Another loaded term that lies at the core of Indic theories of literature/art is "purushartha" (or the primary objective, of life). Moreover, the socio-cultural-spiritual significance of literature or art is further reinforced in most of the theories of art/literature that overtly as well as covertly emphasize that literary/artistic representations should help human beings attain the four purusharthas (the primary objectives of life, that is, dharma or righteousness, artha or political economy including generation of wealth, kama or desire, and moksha or liberation). Moreover, Indian Theories of Literature/Art, because of their holistic and inclusive nature, do not admit of being classified into two oppositional categories – marga (shastra) and desi (loka) or classical and folk.

Needless to say, Indian theories of literature/art include and explain the representational dynamics of all human situations where questions of caste, class, religion, gender, race, place, culture, nation, ecology etc. in a holistic, and not in an anthropocentric, manner. Thus, Indian theories of art/literature (or Indian poetics) viz, "Rasa", "Dhvani", "Auchitya", and the theories of meaning described in *Vakroktijivitam* and *Vakyapadiya* are interdisciplinary, both in their amazingly logical conceptualization as well as their application to all kinds of literary/artistic representations in their multiple contexts. Indian theories of literature, in this sense, may be said to be universally applicable because of their emphasis on "samagra evam ekatma-jeevan-darshan" (integral and holistic worldview) and appeal that are free from any kind of ideological bias or bigotry. Suffice to say, the Indian theories of meaning/art/literature are not the products of dogmatic ideological narratives or "isms" that characterise such Euro-Americo-centric critical theories/approaches as modernism/postmodernism/left/newleft/liberal/feminism/postfeminism/ structuralism/

Post-structuralism/ histori-cism/new- historicism/ colonialism/ postcolonialism/ humanism/ post-humanism/post-truthism / nationalism/post-nationalism or globalism etc. that are imposed on the institutionalized structures of learning and research all over the world as only available universal discourses in order to strengthen and perpetuate Euro-Americo-centric cultural hegemony.

Resource Persons

- Professor Gurpal Singh, Panjab University, Chandigarh
- Dr. Ramaswamy Subramony, Associate Professor of English, Department of English, Madura College, Madurai (Tamil Nadu)
- Professor Shrawana Kumar Sharma, Department of English, Gurukul Kangri University, Haridwar (U.K.)
- Professor Jagbir Singh, Delhi University, Delhi
- Professor Shankar Sharan, Professor of Political Science, NCERT, New Delhi
- Dr. Balram Shukla, Assistant Professor of Sanskrit, Department of Sanskrit, University of Delhi, Delhi
- Professor Ambikadutt Sharma, Professor of Philosophy, H.S. Gaur Central University, Sagaur (M.P.)
- Professor Shankarji Jha, Professor of Sanskrit and Dean, University Instructions, Panjab University Chandigarh
- Dr. Bir Pal Singh Yadav,Assistant Professor, Department of Hindi and Comparative Literature, Mahatma Gandhi International Hindi University,Wardha
- Professor Priti Sagar, Mahatma Gandhi Antarrushtriya Hindi Vishwavidyalaya, Gandhi Hills Wardha, Maharashtra
- Professor C.K. Raju, Tagore Fellow, IIAS

Participants

- Ms. Shraddha Singh, Research Scholar, Department of English and Other European Languages, Dr. Harisingh Gour University (A Central University) Sagar, M. P.
- Ms. Durgawati Singh, Research Scholar, Department of English, Dr. H.S.Gour Central University, Sagar, M.P.
- Mr. Subhankar Roy, Research Scholar, Adamas University, West Bengal.
- Ms. Richa Biswal, Research Scholar, Department of English and Modern European Languages, University of Allahabad, Allahabad

- Ms. Deepali Kujur, Mahatama Gandhi Antrrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha, Maharashtra
- Dr. Sujit Kumar Singh, Assistant professor, University of Allahabad, Prayagraj
- Dr. Santosh Tandale, Pandit Jawaharlal Nehru College, Aurangabad, Maharashtra
- Dr. Prabha Shankar Dwivedi, Assistant Professor of English, Department of Humanities and Social Sciences, Indian Institute of Technology Tirupati, Tirupati
- Pravin Shekhar, 105/14-B, Jawaharlal Nehru Road, George Town, Allahabad/Prayagraj
- Dr. Amitesh Kumar, Assistant Professor, Department of Hindi and Modern Indian Languages, University of Allahabad, Prayagraj
- Mr. Rindon Kundu, Senior Research Fellow,Department of Comparative Literature, Jadavpur University, Kolkata
- Dr. Subroto Roy, 06, Purushottam Aptts., 18, Shilavihar Colony, Pune
- Dr. Sonu Jeswani, VMV College, RTM Nagpur University, Nagpur, Maharashtra
- Mr. Krishna Mohan, R.N. Pandey, Gali No. 08, Ganganagar, Rajapur, Allahabad
- Mr. Kadam Gajanan Sahebrao, Mahatama Gandhi Antrrashtriya Hindei Vishwavidyalaya, Wardha, Maharashtra
- Dr. Ashima Shrawan, Assistant Professor, Department of English , Shri Bhagwan Das Adarsh Sanskrit Mahavidyalaya, Haridwar
- Dr. Amit Narula, Dav College, Chandigarh

Resource Persons made presentations on the following theme during the study week:

- Professor Sudhir Kumar: *Relevance of Indian Theories of Literature Today*
- Professor Sudhir Kumar: *Revisiting Ananda Coomaraswamy's "Art and Swadeshi" in Contemporary Context*
- Professor Sudhir Kumar: *On Rasa: Texts, Contexts, Processes: Some Reflections*
- Professor Ambikadutt Sharma: *Poetics of Satya and Dharma: Some Reflections on Indian Epics*
- Professor Ambikadutt Sharma: *Theorising the Theories of Sahitya: Indian Perspectives*"
- Professor Shankar Ji Jha: *Pandit Jagannatha's Views on Rasa: Some Reflections*
- Dr. Ramaswamy Subramony: *On Sri Aurobindo's The Future Poetry*
- Dr. Balram Shukla: *Bhartrhari on "Shabda" and "Artha*"

- Professor C.K. Raju: *On Time/Kaala*
- Dr. Balram Shukla: *Common Insights: Sanskrit and Persian Grammar-Traditions*
- Dr. Bir Pal Singh Yadav: *Sahitya-Samalochana: Acharya Ramchandra Shukla Ke Sandarbh Mein*
- Professor Kapil Kapoor: *The Fundamentals of Indian Theories of Meaning/Literature*
- Professor Priti Sagar: *Dalit Theories of Literature: Contexts and Contestations*
- Professor Kapil Kapoor: *The Fundamentals of Indian Theories of Meaning/Literature*
- Professor Shankar Sharana: *Agyeya's Poetics: A Critical Appreciation*
- Professor Kapil Kapoor: *Indian Theories of Meaning Vakyapadia*
- Dr Bir Pal Singh Yadav: Rasa-Mimamsa with Special Reference to Acharya Ramchandra Shukla
- Professor Shankar Sharana: *Literature, Society and Culture: Nirmal Verma's Vision of Literature and Culture*
- Professor Jagbir Singh: *Concepts of "Shabad" and "Baani" in the Indian Siddha and Sikh Poetics*
- Professor Kapil Kapoor: Rati Bhakti and Katha Tradition in India
- Professor Sharwana Kumar Sharma: *Significance of Dhvani/Vakrokti-Siddhanta*
- Professor Gurpal Singh: *Indian Poetics and Guru Granth Saheb*
- Professor Kapil Kapoor: Understanding Shah Hussain: Saahitya, Kaal and Samaaj

2. National Seminar on "The Topography of Bhakti: Social Reform Watersheds in Indian Intellectual History (22-24 April 2019).

A National Seminar on '*The Topography of Bhakti: Social Reform Watersheds in Indian Intellectual History*' was organized on 22-24 April, 2019 at IIAS. Dr. Gurpal Singh and Dr. Ravinder Singh from Punjab University, Chandigarh and Dyal Singh College, Delhi University respectively were the conveners of this seminar. The Keynote address was delivered by Professor Sudhir Kumar, Punjab University, Chandigarh. Presidential Address was delivered by Professor Kapil Kapoor, Chairman, IIAS, and the vote of thanks was given by Dr. Gurpal Singh.

Rationale: "Bhakti" is one of the many untranslatable, interconnected and dynamiccultural-spiritual coordinates of the Indic world-view that characterize Bharat/ India as a living civilization, our "punyabhoomi" (sacred place) as well as "matri-pitra-bhoomi"(father/mother-land). Its ubiquitous presence in the very vitals of Bharatiya samaj and sanskriti (Indian society and culture), in perhaps every aspect of our national life- material, intellectual and spiritual gives a

distinct “rasa” or flavour to the meaning of Bharat/India. One of the important clues to the amazing unity (ekata or ekatmakata) of Indian civilization, amidst its equally amazing seeming diversity-religious, linguistic, ethnic, diversity,“Bhakti” lies at the centre of the meaning of Bharat/India. The people of Bharat relished “Bhakti” so much that they envisioned and popularised what is known, in Indian Spiritual Tradition as “Bhakti-Yoga”, and in the realm of Aesthetics, as “Bhakti-Rasa/ Aesthetic Emotion of Devotion”! In Indian tradition, “Bhakti” has always been a multivalent term and experience that signifies, inter alia, the process of “becoming integrated” with the whole, “being a part of or a division, devotion, fondness, trust, homage, worship, piety, love as a means of salvation, together with karman (works) and jnana (knowledge) a row, a series, that which belongs to, or contained in anything else”. Contrary to the semitic faiths, it is only in Hindu and other Indian faiths- Buddhism. Jainism and Sikhism, the advaitik or non-dualistic identification between the bhakta and Bhagawan (the devotee and the Lord) is considered a salient feature of process of attaining mukti or true freedom. Bhakti as a “Watershed” has been used in conjunction with “Social Reform” in the title of the Conference as a geographical metaphor that implies a crucially important or decisive factor, time or event that has always had a massive impact on the Indian people and their collective socio-cultural consciousness – empowering them to protest against injustice of all sorts- whether caused by internal socio-cultural evils or by waves of invasions. Needless to say, whenever the people of India were subjugated or subjected to explosion and injustice, it is through the watershed of Bhakti that some important socio-cultural-political movement emerged and infused the Indian people with much-needed courage and hope.

In a remarkable sense, the continuous journey and undeniable significance of “Bhakti” in Bharat/India,from the ancient times- from the days of Rigveda, the Upanishadas, The Ramayana, the Mahabharata, the Buddhist Therigathas,the Bhagavata, the Sangam Age, the Nayanars and the Alvars, Adi Shankaracharya, Such Saint- Acharya-Bhaktas as Ramanuja, Ramananda, Nimbarka, Basava, Andal, Akka Mahadevi, Lal Ded, (as well as many women-bhaktas),Vallabhacharya, the Lingayatas, the Veershaivas, Tukaram, Eknath, Shankara Dev, Chaitanya Mahaprabhu, Kabir, Tulsi, Sur, the Sufis like Shah Hussain, Mirabai, Guru Nanak, Guru Tegh Bahadur, Guru Arjun Dev, Guru Gobind Singh, Ramkrishna Paramahamsa, Swami Vivekananda, Swami Dayananda, Tagore, Tilak, Gandhi, to this very day, clearly and emphatically suggests that the topography or spatiality of “Bhakti” has always been pan-Indian and its capacity to give rise to social reform watersheds (‘ watershed’ -a geographical metaphor and concept- implying a crucially important or decisive factor, time or event, turning point or historic moment) has remained one of the most important factors of our national life or culture. It is in this sense that this Conference is an attempt to map the contours and flows of “Bhakti” in India’s intellectual history. Hence, the usage of the term- “topography”. This very day throughout the mazes of known or unknown, recorded or unrecorded history has been the journey of Bharat as a civilization. It is to suggest this sense of “movement” of Bhakti from one place to another in

the context of Indian history from the Rigveda to this day that the compound Bhakti Movement was constructed. But the point about “Bhakti”, which has generally been ignored in the cultural historiography of India, is that “Bhakti” per se, in consonance with Indian epistemological tradition, is always in movement! It is time to discuss “Bhakti-in- movement” now, as Bhakti Movement is a natural extension of Bhakti-in-Movement! It is through “Bhakti” that the people of India have tried to correct themselves socially as well as politically and follow the path of righteousness or dharma and swaraj! That is why, “Bhakti” and its different forms have given rise to so many “social reform watersheds” or the crucially important factors- social, political, cultural or spiritual that not only saved but also enabled the Indians to offer a brave resistance against the repeated and continuous military and cultural invasions and genocides for almost a thousand years in history. The Sikh Gurus, to prove the point, were great “Bhaktas” and “Saints”- having tremendous “ Shastrabal” (power of knowledge) but they also understood and emphasized the value of “Shastrabal (the military power)”. It was their unalloyed, selfless “Bhakti or devotion” to the Timeless Absolute that enabled them to create an important “social reform watershed” in Indian history.

What, however, pains a modern Indian is the almost uncritically accepted cultural historiography of India, and its validation through an ideologically-loaded pedagogy at school as well as university levels in the present-day India, that , more or less, has restricted or confined “Bhakti” to metaphysical / transcendental/ religious spaces in order to render it as a typical “orientalist” trait showing the irrational, the unscientific, the unintellectual and the backward-looking or un-progressive nature of Indian people or their collective cultural consciousness in order to validate, what Marx best defined as a territorial space sans history, culture and progress, and therefore, only fit to be colonized by the scientifically , rationally superior West/Europe!!

Participants

- Dr. Anju Jagpal, Associate Professor, Department of English, Government PG College, Ambala Cantt., Haryana
- Dr. Chitra Sreedharan, Fergusson College, Pune
- Professor Jagpal Singh, DES-MDRL, Panjab University, Chandigarh
- Dr. Ambuj Kumar Pandey, K.B.P.G College, Mirzapur, UP
- Professor Shrawan Kumar Sharma, Department of English, Gurukula Kungri Vishwavidyalaya, Haridwar, U.K.
- Professor Jagbir Singh, Delhi University, Delhi
- Dr. Dhananjay Singh, Assistant Professor in Hindi Dr. SRK Government Arts College, Yanam, Puducherry
- Professor Vijay Bahadur Singh, 29, Nirala Nagar, Dushyant Kumar Marg, Bhopal

- Dr. M.S. Siddiqui, Assistant Professor, Department of Education, Visva-Bharati (A Central University and An Institution of National Importance), Santiniketan, West Bengal
- Ms. Kanchan Gogate, Principal Correspondent and Copy Editor The Times of India, Pune
- Professor Palani Arangaswamy, 4, Lakshmi Colony, Medical College Road, Thanjavur
- Professor Satinder Singh, Former Pro Vice Chancellor, Guru Nanak Dev University, Amritsar
- Dr. Avishek Ray, Assistant Professor, Department of Humanities & Social Sciences, National Institute of Technology Silchar, Assam
- Dr. Manjinder Singh, Assistant Professor, Department of Punjabi, Guru Nanak Dev, University, Amritsar
- Dr. Ramkumar, Associate Professor, Department of History, Govt PG College, Ambala Cantt, Haryana
- Mr. Vaibhav Sharma, Centre for Learning Futures, Ahmedabad University, GICT Building, Central Campus Navrangpura, Ahmedabad
- Dr. Gasper K.J., Assistant Professor Department of Philosophy Government College for women, Trivandrum
- Professor Kailash Baral, EFL University, Hyderabad
- Dr. Vaibhav Shah, Assistant Professor at Ahmedabad University, Gujarat
- Professor Ashok Modak, National Research Professor, MHRD, Govt of India and Chancellor G G Central University Bilaspur, Chhattisgarh
- Professor Priti Sagar, Dean, School of Literature MGAHV, Wardha, Maharashtra
- Dr. Manoj Pandya, Associate Professor, Hindi Department, Govind guru Govt College, Banswara, Rajasthan
- Dr. Bir Pal Singh Yadav, Assistant Professor, Department of Hindi & Comparative Literature MGAHV, Wardha, Maharashtra
- Professor Rajkumar Hans, Retd. Professor, Department of History, University of Gujarat, Baroda. Amritsar, Punjab
- Ms. Nishtha Saxena, Assistant Professor of English, Department of English, Gandhi Memorial National College, Ambala

Participants made presentations on the following themes during the seminar:

Session I

Professor Kailash Baral: *From the Metaphorical to the Metaphysical and Beyond: The Panchasakhās*

Dr. Ramkumar: "मध्यकालीन भक्ति आंदोलन और नारी बौद्धिक परंपरा के मुख्य आयाम: एक अवलोकन

Dr. Nishtha Saxena: *Manifestations of Spirituality: Understanding Bhakti as Rati and Shakti in Akka Mahadevi's Vachanas and Lal Ded's Vakhs*

Dr. Birpal Singh Yadav: मीरा का भक्ति दर्शन

Session II

Dr. Ambuj Kumar Pandey: भक्ति आंदोलन और हिन्दी प्रदेश

Dr. Avishek Ray: *Nomadology and the Epithet of Madness in the Context of Bhakt*

Session III

Professor Priti Sagar: अखिल भारतीय भक्ति आंदोलन और स्त्री-भक्त

Dr. Anju Jagpal: *From Peace to Pieces: The Topography of Bhakti in Punjab*

Dr. Manoj Pandya: लोक जागरण और हिंदी निर्गुण भक्ति काव्य: कबीर देशना के विशेष संदर्भ में

Session IV

Professor Vijay Bahadur Singh: भक्ति कालीन साहित्य की सामाजिक पृष्ठभूमि

Dr. Dhananjay Singh: भक्ति की सामाजिक चेतना और आलवार-नयनार संत

Dr. Gasper K. J.: *Bhakti as New Religiosity and Awakening of the Other: A Reading of Sree Narayana Guru's Views On Bhakti*

Session V

Kanchan Gogate: *Sri Ramakrishna's Bhakti and Swami Vivekananda's Vedanta: Unification through Personification*

Md. S. Siddiqui: योगियों से सूफियों तक: भक्ति संस्कृति का सूफी साहित्य पर प्रभाव

Session VI

Dr. Chitra Sreedharan: *Karma, Bhakti and Jnana- Breaking Bounds: Ruminations of an English student…*

Mr. Vaibhav *Sharma: Bhakti and its echoes in 21st century India*

Dr. Vaibhav Shah: *Conceptualizing Bhakti: A Semantic-Conceptual Analysis*

3. National Seminar on *'Literature from Northeast India: Texts and Contexts' (* 06-07 May 2019)

A National Seminar on 'Literature from Northeast India: Texts and Contexts' was organized on 06-07 May, 2019 at IIAS. Professor KM Baharul Islam, Chairperson, Centre of Excellence in Public Policy, Indian Institute of Managament, Kashipur, was the convener of this seminar. Keynote address was delivered by Professor M. Asaduddin, Jamia Millia Islamia University. Vote of thanks was given by Professor K.M. Baharul Islam, Convener of the Seminar.

Rationale: Different literary and cultural theories that we have embraced so far have presented a diverse prism of reading, understanding and interpreting literary texts and their inherent world views. There are divergent views among scholars and critics about the way a reader understands the text within a given context of the environment depicted by a particular text and invariably create his or her own perspective that forms an afterlife of the texts. These theories and approaches have enabled readers and authors to recreate their own contexts and gradually navigate them into the centre of mainstream literary discourse that generally tends to ignore those voices from the periphery. The voices from the periphery in Indian literary environment are those coming from the social, economic and even geographical margins that include inter alia the writings from translingual, minority, Dalit writers as well as writers from remote areas like the Northeast. These writers form a periphery which has been termed as 'Subaltern' by Antonio Gramsci and highlight an ongoing endeavour to portray a different 'context' or world view that can be understood and adequately interpreted from the author's own social, cultural and political milieu. Such writings, though limited in number and scarce in our critical literary landscape, nevertheless underline an alternative mode of consciousness that emerges from caste, community, spatial existence and economic marginalization. It also depicts a subtle ongoing struggle of the writings from the 'margin' to move towards the 'centre'. The writings from the periphery, therefore, are a case of assertion of identity, culture and social reality that is 'different' from the mainstream and a protest against any literary hegemony of the mainstream. Thus a translingual writer (Na'Asomia) with East Bengal origin in Assam writing in Assamese or a poet from the Ao Naga community all raise questions about those real and imaginary margins enforced and try to strike back by using their texts as a platform of resistance. Ironically, the centrality of the 'margin' in their texts sometimes may be seen as an appropriation of the margin, its literary/artistic practices as well as the further marginal position of gender and sexuality.

Literary texts and other forms of cultural expression that were seen as marginal or lying in the periphery during the first half of the twentieth century by scholars like Bourdieu and Even-Zohar are gaining new momentum in recent years. Several factors facilitated this movement that includes commercialisation of cultural symbols, democratic access to literary spaces through the advent of new platforms like the Internet and the social media. Bourdieu regards language as a mechanism of power assertion highlighting the writer's relational position in a social

context. Distinct use of language and cultural symbols, metaphors and special registers comes from particular contexts and militates against the reader's own positions about the text and its meaning. Linguistic interactions and literary interpretations are therefore parts of the readers own contextual positions in the broader mainstream social space and parameters of understanding. Depending on the contexts of the reader, the writer's voice is thus understood and interpreted. In recent years, Even-Zohar stressed on the problems of majority and minority and centre and periphery in the context of wealth, power and control of resources. His "polysystem theory" focuses on relations between literature and language that reflects a complex analysis of socio-cultural systems. In understanding the writings from the periphery these socio-cultural systems may play a vital role in redefining our approach to literature from the margins.

Globalisation and the emergence of technology-led information society have also impacted the forms and contents of art and culture in contemporary world. However, there are some distinct trends of writing that thrives on being different, driving home the idea that every country, and every local community with different cultures and histories and tries to create a 'space' away from the mainstream (called 'subaltern' by Antonio Gramsci). The seminar attains significance to bring to the forefront different perspectives of such writings from two specific contexts - language (translingual), society and location (tribal communities of the Northeast). The seminar not only made a case for examining literature with a pre-existing, pre-compiled traditional literary history but also examined them critically from the point of view of the caste, class, the minority, the marginal and the quintessential 'subaltern'. There this seminar was a fresh academic exercise that will produce new insights into the study of literary texts from a diverse set of theoretical and analytical frameworks.

Participants:

- Professor Himadri Roy, School of Gender and Development Studies, IGNOU, New Delhi
- Mr. Mohammad Saquib, Research Scholar, Department of English, Aligarh, Muslim University, Aligarh (UP)
- Dr. Haris Qadeer, Assistant Professor, Department of English, University of Delhi.
- Dr. Mercy Vungthianmuang Guite, Assistant Professor, Centre of German Studies, School of Language , Literature and Culture Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Professor Anjali Dimari, Department of English, Gauwahati University, Guwahati
- Dr. M. Rameshwor Singh, Assistant Professor, Department of English, D.M. College of Arts, DMU, Imphal, Manipur
- Dr. Prasenjit Das, Associate Professor in English, KKHSOU, Guwahati, Assam

- Dr. Manash Pratim Borah, Assistant Professor in English, Central Institute of Himalayan Culture Studies, Dahung, West Kameng District, Arunachal Pradesh
- Md. Shalim Muktadir Hussain, Department of English, University of Science & Technology, Meghalaya
- Dr. Mrinal Jyoti Goswami, Assistant Professor, Department of Assamese, Krishna Kanta Handiqui State Open University, Guwahati, Assam
- Dr. Sanjib Sahoo, Associate Professor, Department of English & Foreign Languages, Tezpur University, Assam
- Professor Jaiwanti Dimri, Former Fellow, IIAS, Shimla
- Ms.Vipasha Bhardwaj, Assistant Professor, Department of English, Pub Kamrup College, Baihata Chariali, Assam
- Professor Jagdish Lal Dawar, Former Fellow, IIAS
- Professor Biplab Loha Choudhury, Centre for Jaurnalism & Mass Communation, Visva-Bharati, Santiniketan, West Bengal
- Dr. Ilito Achumi, Assistant Professor, Center for Sociology and Social Anthropology, Tata Institute of Social Sciences, Guwahati Campus, Assam
- Dr. Nizara Hazarika, Associate Professor of English, Department of English, Sonapur College, Sonapur, District Kamrup (M) Assam
- Dr. Poonam Punia, Assistant Prof. & Head, Dept. of English, JCD Memorial (PG) College, Sirsa (Haryana)
- Mohd. Asaduddin, Department of English, Jamia Millia Islamia, New Delhi
- Dr. Jayanta M. Tamuly, University of Science & Technology, Meghalaya

Participants made presentations on the following themes during seminar:

Session I : Literature from Northeast India

Professor Himadri Roy: Love in the Conflict Zone: Negotiating Spaces in Davidson's Gay Short Stories

Dr. Adenou Luikham: An Exploration of Motifs in Jahnavi Barua's Next Door Stories as a Representation of the Northeast.

Dr. Mercy V. Guite: Writings from the periphery: Folktales to other forms of literature – a critical approach

Dr. Anurag Bhattacharya: Contextualizing Issues of Identity and Marginality in Literature from Northeast India with Special Reference to Select works of Temsula Ao and Easterine Kire

Dr. Ilito Achumi: Tell them our story: Nagas, World Wars and the silenced past

Session II: Cultural Expressions in the Writings from the Periphery

Professor Jagdish Lal Dawar: Rambuai literature in Mizoram: Jahan Baans Phulate Hain (Where Bamboos Flower

Ms.Vipasha Bhardwaj: “Can the subaltern speak?” Will the oppressor listen? Understanding of marginal experiences in Siddhartha Deb’s Point of Return

Dr. Mrinal Jyoti Goswami: Play and Performance in 21st Century Assam: Narratives from the Margins

Session III: Peripheral Voices

Dr. Manash Pratim Borah: A Reading of the Dialectics of Positioning/Positionality, Identification/Identity in Select Poetic Voices from Northeast India

Dr. Sanjib Sahoo: The Char and the City: Reading Miyah poetry

Dr. Haris Qadeer: The Ground Beneath Our Feet: Miyan Poetry and Politics of Othering in Assam

Md. Shalim Muktadir Hussain: Pitting Irony against Aggression: Miyah Poetry as a Challenge to the Dominant Assamese Discourse

Session IV: Contextualising ‘Marginal’ Experiences

Professor Anjali Dimari: From Legend to Fiction, The Politics of Representation: A Study of Indira Goswami’s Thengphakhri Tahsildarar Taamor Toruwal (2009) and Bidyasagar Narzary’s Birgwsrini Thungri (2004)

Session V: Revisiting the Subaltern: Critical Approaches to the Literature from the Northeast

Dr. M. Rameshwor Singh: Mythology, Contemporary Issues and Writers’ Response: The Manipuri Experience

Dr. Nizara Hazarika: Narrativizing Aging and Dementia: Reading Anuradha Sarma Pujari’s Jalchabi through the Lens of Gendered Gerontology

Dr. Prasenjit Das: Literature from North East India: The Problems of Categorising

Session VI: Literature as Socio-Political Expression

Professor Jaiwanti Dimri: The Subaltern Gandhian Discourse in Virendra Kumar Bhattacharya’s Mritunjaya

Dr Jayanta M. Tamuly: The road not taken: An alternative understanding of the literature from Northeast India

Mr. Mohammad. Saquib: From Apocryphal Orality to Textual Veracity: The Translation of the Subaltern Voice in Easterine Kire's Writings

Session VII: Concluding Session

Professor Biplab Loho Choudhury: Border Diaspora and Literature from the Northeast

4. National Seminar on '*Gandhian Way of Nation-Building'* (20-22 May, 2019)

A national seminar on 'Gandhian Way of Nation-Building' was organized on 20-22 May, 2019 at IIAS. Professor Anand Kumar, Senior Fellow, NMML, Delhi was the convener of this seminar. Welcome address was delivered by Professor M Paranjape, Director IIAS, (over Skype) and by Colonel Dr. Vijay Kumar Tiwari, Secretary, IIAS. Inaugural address was delivered by Shri Samir Banerjee, a prominent Gandhian thinker and author. Professor Anand Kumar, convener of the seminar delivered the vote of thanks.

Rationale: Nation-building is a process of promoting 'we'-feeling based togetherness among citizens of a given nation-state. It is contingent upon the foundational specificities of a given nation-state as articulated in its constitution. It is a multi-layered phenomenon where ideology, history, culture, polity, economy, territory, demography and ecology play important roles. It is achieved through institutionalizing a set of national ideals, values and goals. Every society has a few conducive factors as well as a variety of internal and external challenges in this context. Therefore, there are great diversities of ways of nation-building in the modern world-system. The Gandhian way of nation-building is a communitarian approach with twin thrusts – a) character-building of men and women in the society, and b) socio-cultural, economic and political reforms based on togetherness of truth, non-violence, spirituality, selfless service, Swadeshi and Satyagraha. This was a national seminar to organize a meaningful interface between practitioners and analysts of the Gandhian way of nation-building for:

1. Comprehensive understanding of its strengths, impact and limitations; and
2. Exploring the way forward in the context of the opportunities and challenges before the 21st century India about nation-building deficits.

Participants:

- Professor Gita Dharampal, Gandhi Research Foundation, Jalgaon
- Professor Chandrakala Padia, Department of Political Science, Banaras Hindu University, Varanasi

- Dr. Shubhneet Kaushik, Department of History, Satish Chandra College, Ballia
- Dr. George Mathew, Chairman, Institute of Social Sciences, New Delhi
- Dr. Ravi Chopra, Founder, People's Science Institute, Dehradun
- Dr. Azizur Rahman Azami, Sociologist, Aligarh Muslim University, Aligarh
- Mr. Shahid Jamal, Research Scholar, Ansari Road, Daryaganj, New Delhi
- Dr. Abha Chauhan Khimta, Assistant Professor, Department of Political Science, Himachal Pradesh University, Shimla
- Dr. Manoj Kumar Rai, Mahatama Gandhi Antrarshtriya, Hindi Vishwa Vidyalaya, Wardha, Maharashtra
- Professor Amrendra Narayan Yadav, VC, B.R. Ambedkar Bihar University, Muzaffarpur, Bihar
- Dr. Ravinder Singh Rathor, Rathor Nivas, Khalini, Shimla
- Professor Ram Chandra Pradhan, Institute of Gandhian Studies, Wardha, Maharashtra
- Dr. Sanjeev Kumar, Zakir Husain Delhi College, Jawaharlal Nehru Marg, New Delhi
- Dr. Promod Kumar, Department of Hindi, L.S. College, Muzaffarpur, B.R.A. Bihar University, Bihar
- Shri Surendra Kumar , National secretary, Association of Voluntary Agencies for Rural Development, Muzaffarpur
- Dr. Jayeeta Ray, Rabindra Bharati University, Kolkata
- Shri Biplov Kumar, Department of History, Sikkim University, Gangtok, Sikkim
- Shri Jasvir Singh, Former Fellow, IIAS, Shimla
- Dr. A.K. Arun, President, Akhil Bharatiya Prakritik Chikitsa Parishad, Editor, Yuva Samvad, New Delhi
- Dr. Rajesh Kumar, Ram Lal Anand College, Delhi University, Delhi
- Dr. Sopan Shinde, Maharashtra National Law University, Warda Road, Nagpur
- Dr. Alok Tandon, 03, Ashraj Tola, Hardoi, UP
- Dr. Akbar Chawdhary, Aligarh Muslim University, Aligarh
- Mr. Bipul Kumar, 211, A.N. Sinha Institute of Social Studies, Patna
- Shri Ovais Sultan Khan, Future Council, Delhi

Group photograph of seminar participants

Participants made presentations on the following themes during seminar:

Session I: Conceptual Aspects of the Gandhian Way of Nation- Building

Professor Ramchandra Pradhan: *Ideational roots of the Gandhian way of nation-building*

Professor Chandrakala Padia: *Gandhian model of nation-building: A cognitive shift from modernization paradigms*

Dr. Pramod Kumar: विऔपनिवेशिकरण :राष्ट्र निर्माण के गांधी मार्ग का वैचारिक आधार

Dr. Jayeeta Roy: *What is 'living' and 'dead' in the Gandhian vision of nation-building*

Session II: Building A Non-Violent Social Order In Contemporary India

Dr. Sanjeev Kumar: *Conquest of violence: Exploring the Gandhian way*

Dr. Akbar Chowdhary: *An epistemological inquiry into Gandhian way of nation-building through Fanonian Lens*

Dr. Manoj Kumar Rai: अभय और शील : राष्ट्र निर्माण के गांधीवादी मूल्य

Session III: Self-Realization, the Indian Ethos and Nation-Building

Shri Sopan Shinde: *Self-realization and the Constructive Program of nation-building: Taking Gandhi personally*

Dr. Abha Chauhan Khimta: *Individual and nation-building: A Gandhian perspective*

Dr. Biplove Kumar: *The meliorist Gandhi: Self-purification and Poorna Swaraj*

Session IV: Sociological Challenges and the Gandhian Way of Nation-Building

Dr. Ramashankar Singh on behalf of Dr. Nishikant Kolge: *Caste-based inequalities, nation-building and Gandhian way*

Shri Owais Sultan Khan: *Gandhi, nation-building and majoritarianism*

Dr. Alok Tandon: *Gandhian way to communal harmony*

Dr. Bipul Kumar: *Situating Adivasi Question vis-à-vis Indian identity: Gandhi and Marang Gomel Jaipal Singh Munda*

Session V: Economic Aspects of the Gandhian Way

Shri Jasvir Singh: *Economic equality: An important aspect of the Gandhian program for nation-building*

Dr. Azizur R. Azami: *Handloom and relevance of Gandhi's economic philosophy*

Session VI: Political Features of the Gandhian Way

Dr. George Mathew: *Panchayati Raj and decentralization*

Dr. Ravi Chopra: *Interrogating the dominant model of development and the emerging alternatives*

Shri Surendra Kumar: *Reconsidering Gandhian Institutions*

Dr. A. K. Arun: *Health, sanitation and Swaraj*

Session VII: Education, Language Problem and Nation-Building

Dr. Shahid Jamal: Education: The key to Swaraj in ideas and action

Dr. Rajesh Kumar: गाँधी का भाषा स्वराज और राष्ट्र-निर्माण

Dr. Shubhneet Kaushik: महात्मा और राष्ट्रभाषा: भाषा स्वराज की संकल्पना और भाषाई संगठनों के साथ गांधीजी का जुड़ाव

5. National Seminar on '*Political economy of Terrorism in Jammu and Kashmir*'(3-4 June 2019)

A national seminar on 'Political economy of Terrorism in Jammu and Kashmir' was organized on 03-04 June, 2019 at IIAS. Professor Rekha Chowdhary, Fellow, IIAS, was the Convener of this seminar. Professor Makarand R. Paranjape, Director, IIAS, delivered the welcome address. Inaugural address was given by Major General Dhruv Katoch, Director, India Foundation and Valedictory Lecture was given by Lt Gen. D S Hooda, Former General Officer Commanding-in-Chief of the Indian Army's Northern Command. Professor Rekha Chowdhary also delivered the Vote of thanks.

Rationale: The political economy of Jammu and Kashmir State that has been caught in the situation of armed militancy and separatism for last three decades now, reflects a very complex

and paradoxical nature. It is a backward economy characterized by 'predominance of agriculture sector', 'low degree of urbanization', 'inadequately developed infrastructure', 'widespread illiteracy' and 'low levels of investment'. (Planning Commission, 2003, *Jammu and Kashmir Development Report*) Due to its remoteness, poor connectivity and the context of security situation, it has been struck up with the 'backwardness trap' that keeps it in a condition of 'low employment and low income generation' (Report of the Task force, 2006). However, compared to other states, this state reflects much better situation in terms of the level of poverty and standard of living. As per the Statistical Digest of Jammu and Kashmir, the poverty figures for this state in 2011-12 were 10.4% which was much lower than the all-India poverty figure of 21.9%. Assessed from the perspective of the income level, the state presents a relatively better picture, compared to many other states. On the whole, despite the disruptions due to the situation of militancy, one can see a flow of money in the state in general, and Kashmir Valley in particular. Paradoxically it seems that the adverse economic conditions during the period of militancy did not adversely impact all kinds of people in Kashmir and while a large number of people were negatively impacted, militancy also created a sort of affluence for certain classes. This paradox raises important questions about the political economy of Kashmir in general and about the political economy of conflict situation in particular.

However, notwithstanding the benefits of radical land reforms and other pro-people policies in the early post-1947 period, the condition of large number of people has remained at the subsistence level and economy of the state in general, has remained crisis ridden. Before the period of liberalization, it was clearly characterized as a 'dependent economy' surviving on the basis of subsidies and concessions on the one hand and grants and loans from the centre on the other. It could not also take the advantage of liberalization as this period coincided with the period of militancy and hence the benefits of the growing economy which brought about radical changes in rest of India, bypassed this state completely.

How the situation did defined by armed militancy and separatism impact the people in Kashmir? Paradoxically, the adverse economic conditions, notwithstanding, all sections of society were not affected in the similar manner. That there was sufficient affluence in Kashmir was reflected by the unending construction process throughout the period of militancy. The city of Srinagar got expanded on all sides and new housing colonies, multi-storey houses, shopping malls and shopping areas came up. The property prices meanwhile increased tremendously. That there has been a flow of money gets clearly reflected when one visits Kashmir. It is a different matter that this flow of money has not benefited Kashmiris in an even manner. Besides the top class of wealthy Kashmiris, many of whom are dealing with handicrafts business, hoteliers, exporters, orchard owners etc, there is certainly the emergence of an affluent middle class and also a class of 'new rich'. The sudden emergence of this class of 'new rich' is often the point of conversation in Kashmir as it appears to have upset the traditional class relationship.

It is in this context of the complexity and paradox that this seminar was organized. It raised pertinent questions related to political economy of conflict situation in Jammu and Kashmir in general and political economy linked with militancy and separatism, in particular. While understanding the nature of political economy of the state in the pre-militancy period, it aimed at analyzing in details the impact of militancy on the economy of the state from various perspectives. Among the pertinent questions that were raised included those related to the liberalization process and its implications for the state. Since liberalization process coincided with the period of militancy, an attempt will be made to develop a nuanced understanding of the economic development in the period after 1990 and the state's isolation vis-a-vis the growth story of India. One important focus of the seminar was the parallel economy that has evolved in the conflict situation of the state, particularly in the period of militancy. What has been the response of the government in dealing with Hawala channels and how far these have been successful? Particularly, what has been the impact of demonetization process on dealing with militancy and separatism? Discussion revolved around the flow of money and the consequent unevenness in the society. The seminar also focused on the Cross-LoC Trade and analyzes its efficacy as a political CBM and its implications for the underground economy that it might be generating and its security implications. The seminar tackled the questions of transparency, accountability and corruption in the situation of conflict. One major goal of the seminar was to address the question related to improvement of the efficacy of the anticorruption institutions in the state. Lastly, the seminar analyzed the economy of the state from the perspective of weak infrastructure. It specifically focused on the nature of economic development since the announcement of Prime Minister's development package amounting to 80,000 crores in 2015.

Participants:

- Ms. Sadaf Gul, Islamic University of Science & Technology, J&K
- Mr. David Devdas, 90 A, Pocket F, Mayur Vihar, Delhi
- Ms. Aarti T. Singh, C-12, Ground Floor, Nizamuddin East, New Delhi
- Ms. Ellora Puri, Department of Political Science, University of Jammu, Jammu
- Professor R.L. Bhat, Central University of Jammu, Jammu
- Dr. Ashok Bhan, 26/6 Channi Himmat, Jammu, J&K
- Shri Sarral Sharma, Institute of Peach & Conflict Studies, Delhi
- Shri Rayan Naqash, Iqbal Colony, Zainakote, Srinagar
- Dr. J. Jegathan, Department of National Security Studies, Central University of Jammu, Jammu
- Ms. Deepika, Department of Political Science, Shivaji College, University of Delhi, Delhi
- Maj. Gen. Dhruv Chand Katoch, India Foundation, New Delhi

Participants made the following presentations during the seminar:

Session I:

Professor R L Bhat: *Polity Economy and Terrorism - the Jammu & Kashmir State Scenario*

Ms Aarti Tickoo Singh: Economics *of Terrorism in Kashmir*

Session II:

Dr Ashok Bhan: *Armed Conflict and Governance Deficit in Jammu and Kashmir*

Dr Ellora Puri: *Liberalisation and Economic federalization in India: Lessons for J&K*

Session III:

Shri David Devadas: *Jobs as Patronage: how nepotism incentivizes instability*

Shri Sarral Sharma: *The Parallel Economy of Militancy in J&K: The Current Context*.

Session IV:

Dr Jagan Nathan: *Geo-economics of Sub -regional Trade & Connectivity: The Case of Jammu and Kashmir*

Session V:

Ms Gul Sadaf: *Entry to Paradise: Highway in Shambles (A Study of Impact on Socio-Economic Life of Kashmir*

Mr. Rayan Naqash:*The Role of Steady ncomes from Orchards in sustaining Kashmir's rural population during prolonged unrests*

Ms Deepika: *A new Agenda for Participatory Inclusive Development: A case of Jammu and Kashmir*.

6. National seminar on "*Reflections on Arthasastra And its Relevance in the 21st Century*" at IIAS (9-10 July 2019)

A national seminar on 'Reflections on Arthasastra and its Relevance in the 21st Century' was organized on 09-10 July, 2019 at IIAS. Professor Suresh Rangarajan, Professor & honorable Director, V.K. Krishna Menon Study Centre for International Relations, Department of Political Science, University of Kerala was the Convener of this seminar. The Welcome address was given by Professor Kapil Kapoor, Chairman, IIAS. Professor Suresh Rangarajan, Convener of

the seminar gave introductory remarks. Vice Admiral M.P. Murlidharan, Former Director General, Indian Coast Guard, Kochi delivered inaugural address. Vote of thanks was given by Col. (Dr.) Vijay K. Tiwari, Secretary, IIAS.

Rationale:

Introduction

"Arthasastrais the science which provides the means of acquisition and protection of the earth. *Artha* has been regarded as one of the three goals of human existence, the other two being *dharma* and *kama*. Arthasastra has two main objectives. Firstly, it seeks to show how the ruler should protect his territory. This protection refers principally to the administration of the State. Secondly, it shows how a territory should be acquired. This acquisition refers principally to the conquest of a territory from others. Arthasastra is the science of dealing with state affairs in the internal as well as external sphere or it is the science of statecraft.

The content of Arthasastra includes; *Book one*, on *Science of Politics*, deals mainly with the training of the prince for arduous duties of ruler ship. It also discusses the question of the appointment of ministers and other officers necessary for the administration of a state. This prepares the ground for the establishment of a benevolent monarchy. The main sutra is "In the happiness of the subjects lies the happiness of the king and in what is beneficial to the subjects his own benefit. What is dear to himself is not beneficial to the king, but what is dear to the subjects is beneficial (to him)". *Book two*, is on *The Activity of the Heads of Departments:* this deals with the activities of various state departments and internal administration of a state. *Book three*, is *Concerning Judges:* This book deals with the administration of justice and lays down the duties of the judges and the law. *Book four*, examines *The Suppression of Criminals*: and it deals with the maintenance of law and order and punishments for various criminal offences. *Book five* is on *Secret Conduct, Book six* is on *The Circle (of Kings) as the Basis:* This deals with the circle of kings (*mandala)* and its seven constituents/*prakrits (*the king, the minister, the country, the fortified city, the treasury, the army and the ally). *Book seven,* is on *The Six Measures of Foreign Policy:* This deals with the use of the six measures that can be adopted by a state in its relations with foreign states (peace/treaty, war/injury, staying quiet/remaining indifferent, marching/ augmenting of power, seeking shelter/submitting to another and dual policy/restoring to peace (with one) and war (with another). *Book eight*, is concerning *Topic of Calamities of the Constituent, Book nine, The Activity of the King about to March, Book ten, Concerning War: Book eleven, Policy towards Oligarchies, Book twelve, Concerning the Weaker King, Book thirteen, Means of Taking a Fort, Book fourteen, Concerning Secret Practices, and Book fifteen, The Method of Science or tantra.*

Kautilya's *Arthasastra,* composed around 321 BCE is the oldest and most exhaustive treatise on statecraft and on issues of diplomacy, war, peace, intelligence, security, and political

economy. L.N. Rangarajan, a diplomat whose work on the *Arthasastra* has argued that in so far as the nature of human beings remained the same and states behaved in the manner as they always have done, Kautilya was relevant. Similarly, K M Panikkar highlighted the relevance of Kautilya's rules of conduct in diplomatic relations and his doctrine of *Sama-dana-behda-danda* (conciliation, gifts, rupture and force). Some of Kautilya's classical and enduring maxims are: "What produces unfavourable results is bad policy: that is a policy to be judged by the results it produces, and diplomacy is not concerned with ideals but with achieving practical results for the state" Another quotation by Kautilya which has a universal appeal is, "When the advantages to be derived from peace and war are equal one should prefer peace for disadvantages such as loss of power and wealth are ever attendant upon war. Similarly, if the advantage to be derived from neutrality and war are equal, one should prefer neutrality".

Relevance of Arthasastra

The importance of the ideas and the ways of thinking that the Arthasastra reveals is useful because in many ways the present world is similar to the world that Kautilya worked and built the Mauryan Empire to its greatness. Kautilya's Arthasastra was pitched to teach with the various intricacies of governance and politics to the ruler. The text also reveals ideas of a 'welfare state', in which the state controlled and contributed to all aspects of daily life, ensuring equality and fairness in distribution of the resources, benefits and wealth. Kautilay's premise was that it was in the ruler's self-interest to be generous to the people, provide employment, build roads, harbours and parks and to address the grievances of the people promptly.

Kautilya, was the Indian political philosopher, statesman, who helped Chandragupta Maurya to establish the first unified state in Indian History in fourth century B.C. His work *Arthsastra* lays the conceptual foundation for making India the first welfare state. He advocates welfare in all spheres. He did not talk only about human welfare but even paid attention to animal welfare also. He states, "In the happiness of his subjects lies the king's happiness, in their welfare lays his welfare. He shall not consider as good as only that which pleases him but treat as beneficial to him whatever pleases his subjects". He advocates the protection of livelihood of weaker section, consumer protection and even the welfare of prisoners also. The King's dharma is to be just, fair and liberal in protecting his people. His attitude to his people should be like attitude of a father towards his children. Kautilya defined the ideal ruler as one "who is ever active in promoting the welfare of the people and who endears himself by enriching the public and doing good to them."

Again, in the present day world, the challenges to national security are no different from the challenges that annoyed the Mauryan Empire in 300 BC. The nontraditional threats to security of the nation states emanates from the non-state actors can be effectively addressed only with the support of the people. Thus in order to ensure national security people also have to work in tandem with the security agencies by sharing information about the terror network. This idea has

been well incorporated in the coastal security scheme, as it considers the fishers as the 'eyes' and 'ears' of coastal the security matrix.

"The organizers of this two day National Seminar consider that there are many discussions/ publications on the wisdom lies in the ancient text, Arthasastra. However, a holistic perspective on Arthasastra is yet to be undertaken. Thus the main objective of the Seminar is to bring experts from all areas, including, Political Science, Economics, Commerce, Public Administration, Defence, Security Studies, and Philosophy to reflect on ideas ingrained in Arthasastra and to explore into its relevance in the 21st century. Though there are revolutionary changes in science and technology, there is no commensurate change visible in basic human nature. Therefore, many challenges in the field of social, economic, political and security are no different from the challenges that exasperated the Mauryan Empire. We hoped that solution to many of our present day problems in the political, economic, social and security sphere, are well exposed in this ancient text."

The suggested broad Sub-themes for the Seminar

1. Arthasastra - a treatise on state craft
2. The doctrine of Mandala
3. Welfare state concept in Arthasastra
4. Foreign Policy and Foreign Relations
5. Internal Security and External Security including Maritime Security
6. Science of Economics and Commerce
7. Taxation system and public welfare
8. Art of Government and Good Governance

Participants

- Professor Raj Kumar Singh, Department of Commerce, Himachal Pradesh University, Shimla
- Professor Mamta Mokta, Department of Public Administration, Himachal Pradesh University, Shimla
- Dr. Mousumi Ghosh, Department of Economics, Banwarilal Bhalotia College, Asansol, West Bengal
- Dr. Jayashree Vevekanandan, South Asian University, New Delhi
- Ms. G. Padmaja, Gitam School of Gandhian Studies, Gitam University, Visakhapatnam

- Professor Harish K. Thakur, Department of Political Science, Himachal Pradesh University, Shimla
- Col. Pradeep Kumar Gautam (Retd.), Consultant to Indigenous Historical Knowledge Project, The Institute for Defence Studies and Analyses, New Delhi
- Ms. Medha Bisht, South Asian University, New Delhi
- Dr. Saurabh Mishra, Indian Council of World Affairs, New Delhi
- Ms. B. Poornima, Manipal Academy of Higher Education, Department of Geopolitics and International Relations, Manipal, Karnataka
- Dr. Nanda Kishor, Department of Geopolitics and International Relations, Manipal Academy of Higher Education, Manipal, Karnataka
- Dr. Santosh Bharti, Assistant Professor (English), Delhi College of Arts and Commerce, University of Delhi, New Delhi
- Shri Yashvant Kumar Trivedi, Ph.D, Research scholar, School of Sanskrit and Indic Studies (SSIS), Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Professor Bhavatosh Indra Guru, Department of English and Other European Languages, Dr. H.S. Gour Central University, Sagar, M.P.
- Brig. J.S. Rajpurohit, Group HQ NCC, Kalepur, Gorakhpur, U.P.
- Dr. S. Venkata Krishnan, Assistant Professor of Politics and International Relations (SLS) & Managing CCE (Centre of Continuing Education), School of Liberal Studies, Pandit Deendayal Petroleum University, Gandhinagar, Gujarat
- Dr. Sudhir Kumar Singh, Dyal Singh College, University of Delhi, New Delhi
- Dr. Pavithran Nambiar, Fellow, IIAS
- Professor Rajvir Sharma, Fellow, IIAS

Participants made presentations on the following theme during the seminar:

Session I: Arthasastra - a Treatise on State Craft

Dr. Jayashree Vivekanandan: *Between Theory and History: Formulating an Alternative Interpretation of Kautilya*

Dr. Medha Bisht: *Strategic Wisdom in Arthashastra: Philosophical Roots and Political Implications*

Session II: The Doctrine of Mandala

Col. Pradeep Kumar Gautam: *The Mandala Theory Revisited*

Dr. Nanda Kishore: *Kautilya's Saptanga Theory in Understanding Comprehensive National Power*

Ms. B. Poornima*: Israel's Foreign Policy: Assessing Correlation with Kautilya's Mandala Theory*

Session III: Welfare State concept in Arthasastra: Art of Government and Good Governance

Professor Rajvir Sharma: *Good Governance Perspectives in The Arthashastra: Kautilyan Ideology and Its applicability in the Present times*

Dr. Santosh Bharti: *Women and state craft in Kautilya's Arthashastra*

Dr. S. Venkata Krishnan*: Arthashastra's Civic Responsibility – The Need of the Hour*

Session IV: Internal Security and External Security including Maritime Security: Foreign Policy and Foreign Relations

Brig JS Rajpurohit: *Contemporary Statecraft in Arthashastra*

Ms. G. Padmaja: *India's Evolving Maritime Policies: Suggesting Measures for their Effective Implementation in the Context of Kautilya's Saptanga Theory and Sadgunya Theory*

Professor Harish K. Thakur: *Locating Kautilaya in Modern Indian Strategic Culture*

Professor Bhavatosh Indra Guru: *The Institution of Spies according to Kautilya*

Session V: Law and Public Welfare

Dr. Sudhir Kumar Singh: *Kautilya and Evolution of Human Rights*

Dr. Saurabh Mishra: *Rescuing the 'Kautilyan': Its Meaning and Anvikshiki*

Session VI: Science of Economics and Commerce Taxation System

Dr. Mousumi Ghosh*: Treasury in Arthashastra and its Relevance Today*

Shri Yashvant Kumar Trivedi: Tax collection in Arthaśastra and criteria of use

7. National Seminar on "*Society, Culture and the Making of Livelihood: The Symbiosis of Rivers and Nishads in Northern India*" at IIAS (22-24 July, 2019)

A National seminar on 'Society, Culture and the Making of Livelihood: The Symbiosis of Rivers and Nishads in Northern India' was organized on 22-24 July, 2019 at IIAS. Dr. Rama Shanker Singh, Fellow, IIAS was the Convener of this seminar. Dr. Rama Shanker Singh gave introductory

remarks. The Keynote address was delivered byProfessor Badri Narayan, Director, G.B. Pant Social Science Institute, Allahabad on 'निषाद समुदाय का स्मृति लोक और नदी'.

Rationale

Contexts of the Seminar

"In recent times, a compelling discourse has been generated at the global level over the increasing scarcity water and its socio-cultural implications. Water bodies and repositories such as ponds, rivers, seas and icecaps are now frequently and deservedly discussed in academic and popular arenas. The socio-cultural history of rivers, their flow, health and ecosystem, has lately found due attention among researchers resulting in numerous studies with water as their main focus. In the Athrvaveda, water is described as holy and purifying and is invoked to confer happiness.[1]Here, water is a 'space' where the 'cultural' takes form, and creates history as 'the life of a community' develops around it.

The life of one of the riverine communities, i.e. Nishads, is intimately tied to numerous rivers in India. A close look at the life of these communities will allow us to examine the broader question of human dependence on water and the consequent making of different life worlds. The proposed seminar is an effort in this direction. A close reading of history offers proof that the marginalized communities of India have played a vital role in shaping the contours of cultures, societies and religions of the country. Unfortunately, the writing of social history in India has failed to deal with this adequately. The role of social and cultural habitats in forming the cultures of different castes and communities is also often ignored in social science discourses. This seminar aims to examine and understand the socio-cultural environment and political economy resulting from the multi-layered relationship between rivers and their communities.

Discussions around the measurement and assessment of poverty in modern India, particularly since the 1990s, focus on material assets, education and access to public facilities. There has been a tendency to ignore the role of natural and cultural resources in the lives of communities. The nature of deprivation and poverty among different communities dependent on mountains, forests and rivers varies from habitat to habitat. When the Nishad's access to river is restricted, it adversely affects the entire community. At the same time, our recent experience in India suggests that modern technologies and state regulations have also adversely affected the livelihood opportunities of the Nishads and other marginalized communities. It has been observed that without understanding the adverse impact of technology on the artisan castes and communities, we will not be able to make a true enquiry into the life of the peoples of India. For centuries, more than a dozen castes such as Mallah, Kewat and Manjhi among others, have been earning their livelihood from rivers. This seminar wishes to focus on how development

[1] P. V. Kane (1953), History of Dhramashstra, Vol. IV, Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, page 555

activities have affected this cultural and economic associations and how the colonial state had tried to increase its hold on rivers and thereby control the communities concerned.

Writing on the waters of South Asia, Sunil Amrith highlights the importance of rivers and climate. He tries to investigate the fabric of Indian social, economic and political thought in relation to rivers, and the taming and controlling of the rivers by the colonial and post-colonial states.[2] Over a given time and space, the riverscapes[3] become public spaces where history, culture, religious belief and politics meet at different levels. Since it shapes society, the historian has started to look at the river as a text. Eminent historians like Fernand Braudel have emphasized the historical importance of geographical and natural factors like rivers, mountains, plateaus and seas. Along with this, Braudel had also considered the history of rivers in the 'longue duree'.[4] It is important to rethink the historical relations between human societies and rivers. Research along these lines also lies within the purview of the seminar. A major focus of this seminar would be to discuss the role of the state in the river-human relationship in history.

For all the reasons mentioned earlier, Anupam Mishra once called rivers 'the liquid mirror of society'. By this, Mishra meant to convey the cultural significance of rivers apart from their economic importance.[5] The seminar intends to correlate different aspects of the relationship between rivers and their societies. For example, there is a clear relation between fairs, festivals and gatherings and the rivers whose banks they are held along.

Scholars have been observing that pilgrimage to prescribed sites on the Ganga and other rivers has always been a mass phenomenon. The fair of Kumbha in Prayaga (Uttar Pradesh), at the confluence of the rivers Ganga and Yamuna, gives us a glimpse of the Indian subcontinent as an open society, where children, widows, wanderers, ascetics, priests, peasants, traders, soldiers, kings and landlords break rank for a moment and mingle with each other.[6] These spaces of human confluence transformed an unknown, inaccessible terrain into a familiar religious site where disparate regions and communities could converge.[7]This heterogeneous reservoir of Indian culture(s) can be seen over small and big rivers of the country. The seminar is also interested in investigating such phenomena.

Despite and because of the significance of rivers in our lives, the Ganga and other prominent rivers of India are getting polluted almost beyond repair in recent times. The pollution in rivers has jeopardized not only the life of their flora and fauna but has also severely affected the ecological health of the rivers. The human life dependent on rivers is also at risk. The seminar

---

[2] Sunil Amrith (2018) Unruly Water: How Mountains, Rivers and Monsoon have shaped South Asia's History, Penguin Random House, India.

[3] Assa Doron (2013), Life on the Ganga: Boatmen and the Ritual Economy of Banras, Cambedige University Press India, New Delhi.

[4] Sunil Amrith (2018).

[5] Anupam Mishra (2019), Paryawaranke Path: Sakshatkar, RajkamalPrakashan, New Delhi.

[6] Sudipta Sen (2019), Ganga: The Many Pasts of a River, Penguin Random House, India, page 43.

[7] B. D. Chattopadhyaya (2017), The Concept of Bhartavarsha and Other Essays, Permanent Black, Ranikhet, page 180; see also Ram Pratap Tripathi 'Shastri'(1952), Puranonmein Ganga, Hindi Sahitya Sammelan, Prayaga.

will try to look into this problem of pollution alongside a focus on socio-cultural perspectives in the study of rivers."

Objectives of the Seminar

1. Document the life histories of marginalised communities who have been dependent on natural resources.
2. Develop a historical understanding of the contributions of riverine communities to Indian culture and history.
3. Theorise the question of culture and livelihood of riverine communities and the everyday socio-economic contestations they are engaged.
4. Trace the cultural, social and economic aspects of rivers in the lives of the peoples of northern India.
5. Investigate the cultural, social and economic contributions/effects of fairs held along the banks of the Ganga and other rivers of northern India.
6. Examine the role of state in the relationship between rivers and their communities.

Suggested sub-themes of the seminar

1. The relations of different communities with natural resources in pre-colonial India.
2. The role of river ecology in the fo gnikamlives, livelihood and culture of Nishads.
3. The role of rivers in the making of the world-view of the Nishads.
4. The Ganga and Nishads in popular culture.
5. The representations and semiotics of rivers in the art forms of north India.
6. The cultural and religious role of rivers in north Indian society.
7. Any other pertinent questions related to above themes.

Sessions of the seminar

1. River and Humans: History Writing, Natural Resources and Communities fo Early India.
2. River, Society and Representation: Presence of Nishads in pre-colonial north Indian social order.
3. Ecological Humanities, Nature and Society.
4. Symbols and Social Ecology of Nishad Communities.

5. Nishads and Rivers in Sanskrit, Pali, Prakrit and literature of north India
6. Rivers in Architecture, Sculpture and Painting of India.
7. River in the Imagination of Folk and Oral Traditions and its Cultural Meanings
8. River and her peoples in movies
9. The World of Pilgrims: Rivers, Fairs and Festivals.
10. Community, State and Livelihood (with special reference to boating, fishing and sand mining in rivers)
11. Pollution in Rivers.

Participants

- Shri Jitendra Singh, G.B. Pant Social Science Institute, Allahabad, U.P.
- Professor Ashish Tripathi, Department of Hindi, Banaras Hindu University, Varanasi
- Dr. Balram Shukla, University of Delhi, New Delhi
- Shri Jagannath Dubey, Department of Hindi, Banaras Hindu University, Varanasi
- Professor Shekhar Pathak, Editor, PAHAR, Village Pathqura (Nakud), P,O. Gangolihat, District Pithoragarh Via Almora, Uttarakhand
- Dr. Shubhneet Kaushik, Department of History, Satish Chandra College, Ballia
- Shri Dhirendra Pratap Singh, Hindi Department, University of Allahabad, Prayagraj
- Dr. Khushboo Singh, JDVM College, Kanpur
- Dr. Ajay Kumar, Fellow, IIAS
- Dr. Debjani Halder, Fellow, IIAS
- Dr. Ashwin Parijat, Fellow, IIAS
- Dr. Sharmila Chandra, Fellow, IIAS
- Dr. Ruchi Shree, Department of Political Science, Janki Devi Memorial College, University of Delhi, New Delhi
- Ms. Ragini Kapoor, Department of Modern Indian Languages and Literary Studies, University of Delhi, Delhi
- Ms. Kamlesh Bhatoya, Department of Performing Arts, Himachal Pradesh University, Shimla
- Dr. Rakesh Tiwari, Retd. from Archaeological Survey of India
- Ms. Sima Yadav, G.B. Pant Social Science Institute, Paryagraj

- Ms. Gunjan Rajvanshi, G.B. Pant Social Science Institute, Allahabad
- Shri Govind Nishad, University of Allahabad, Pragaraj
- Ms. Neha Rai, S.S. Khanna Girls Degree College, Allahabad
- Professor Archana Singh, G.B. Pant Social Science Institute, Allahabad
- Professor Mahendra Pathak, K.S. Saket P.G. College, Ayodhya
- Shri Ankit Pathak, Department of Political Science, University of Allahabad, Allahabad
- Shri Loutan Ram, National Association of Fishermen, Shiv Gally, Mumbai
- Shri Harishandra Bind, Banaras Hindu University, Varanasi
- Dr. Jyoti Sinha, Mahila P.G. College, Jaunpur
- Ms. Shruti Meemansa, Department of Sanskrit, H.N.B. Garhwal University, Uttrakhand
- Professor Suchendra Ghosh, Department of Ancient Indian History & Culture, University of Calcutta, Kolkata
- Professor Awadhendra Sharan, Centre for the Study of Developing Societies, Delhi
- Shri Pushyamitra, 306, Tara Tower, Shastri Nagar, Patna
- Professor D.R. Purohit, National Fellow, IIAS
- Professor S.K. Chahal, Fellow, IIAS
- Professor Vijaya Ramaswamy, Tagore Fellow, IIAS
- Professor Sujata Patel, National Fellow
- Dr. Satendra Kumar, Fellow, IIAS
- Professor M.P. Singh, National Fellow, IIAS
- Professor Hitendra K. Patel, Fellow, IIAS

Participants made presentations on the following theme during the seminar:

Session I: River, People and the State

Professor Awadhendra Sharan: *पवित्र नदी, प्रदूषित नदी– कुछ विचार गंगा नदी के संदर्भ में।*

Dr. Shubhneet Kaushik: *नदी, राष्ट्र और इतिहास– भारतीय नदियाँ और आधुनिक भारत का निर्माण*

Session II: Rivers and people in the History

Professor Suchandra Ghosh: *Situating the Nau vyāvahāra jīvins and Kaivarttas in the Rural Settlements of early medieval Assam*

Shri Rakesh Tiwar: *गंगा घाटी में मानव सभ्यताएं*

Dr. Mahendra Pathak: *सरयू नदी की धार्मिक एवं सांस्कृतिक पारिस्थितिकी*

Session III: The Literary Imaginations, Rivers and Communities

Professor Ashish Tripathi: *गंगा और उसका तटवर्ती समाज : हिन्दी साहित्य में निषाद–बनारस का संदर्भ*

Shri Dheerendra Singh: *लोक संस्कृति में जलस्त्रोतों की भूमिका : स्थिति और भविष्य*

Shri Jagannath Dubey: *पूर्व–औपनिवेषिक भारत में नदी, निषाद और परिधीय समुदायों की चेतना*

Session IV: Rivers and the Sanskrit Texts

Dr. Balram Shukla : *संस्कृत वाङ्मय में गंगापरक वर्णनों के पारिस्थितिकीय निहितार्थ*

Ms. Shruti Meemansa: *उत्तर भारत के परिप्रेक्ष्य में महाभारत में वर्णित नदियाँ तथा निशाद जाति*

Ms Ragini Kapoor: *The Semiotics of Ecology in the Classical Indian Texts: The Representation of Rivers and Nishads in Ramayana and Mahabharata*

Session V: River, Community and Cinema

Dr. Debjani Halder: An *Epic narrative: A gamut of life Experiences of Malo in Ghatak's Titas Ekti Nadir Naam (1973)*

Shri Ankit Pathak: *हिन्दी सिनेमा में नदियों से जुड़े समुदाय : प्रस्तुति और एब्सेंसिया का सवाल*

Session VI: Water and the Women

Dr. Archana Singh: *Interface of River with feminity and festivity: the everyday life of Woman in Kumbh*

Ms. Neha Rai and Ms Sima Yadav: *निषाद समुदाय की सामाजिक भौगोलिकी का अध्ययन : आजीविका और संस्कृति के संदर्भ में।*

Session VII: Nation and the Rivers

Dr. Ruchi Shri: *Analysis of National Water Policies in India: Case-Study of NishadCommunity along Rapti and Rohin Rivers in Eastern U.P.*

Shri Pushymitra: *उत्तर बिहार की नदियाँ और मल्लाहों का जीवन*

Ms. Gunjan Rajvanshi: *नदी, मेले और प्रदूषण : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन :*

Session VIII: Voices from the Margins

Chaudhary Lotan Ram Nishad: *उत्तर प्रदेश के निषाद*

Shri Harishchndra Bind: *वाराणसी जिले में गंगा के किनारे के निषाद : आधुनिक समय में निषाद समाज की आर्थिक दशा।*

Shri Govind Nishad: *सरयू नदी और उसके किनारे बसे निषाद और उनका जीवन– एक गाँव का संदर्भ।*

Session IX: Far from the Text

Dr. Khushboo Singh: *नदियों का लोक एवं लोक की नदियाँ : अवधी और भोजपुरी गीतों में गंगा, यमुना और सरयू नदी।*

Dr. Jyoti Sinha : *काशी का एक अनूठा जलोत्सव : बुढ़वा मंगल का मेला।*

Ms. Kamlesh Kumari Bhatoia: *उत्तर भारतीय समाज में नदियों की सांस्कृतिक और धार्मिक भूमिका*

Sessions X: Resource and Politics

Dr. Ajay Kumar: *न्यायपूर्ण समाज की रणनीति : प्राकृतिक संसाधन और वैकल्पिक समाजशास्त्र में जल केन्द्रित समुदाय*

Shri Jitendra Kumar: *निषाद समुदाय और प्राकृतिक संसाधनों पर हकदारी प्रतिरोधी चेतना के स्वर*

Valedictory Session

Professor Shekhar Pathak: Himalayan Rivers and their ecological relationship with north India

8. National Seminar on "*How Gandhi Matters: Assessing the Relevance of Gandhian Solutions for India and the World in the 21st Century*" at GRF, Jalgaon (22-25 August, 2019)

A National Seminar on 'How Gandhi Matters: Assessing the Relevance of Gandhian Solutions for India and the World in the 21st Century' was organized at Gandhi Research Foundation (GRF), Jalgaon on 22-25 August, 2019 in collaboration with IIAS. Professor Gita Dharampal, Dean of Research, Gandhi Research Foundation, Jalgaon and Professor Mahendra Prasad Singh, National Fellow, IIAS, were the conveners of this seminar. The Keynote address was delivered by Professor Ramachandra Guha, historian and writer on 'Four Arguments with Gandhi'. The Valedictory address was delivered by Professor Sudhir Chandra, a renowned Indian historian and author.

*Rationale: "*Mohandas Karamchand Gandhi (1869-1948), as an unconventional political leader and thinker, is not easy to interpret and categorize. Yet admittedly, first and foremost, Gandhi was a **democratic humanist** whose influence surged in the firmament of the inter- and post-War periods of the 20th century in the context of anti-colonial national liberation movements in the Asian and African world. His extraordinary contribution continues to be relevant for the various

transformations of nationalism in the subsequent phases (during the Cold War and post-Cold War) of supranational regional integration and capitalist globalisation, and the more recent de-globalisation or 'slowbalisation' caused by the rise of right-wing nationalism all over the world.

Gandhi entered on to the Indian political stage at a time when the prevailing descriptive and explanatory categories of political understanding and action had run out of steam. On the one hand, Congress Moderates had been proved to be irrelevant and ineffective; on the other, Congress Extremists had been reduced to the margins of law and politics by the powerful repressive colonial state apparatus on charges of preaching violence and sedition. Gandhi appeared as a flickering flame of political thought and action, lightening the seemingly dark and hopeless scenario with his courageous and innovative political strategy of nonviolence, *satyagraha*, and his goals of *swaraj* and *swadeshi.* No wonder that Gandhi has been differently, or indeed simultaneously, interpreted as a traditionalist (in view of his defence of *varnashrama dharma* minus the caste system, or his trenchant critique of modernity), as a modernist (viz. his anti-colonial nationalism and 'constructive politics'), and as a postmodernist (given his belief in cultural relativism and contextual truth). His 1909 political manifesto, *Hind Swaraj* or *Indian Home Rule*, is open to a hermeneutic interpretation that is conservative, liberal, and radical – all rolled into one.

How Gandhi combines his unique individualism and communitarianism is exemplified in his autobiography, *The Story of My Experiments with Truth.* Straddling diverse epistemological discourses, he underscored, on the one hand, the normative philosophical imperative regarding the purity of both ends and means, philosophical anti-statism and the privileging of civil society and conscientious individualism; on the other, he emphasized the experimental and pragmatic discovery of contextually valid truths, and the need to make contingent compromises on myriad issues. Committed to his 'constructive programme', which represented grassroots politics *per se*, he endeavoured to bring about the emancipation of *Harijans*, communal harmony between Hindus and Muslims, the widespread use of the *charkha* and *khadi*, the introduction of basic education, natural health care and hygiene, and the propagation of a *rashtrabhasha,* just to name some of his major initiatives.

Eric H. Erikson (*Gandhi's Truth: The Origins of Militant Nonviolence*, 1969) in his psycho-history of Gandhi (exemplifying a Neo-Freudian approach to history and politics) postulates that the phenomenon of a mass movement and charismatic political leadership is predicated on the juxtaposition of the Man and the Moment. In short, in the persona of Gandhi, biography embedded in history succeeds in producing a mass movement of heroic historical signification that intrigues us even today.

Contrastively, in his last major speech before the Constituent Assembly of India, its chairman, B. R. Ambedkar, in defending the draft constitution, urged the Assembly to put the past behind and to abide by the spirit of the Constitution. Hence forward, Ambedkar advocated

that civil disobedience, *satyagraha* and the breaking of laws, which represented 'the Grammar of Anarchy', should be forgotten. Whilst showing due respect to this legal luminary, and fully acknowledging Ambedkar's constitutionalism, nevertheless, we also need to bear in mind that our national ideational heritage of Gandhian civil disobedience has continued to assert itself in numerous popular mass movements led by Vinoba Bhave, Jayaprakash Narayan and Sundarlal Bahuguna, to name the most prominent *satyagrahis* of post-Independence India. Arguably, *both* these streams of constitutionalism and *satyagraha* have contributed to the success, and indeed the survival, of democracy in India.

All things considered, Gandhi certainly matters today not only for India, but for the world at large. Yet his contemporary global importance requires more explicit articulation: As the world faces an uncertain future, to what extent can Gandhian alternatives be availed of, for instance, to tackle the enormous increase in class and regional inequalities, or to confront the challenges to democracy due to capitalist globalisation? Do his ecumenical endeavours in establishing communal harmony offer solutions towards mitigating religious fundamentalism and terrorism, aggravated by the global rise of extreme-right parties and movements? Does the legacy of this prophet of nonviolence provide us with crucial clues towards deflecting a nuclear holocaust, or towards abating global warming? To find answers to the existential problems of our times, we are called upon to examine more rigorously Gandhi's ardent faith in truth and nonviolence. We need to understand the implications and consequences of his deep respect for religious pluralism (*sarvadharmasambhava*), coupled with his exemplification of ethical politics, as well as his emphasis on 'need rather than greed'-based consumption and proprietorship (in the form of *aparigraha* and trusteeship), defined by simple living and health-care, in harmony with nature. Our aim would then be to evaluate the way in which Gandhian precepts and practices, in private and public spheres, can instantiate a cosmopolitan global citizenship for planetary survival, practised by *swadeshi* nationalists in the global village.

Participants

- Dr. Nishikant Kolge, Centre for the Study of Developing Societies, New Delhi
- Dr. Amitabha Mukherjee, Assistant Lecturer, Visva-Bharati, Santiniketan
- Dr. Satish K. Jha, Department of Political Science, Aryabhatta College, University of Delhi, Delhi
- Professor Ananta Kumar Giri, Madras Institute of Development Studies, Chennai
- Professor Ram Chandra Pradhan, Institute of Gandhian Studies, Wardha, Maharashtra
- Dr. Ramu Manivannan, Head of Department of Politics & Public Administration, University of Madras, Madras
- Shri Tejram Pal, Doctoral Candidate, H.N.B. Garhwal University, Srinagar, Uttarakhand

- Professor Sudarshan Iyengar, Member, Board of Directors, GRF, Jalgaon
- Ms. Deepika, Department of Political Science, Shivaji College, New Delhi
- Dr. Sukanya Sarkar Sasmal, Department of History, Sarojini Naidu College for Women, Kolkata
- Dr. Sirshendu Majumdar, Department of English, Bolpur College, University of Burdwan
- Dr. Anjana Mangalagiri, Senior Fellow, Institute of Social Sciences, New Delhi
- Ms. Chetana Jagriti, Independent Research Scholar, Sector-21, Gurugram, Haryana
- Dr. Himanshu Roy, Senior Atal Bihari Vajpayee Fellow, NMML, New Delhi
- Dr. Sopan Shinde, Department of English, National Law University, Nagpur
- Dr. Srabanti Choudhri, School of Social Sciences, Netaji Subhas Open University Calcutta
- Shri Samir Banerjee, Gandhian Scholar
- Dr. Sanjeev Kumar, Department of Political Science, Zakir Husain Delhi College, Delhi University, Delhi
- Shri Abhishek Saurabh, Doctoral Candidate, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Dr. Bir Pal Singh Yadav, Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwa Vidyalaya, Wardha, Maharashtra
- Dr. Shruti Kapila, Faculty of History, University of Cambridge
- Dr. John Chelladurai, Dean of Academics, Gandhi Research Foundation, Jalgaon
- Dr. Jagdish N. Sinha, Member, Research Council, National Commission for the History of Science, Indian National Science Academy, New Delhi
- Shri Prince Kumar Singh, Doctoral Candidate, Gandhi and Peace Studies,, Mahatma Gandhi International Hindi University, Wardha, Maharashtra
- Ms. Surbhi Uniyal, Research Scholar, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Professor Savita Singh, School of Gender and Development Studies, India Gandhi National Open University, New Delhi
- Professor Purushottama Bilimoria, Distinguished Teaching & Research Fellow, Graduate Theological Union, Berkeley, California

Participants made presentations on the following themes during the seminar:

Session 1: Gandhi's Historical Contribution: Debates and Controversies

Dr. Nishikant Kolge: *How to Understand the Life and Philosophy of Gandhi: Some Suggestions*

Dr. Amitabha Mukherjee: *Revisiting Mahatma's Educational Philosophy in the Light of the Present Millennium*

Dr. Satish Kumar Jha: *Ethics of Renunciation and Satyagraha*

Professor Ananta Kumar Giri: *Rethinking and Transforming Swadesh, Swaraj and Satyagraha of our Contemporary Times: Contingent Histories, Learning with Failures and Alternative Futures*

Session 2: Gandhi's Swaraj and its Relevance Today

Professor Rama Chandra Pradhan: *Evolution of Gandhi's Idea of Swaraj and its Present Relevance*

Dr. Ramu Manivannan: *Gandhi's Hind Swaraj and the Indian Republic Today*

Shri Tejram Pal: *वर्तमान में गांधी के नीति–दर्शन की प्रासंगिकता*

Session 3: Gandhian Economics and Ecological Sustainability

Ms. Deepika: *Revisiting Gandhi's Ideas on Corporate Social Responsibility*

Dr. Sukanya Sarkar Sasmal: *Gandhian Prophecies and Precepts: An Ecological Reading*

Dr. Sirshendu Majumdar: *The Idea of Swadeshi in Gandhi & Tagore*

Session 4: Gandhi's Sarvadharma Sambhava and his Discourse on Social-Political Justice: Viable Solutions for India and the World?

Ms. Chetana Jagriti: *Gandhi's Notion of Religion and the Question of Truth*

Dr. Himanshu Roy: *Gandhi's Secularism*

Dr. Sopan Shinde: *The Gandhian Human Rights Perspective and Global Peace*

Dr. Srabanti Choudhri: *A Sociological Appraisal of Gandhi's Living Legacy*

Session 5: Scope of Satyagraha in the 21st Century

Dr. Sanjeev Kumar: Exploring Gandhi's Method of the Dialogical Truth Force of Satyagraha

Shri Abhishek Saurabh: *21वीं सदी में भारत और विश्व के लिए गांधीवाद की प्रासंगिकता का आकलन*

Dr. Bir Pal Singh Yadav: *21वीं शताब्दी में गांधी सत्याग्रह की प्रासंगिकता*

Dr. Shruti Kapila: Gandhi and the Truth of Violence

Session 6: Gandhi, Science and Modernity: An Ambivalent Relationship?

Dr. J.N. Sinha: *Gandhi, Science and Environment: How He Matters Today.*

Shri Prince Kumar Singh: *प्रयोगकर्ता गांधी*

Ms. Surbhi Uniyal: *Dependence On Technology: The Relevance of Gandhi's Views against Technology*

Professor Savita Singh: Contemporizing Gandhi: Post-empiricist Science and Expressivist Modernity

Workshop Presentation

Professor Purushottama Bilimoria: *Gandhi, African Americans and the Civil Rights Movements: Toward Globalizing Nonviolence*

9. International seminar on "*Kala Pani Crossings: India In Conversation*" at IIAS (23-25 September, 2019)

An International Seminar on 'Kala Pani Crossings: India in Conversation' was organized on 20-22 May, 2019, at IIAS. Shri Ashutosh Bhardwaj, Fellow, IIAS, Shimla and Dr Judith Misrahi-Barak, Associate Professor, University Paul-Valery Montpellier 3, France were the Conveners of this seminar. The welcome address was delivered by Professor C.L. Gupta, Vice Chairman, IIAS. The introductory remarks were given by Shri Ashutosh Bhardwaj, Convener of the seminar. Vote of Thanks was given by Col. Vijay K. Tiwari, Secretary, IIAS.

*Rationale: "*When used in India, the *Kala pani* reference is often associated with the cellular jail in Port Blair where freedom fighters were sent. When used in the diaspora, it refers to the large scale migration out of India in the 1830s when hundreds of thousands of Indians, both willingly and unwillingly, left the subcontinent and crossed the *Kala pani* (the 'black waters,' the 'forbidden' sea between India and the Americas) to work in the sugar colonies as indentured labourers, or *bound coolies*, not only in the British Empire but also in the French, Danish and Dutch colonies. These emigrants were responding to the need for labour on the plantations after African enslavement was legally abolished in 1834 and fully terminated in 1838. Some 1.25 million emigrants were taken to Fiji and Mauritius, as well as the British, French and Dutch Caribbean. Indians were also recruited later in the 19th and early 20th centuries to work in South and East Africa on the railways and in other industries, going mainly to Kenya, Uganda and Tanzania. This migration has gained detailed records because of MK Gandhi's involvement with indentured labourers in Natal in the late 1890s.

Even if this history of the crossing of the *Kala pani* towards African and American shores, of the ensuing creolization and of the literature and the arts that have emerged out of it has been

well researched for several decades, it has been so mostly from the diasporic point of view of the countries the indentured labourers went to and settled in. It has not been a focus of interest in India itself, it is not well known by the general public, it is not part of the school or university curriculum, it is not part of the diaspora festivals in India, few academics based in India or in South Asia research it or write about it from the perspective of India, only a few have studied the return migrations, hardly any writers, filmmakers or artists have explored the complexities of the *Kala pani*, etc.

Aims and Objectives

This seminar at the prestigious Indian Institute of Advanced Study means to throw more light on the history and the literature of the *Kala pani* from the Indian perspective, going against the notion, held by some, that revisiting the *Kala pani* would be distorting Indian historiography.

It will be the perfect occasion to engage intellectually and launch an academic conversation between India-based scholars and scholars in the diaspora from a comparative perspective, to examine the hurdles and challenges, to investigate the reasons behind such a neglect and uncover new research directions:

- Why is it important today to open those pages of history again, not only from the point of view of the diaspora but also from the perspective of India?
- What are the specific conditions in which Indians left?
- How can these chapters of individual histories and mythologies be reclaimed from the colonial versions?
- The diaspora that has emerged out of the Kala Pani migrations is today the agents of soft power for India as well as the gateway for India in several regions of the Pacific and the Caribbean: how important is it for India to identify with this history as much as the diaspora does? What can be gained from such a revisiting? What's in there for India?
- What could be the impact of such a reclaiming on the present-day relationships between India and its diaspora? Is it likely to boost or complicate the existing relationships?

Significance of the seminar

Such a seminar will encourage an academic conversation between India-based scholars and scholars in the diaspora that has never happened in India; it will revisit the historiography and how such crucial history has been constructed on both sides of the Indian Ocean.

Many internationally known scholars have been thinking along those lines even though they have been focusing on the diasporic dimension of the Kala Pani crossings, but the conversation

has never happened in India and never from India's perspective. With such a seminar a think tank could be constituted, thus enabling the stretching of our multidisciplinary perspectives. The seminar will also be significant in the way it will bring together prestigious scholars based in India and of the Diaspora."

Participants

- Professor T. Vijay Kumar, Department of English, Osmania University, Hyderabad
- Professor Kusum Aggarwal, Professor of French and Francophone Literature, University of Delhi
- Dr. Arnab Kumar Sinha, Department of English, Culture Studies, University of Burdwan, Burdwan
- Dr. Vinod Verma, Associate Professor, English, Maharaja Agrasen College, University of Delhi
- Dr. Nandini Dhar, Associate Professor of Literary Studies at OP Jindal Global University, Haryana
- Shri Abhishek Saurab, Research Scholar, Department of Hindi, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Shri Anirban Banerjee, M.Phil Scholar, UGC Junior Research Fellow, Department of English & Culture Studies, University of Burdwan, Burdwan
- Ms. Udita Banerjee, M.Phil Scholar, Department of English and Culture Studies, University of Burdwan
- Professor Archana Kumar, Department of English, Banaras Hindu University, Varanasi
- Dr. Amba Pande, Professor in International Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Professor Himadri Lahiri, Retired Professor, English and Culture Studies, University of Burdwan
- Dr. Issur Rajcoomaree, Department of French Studies, Faculty of Social Sciences & Humanities, University of Mauritius
- Professor Vijaya Lakshmi Rao, Centre for French & Francophone Studies, Jawaharlal Nehru University , New Delhi
- Ms. Suparna Sengupta, Junior Fellow, Nehru Memorial Museum and Library, Delhi
- Dr. Ritu Tyagi, Department of French and Francophone Studies, Pondicherry University, Puduchery
- Ms. Kanchan Dhar, Independent researcher, Pondicherry

- Dr. Joshil K. Abraham, Assistant Professor, English, G. B. Pant Engineering College, GGS Indraprastha University, Delhi
- Dr. Ridhima Tewari, Department of Humanities and Social Sciences, IIT Dharwad, Dharwad
- Dr. Arpit Kothari, Department of English, Manipal University, Jaipur, Rajasthan
- Ms. Deepti Lokesh Arha, Research Scholar, Department of English, Manipal University Jaipur
- Dr. T.L.S. Bhaskar Teegela, CAO of India Centre for Migration, MEA, New Delhi
- Ms. Vipin Choudhary, Hans, 2/36, Dariaganj, New Delhi
- Dr. Praveen Mirdha, Department of English, Government Girls' College, Ajmer
- Professor Vijay Mishra, Professor of English and Comparative Literature, Murdoch University, Perth, Australia

Participants made presentations on the following themes during seminar:

Session I: Connecting Histories, Literatures and Cultures

Dr. Nandini Dhar: *Connected Literary and Cultural Histories of Sugar and Tea: Constructing an Indentured Personhood in India and Diaspora*

Dr. Ritu Tyagi: *Connected Literatures and Histories across Kala pani: Perspectives from India*

Session II: Connecting Histories, Literatures and Cultures

Dr. T.L.S. Bhaskar Teegela: *Re-visiting India's Engagement with the Overseas Indian Community*

Dr. Amba Pande: *The Girmit Diaspora as a Factor in India's Soft Power Strategy*

Session III: Remembering / Forgetting / Memorializing

Shri Anirban Banerjee: Of Journeys and Amnesias: A Study of Indentured Servitude and its Varied Consequences in Fiji

Session IV: From the Indian Ocean to the Caribbean, and back

Dr. Joshil K. Abraham: *Caste Travelling across the Kala pani: the case of the unborn V. S. Naipaul*

Ms. Udita Banerjee: *The Politics of Representation and the Interface of Sycorax and the Snake Woman: A Study of Olive Senior's Arrival of the Snake-Woman*

Film Screening: Patricia Mohammed's *Coolie Pink & Green* (2009)

Session V: Re-examining Kala Pani Crossings

Ms. Suparna Sengupta: *The 'Terror' of Kala pani: A Colonial Myth?*

Kanchan Dhar: Escaped or Tricked? Why Indian Women Crossed

Session VI: Other Kala Pani Crossings, Other Voices

Professor Vijaya Lakshmi Rao: *The Cult of Draupadi and its Propagation through Indentured Labour in the French Islands of the Indian Ocean*

Professor T Vijay Kumar: *New Voices in the Kala Pani Conversation*

Session VII: Re-routing / Re-writing Kala Pani Crossings

Professor Himadri Lahiri: *Pioneers across Kala pani; Reading Girmitiyas in Ramabai Espinet's The Swinging Bridge, Gaiutra Bahadur's Coolie Woman and Totaram Sanadya's Twenty-One Years in the Fiji Islands*

Ms. Kusum Aggarwal: Coolie Life-Writings: Literature and activism

Session VIII: Sounds and Images

Dr. Kumari Issur: *A Passage to Mauritius - the ebb and flow of Kala pani in Hindustani Cinema*

Dr. Vinod Verma: *The Thumb Impression*

Film screening: Vinod Verma's *Kala pani Notes and Beats*

Round table for Speakers: A Transnational Kala pani Network?

Session IX: Women on the Stage (1)

Dr. Praveen Mirdha: *Exilic Trajectories of Crossing the Kala Pani - Locating Female Subjectivity in the Writings of Ramabai Espinet and Gaiutra Bahadur*

Dr. Arnab Kumar Sinha: *Retrieving the History of Coolie Women: Historiography, Research and the Role of Agencies in Ramabai Espinet's The Swinging Bridge and Peggy Mohan's Jahajin*

Session X: Women on the Stage (2)

Ms. Deepti Lokesh Arha: A Critique on Marginalized Female Voices in Amitav Ghosh's *Sea of Poppies*

Ms. Vipin Choudhari: Postcolonial feminism: In reference to Indo-Caribbean Diaspora

Session XI: There were Songs… (1)

Shri Abhishek Saurab: Folk lore and farmlands of Bihar: Revisiting Kala Pani

Dr. Ridhima Tewari: I Will Survive on A Ser of Saag the Full Year": Uncovering Women's Work, Belonging and Kala Pani in Bidesia Songs

Session XII: There were Songs… (2)

Professor Archana Kumar: Singing the Pain of Indenture

Professor Vijay Mishra: Folk Songs of the Troubled Black Waters

10. Conference on *"Exploring Policy Issues in the Digital Technology Arena*" (10-11 October 2019)

National Institute of Public Finance and Policy, (NIPFP) New Delhi organised a conference on ***"****Exploring Policy Issues in the Digital Technology Arena*" from 10-11 October 2019 at IIAS, Shimla.

11. National Conference on "Gandhi's Economic Ideas: Swaraj, Swadeshi, Sarvodaya" at IIAS (15-16 October 2019) in association with Nehru Memorial Museum and Library, New Delhi

A National seminar on 'Gandhi's Economic Ideas: Swaraj, Swadeshi, Sarvodaya' was organized on 15-16 October, 2019 at IIAS. It was organized in association with the Nehru Memorial Museum and Library, New Delhi. Professor Makarand R. Paranjape, Director, IIAS, delivered the Welcome Address. The Inaugural Address was delivered by Shri Shakti Sinha, former Director, NMML. Professor Ajay Shah, National Institute of Public Finance and Policy delivered the Keynote Address.

Rationale: "Mohandas Karamchand Gandhi not only led India's struggle against British colonialism, but was also the man who had the greatest influence in his time on the idea of India in the minds of its own people and the world at large. Fondly called the Father of the Nation, the Mahatma's life and teachings spanned all aspects of societal life, from education, economics, and spirituality to politics. 150 years after his birth, these ideas continue to affect policies and instil inspiration in the upcoming generation of leaders and thinkers. Given the transformational advances in science and technology, and groundbreaking research in social sciences emerging every day, Gandhi's life, work, and thought need to be revisited from a fresh perspective and re-examined. "Gandhian Economics: Swaraj, Swadeshi, Sarvodaya" is a part of a series of events planned to commemorate Gandhi's 150th anniversary celebrations.

The term “Gandhian Economics” has been attributed to J.C. Kumarappa who articulated its chief assumptions and tenets in a slim book called *Gandhian Economic Thought* (1951). Gandhi believed than the meeting of legitimate human needs rather than the gratification of endless desires ought to be the basis of economic thought and planning. As such, for Gandhi economics was as much a part of ethics as ethics was a part of politics. In an ethical society, which he called “Swaraj,” rational actors would exercise self-restraint and responsibility for their fellow human and non-human living beings rather than consuming recklessly and destroying the environment. Gandhi was against economies of scale and gigantic mechanized means of harnessing human labour and controlling capital. As such, he was a critic of both the dominant models of economics of his time, i.e. capitalism and socialism.

Steering a middle course between them, Gandhi was a firm proponent of Swadeshi or local production coupled with economic self-sufficiency. He envisaged that village-level and grassroots institutions could be the driving forces of the Indian economy. He placed great emphasis on the preservation of the traditional village cottage industry. Today Gandhian Economics has emerged as a recognized school of thought which serves as an amalgam of Gandhi’s spirituality and his socioeconomic ideas. As the world today faces existential dilemmas on climate change, inequality, corruption, and so on, it bodes well to explore Gandhi’s ideas on these issues. What is more, it is important to interrogate and debate these ideas rather than merely reiterating or praising them.”

The sub-themes for the conference on “Gandhian Economics” included the following topics:

1. Gandhi’s idea of trusteeship vs contemporary notions of philanthropy
2. Self-sufficiency through local production (economic decentralization vs. capitalism)
3. Swadeshi as an economic concept—“small is beautiful” vis a vis mass production
4. Gandhi’s critique of consumption.
5. Economics and ecology
6. Living standards and bread labour
7. Gandhi & Deendayal Upadhyaya on Sarvodaya (welfare of all) and Antyodaya (welfare of the last person)
8. Gandhi’s idea of an economy based on needs rather than wants in the age of consumerism
9. Gandhi’s dharmic economics vs Nehru’s socialism
10. Machines vs hands; economics as raising the human spirit rather than turning man into machine.

Participants

- Professor H M Desarda, Former Member, Maharashtra State Planning Board
- Professor Ramchandra Pradhan, Institute of Gandhian Studies, Wardha, Maharahtra
- Professor Anand Kumar, Senior Fellow, NMML
- Professor Manindra Thakur, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Professor Manoharlal Sharma. Former Hon. Director Gandhi Bhavan and Head, Department of Gandhian and Peace Studies, Panjab University
- Dr. Himanshu Roy, Atal Bihari Vajpayee Fellow, NMML
- Dr. Vinayak Deshpande, Pro Vice Chancellor, RTM Nagpur University
- Professor Rajvir Sharma, Fellow, IIAS
- Professor R.C. Pradhan, National Fellow, IIAS
- Professor Hitendra Patel, Fellow, IIAS
- Professor Medha Deshpande, National Fellow, IIAS
- Dr. Satendra Kumar, Fellow, IIAS
- Dr. Rama Shanker Singh, Fellow, IIAS
- Dr. Ashwin Parijat, Fellow, IIAS
- Professor M.P. Singh, Fellow, IIAS
- Dr. Manisha Cjhoudhary, Fellow, IIAS
- Dr. Bindu Sahni, Fellow, IIAS

Participants made presentations on the following theme during the seminar:

Speaker:

Professor Manoharlal Sharma: *Gandhi's Views on Swadeshi and Their Relevance in the Present Context*

Discussant:

Professor Rajvir Sharma

Speaker:

Professor Anand Kumar: *Sarvodayi Swaraj of Mahatma Gandhi and its seven challengers*

Discussant:

Professor R C Pradhan, National Fellow, IIAS.

Speaker:

Professor Ramchandra Pradhan: *Gandhian Thoughts on Swadeshi*

Discussant:

Dr Ashwin Parijat, Fellow, IIAS.

Speaker:

Professor Manindra Thakur: *Gandhi and the Intellectual Tradition of Arthshastra*

Discussants:

Dr. Satendra Kumar and Dr. Hitendra Patel

Speaker:

Professor H M Desarda: *Towards An Ecological Civilisation: A Gandhian Perspective*

Discussants*:*

DrBindu Sahni and Dr Manisha Choudhary

Speaker:

Dr. Vinayak Deshpande: *How Relevant are Gandhian Thoughts: Swaraj, Swadeshi, Sarvodaya?*

Discussant:

Professor Medha Deshpande, National Fellow, IIAS.

Speaker:

Professor Rajvir Sharma: *Gandhi: Looking into a Sustainable Future*

Discussant:

Professor M. P. Singh, National Fellow, IIAS.

Speaker:

Dr. Himanshu Roy: *Gandhi's Idea of Swaraj*

Discussant:

Dr. Rama Shanker Singh, Fellow, IIAS.

12. International Conference on "*'Traditional Hindu/Indian Virtue Ethics in Today's Perspective: Sharing Ideas between East and West' at IIAS* (17-19 October 2019)

An International conference on 'Traditional Hindu/Indian Virtue Ethics in Today's Perspective: Sharing Ideas between East and West' was organized on 17-19 October, 2019 at IIAS. Professor Sitansu Chakravarti, Affiliated Scholar, New College, University of Toronto and Professor Nirmalya

Narayan Chakraborty, Department of Philosophy, Rabindra Bharati University, Kolkata were the Conveners of the conference. The Welcome address was delivered by Professor Makarand R. Paranjape, Director, IIAS. Professor Sitansu Chakravarti, Convener, gave Introductory Remarks, and presented Professor A. Chatterjee's view on the theme. Vote of Thanks was offered by Col. (Dr.) Vijay K. Tiwari, Secretary, IIAS.

Rationale: "There are two goals this seminar/symposium intends to achieve:

(1) To arrive at a structure of Hindu/Indian Ethics, keeping broadly Vedanta in perspective, using the analytical tools of modern Western philosophy, especially virtue ethics. The virtue samatva, *harmony within*, translated by Gandhi as *even-mindedness*, is the base for the ethical structure, cultivation of which leads on to the other requisite ethical virtues such as courage, benevolence, sympathy or empathy. Harmony being*intentional*, accumulation of the virtue *harmony within* a character leads on to building harmony around if missing, and maintaining it where it is already in place. According to the Indian point of view, the ethical base is thus naturalistic, as pertaining to the psychological nature of humans centering around harmony being intentional. It is at this point that Hindu ethics ties with spirituality, in so far as we humans involve ourselves in instilling the virtue *harmony within* in character to be able to pursue ethical acts geared to sustainability both at micro as well as macro levels. (cf., Samatvam Yoga uchchate (The Gita, 2/48); Yogah Karmasu Kaushalam (Ibid, 2/50)). Here emerges the ethico-spiritual concept of the ideal leader *Rajarshi* who has imbued the virtue *harmony within* well enough to discharge his/her social functions satisfactorily, -- a concept that comes near to the *philosopher king*, and yet goes beyond. Spirituality here is not tied to a specific faith, but is ontologically secular in being naturalistic, and is accommodative across the board, reflecting the inclusive spirit of Hinduism, which goes with pluralism. The ethical thrust found in the Indian way of looking at things prompts Balbir Sihag, the economist from UMass, Lowell, to characterize the economics of Kautilya (whom he demonstrates as the true founder of modern economics, not Adam Smith) as 'ethiconomics'. To sum up the ideas above, harmony has a threefold aspect: (a) the *harmonywithin*, which is the virtue; (b) the harmony amongst human beings – in one's own society and the whole social world – that the virtue is meant to, and helps promote; and (c) the harmony of the individual and every society with the natural world, which also the humans look for and delight in promoting on the basis of the virtue. Certainly Indian ethics goes beyond Aristotle. Philosophically relevant email comments from Rosalind Hursthouse in response to Chakravarti's paper on Virtue Ethics explicating the Indian position may be worth quoting here:

> ... I feel perfectly at home and found particularly interesting ... the way in which the virtue of harmony provides a very un-Aristotelian account of the *unity* of the virtues. Of course Plato talks of virtue as bringing the human psyche into harmony, but it's nothing more than the thin notion of the (dubious) tripartite division of the psyche being harmonious. And Aristotle has a hint of it, but one might say his is even thinner because it's just getting the desiderative and

the rational parts into harmony. But yours displays all the traditional virtues as *subsumed* under harmony, and thereby gives one a significant, content-rich, concept which can more fruitfully be used...

(2) To contribute to the Virtue Ethics of today with age-old visions from the Hindu/Indian perspective. Michael Slote supports Virtue Ethics, while pursuing the sentimentalist variety as he considers emotion as the building block of ethics. The virtue *harmony within,* needless to say, has an aesthetic dimension pronouncedly present in the spiritual pursuit of the Hindu. Thus sentimentalism is very much a part and parcel of Indian Virtue Ethics with spirituality as its base. Tagore in modern times has taken this secular ethico-spiritual dimension of Hinduism to a new height. (E.g., The *King of the Dark Chamber*, *The Cycle of Spring.*) No wonder, Wittgenstein was extremely fascinated of the first of the two plays by the poet. Unveiling the innate *Ananda*, or *Joy* in and through establishing the inner freedom, where freedom is not the antithesis of subjugation of the physical and mental by external, primarily political, force is the secular spirituality involved in the process. The national anthems of the prominent democracies today, American, British and Canadian for example, sing in the praise of political freedom for nation states. India's national anthem, composed by Tagore, sings, not the virtue of national freedom, but the virtue of living together, in harmony, imbibing the virtue *harmony within*, which goes beyond political freedom. Slote makes no secret of the fact that modern day Virtue Ethics has a lot to learn from the traditional Chinese variety while the impetus for the former came from the ancient wisdom of Greece. In the Indian tradition as explicated above, there might be a lot more that the conference hopefully can share with Slote for the benefit of the human kind, while at the same time learning from him. We are lucky he is willing and interested in taking part in a symposium arranged in India, as he often does in China.

Both Hurst house and Ronald Sandler look for a naturalistic end appropriate in the evolutionary stage for humans as we emerge as rational animals in the evolutionary process, an end 'appropriate to us [human beings] in virtue of our rationality' (Hurst house, *On Virtue Ethics*, p. 218). From the Hindu perspective, it is the joy of freedom in attaining *harmony within* that leads on to building and maintaining harmony without, signifying the meaning of existence that may be taken as such an end. However, this is not a *rational* end in so far as it is not an outcome of a strictly rational process, although reason is very much involved here as a guiding principle, as the Gita points out when mentioning *Buddhi Yoga*, translated by Sri Aurobindo as 'The Yoga of the intelligent will'. Being established in *harmony within* and operating off the virtue is a sentimental process, *harmony within* being a sentimental virtue that justifies, and regulates in the right direction, the operation of the virtue *empathy* that is the cornerstone of the sentimentalist Virtue Ethics of Slote. The Indian way to be deliberated upon in the proposed symposium leads to proper acts appropriate for occasions, not necessarily via the activist route. The deliberation is not a part of the decolonization process in the wake of a movement gaining

grounds lately in the West for acceptance of the 'other philosophies' in the Western academic curricula, but rather is a look into the live past of a prominent non-Western culture, following the style of Virtue Ethics in the West in modern times, in order to have a direction in life for today. The pluralistic approach is, however, not geared to accommodating relativism in ethics. The broad principle of morality being a priori accounts for their universality across the cultures, while their contingency explains their vulnerability in being questioned and often flouted. They are, thus, examples of the Kripkean concept of the contingent a priori.

Today's world with pervasive bullying at schools, rampant, unprovoked shootings on gatherings of innocent people in frequent succession, and a pandemic opioid crisis, associated with a widespread, deeply entrenched boredom crystallized in depressive suffering across societies calls for ethico-spiritual measures appropriate for us when the traditional ones have failed. The conference hopefully paves the way to reclaiming the lost ground for humanity through building of a theoretically sound virtue ethics that leads on to a practical ethics that works. The proposed symposium is intended to usher in a direction to this end in India to the benefit of all.

Michel Slote, Philosophy, University of Miami, a leading Virtue Ethicist, who has shown the relevance of accommodating points of view of another ancient culture, viz., the Chinese, in his work, has expressed a keen interest in attending an academic meet in India. Attempts will be made to accommodate Hindu/Indian perspectives at our end toward a fruitful dialogue. The area of administration where the concept of Rajarshi fits in will be covered. The economic ideas in Kautilya's *Arthashastra* will hopefully be covered as well from virtue ethical perspective. There will be presentation on Tagore's philosophical observation on Ethics as connected with his various involvements in life on top of his pursuit of the muse. Ideas of Swami Vivekananda and Sri Aurobindo will be dealt with along with those present in the Mahabharata, the Gita and the Vedas. In today's business world, the ideas of Dominic Barton, former Director of McKinsey, who places a pronounced value on character in business leadership while making a special mention of the Eastern ways of doing business will be touched upon from the point of view of Virtue Ethics.

The proposed symposium is an attempt at sharing the thoughts of ancient India with the modern Western thinkers on the platform of Virtue Ethics, which is historically a revolt of the West against itself in modern times. The symposium is a venture at the East and the West learning from each other. Since Virtue Ethics is not widely pursued academically in India yet, in choosing the presenters excellence has been the deciding factor, rather than distribution of possible speakers across the length and the breadth of the country. While we accommodate spirituality in its secular mode as the basis for the Hindu/Indian version of Virtue Ethics, we look into the area of the intimate relation holding between spirituality and science, to the sustenance of both, as Professor Kumar Murty of the University of Toronto is expected to bring to the fore in his presentation."

Participants

- Professor Rupa Bandyopadhyay, Department of Philosophy, Jadavpur University, Kolkata
- Professor V Kumar Murty, Mathematics, University of Toronto
- Professor Indrani Sanyal, Retired Professor, Philosophy, Jadavpur University, Kolkata
- Professor Sanjoy Mukherjee, Indian Institute of Management (IIM) Shillong
- Professor Shefali Moitra, Retired Professor, Philosophy, Jadavpur University, Kolkata
- Ayon Maharaj, Chair, Philosophy, Ramakrishna Mission Vivekananda University, Belur
- Shri Ananda Roop Chakravarti, Director, KPMG International, London
- Professor Balbir Sihag, Professor Emeritus, Economics, UMass, Lowell
- Mr. Ajay Jaiswal, Ph.D. Research Scholar, Center for Philosophy, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Dr. Lisa Widdison, Lecturer, Department of Philosophy, University of Hawaii
- Professor Sharad Deshpande, 13, Khagol Vaigynik Co-Op Hsg Society, 38/1, Pachwati, Pashan, Pune
- Professor M.P. Singh, National Fellow, IIAS
- Professor R.C. Pradhan, National Fellow, IIAS

Participants made presentations on the following theme during the seminar:

- Professor Sitansu S Chakravarti: *Hindu Virtue Ethics for viable Environmental Ethics -- A model venture to demonstrate Hindu Virtue Ethics' application to normative ethics*
- Shri Ananda Chakravarti: *Hindu Virtue Ethics as relating to the corporate world*
- Dr. Ayon Maharaj: *Modern Hindu Virtue Ethics shaped by thoughts of Swami Vivekananda with worldwide implications*
- Professor Rupa Bandyopadhyay: *On Virtue Ethics in the Gita: purusha, prakriti, the gunas: passivity and activity from diverse angles*
- Mr. Ajay Jaiswal: *Duty, Aretê, and Patañjali's Yoga: Towards a Holistic Ethics*
- Professor Balbir Sihag: *On Kautilya's Economics with its roots in Virtue Ethics*
- Professor Sanjoy Mukherjee: "*On Rajarshi, the Hindu model of the Philosopher King*
- Professor Indrani Sanyal: *Virtue Ethics in Sri Aurobindo's light*
- Professor V Kumar Murty: *Spirituality and Science-Mutual dependence*
- Professor Shefali Moitra: *Virtue Ethics and Tagore: His contribution to the world of ideas*

- Miss Lisa Waddison: *Emotion Concepts for Virtue Theory: From Aesthetic to Epistemic and Moral*

Special Presentation: Professor Michael Slote (Via Skype)

- Professor Dennis Wittmer's Presentation (via Skype)
- Professor Nirmalya Narayan Chakraborty: *Virtue Ethics relating to the Mahabharata*

The Wrap-up Session: an attempt to arrive at a concluding abiding note

Valedictory session: Professor Makarand R. Paranjape, Director, IIAS

13. IIAS Annual Integration Conference on "Re-visiting Guru Nanak Dev, His Bani and Vision" at IIAS (25-26 November 2019)

IIAS Annual Integration Conference on 'Re-visiting Guru Nanak Dev, His Bani and Vision' was organized on 25-26 November, 2019. Professor Jagbir Singh, Former Professor and Head, University of Delhi and Professor Paramjit Singh Sidhu, Former Professor and Chairman, GNDU, Amritsar were the conveners of the conference. The Welcome address delivered by Professor Makarand R. Paranjape, Director, IIAS. Keynote address was given by Professor Jagbir Singh, Convener of the conference. Professor H.S. Bedi, Chancellor, H. P. Central University was the Guest of Honour. He delivered his remarks. Valedictory address was delivered by Professor Gurpal Singh Sandhu, Panjab University, Chandigarh. Vote of thanks was offered by Col. (Dr.) Vijay K. Tiwari, Secretary, IIAS.

Rationale: "Guru Nanak Dev is the founder of Sikhism, which has flourished as one of the four major dharma traditions of Indic Civilization (namely, Sanatan dharma, Jainism, Buddhism and Sikhism) rooted in the Indian Sub-Continent. The most remarkable thing about this Civilization is that it is dharma-centred and knowledge-oriented. It is also one of the most ancient and living civilizations of the world. The word dharma is a key concept with multiple meanings in Indian tradition. Its conceptual meaning is quite different from religion. Primarily, it refers to the cosmic moral order (Ritam) operating in the universe and a rightful way of living. All the above four dharma traditions exemplify an excellent model of 'unity in diversity'. They present an overall unified vision of reality, cosmos and human existence. They also construct the world view, way of life and core knowledge concerns of Indic civilization. As an eminent dharma pravartak of his times, Guru Nanak occupies a significant position in the Indic Civilization and its dharma traditions.

Apart from being the founder of a new faith, Guru Nanak is also a celebrated Saint-poet who imbibed the spirit of renaissance heralded by the Pan Indian Bhakti movement during the middle ages. This eventful era of Indian history signifies a powerful moment of cultural awakening and self-assertion of the Indian mind after centuries of subjugation and suppression at the hands of foreign invaders. (We have a considerable evidence of the genocide and forcible conversion of

the native population at the hands of Arab, Turk, Mughal and Afghan occupying forces during this period.) Guru Nanak himself witnessed horrifying event of Babur's invasion at Saidpur (present-day Emanabad). He provides a graphic description of the large-scale destruction of this invasion in his Bani:

खुरासान खसमाना कीआ हिंदुसतानु डराइआ ॥

आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चड़ाइआ ॥

एती मार पई करलाणे तैं की दरदु न आइआ ॥१॥

(Having attacked Khurasan, Babar terrified Hindustan.

The Creator Himself does not take the blame,

but has sent the Mughal as the messenger of death.

There was so much slaughter that the people screamed.

Didn't You feel compassion? ||1||)

Guru Nanak compares his contemporary times to mythical Kaliyuga, the dark age of moral disintegration where dharma had taken wing and flown away:

कलि काती राजे कासाई धरमु पंख करि उडरिआ ॥

कूड़ु अमावस सचु चंद्रमा दीसै नाही कह चड़िआ ॥

हउ भालि विकुंनी होई ॥आधेरै राहु न कोई ॥

(The Dark Age of Kali Yuga is the knife, and the kings are butchers;

righteousness has taken wings and flown away.

In this dark night of falsehood, the moon of Truth is not visible anywhere.

I have searched in vain, and I am so confused.)

The Saint-poets and Sikh Gurus emerged on this scene as saviours of perennial values and humanitarian concerns of our civilization and culture. Their primary source of inspiration was classical wisdom of Indic knowledge tradition, lying dormant in folk memory. They propagated their message of spiritual enlightenment in the prevalent language of the people, which resulted in re-kindling the integrating and liberating power of universal love in popular consciousness. Guru Nanak was no exception.

Guru Nanak Dev was born in a Hindu Khatri family in 1469 in village Talwandi (now known as Nankana Sahib) situated near the city of Lahore in present day Pakistan. Sikhs around the world celebrate the auspicious occasion of Guru Nanak Dev's birth anniversary on the full moon day (Puranmashi) in the Lunar month of Kartik (October-November). Guru Nanak Dev 's father, Mehta Kalu, was a trader by profession. Desiring his son to attain proficiency in trade, he arranged

for learned teachers for his son's education. These teachers were well versed in traditional learning and classical knowledge available in Sanskrit, Persian and Arabic. Child Nanak was exceptionally bright. His contemplative mind had a deep interest in spiritual knowledge. He often surprised his educators by the depth and sublimity of his knowledge. His rational mind questioned the traditional religious practices and empty rituals. Although he did not condemn these practices and rituals, he sought to introduce the true spiritual meaning in them.

There is an interesting incident relating to this early period of Guru's life, recounted in his traditional biographies (Janam Sakhis). Guru's father, Mehta Kalu, wanted to test the newly acquired educational proficiency of his son. He sent him to a market place with a sum of twenty Rupees and asked him to make a true deal (sacha sauda) with it. What he meant was a profitable business deal. Nanak, with his spiritual bent of mind, spent the whole amount on the food for the needy. For him this was the true deal 'sacha sauda'. Mehta Kalu was obviously disappointed by this 'foolish' behaviour from a worldly point of view. In order to dissuade his son from such world-negating tendencies and to make him a responsible worldly man he arranged for his marriage as well as employment.

Young Nanak was married to Sulakhani of Batala and they had two sons, Sri Chand and Lakhmi Das. With the help of his brother-in-law, he obtained the job of a store keeper in Sultanpur at government's granary. After laps of some time, one morning, he went as usual down to rivulet Baini to bathe and meditate. It proved to be the most significant event in Guru Nanak's life. Guru Nanak entered the river and suddenly disappeared from the sight of his companions, who searched for him everywhere in vain. Fearing, Nanak had drowned, the companions dejectedly returned home. But a veritable miracle happened. After three days Nanak re-appeared on the river bank. He looked spiritually transformed. He remained silent for some time. Then suddenly he uttered an enigmatic sentence: "na koi Hindu na Mussalman" (There is no Hindu, no Mussalman)

Janam Sakhis have woven a mythical narrative around this event which symbolically highlights it as a moment of enlightenment. Nanak quit his job and distributed all that he had to the poor. Nanak set out on his spiritual journeys in four directions. He visited almost all the famous Hindu religious centres, spread over length and breadth of Indian Subcontinent as well as to far off places in South Asia, Tibet and Arabia, covering about 30,000 kilometres.

In the later years of his life, Guru Nanak founded a township of Kartarpur (presently in Pakistan) on the banks of river Ravi in Punjab and settled down as a householder. Here, he donned the robes of a peasant, earning his own honest living by cultivating the lands. Followers came from near and far to listen to the Master. He introduced the institution of Langar (free communal kitchen) at Kartarpur, establishing the basic equality of all people regardless of their social and economic status. Sometime before his demise, Guru Nanak installed his devout follower Bhai Lehna as next Sikh Guru.

Guru Nanak composed his poetic compositions in the genre employed by Bhakti poets, known as Bani or Gurbani in Sikh tradition. This Bani of Guru Nanak Dev is included in the holy text of Sikhism, known as Guru Granth Sahib. As we know, Guru Granth Sahib is an anthology of the poetic utterances, reflecting the philosophical meditations of the inspired souls. This holy anthology contains the Bani not only of Guru Nanak Dev and other Sikh Gurus but also those of other medieval Indian Saint-poets belonging to different religious and cultural traditions. Prominent among these Saint-poets are Jaidev, Namdev, Sheikh Farid, Kabir and Ravidas. Chronologically these Saint-poets belong to the vast expanse of five centuries (12th to 17th) and geographically they represent the regional and cultural diversity of the Indian Sub-Continent.

The Bani of Guru Nanak, as incorporated in Guru Granth Sahib, consists of about 974 hymns including some of the longer compositions like Japji Sahib, Asa di Var, Barah Maha, Sidh Gosti and Onkar (Dakhni). The characteristic feature of his Bani is that its hymns are composed in various classical and folk literary forms and meters. These hymns tend to employ mostly the lyrical and the didactic modes of expression. They have been arranged in nineteen classical Indian ragas with indications of folk tunes here and there. In fact, poetry and music are integral elements of its discourse. They introduce a dimension of depth in the meaning and import of the message. However, the poetry of Guru Nanak cannot be taken as pure and simple poetry in the ordinary sense of the term. It is primarily a meditation on the nature and experience of Braham (Ultimate Reality):

गावहु गीतु न बिरहड़ा नानक ब्रहम बीचारो ॥८॥३॥

(I do not sing just a song or a birhara O Nanak,

I reflect upon Braham.)

In fact, Guru Nanak is a philosopher-poet. His meditation on the nature of Ultimate Reality (Braham) is a search for final meaning of human existence. But this consciousness of the Ultimate Reality (paramartha chetana) provides it a transcendent vantage point and a liberative vision to re-define the existential social concerns of human life. Guru Nanak takes the ideological position of the oppressed sections of society:

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥

नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥

जिथै नीच समालीअनि तिथै नदरि तेरी बखसीस ॥४॥३॥

(Those who are low in caste, the lowliest of the low,

Nanak seeks the company of those,

Why should he try to compete with the great?

O Lord, thy grace is showered upon, were the lowly are cared for.)

The Bani or discourse of Guru Nanak presents the idea of the spark of divine light residing in the heart of everyone, as evidenced in the following verse:

जाति बरन कुल सहसा चूका गुरमति सबदि बीचारी॥१॥

(The distinctions of jati, baran and kula are eliminated,

When we contemplate upon the Word of the Guru.)

The Bani of Guru Nanak projects a philosophy of enlightened living. It is not just a metaphysical speculation. It turns out to be a philosophy of action which lays emphasis is on shared communal experience and on purposeful involvement in social concerns.

Guru Nanak recontextualises the Vedic conceptualization of Brahman, as one of its core tenets and follows the overall pluralistic vision of the Indic Civilization relating to truth and reality. It conceives of the Ultimate Reality as both immanent and transcendent and lays great emphasis on moral virtues and truthful conduct (sachiar) more than on empty ritualism. The poetic discourse of Guru Nanak presents a radical humanitarian vision reality and society. It emerges as significant 'knowledge text' incorporating deep philosophical meditations on the eternal verities of human existence as well as a radical vision upholding human equality and dignity. The originality of this vision and its dialogical relationship with past and present establishes the unique identity of Sikhism.

The year 2019 marks the 550th Birth Anniversary of Guru Nanak. Various institutions are celebrating this auspicious occasion. The government of India has also decided to commemorate this event at a national as well as international level. This historical event at this juncture is a worthwhile occasion to revisit his biographical accounts, his Bani and philosophical and social vision to understand their significance in our contemporary context.

Aims and objectives

Some of the aims and objectives of this seminar will be

a) To Understand and recontextualise the philosophy and ideology of Guru Nanak Dev in the contemporary situation.

b) To understand the socio-cultural and spiritual paradigms of Guru Nanak Bani.

c) To decode the folk traditions and hagiographical accounts of Guru Nanak Dev.

d) To generate a narrative about the life and teachings of Guru Nanak Dev in order torevisit the literary, cultural and philosophical traditions of India.

e) To understand the nature, structure and dimensions of Guru Nanak Bani's literary and musicals expression.

f) To understand linguistic devices and semantic structures of Guru Nanak bani.

g) To understand and appreciate Guru Nanak Dev's contribution to Indic Knowledge Tradition.

Guru Nanak Dev is the founder of Sikh Panth (Sikhism) and upholder of universal Dharma. He is a self-confessed poet and a philosopher. He travelled far and wide and visited prominent places of worship and spiritual learning in the Indian subcontinent and Middle East. As a poet-philosopher, he is also one of the prominent personalities of medieval Indian Renaissance. This era of Indian history is known as a moment of re-awakening of the spirit of Indic Civilization and Its knowledge tradition. The Bani of Guru Nanak Dev can rightly be considered as an epitome of Indic Knowledge Tradition. The proceedings of the Seminar will hopefully generate a fresh insight about the charismatic personality Guru Nanak Dev, his world view and humanitarian vision. The contemporary relevance of Guru's philosophical vision and its radical socio-cultural significance can hardly be over-emphasised. The discourse on the biographical and spiritual texts of Guru Nanak Dev will help in creating a new narrative about Guru Nanak Dev in the context of contemporary spectrum of Indian Society. This Seminar will also help in understanding Guru's life and his universal humanitarian message from the Pan-Indian and Pan-Asian perspective."

Some of the suggested topics

1. Guru Nanak: Socio-Religious Biography
2. Guru Nanak: A Spiritual Spectacle
3. Guru Nanak: PAN Indian and Pan-Asian spiritual Discourses
4. Poetics of Guru Nanak Bani
5. Raga System of Guru Nanak Bani
6. Socio-Cultural significance of Guru Nanak Bani
7. Mystico-ethical aspect of Guru Nanak Bani
8. Guru Nanak: Founder of Socio-Religious transformation
9. Humanitarian Ideology of Guru Nanak Dev
10. Semantics of Conceptual Structures in Guru Nanak Bani

Participants

- Professor Kuldeep Chand Agnihotri, Vice-Chancellor, H.P. Central University, Dharamshala.
- Professor Jasbir Singh Sabar, Former Chairman, Department of Guru Nanak Studies, GNDU, Amritsar

- Dr. Manmohan Singh, I.P.S., IB, Chandigarh
- Dr. Harpal Singh, Former Associate Professor and H.O.D, Sikh National College, Banga, Punjab
- Dr. Ravinder Singh , Associate Prof. Dyal Singh College, New Delhi
- Sh. Amarjit Singh Grewal, Ludhiana
- Sadhvi Yoganjali Chaitanya Puri, Traditional Scholar of Hermeneutics of Gurbani
- Dr. Manjinder Singh, Assistant professor, School of Punjabi Studies, Guru Nanak Dev University, Amritsar
- Dr. Ramanpreet Kaur,CUP, Bathinda
- Professor Ananta Kumar Giri, Madras Institute of Development Studies
- Professor Karamjit Singh, Registrar, P.U. Chandigarh
- Prof. Sudhir Kumar, Professor of English, Panjab University, Chandigarh
- Dr. Nivedita Uppal, Professor, Department of Music, Former Dean and Head, P. U. Patiala
- Professor Gurpal Singh Sandhu, DES-MDRC, Panjab University, Chandigarh

Participants made presentations on the following theme during the conference:

Session I: Guru Nanak: Socio-Religious Concerns

Professor Jasbir Singh Sabar: *Socio-Religious Relevance of Guru Nanak's Philosophy: Modern Context*

Sadhvi Yoganjali Chaitanya: श्री गुरु नानकदेव जी द्वारा सामाजिक और धार्मिक स्तर पर एक क्रान्तिकारी परिवर्तन का प्रवर्तन

Session II: Guru Nanak: Pan-Indian Discourse

Professor Karamjeet Singh

Dr. Nivedita Uppal: *Musical Structure of Guru Nanak Bani: Socio-Cultural Context*

Professor Ananta Giri: *Towards a New Garden of Sabad and Vani: Guru Nanak's Challenging Border Crossing, Satyagraha and a New Ecology and Hermeneutics of Faih and Hope*

Session III: Socio-Cultural Significance of Guru Nanak Bani

Dr. Manmohan Singh

Session IV: Ethical and Historical Aspects of Guru Nanak Bani

Shri Amarjit Singh Grewal

Session V: Guru Nanak Bani: Contemporary Concerns

Dr. Harpal Singh*: The Essential Message of Guru Nanak*

Dr. Manjinder Singh: *Guru Nanak Bani: Discourse of Universal Sensibility*

Session VI: Humanitarian Ideology of Guru Nanak

Dr. Ravinder Singh: *Guru Nanak Bani: Contemporary Challenges and Relevance*

Dr. Ramanpreet Kaur: *The Conceptual Structure of 'Guru' in Guru Nanak.*

14. Workshop on 'Autonomous Colleges in India: The Road Ahead' at Mumbai (7- 8 January 2020) in collaboration with B. K. Birla College (Autonomous), Kalyan, Mumbai.

A workshop on 'Autonomous Colleges in India: The Road Ahead' was organised at Mumbai on 07-08 January 2020 in collaboration with B.K. Birla College, Kalyan, Mumbai. Dr. Naresh Chandra, Director, B.K. Birla College, Kalyan, and Dr. Avinash Patil, Principal, B.K. Birla College, Kalyan, were the conveners of the workshop. Professor O.R. Chitlange, Chairman,

B.K. Birla College delivered the welcome address. Introductory remarks were given by Professor Makarand Paranjape, Director, IIAS, Shimla. Dr. Naresh Chandra, convener of the workshop introduced the theme and the Guests. Special address was given by Professor Suhas Pednekar, Hon'ble Vice Chancellor, University of Mumbai, Mumbai. Presidential address was delivered by Padma Bhushan Smt. Rajashree ji Birla, Chairperson, Aditya Birla Center for Community Initiatives and Rural Development. Inaugural address was presented by Shri Bhagat Singh Koshyari ji, Hon'ble Governor, Maharashtra State and Chancellor of Universities in Maharashtra State. Keynote address was delivered by Professor Bhushan Patwardhan, Hon'ble Vice Chairman, UGC, New Delhi. Vote of thanks was proposed by Dr. Avinash Patil, Principal, B. K. Birla College and Co convener of the conference.

Rationale:

"Autonomous Colleges and National Education Policy -

It is truism that there is a need for big reforms in academic, administrative and governance of Higher Education Institutions (HEIs). Education is considered as one of the best source of investment when it comes to the future of the country. If we wish to improve the quality of higher education in India, then the role of autonomous colleges will be crucial in the near future.

708 Colleges in the country are autonomous as per the list updated by UGC on 28.06.2019, catering the large number of students under various streams.

Highlighting the importance of autonomous colleges, National Education Policy (NEP) clearly states that: 'The only safe and better way to improve the quality of undergraduate education is to

delink most of the colleges from the affiliating structure. Colleges with academic and operative freedom are doing better and have more credibility. The financial support to such colleges will strengthen the autonomous HEIs.'

Some salient features of the Autonomous Colleges under the new National Education Policy are as follows:

- Autonomous colleges will have the freedom to modernize their curricula or make them globally competent, locally relevant and skill oriented to promote employability.
- An autonomous college is free to start a new degree or postgraduate course / Ph.D. with the approval of the Academic Council of the college and concerned Statutory Council(s), wherever required, provided the nomenclature of the degree is in consonance with UGC Notification (Final Revised Guidelines of Autonomous Colleges dated 19.01.2018) on Specification of Degrees, (2014) as amended from time to time.
- An autonomous college may rename an existing course as per the UGC Notification on Specification of Degrees, (2014) as amended from time to time after restructuring / redesigning it with the approval of the college Academic Council as per UGC norms. The university should be duly informed of such proceedings.
- Many innovative reforms may be introduced. An Induction Training programme can be organised for newly appointed teachers to make them aware about the work culture of college. Faculty members may be deputed to attend UGC sponsored Orientation Programmes which will create an awareness on issues of the society particularly in the field of higher education and its role. They may be motivated to attend various seminars and workshops related to their area of expertise, so that, they can interact with other researchers in the field and get motivated by eminent academicians and scientists.
- The syllabus can be modified for greater employability of students enabling future development with adequate flexibility to respond to future needs.
- The assessment pattern can be 60:40. The internal assessment will be based on ppt, tutorials, assignments, projects, model making, field work, book review, reading scientific papers, etc.
- The College will not find any difficulty on financial front after receiving the grant from UGC / RUSA / other funding agency.
- Skill development centre can be operated as prominent and dynamic centre of skilling initiatives of consistent high standards building up strong nexus with the industries and professionals, thereby; creating opportunities for the students of gaining advanced knowledge, on job training and employment. Objective is to improve the overall personality of the student and to inculcate other personality traits such as smartness, communication skills and general awareness, etc.

National Educational Policy (NEP) has provided the policy on quality Universities and Colleges, revamping the Higher Education system to create world class multidisciplinary higher education institutions across the country by increasing GER to at least 50% by 2035. Higher education must develop good, well- rounded and creative individuals with intellectual curiosity, spirit of service and a strong ethical compass.

In addition to three stages of faculty members (Assistant Professor, Associate Professor and Professor) based on eligibility criteria, there can be a post of Teaching Assistant / Tutors / Demonstrators (in practical subjects) for a period of 3 - 5 years on a fixed salary. During this period, they are supposed to acquire the eligibility for becoming Assistant Professor in addition to their teaching / practical assignments. The faculty members at all the stages should be paid their salary uniformly in all the institutions irrespective of public or private institutions.

The teachers should be appointed by a commission on the line of UPSC in consultation with States Higher Education Departments. At the entry level once teachers are selected, they should be provided minimum six months intense training programme (in core subject, teacher education, IT skills, commitment towards nation building, etc.). Further promotions from stage -1 to stage - 4 should be linked with transparent feedback mechanism.

Aims and Objectives:

To understand wider scope and perspective of Autonomy, the Directors / Principals of selected Autonomous colleges in the country are invited to share the best practices, followed in their Institutions.

The Key areas for discussion

- To review existing courses / programmes and restructure, redesign and prescribe own courses / programmes of study and syllabi in emerging areas.
- To formulate new courses / programmes within the nomenclature specified by UGC as per the Specification of Degrees (2014) and amended from time to time.
- To evolve methods of assessment of students' performance, conduct of examinations and notification of results, to announce results, issue mark sheets, migration and other certificates; however, the degree shall be awarded by the University with the name of the college on the degree certificate.

Significance of the workshop - How it will create new knowledge or contribute to the discipline?

This workshop may help and provide direction / motivate and guide HEIs to grow to achieve newer heights of glory and excellence. The workshop will be organised under the guidance

of Secretary (HRD) / Chairman / Vice Chairman UGC, Officials from RUSA, Maharashtra and Eminent experts.

Many of the Academic Administrators have expressed that there should be a detailed discussion on 'Future of Autonomous Colleges', with a focus on issues related to HEIs, Autonomous Colleges, the colleges receiving RUSA grant, NEP, etc.

It is felt that the deliberations on aforesaid issues related to higher education in presence of different invited experts and key stakeholders will serve its purpose to develop a document in a most efficient and effective manner in a timeline planned. The proceedings of workshop will be submitted to the Competent Authorities for consideration. This can be discussed favourably by the Policy making body for the betterment of HEIs."

Participants

- Professor Vasudha Kamat, Former Vice Chancellor, SNDT Women's University, Mumbai
- Dr. R. G. Pardeshi, *Principal,* Fergusson College, Pune
- Professor John Varghese, *Principal ,* St. Stephen's College, Delhi
- Dr. Suresha K. V., *Principal,* JSS College for Women, Mysore
- Dr. Uday Salunkhe, *Group Director,* WeSchool, Mumbai
- Dr. Snehalata Deshmukh, Former Vice Chancellor, University of Mumbai
- Dr. Vijay Khole, Former Vice Chancellor, UoM
- Dr. S T Gadade, Secretary, JBST Sanstha, Panvel
- Dr. Geetha Unnikrishnan, B.K. Birla College, Kalyan
- Dr. P. Baby Shakila, *Principal,* Sri Krishna College, Coimbatore
- Rev Fr G. M. Victor Emmanuel, *Principal,* Andhra Loyola College, AP
- Dr. Pandiaraja D, *Principal,* Thiagarajar College, Madurai
- Dr. Rajendra Shinde, *Principal,* St. Xavier's College, Mumbai
- Dr. Dhanraj Mane, Director (HE), Pune (MS)
- Dr. Agnelo Menezes, Former Principal, St. Xavier's College, Mumbai
- Dr. Meeta Bhot, B.K. Birla College, Kalyan
- Rev. Dr. Roy Abraham P, *Principal,* Marian College, Idukki, Kerala
- Dr. K. M. Naseer, *Principal,* Farook College, Kerala
- Dr. Avinash Patil, *Principal,* B. K. Birla College, Kalyan

- Dr. Alphonsa Mathew, *IQAC Coordinator,* St. Thomas College, Thrissur
- Dr. Rajan Welukar, Former Vice Chancellor, UoM,
- Dr. Vijay Joshi, Chief Consultant, RUSA, Maharashtra
- Dr. Madhavi Thakurdesai, B. K. Birla College, Kalyan
- Dr. Vijay Joshi, Chief Consultant, RUSA, Maharashtra
- Dr. Swapna Samel, B. K. Birla College, Kalyan
- Dr. G. Gidwani, *Principal,* St. Mira's College, Pune
- Dr. Sr. Elizabeth C. S., Principal, Jyoti Nivas College, Bangalore
- Dr. Atima Sharma Dwivedi, Principal, Kanya Maha Vidyalaya, Jalandhar
- Dr. Anushree Lokur, *Principal,* Ruia College, Mumbai
- Professor V. N. Rajasekharan Pillai, Hon'ble Vice Chancellor, Somaiya Vidyavihar University
- Dr. Ancy Jose, Principal, Khandwala College, Mumbai
- Dr. M. K. Dhaliwal, B. K. Birla College, Kalyan
- Dr. Snehalata Nadiyar, *Principal* NMKRV College, Bengluru
- Professor K. B. Sharma, *Principal,* S.S Jain Subodh PG College, Jaipur
- Dr. N. N. Sawant, *Principal* Parvatibai Chowgule College, Goa
- Dr. Ancy Jose, *Principal,* Khandwala College, Mumbai
- Dr. V. N. Magare, Pro Vice Chancellor, SNDT Women's University
- Dr. Rajpal Hande, Principal, Mithibai College, Mumbai
- Dr. Swapna Samel, B. K. Birla College, Kalyan
- Dr. P. Hemalatha Reddy, *Principal,* Sri Venkateswara College, Delhi
- Dr. Sandra Joseph, *Vice-Principal,* Stella Maris College, Chennai
- Dr. I. Annapurna, *Coordinator, IQAC,* Ch. S. D. St. Theresa's College, A. P.
- Dr. Rajpal Hande, *Principal,* Mithibai College, Mumbai
- Dr. Shashikala Wanjari, Vice Chancellor, SNDT Women's University
- Dr. Sanjay Jagtap, Jt. Director, Konkan Region, Panvel
- Dr. Suvarna Jadhav, B. K. Birla College, Kalyan
- Dr. Fr. Lancelot D' Cruz, *Principal,* St. Xavier's College, Ahmadabad
- Dr. Sr. Beena TL, *Vice Principal,* Vimla College, Thrissur
- Dr. Ashok Wadia, *Principal,* Jai Hind College, Mumbai

- Dr. Ravindra Kulkarni, Pro Vice Chancellor, UoM
- Dr. B. B. Sharma, Principal, V.G. Vaze College, Mumbai
- Dr. Anuradha Hastak, B. K. Birla College, Kalyan
- Dr. Ananda Amritmahal, Principal, Sophia College, Mumbai
- Dr. Sanjay Jagtap, Joint Director, Konkan Region, Panvel
- Shri. B. S. Ponmudiraj, Deputy Adviser, NAAC, Bangalore
- Shri. Saurabh Vijay, IAS, Principal Secretary, Higher & Technical Education Department, MS

Participants made presentations on the following theme during the workshop:

Session I

Professor Vasudha Kamat: *Autonomous Colleges in India: the Road Ahead*' with special reference to NEP

Session II

Dr. R. G. Pardeshi: Best Practices and Innovation

Professor John Varghese: *Minding the Gap: Policy and Practical Implementation - The case of Autonomy*

Dr. Suresha K. V.: *Best Practices and Innovation*

Dr. Uday Salunkhe: *Co-creation of Future- A Glocal Approach*

Session III

Dr. P. Baby Shakila: *Best Educational Practices and Faculty Development - A Vision for Fast Shifting Digital Era*

Rev Fr G. M. Victor Emmanuel: Best Practices and Innovation

Dr. Pandiaraja D: Best Practices and Innovation

Dr. Rajendra Shinde: Best Practices and Innovation

Session IV

Rev. Dr. Roy Abraham P: *Innovation in Teaching, Learning and Evaluation for Realizing Outcome Based Education'*

Dr. K. M. Naseer: Best Practices and Innovation

Dr. Avinash Patil: Best Practices and Innovation

Dr. Alphonsa Mathew: Best Practices and Innovation

Session V

Dr. G. Gidwani: Best Practices and Innovation

Dr. Sr. Elizabeth C. S.: *Best Practices and Innovation*

Dr. Atima Sharma Dwivedi: *The journey towards excellence: Our challenges and strengths being an autonomous institution*

Dr. Anushree Lokur: Best Practices and Innovation

Session VI

Dr. Snehalata Nadiyar: Best Practices and Innovation

Professor K. B. Sharma: *Best Practices followed and the road ahead*

Dr. N. N. Sawant: *Student Centric Learning Methodologies: Exploring Possibilities and Sharing Research Outcomes in an Autonomous College*

Dr. Ancy Jose: Best Practices and Innovation

Session VII

Dr. P. Hemalatha Reddy: Best Practices and Innovation

Dr. Sandra Joseph: Best Practices and Innovation

Dr. I. Annapurna: Best Practices and Innovation

Dr. Rajpal Hande: Best Practices and Innovation

Session VIII

Dr. Fr. Lancelot D' Cruz: Best Practices and Innovation

Dr. Sr. Beena TL: Best Practices and Innovation

Dr. Ashok Wadia: Best Practices and Innovation

Valedictory Session

Welcome and Outcome of the workshop - Remarks by Dr. Naresh Chandra

Remarks by Dr. Sanjay Jagtap & Dr. Vijay Joshi

Speech by Shri B. S. Ponmudiraj & Dr. Vijay Khole

Valedictory address by Shri Saurabh Vijay

15. International conference on "India, Asia and Australia: Oceanic Encounters and Exchanges" at BHU, Varanasi in collaboration with Banaras Hindu University, Varanasi (29-31 January, 2020)

An International conference on 'India, Asia and Australia: Oceanic Encounters and Exchanges' was organized at Banaras Hindu University(BHU), Varanasi on 29-31 January 2020 in collaboration with BHU, Varanasi, Indian Association for the Study of Australia (IASA), New Delhi & Vasanta College for Women, Varanasi. Professor Ananda Prabha Barat, HOD, Department of English, Faculty of Arts, Banaras Hindu University and Professor Anita Singh, Fellow, IIAS were the conveners of the conference. Welcome address was delivered by Professor Ashok Singh, Dean, Faculty of Arts, BHU. Inaugural remarks were delivered by Professor Makarand R. Paranjape, Director, IIAS. Professor A.P. Barat introduced the concept of the conference. Remarks were delivered by Professor Pradeep Trikha, General Secretary, IASA, New Delhi. Professor Rakesh Bhatnagar, Hon'ble Vice Chancellor, BHU also addressed the audience. Vote of thanks was offered by Professor Anita Singh, Fellow, IIAS and convener of the conference.

Rationale

"Strabo (63 BC – c. AD 24) the Greek Geographer, historian, and philosopher long asserted that the ocean is not merely an empty space but a potential site for social, cultural and economic transactions. Much later Fernand Braudel's (1902 – 1985) work *The Mediterranean* aptly called the sea a "vast, complex expanse" within which the humans' function. He further examined the complex contours of the ocean and the land. During the long longue durée of explorations, colonization, and settlements from the 16th century Oceania continues to assert itself as "global economy" with enabling cultural modalities of language, religion, trade practices, and shared knowledge. Transnational identities established through trading relations produced specific identities. But, in the hub of the encounters and exchanges in economically and culturally complex ways often led to disputes, confrontation, and disagreements but also resulted in dialogue, mutual effect and eventually mutual transformation. Within this framework, this multidisciplinary/ interdisciplinary or transdisciplinary conference is looking at contemporary issues in Oceania.

An array of disciplinary and area studies works in politics, history anthropology and international relations, history, literature, archaeology, defense studies and genetics among other disciplines continue to play influential roles in developing understanding of Indian Ocean parts for all periods. All this and many more concerns compel us to debate as to how, why and what of Indian Oceanic exchanges in India, Asia and Australia draw us together and define Indian oceanic region. It is time to redefine the phenomenon of globalization and to question globalization as a concept of and what residues tangible or otherwise bring out the cohesiveness among the nations that have or will impact on the ocean. The conference proposes to invite scholars from the fields of Humanities, Social Sciences and Defense Studies to discuss and

deliberate on the literary, cultural and the related domains from India, Asia, Australia and the other countries in Indian Oceanic region.

In our context, it might be to construct or at least explore a new disciplinary paradigm or institutional apparatus for Asian, or more specifically, Indic-Asian and Australian studies. In this sense, to represent Asia would be to compete for legitimation in how it is understood or studied, moreover to declare oneself as an interested party or stake-holder in such a process. It is to challenge other, for example, imperial representations of Asia and to offer alternatives to them. The composition of those invited to our conference would, ideally, include experts from East Asia, China, India, and West Asia, attempts to address the challenge to represent different regions of Australasia, their inter-relationships, and their connections with global flows in capital, culture, and science and technology.

As far as India is concerned, it has been part of a larger oceanic oikumenethat might more fruitfully be seen as part of older, looser, and more fluid Indian Ocean cross-currents of cultural formation and circulation. With the end of empire and the rise of independent nations in the Indian Ocean system, these networks are today almost forgotten, Yet, it is of vital importance to reconsider, if not resurrect, them if we wish to arrive at a better understanding not just of the Indian Ocean as a spatial-political location, but of Australasia. The littoral nations of the Indian Ocean were shaped as much by an oceanic hybridity as by continental compulsions. They came to embody a special type of anti-imperial cosmopolitanism. The space which gave rise to such discourses constitutes a vital link between a world before Western imperialism and the globalized world of the future which we might regard as coming into being before our very eyes *after* Western hegemony.

The areas like history, literature, archaeology, defense studies and genetics among other disciplines continue to play influential roles in developing understanding of Indian Ocean parts for all periods. All this and many more concerns compel us to debate as to how, why and what of Indian Oceanic exchanges in India, Asia and Australia draw us together and define Indian oceanic region. It is time to redefine the phenomenon of globalization and to question globalization as a concept of and what residues tangible or otherwise bring out the cohesiveness among the nations that have or will impact on the ocean. The conference proposes to invite scholars from the fields of Humanities, Social Sciences and Defense Studies to discuss and deliberate on the literary, cultural and the related domains from India, Asia, Australia and the other countries in Indian Oceanic region.

Sub themes

- Cultural exchanges in Past, Present and Future
- Expressions of Memories

- Regional Cooperation & Differences
- Maritime Cultural Landscapes
- Cultural Pluralism
- Transnational Issues
- Literary Commons
- India Asia Connections
- Regional, Economic & Socio-cultural exchanges
- Diaspora Studies
- Shared Knowledge Systems
- Ecology, Environment & Climate Change
- Aboriginal Studies
- Patterns of Self and Other

In the 21st century, Asia has emerged as an undeniable geo-political force. This is certainly due to Asia's rising economic power. Rising Asia is both a challenge and opportunity for Australia, and in such changing geo-political situations, strong economic and cultural connections between Australia and Asia (India in particular) becomes imperative.

When we reflect upon Australia's relationship to Asia, it's the Indian Ocean which comes immediately to our mind. Since Australia's ancient connections with Asia have always been maritime, it is important from the viewpoint of Australia and Asia both that the possibilities of economic, security, maritime, cooperation and friendships are explored."

Participants

- Professor Santosh K. Sareen
- Ms. Upasana Gupta
- Ms. Ritika Kumari
- Professor Bill Ashcroft
- Professor Peter Gale
- Dr. Nirban Manna
- Ms. Kavita Singh
- Mr. Manish Kumar Gupta

- Nirojita Guha
- Akshata Bhatta
- William De Souzab
- Ipsita Sengupta
- Sonia Singh Kushwaha
- A S Kushwaha
- Arti Nirmal
- Saurabh Meena
- Mr. Sabir Mirza
- Ms. Nidhi Jaisawal
- Professor Paul Sharrad
- Professor Alka Singh
- Dr. Malathy H.
- Ms. Anjali
- Ms. Arpana Kumari
- Mr. Shree Kamaljee
- Mr. Swetaan
- Mr. Michael Atkinson
- Ms. Kumari Preeti
- Dr. Praveen Patel
- Ms. Agrima Mishra
- Mr. Vishal Singh
- Ms. Aleena Manoharan
- Mr. P. Mishra
- Mr. N Kumar
- Ms. Ritu Pareek
- Ms.Meenakshi Jain
- Ms. Shipra Singh
- Ms. I S Ghatak
- Mr. R Samal

- Dr. Manjari Jhunjhunwala
- Dr. Gitanjali Singh
- Ms. Zeba Khan
- Ms. Renuka Singh
- Mr. Ashish Kumar Srivastava
- Mr. Chandraboli Ganguli
- Ms. Deepti Tiwari
- Mr. Avishek Deb
- Ms. Isha Seegar
- Ms. Jasmeet Gill
- Ms. Lipika kankaria
- Mr. Sutanuka Banerjee
- Dr. Amit Upadhayay
- Dr. Saurah Kr. Singh
- Mr. Kirti Chandan Ajad
- Mr. Surjeet Mahata
- Ms. T S Kavitha
- Ms. Neha Mishra
- Mr. Mahesh Sharma
- Mr. Richick Banerjee
- Dr. Malathy A.
- Mr. Jayjit Sarkar
- Ms. Anjali Singh
- Dr. Vivek Singh
- Dr. Pravin S Rana
- Mr Sailesh Kumar Singh
- Mr. Manish Kumar Gupta
- Mr. Durbadal Bhattacharya
- Mr. Padmnabh Trivedi

- Ms. Smita Jha
- Ms. Renuka Singh
- Mr. Vishwa Bhusan
- Dr. Meenakshi Jain
- Dr. Hariom Singh
- Ms Sonali Bhattacharjee
- Ms Arpita Saha
- Mr. Rohan Kumar
- Ms. Megha Choudhary
- Kumar Gautam Anand
- Professor Angshuman Kar
- Professor Chandrakala Padia
- Ms. Payoli

Participants made presentations on the following theme during the conference:

Keynote I

Professor Peter Gale: *In Defense of Democracy: Representations of the National and the Global and the Space Between*

Session I

Nirojita Guha: *Literary Oceania: A Nissological Study of the Pacific*

Akshata Bhatta and William De Souzab: *Rethinking the 'Discourse' of Marine Spatiality through a Comparative, Contrastive and Subversive Analysis of Select Texts from Asia and Australia.*

Ipsita Sengupta: *On Indian Ocean Asa Creatrix of Alterities: Re-Imagining Australianness and Indo-Australian Links in the Early Twentieth Century through the Fiction of Mollie Skinner.*

Sonia Singh Kushwaha & A .S Kushwaha: *Oceanic Consciousness: A Study of the Cinematic Adaptation of life of PI.*

Arti Nirmal: Concentricity of Imagination: *The Indian and Australian Mandalic Literary Contexts.*

Saurabh Meena: *Dalits and Aboriginals: Marginalized Voices across the Indian Ocean.*

Keynote II

Paul Sharrad: *India, Asia And Australia: Encounters And Diversions*

Pradeep Trikha: *Tangling Oceanic Currents Australian Acuities on Gandhi And Krishnamurthy*

Session II A

Anjali: 'Locating, Relocating': An Exploration of Indian Women's Cultural Identity in Roanna Gonsalves' *The Permanent Resident*

Arpana Kumari: *Follow The Rabbit- Proof Fence: A Document of Agony of the Aboriginal's the Stolen Generation*

Shree Kamaljee: Sustainability: Wisdom of the Tribes of the North Eastern India and the Aborigines of Australia

Swetaanand: *Folklore Myth and Oral Tradition in the Indigenous Language of Australia*

Michael Atkinson: *Australian Identity And India: Cultural Challenge, Cultural Opportunity*

Kumari Preeti: *Glass Walls, Stories Of Tolerance And Intolerance From The Indian Subcontinent And Australia: A Panoramic View*

Session II B

Aleena Manoharan: *Occupying Liminal Spaces: Diasporic Imaginations in Australia*

P. Mishra & N Kumar: *Vocal Bodies: A Kinesiological Investigation of Human Resources in Angela Savage's Mother of Pearl*

Ritu Pareek: *Nostalgic Element in Mena Abdullah's the Times of Peacock*

Meenakshi Jain: *Romance traversing Oceans: Flowing Ahista with Pankaj Udhas*

Shipra Singh: *Gun Island: Reflecting Climate Change and the Refugee Crisis through Myth, Legend and History*

I S Ghatak & R Samal*: Cultural Pluralism in India: A Study Through The Lens Of Boats*

Session III A

Ashish Kumar Srivastava: *Ecomysticism and Sexecology in India and Australia: A Study of Different Ecological Perspectives with Special Reference To Gift in Green By Sarah Joseph and The Tree of Man By Patrick White*

Chandraboli Ganguli: *Homeward-Bound: Comparing the Concept of Home and Culture in Doris Pilkington's Follow the Rabbit-Proof Fence and jhumpalahiri's Novel, the Namesake*

Deepti Tiwari: *A Comparative Study of Ecological Concerns in the Hungry Tide and Shallows*

Avishek Deb: *Signification of Unities and Unions: A Select Study Of Utpaldutt and James Crawford*

Isha Seegar: *A Comparative Study of Imagery in A D Hope & Nissim Ezekeil*

Jasmeet Gill: *Delineating World Literature from the Indo-Australian Perspective: Transcultural Interstices and Literary Contacts*

Lipika Kankaria & Sutanuka Banerjee: *Filmy and Flamboyant: Visual Economies of the Indian and Australian Modern Girl in Popular Culture*

Session III A

T S Kavitha: *Australian Indigenous Myths and the Environmental Imagination: A Case Study Of Alexis Wright's Novels*

Neha Mishra: *The Haunting of Saroobrierley: A Study Of 'Lost And Found' Memory*

Mahesh Sharma: *Revisiting The Urban Slums Of Australasia: A Cosmopolitan Reading of Merlindabobis' the Solemn Lantern Maker*

Richick Banerjee: *A Study of the Occult Symbolism in Patrick White's The Solid Mandala*

Dr.Malathy A.: *The Poet as Translator: Sugathakumari's Translations of Judith Wright*

Jayjit Sarkar: *Asia And Asiabodh: Looking For an Alternative Understanding*

Anjali Singh: *Cartographies of Indenture: Crossing the Kala Pani*

Session IV A

Durbadal Bhattacharya: Exploring the horrors of war: A reading Richard Flangan's *The Narrow Road to Deep North*

Padm Nabh Trivedi and Smita Jha: *A Deep Ecological Study of the Bhagvadgita: Unravelling the Environmental Discourse*

Renuka Singh: *Oceanic Encounters and Exchanges: A religio-cultural Study of the Discourses of Death and Dying*

Vishwa Bhusan: *Climate Change and its impact on India*

Session IV B

Rohan Kumar: Expressions of Memories: Revisiting the glorious India-Australia Cricket rivalry between 1996 to 2003 World Cup

Megha Choudhary: *Romanticism of Disillusionment: Deconstructing Jeet Thayil's Narcopolis and Umberto Eco's Numero Zero*

Kumar Gautam Anand: *Gregory David Robert's Shantaram: Decoding the Development Gap*

Payoli: *Cultural Pluralism*

Valedictory Session

Angshuman Kar: *Indian Perspectives Indian Perspectives on the Study of Australia: Trends and Concerns*

16. Round Table on "Rethinking Indology" (13 March 2020)

A Round Table discussion on "*Rethinking Indology*" was organized at IIAS on 13 March 2020. Its welcome address was delivered by Professor Makarand R. Paranjape, Director, IIAS and the introductory remarks were given by Professor Sharad Deshpande, Former Professor and Head, Department of Philosophy, University of Pune. Vote of thanks was proposed by Colonel (Dr) Vijay Tiwari, Secretary, IIAS.

Participants

- Professor C.K. Raju, Tagore Fellow, IIAS
- Professor Kenneth Zysk, Professor and Head of Indology, Department of Cross-Cultural and Regional Studies, University of Copenhagen, Denmark
- Professor Dr. Harald Wiese, Professor of Economics, Faculty of Economics and Business Administration, University of Liepzig, Germany
- Professor Dominik Wujastyk, Professor & Saroj and Prem Singhmar, Chair in Classical Indian Society and Polity, Department of History and Classics, University of Alberta, Canada
- Dr. Balram Shukla, Fellow, IIAS
- Dr. Peter Scharf, Fellow, IIAS

Participants made presentations on the following theme during discussion:

Session I:

Professor Kenneth Zysk: Cross-Cultural Aspects of Intellectual Life in Ancient India: Indian *Gosthi* and Greek *Sympsion*

Dr. Balram Shukla: *Application of Pāṉinian Model for Learning Persian*

Session II

Professor Dominique Wujastyk: *Revolutions in Indology*

Dr. Peter Scharf: *Re-orienting orientalism*

Session III

Harald Wiese: *Decision theory and probability theory: Pascal's wager and pre-modern Indian lotteries*

C K Raju: *Pre-Colonial Appropriations of Indian Ganita: Epistemic Lessons.*

IV. WEEKLY SEMINARS BY FELLOWS

The Fellows of the Institute presented weekly seminars which are open to other scholars at the Institute, Associates of the Inter-University Centre and faculty of Himachal Pradesh University. These seminars are related to the themes of the projects undertaken by the Fellows of the Institute and provide an opportunity for formal interaction among the scholars. During the period under report, the following weekly seminars were given by the Fellows:

1. Professor Mundoli Narayanan: Physical Space and the Culture of Elaboration in Kutiyattam (04 April 2019)
2. Dr. Bindu Sahni: *Siwalik Erosion and Pastoralists Gujjar of Himachal Pradesh: A Study in the Light of Colonial Policies in the Region (18 April 2019)*
3. Professor J. Rangaswami: *A Translation of the ITU 36,000 Pati Commentary of Tiruvaymoli of Nammalvar by Vatakkuttiruvitipillai into English (1-110) Verses* (25 April 2019)
4. Dr. Debjani Halder: 'Nagarik' (1952) to ' Uttarayanam' (1974): Deconstructing the concept of Men and Masculinities in post-partition Alternative Indian Cinema (02 May 2019)
5. Dr. Satendra Kumar: Caste and Micro-Politics of Electoral Democracy (09 May 2019)
6. Dr. Ashwin Parijat: *Re-enchanting Modernity: A Study of Vivekananda's American Engagement (16 May 2019)*
7. Dr. Girija Kizhakke Pattathil: *Knowledge and Subjects: Situating Ayurveda through Life Narratives of Practitioners (23 May 2019)*
8. Dr. Sharmila Chhotaray: *Jatra Performance Tradition: Origin and Evolution in Precolonial and Colonial Bengal (30 May 2019)*
9. *Professor Anita Singh:* Feminism and Folk Epic: Draupadi*, Dharma*, Performance, and Protest in Teejan Bai's *Pandavani (06 June 2019)*
10. Dr. Irina Katkova: *Doctrine of Light and Images of Winged Spiritual Beings in Islamic Art (13 June 2019)*
11. *Professor C.K. Raju: Ganita vs Formal Mathematics: Re-Examining Mathematics, its Pedagogy and the Implications for Science (13 June 2019)*

12. Dr. Kuldeep Kumar Bhan: *The Archaeology of Harappan Craft and Technology with Specific reference to Gujarat, Western India* (20 June 2019)
13. Dr. Maheshwar Hazarika: *To Translate the Vyakarana Mahabhashya of Patanjali into Assamese with Notes and Explanation (20 June 2019)*
14. Professor M.P. Singh*: Indian Federalism in a Comparative Perspective with Special Reference to Judicial Federalism (27 June 2019)*
15. Dr. Pavithran Nambiar: *Culture, Corruption and Insurgency: Threats and Quest for Survival in Nagaland (04 July 2019)*
16. Professor Hitendra Kumar Patel: *History of Hindi Literature: A Study of Politics History of north India (1920-1970) in the Writings of Literary Writers (04 July 2019)*
17. Professor S.K. Chahal: *Hindu Social Reform: A Study of the Framework of Jotirao Phule* (11 July 2019)
18. Dr. Ajay Kumar: *ज्ञान और अनुभव की दुनिया से निकलता दलित समाजशास्त्र* (18 July 2019)
19. Professor Medha Deshpande: *Poverty: Concept, Mappings and Policies* (01 August 2019)
20. Professor Vijaya Ramaswamy: *Women in Critical Editions and Out of them: Some Reflections on Situating Tamil Women in Epics and Oral Traditions* (08 August 2019)
21. Professor Rajvir Sharma: *Political philosophy of Kautilya: The Arthashastra and after* (22 August 2019)
22. Dr. Sharmila Chandra: *Interpretation Of Mask Making And Mask Dances In The Context Of Hindu Mythology : An Ethno-Cultural Study* (22 August 2019)
23. Dr. Vikram V. Kulkarni: *महाराष्ट्र के घुमन्तु जन जातियों की सम्बन्धित चित्र परम्पराएं और सांस्कृतिक अध्ययन* (29 August 2019)
24. Shri Ashutosh Bhardwaj: *Seven Variations on Solitude: A Partial Biography of Women in Indian Novels* (05 September 2019)
25. Professor D.R. Purohit: *Folk Theatre of the Central Himalaya: its Cultural and Performative Contexts* (12 September 2019)
26. *Dr. Samson Kamei: Social identity of relations between Hindu organisations and Zeliangrong religions (19 September 2019)*
27. *Dr. Abhishek Kumar Yadav:* अरूणाचल प्रदेश में हिन्दी का विकास और उसके साहित्य की रूपरेखा *(19 September 2019)*
28. Dr. Debjani Halder:*Tahader Kotha: the Binaries between Public-Private: Depiction of Refugee Women Breadwinners in Post-Partition Bengali Cinema (1950s to 1970s) (20 September 2019)*

29. Dr. Anjali Duhan: Introducing the *Dvādaśa Bhāva (24 October 2019)*

30. Professor Rekha Chowdhary:*Social Diversity and Political Divergence in Jammu Kashmir: Identifying the Complexity of Conflict Situation and the format for its Resolution (31 October 2019)*

31. Professor Maheswar Hazarika*: Śrīmadbhagavatpatañjaliviracita Vyākaraṇa-mahābhāṣya* (07 November 2019)

32. Dr. Manisha Choudhary*: The History of Thar: Environment, Culture and Society* (14 November 2019)

33. Professor Hitendra Kumar Patel*: The Politics of Nationalism in Literary Imagination (1920s -1960s): A Study of Select Hindi Political Novels* (21 November 2019)

34. Professor C.K. Raju*: Ganit vs formal math*(28 November 2019)

35. Professor S.K. Chahal: The Making of Mahatma Phule: Life, Influences and Mind (05 December 2019)

36. Dr. Rama Shanker Singh: *नदी की सांस्कृतिक अर्थव्यवस्थाः समुदाय, जीविका एवं राजनीति* (09 December 2019)

37. Dr. Pavithran Nambiar: *Culture, Corruption and Insurgency: Threats and Quest for Survival in Nagaland* (12 December 2019)

38. Dr. Bindu Sahni: *Siwalik Erosion: British Policies and the Introduction of Chos Act (1900) (02 March 2020)*

39. Dr. Sharmila Chandra: *A Generalised View of the Crafting and Morphology of Masks and Masked Performances in India (excluding the Bengal Region) – An Insight into Folk Culture (05 March 2020)*

40. Dr. Sutapa Dutta: *Content and Context of Textbooks in Bengal (06 March 2020)*

41. Dr. Vikram V. Kulkarni: मरीआई वाले :भक्त से भिखारी तक (09 March 2020)

42. Dr. Kuldeep Kumar Bhan: *The Archaeology of Harappan Craft and Technology with Specific reference to Gujarat, Western India Ca. 2600 – 1900 BCE (11 March 2020)*

43. Professor Vijaya Ramaswamy: *Many Tamil Mahabharatas: A Survey from the Pre-Colonial to the Colonial Era (12 March 2020)*

44. Professor Ramesh Chandra Pradhan: *The Metaphysics of Consciousness: Problems and Prospects (18 March 2020)*

45. Professor Anita Singh: *Staging Feminisms: Gender, Violence and Performance in Contemporary India (19 March 2020) (online)*

46. Professor Sujata Patel: Sociology in India: Its Disciplinary History (26 March 2020) (online)

47. Professor Mundoli Narayanan: The Body as 'Live Archive': The Culture of Training of Kutiyattam (30 March 2020) *(online)*

MONOGRAPHS RECEIVED FROM FELLOWS

1. Professor Dambarudhar Nath: NIRGUNA BHAKTI IN EASTERN INDIA: Ideology, Protest and Identity (A Study of the Māyāmarā Sub-Sect of Assam).
2. Professor J. Rangaswamy: A TRANSLATION AND COMMENTARY UPON *TIRUV°YMOîl* OF NAMM°îV°R WITH ITS ±×*U* 36,000 *PA×I* COMMENTARY OF VA×AKKUTIRUV±TIPââAI INTO ENGLISH"
3. Dr Soibam Haripriya: The Poet as Witness: Encountering Ethnography through Poetry
4. *Dr. Girija K.P*: *Knowledge and Subjects: Situating Ayurveda through Life Stories of Practitioners* (25 June 2019)
5. Dr. Ajay Kumar: *दलित अस्मितावादी इतिहास लेखनः वैकल्पिक अधीनस्थ समाजशास्त्र की तलाश में (एक समीक्षात्मक मूल्यांकन)* (01 August 2019) (Draft)
6. Dr. Debjani halder: *Art-Artist and Social Life: A Critical Look at Indian Parallel Cinema* (1950s-1980s) (11 September 2019)
7. Shri Ashutosh Bhardwaj: *The Encounter of Indian Novels with Nationalism and Modernity as Reflected Through Their Women Characters* (13 September 2019) (Draft)
8. Dr. Manisha Choudhary: *The History of Thar: Environment, Culture & Society* (07 November 2019)
9. Professor Rekha Chowdhary: *Social Diversity and Political Divergence in Jammu and Kashmir: Identifying the Complexity of Conflict Situation and the Format for its resolution* (26 November 2019)
10. Dr. Mathew Akkanad Varghese: *Globalising States: The Metaphors from Ecologies in the Making (20 January 2020)*
11. Dr. Charisma Karthak Lepcha: *Religion, Culture and Identity of the Lepcha in Eastern Himalaya (15 January 2020)*
12. Shri Ashutosh Bhardwaj: *The Encounter of the Indian Novel with Modernity and Nationalism as Reflected through its Women Characters/The Gender Politics of the Indian Novel (31 January 2020)*
13. Professor Anita Singh: *Staging Feminisms: Gender, Violence and Performance in Contemporary India* (26 February 2020)
14. Dr. Bindu Sahni: *Siwalik Erosion and Pastoralists Gujjar of Himachal Pradesh: A Study in the Light of Colonial Policies in the Region (05 March 2020)*

15. Professor Ramesh Chandra Pradhan: From Mind to Supermind: In Search of a Metaphysics of Consciousness (08 March 2020)
16. Dr. Rama Shanker Singh: *Natural Resources and Marginal Communities: Social and Cultural Symbiosis of Rivers and Nishadas in Pre-Colonial India (08 March 2020)*
17. Dr. Sutapa Dutta: *Disciplined Subjects: Education and Subjectivity in Colonial Bengal* (17 March 2020)
18. Professor Sujata Patel: *Sociology in India: Its Disciplinary History* (23 March 2020)
19. Professor Mundoli Narayanan: *Space, Time and Ways of Seeing in Performance: A Study of Kutiyattam, the Traditional Sanskrit Theatre of Kerala (31 March 2020)*

DISTINGUISHED LECTURE SERIES

1. Shri Sanjeev Sanyal on "*Heroic Histories: The forgotten revolutionaries of India and their contribution to the freedom struggle*" on 1st April 2019.
2. Professor Venerable Samdhong Rinpoche, on *"The power of Dharma in contemporary world"* on 22 April 2019 (Monday)

June

1. Shri Vivek Agnihotri, Indian Film Director, Producer and Screenwriter delivered a lecture on "*Art & Truth*" and screened a movie "The Tashkent Files" on 22 June 2019.

July

1. Professor Harish Trivedi, former Professor of English at the University of Delhi delivered a lecture on:

- *Locating Kipling in India--in Shimla, Lahore, Allahabad, Bombay and Rajasthan* (08 July 2019)

August

1. Professor Bhushan Patwardhan, Vice-Chairman, University Grants Commission delivered a lecture on:
    - *How to Improve Research and Publication Standards in India: A UGC Perspective* (14 August 2019)

September

1. Dr. Sanjeev Chopra, Director, Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration (LBSNAA), Mussoourie delivered a lecture on:
    - *Sardar Patel and the making of Indian Administrative Services* (26 September 2019)

October

1. Lt Gen. Syed Ata Hasnain, (Retd.) PVSM, UYSM, AVSM, SM, VSM & BAR, delivered a lecture on:
    - *Mahatma Gandhi, Jammu & Kashmir And National Integration*(1 October 2019)

Shri Bandaru Dattatreya the Hon'ble Governor, H.P. inaugurating the event with lamp lighting

BEST MINDS OF INDIA SERIES

1. Dr. Vinay Sahasrabuddhe, President, ICCR, Member of Parliament & Vice President of BJP delivered the Inaugural lecture under the 'Best Minds of India Series' on:
    - Beyond Populism: Deciphering the 2019 Electoral Verdict (17 June 2019)
2. Shri Adoor Gopalakrishnan, India's Most acclaimed filmmakers screened the following films:
    - Elippathayam (27 June 2019)
    - Mathilukal (28 June 2019)
    - Vidheyan (01 July 2019)
    - Kathapurushan (02 July 2019)

VISITING PROFESSORS

March/April 2019

1. Professor Sudhir Chandra, Renowned Historian and Gandhian Scholar delivered the following lectures:
    - *Rejection of the India of Gandhi's Dream* (29th March 2019)
    - *Partition and its Aftermath* (3rd April 2019)
    - *Non-violence: The Impossible Possibility of an Urgent Imperative* (9thApril 2019)

2. Professor Leena Abraham, Professor and Chairperson, Center for Studies in Sociology of Education, Tata Institute of Social Sciences, Deonar, Mumbai delivered the following lectures:

   - *Feminization of a Medical Field: Developments in Twentieth Century Ayurveda (*16th April 2019)
   - *Towards a Cosmopolitan Ayurveda Contributions of Women Ayurveda Physicians (*26th April 2019)
   - *Globalization of a Regional Medicine: Developments in Ayurveda in Kerala (*3rd May 2019)

June 2019

1. Professor Ambika Datta Sharma, Department of Philosophy, Dr. H.S. Gour University, Sagar (M.P.) delivered his three lectures on the following theme:

   भारतीय मानस का वि–औपनिवेशिकरण : प्रमाणिक संस्कृतात्म के प्रत्याभिज्ञान की कार्ययोजना (10th, 14th & 19th June, 2019)

November 2019

1. Professor H.R. Meera, NIAS, Bangalore delivered following lectures:

   - *Relevance of Vyañjanā in Contemporary Linguistic Studies* (18 November 2019)
   - The Spectrum of Non-literal usages as seen in Śāstraic Framework (22 November 2019)
   - Context and *Vyañjanā"* (03 December 2019)

March 2020

1. Professor Dr. Harald Wiese, Professor of Economics, Faculty of Economics and Business Administration, University of Liepzig, Germany delivered a lecture* on:

   - *Pre-modern Indian perspectives on giving, gifting, and sacrifices: the king* (16 March 2020) * the scholar had to leave India due to the outbreak of Covid19 in 2020.

VISITING SCHOLARS

The Institute has a scheme of Visiting Scholars under which eminent scholars are invited for a week. They deliver a lecture on a theme or topic of their choice. During the period under report, the following scholars were invited as Visiting Scholars:

April 2019

1. Mrs. Smita Barooah delivered a talk on:

   - *Youth and Addictions"* (02 April 2019)

2. Dr. Gopal Krishan Shah, Assistant Professor, University of Delhi, New Delhi performed and delivered a lecture on:
    - *Time theory in Indian Raga System* (08 April 2019)
3. Dr Ashima Sood, Fellow, Centre for Learning and Management Practice, Indian School of Business, Hyderabad delivered a lecture on:
    - *Speculative Urbanization in India?* (30 April 2019)

May 2019

1. Dr. Nandini Bhattacharyya Panda, Senior Fellow, NMML delivered a lecture on:
    - *Colonization Of 'Law' in Northeast India: Tradition, Custom, and The Empire* (14 May 2019)
2. Dr. Jayanta Dutta, National Post-Doctoral Fellowship (NPDF) Indian Institute of Science Education and Research (IISER), Mohali delivered a lecture on:
    - *The Evolution of our Universe from Big Bang (an introduction to the First Source of light in the Universe)*(17 May 2019)
3. Professor Gita Dharampal,Dean of Research, Gandhi Research Foundation, Jalgaon, Maharashtra delivered a lecture on:
    - *Mahatma Gandhi and Islam: A relationship defined by Affinity, Fascination, Crisis and Rupture* (27 May 2019)
4. Dr. Veena R. Howard, Associate Professor, Department of Philosophy, California State University, Fresno delivered a lecture on:
    - *Queen Gāndhārī's Mapping the Battlefield through the "Divine Eye:" Shifting the Gaze from Masculine Virility to Feminine Vulnerability* (31 May 2019)

June

1. Dr. Archishman Raju, Independent Fellow at Rockefeller University, New York delivered a lecture on:
    - *Gandhi Must Fall: An Afro-American Perspective* (25 June 2019)

July

1. Dr. Anup Kumar, Associate Professor, School of Communication, Cleveland State University, Cleveland delivered a lecture on:
    - *Populism as a Political Practice: It is not Content, but Repertoire that Unites Shades of Populism* (05 July 2019)
2. Dr. V.J. Varghese, Assistant Professor, Department of History, University of Hyderabad delivered a lecture on:

- *Making and Unmaking of a Kutiyettakkaran: Cultural Representations and Migrant Subjectivityin Kerala* (17 July 2019)

August

1. Dr. Kamal Nayan Choubey, Assistant Professor, Department of Political Science, Dyal Singh College, Delhi University delivered a lecture on:
   - *The Forest, Tribal Life and Intricate Legal Structure: From Subjecthood to Quest for Justice and Citizenship Rights* (05 August 2019)
2. Shri Siddhartha, founder of Fireflies Ashram delivered a lecture on:
   - *Eco-spirituality, Food sovereignty and Climate justice* (16 August 2019)

September

1. Professor Nachiketa Tiwari, Professor in the Department of Mechanical Engineering at Indian Institute of Kanpur delivered a lecture on:
   - *Mathematical Relationships between Panini's Consonants* (13 September 2019)

October

1. Shri Ayon Maharaj, Department of Philosophy, Ramakrishna Mission Vivekananda Educational and Research Institute, Belur delivered a lecture on:-
   - *Swami Vivekananda's Reconceptualization of Advaita Vedānta in the Light of Sri Ramakrishna*" (21 October 2019). Guest of Honour was Lt Gen KJ Singh, State Information Commissioner, Punjab.

November

1. Professor Ananta Giri, Madras Institute of Development Studies, delivered a lecture on:-
   - *Social Sciences and the Regional Imagination of India: Social Theory, Asian Dialogues and Planetary Conversations* (2 December 2019)

ASSOCIATES IN THE UGC INTER-UNIVERSITY CENTRE

The following seminars were given by the IUC Associates during the period under report:

May 2019

- Dr. D. Surender Naik : *Jotirao Phuley: A Radical Reformer* (24.05.2019)
- Dr. Amarendra Dash : *Rhetoric, Ideology, and Frames in Corporate versus Blame-Corporate Sustainability Communication* (24.05.2019)

- Dr. Subigyan Gadtia: *Square Root Formulae in the Śulbasũtras* (24.05.2019)
- Dr. Mridula Sharda: *Tribal Issues of India: with special reference to Himachal Pradesh* (24.05.2019)
- Dr. Radhamani C.: हिंदी और मलयालम कहानियों में अभिव्यक्त ट्रांसजेंडरों की समस्याएँ *'*(27.05.2019)
- Dr. Mousumi Guha Banerjee: *Gitanjali: An Exalted Manifestation of Buddhist Aesthetics, the Second Section: Buddhist Aesthetics, Modern Indian Literature, Modern Bengali Literature and the Aesthete Rabindranath* (27.05.2019)
- Dr. Richard Rego: *Social Media and Relationship: Effects of the WhatsApp Use on Social Relations* (28.05.2019)
- Dr. Antara Chatterjee: *Re-imagining Kashmir: Violence, trauma and alternative storytelling in Malik Sajad's Munnu: A Boy from Kashmir* (28.05.2019)
- Dr. Umesh Bharte: *A Psychological Look at Colonialism* (29.05.2019)
- Dr. Wilbur Gonsalves: *Locating Annihilation Anxiety in the "Psychosocial Aspects of Physical Disability" Discourse* (29.05.2019)
- Dr. Girish Chandra Pandey: *Popular Protests, Memories and the History of Banaras of Eighteen and Nineteenth Centuries (*29.05.2019)

June 2019

1. Dr. Rajesh Kumar: *Folklores of the Santals: Contextualizing Folk Dance-Songs(Doṅ Seren) and Culture (21 June 2019)*
2. Dr Basavaraj Tallur: *The Concept of God in the Vachanas of Basavanna* (21 June 2019)
3. Dr. Payel Dutta Chowdhury: *The Belief in the 'Tiger-Soul' among the Nagas: Texts and Contexts* (21 June 2019)
4. Dr. Dashrath: *Constructing Gender: A Study of Manjula Padmanabhan's Lights Out and Gurucharan Das' Mira* (21 June 2019)
5. Dr. Jagdish Kaur: *Tradition of Haiku Poetry and Haiku in Punjabi* (21 June 2019)
6. Professor Shailaja B. Wadikar: *Feminine Sensibility in Vijay Tendulkar's Kamala (24 June 2019)*
7. Dr. Durgesh Bhausaheb Ravande: *The Plays of Tagore: A Repository of Symbols(With Reference to The Post Office and Muktadhara)* (24 June 2019)
8. Dr. Vishvadhar R. Deshmukh: *The Facets of Indianness in Indian Literature(With Reference to the Select Indian Writings)* (24 June 2019)

9. Dr. Vishal Deo: *Impact of Market Liberalisation on Environment in India: A Data based Assessment* (24 June 2019)
10. Dr. Kavita B. Harihar: *Exploring 'ethical values' in Charles Dickens' novel David Copperfield (24 June 2019)*
11. Dr. Sakoon: *A mem in the Greenrooms of Lahore: An Evaluation of Norah Richards' contribution to Modern Punjabi Theatre* (25 June 2019)
12. Dr. Binumol Abraham: *Laughter as Critique: Matriliny and its Discontents in Colonial Kerala* (25 June 2019)
13. Dr. Ranjana Krishna: *Herself Defined: The Rhetoric of Imagism* (25 June 2019)
14. Professor Poonam Prakash: *Role of City Planning in making the 'Modern' nation* (25 June 2019)
15. Dr. Virender Singh Dhillon: *Tradition Versus Modernity: Gandhi and Nehru on Technology for Rural Development* (25 June 2019)
16. Dr. Gargi Bhattacharya: *To remove all legal obstacles to the marriage of Hindu Widows": aśāstric debate in nineteenth century colonial Bengal* (26 June 2019)
17. Dr. Rajendra Bandu Shejul: *The 'Dream India' of the Constitution makers* (26 June 2019)
18. Dr. Brijendra Pandey: *Traditional Worl-view, Indian Tradition and Ambedkar: Continuity and Discontinuity* (26 June 2019)
19. Anil Kumar Tewari: *Udaynācārya on the Budhist Doctorine of Momentariness* (26 June 2019)
20. Dr. Vijay Sahebrao Kadam: *Understanding the 'Disability' in India* (26 June 2019)

July 2019

1. Dr. Sanjay Swami: *Organic Farming: An Eco-Friendly Sustainable Production System* (25 July 2019)
2. Dr. Indu Swami: *#MeToo - Said Mother Nature: Analyzing Interconnection Between Woman and Nature Exploitation* (25 July 2019)
3. Dr. Debarshi Bhattacharya: *Study on Impact of Presence of an Open Boundary Foreign Enclave and a 24-hours Open Corridor for foreigners inside Indian Territory* (25 July 2019)
4. Dr. Madan Lal: *Spatial analysis of Water Supply System of Shimla city* (25 July 2019)
5. Dr. Dev Nath Pathak: *Art of Dying in Maithil Folk Philosophy: Meanings, Metaphors and What Actually Matters* (25 July 2019)

August 2019

1. Professor Pushpam Narain: *बिहार के व्यवसाय अथवा क्रिया गीतों का संरक्षण एवं संवर्द्धन* (28 August 2019)
2. Dr. Umesh Kumar: *भारतीय लोक चित्रकलाओं में पर्यावरण की अपरिहार्यता* (28 August 2019)
3. Dr. Sapna Sanjay Pandit: *Negotiating the subaltern Space: Rohinton Mistry's A Fine Balance (*28 August 2019)
4. Dr. S. Chinna Reddaiah: *Sports and Physical Recreations in Telugu Literature (11th Century to 19th Century) (*28 August 2019)
5. Professor K. Sharada: *Jain Seers Reflection of Death (*28 August 2019)
6. Dr. Suneela Sharma: *Linguistic Surveys in India: A Study of Past and Present (*29 August 2019)
7. Dr. Vinod Kumar Vishwarkarma: *उत्तर आधुनिक विमर्शों का सामाजिक परिप्रेक्ष्य* (29 August 2019)

September 2019

1. Professor Padam Kumar Jain: *Understanding Mahesh Dattani's Play Tara (26 September 2019)*
2. Professor Bahadur Singh Parmar: *बुंदेली लोक साहित्य और महात्मा गाँधी (26 September 2019)*
3. Dr. Anita Nair: *मलयालम सिनेमा में स्त्री–संचेतनाः परिणयम के विशेष संदर्भ में (26 September 2019)*
4. Dr. Rajeshwar Prasad Yadav: *भगवद्गीता में योग के स्वरूप का सामाजिक यथार्थ (27 September 2019)*
5. Dr. Praveen Kumar Anshuman: *Reading 'Bhimāyana' in Indian Classroom: The Text and the Context (27 September 2019)*
6. Dr. Oindrila Ghosh: *Discovering Thomas Hardy's Indian Correspondents: A Case of Select Letters (27 September 2019)*
7. Dr. Rabindra Kumar Pathak: *हिन्दी भाषा का स्त्री–संदर्भित विवेचन (27 September 2019)*

October 2019

1. Dr. Manas Ghosh: *Looking at the body of Mahatma Gandhi (as a Nationalist Discourse) with reference to Anand Patwardhan's films* (30 October 2019)
2. Dr Ranjan Kumar Swain: *Women Empowerment through Self Help Groups in Malkangiri District, Orissa* (30 October 2019)
3. Dr. Uttam Lal: *Dragon in the Indian Border States: Perception of the Borderlanders* (30 October 2019)

4. Dr. Sandeep Kumar Yadav: *Tiruvalluvar's Epigram or Time's Telegram : A Re-Reading of Tirukkural* (30 October 2019)

November 2019

1. Dr. Satappa Lahu Chavan: *भाषा अध्यापन में चिट्ठाकारिता (ब्लॉगिंग) की भूमिकाः वैचारिक परिप्रेक्ष्य* (27 November 2019)
2. Dr. Karan Singh: *Syncretic Spaces and Pilgrimage: Making of Nation* (27 November 2019)
3. Dr. Ayub Khan: *गुमशुदा व्यक्तियों के परिवारों में अभावबोध एवं आवश्यकताएं* (27 November 2019)
4. Dr. Ram Bharose: *हिन्दी दलित पत्रकारिताः प्रासंगिकता का सवाल* (27 November 2019)
5. Dr. Bhimji Khachria: *गुजरात की कंठस्थ परंपरा में भजन* (27 November 2019)
6. Dr. Nandji Rai: *प्राचीन भारतीय यातायात में रथों का महत्व* (27 November 2019)
7. Dr. Panchali Majumdar Bhattacharya: *Socialist Realism on Dogma: The Construction of the Belomor Canal* (27 November 2019)
8. Dr. Anindya Bhattacharya: *Solid Waste Management – State of West Bengal since 2000* (28 November 2019)
9. Dr. Prabhakarn Nair V.R.: *Credit Market and Rural Indebtedness under Banking Reforms in India* (28 November 2019)
10. Dr. Nikam Sandip Jaibhim: *The Element of Indianness in Nissim Ezekiel's Selected Poems: A Study* (28 November 2019)

March 2020

1. Dr. Sunita Jakhar: *Fostering Fetishness of Festivals and Fairs of Rajasthan*
2. Dr. Leena Chauhan: कृष्णवेणी: अन्तर्यात्रा
3. Shri Minus Mallick: *Mainstream IR Theories and India's Foreign Policy: A Social Constructivist Approach*
4. Ms Subhashree Parida: *Power of Politics Vs. Politics of Power: A Study of Women Representatives in Rural Local-Self Government*
5. Dr. (Captain) Bishnu Dev Singh Mallick: स्थानिक संसाधनों द्वारा आपदा प्रबंधन (प्राकृतिक आपदा के संदर्भ में)
6. Dr.Sunetra Mitra: *Dilemma of Recognition and Denial: Carving Their Own Paths: Bengali Actresses of Colonial Public Theatre*

7. Dr. S.R. Sreekala: समाजशास्त्रीय दृष्टि से हिन्दी और मलयालम के चुने हुये आदिवासी उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन
8. Dr. Nuzhat Zaman: *Socio-Economic Status of Working Muslim Women in Madhya Pradesh*
9. Dr. Deepak Kumar Pandey: *State Assembly Resolutions against Citizenship Amendment Act (CAA) and Federal Structure*
10. Dr. Jyoti Swaroop Dubey: ओशो की नववेदान्ती दृष्टि

XI. Other Programmes

- Panel discussion on "*Media and the Nation: The Changing Landscape*" (02 August 2019). Shri Prafulla Ketkar and Shri Arun Anand were the panelists for the discussion and Shri Sandipan Deb was the moderator.
- IIAS Shimla celebrated its first ever Foundation Day on 20th October 2019. Mrs. Neela Bhagwat of Gwalior Gharana performed on the occasion.

ACCOUNTS AND BUDGET

The Revised Estimate for the Financial Year 2019-20 and Budget Estimates for the Financial Year 2020-21 are as under:-

(Amount in lakhs)

Name of Scheme	Revised Estimates 2019-20	Budget Estimates 2020-21
OH-31	1715.69	1464.20
OH-35	138.30	779.00
OH-36	708.00	619.60
Total	**2561.99**	**2862.80**

The accounts of the Institute for the year 2019-20 duly audited by the Office of the Director General of Audit (Central), Indian Audit and Accounts Department, Chandigarh are enclosed at page 257-298

(B) IUC ACCOUNTS

The Accounts of the Inter-University Centre for Humanities and Social Sciences (IUC) Scheme are audited by a firm of Chartered Accountants M/s Doger & Co., Shimla. The expenditure for the Financial Year 2019-20 was Rs. 65.58 lakhs.

The Audited Statement of Accounts of the Inter-University Centre (IUC) Scheme for the year 2019-20 is placed at pages 299-305

Speed Post

भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़

Indian Audit & Accounts Department

Office of The Director General of Audit (Central), Chandigarh

सत्यमेव जयते

No: डी.जी.ए (सी)/के. व्यय/SAR/I2019-20/ 2020-21/ IIAS-S/2022-23 / 279 दिनांक: 29.4.2022

सेवा मे,

सचिव,
उच्चतर शिक्षा विभाग,
शिक्षा मंत्रालय,भारत सरकार,
नई दिल्ली – 110001

विषय: Indian Institute of Advanced Study, Shimla के वर्ष 2019-20 एंव 2020-21 के लेखाओं पर पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन

महोदय,

कृपया Indian Institute of Advanced Study, Shimla के वर्ष 2019-20 एंव 2020-21 के लेखाओं पर पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन (Separate Audit Report) संसद के दोनों सदनों के समक्ष प्रस्तुत करने हेतु सलंग्न पाएं | संसद में प्रस्तुत होने तक प्रतिवेदन को गोपनीय रखा जाए |

संसद में प्रस्तुत करने के उपरांत प्रतिवेदन की पांच प्रतियाँ इस कार्यालय को भी भेज दी जाएं |

कृपया इस पत्र की पावती भेजें |

भवदीय,

संलग्न: उपरोक्त अनुसार

महानिदेशक

उपरोक्त की प्रतिलिपी वर्ष 2019-20 एंव 2020-21 की पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन की प्रति सहित आवश्यक कार्यवाही हेतु The Director, Indian Institute of Advanced Study, Shimla , Square Hall, IIAS Campus, Rashtrapati Niwas, PO Summerhill, Shimla, PIN 171005 को प्रेषित की जाती है |

निदेशक (केन्द्रीय व्यय)

प्लाट न. 20-21, सेक्टर – 17 ई, चण्डीगढ़ – 160017 Plot No. 20-21, Sector-17E, Chandigarh - 160017
दूरभाष/ Tel.No. 0172 – 2782020 फैक्स/ FAX No:0172 – 2782021 / 2783974 ई-मेल/ Email: pdacchandigarh@cag.gov.in

Separate Audit Report of the Comptroller & Auditor General of India on the Accounts of Indian Institute of Advanced Study, Shimla, for the year ended on 31 March 2020

1. We have audited the Balance Sheet of the Indian Institute of Advanced Study, Shimla, as at 31 March 2020, Income & Expenditure Account and Receipts & Payments Account for the year ended on that date under Section 20(1) of the Comptroller & Auditor General's (Duties, Powers & Conditions of Service) Act, 1971. The audit has been re-entrusted from 2018-19 to 2022-23. These financial statements are the responsibility of the Institute's management. Our responsibility is to express an opinion on these financial statements based on our audit.

2. This Separate Audit Report contains the comments of the Comptroller & Auditor General of India (CAG) on the accounting treatment only with regard to classification, conformity with the best accounting practices, accounting standards and disclosure norms, etc. Audit observations on financial transactions with regard to compliance with the Law, Rules & Regulations (Propriety and Regularity) and efficiency-cum-performance aspects, etc., if any, are reported through Inspection Reports/ CAG's Audit Reports separately.

3. We have conducted our audit in accordance with auditing standards generally accepted in India. These standards require that we plan and perform the audit to obtain reasonable assurance about whether the financial statements are free from material mis-statements. An audit includes examining, on a test basis, evidences supporting the amounts and disclosure in the financial statements. An audit also includes assessing the accounting principles used and significant estimates made by management, as well as evaluating the overall presentation of financial statements. We believe that our audit provides a reasonable basis for our opinion.

4. Based on our audit, we report that:

   i) We have obtained all the information and explanations, which to the best of our knowledge and belief were necessary for the purpose of our audit;

   ii) The Balance Sheet and Income and Expenditure Account/ Receipts & Payments Account dealt with by this Report have been drawn up in the format prescribed by the Ministry of Human Resources Development, Government of India vide order No. 29-4/2012-FD dated 17 April 2015.

   iii) In our opinion, proper books of accounts and other relevant records have been maintained by the Indian Institute of Advanced Study, Shimla in so far as it appears from our examination of such books.

   iv) We further report that:

A. Balance Sheet

Sources of Funds

A.1 Corpus/Capital Fund (Schedule 1): ₹ 25.67 crore

A.1.1 As per the prescribed format, assets purchased out of Sponsored Projects, where ownership vests in the institution should be included in the Corpus/ Capital Fund by showing corresponding addition in Fixed Assets. A reference is invited to note given at Sl.no. 9 in the Notes to Accounts (Schedule 24) wherein it is stated that, "As per the requirement of funding agency i.e. U.G.C separate balance sheet of IUC fund has been prepared. Fixed Assets of IUC funds is ₹ 0.87 crore. Ownership of the same is vested with the Institute".

As per the instructions contained in the prescribed format, the assets should have been included in the Corpus/Capital Funds and Fixed Assets. This has resulted in understatement of Corpus/ Capital Fund as well as Fixed Assets by ₹ 0.87 crore. Further, applicable depreciation is also to be charged on these assets.

A.1.2 It was pointed out in the Separate Audit Reports for the year 2017-18 and 2018-19 that unutilised fund balance of grants received for sponsored project "Inter University Centre for Humanities and Social Science (IUC)" under UGC grant has not been accounted for in the accounts of the Institute in contravention of the prescribed format of accounts.

As per the IUC Balance Sheet, these fund balances were ₹ 0.46 crore as on 31.03.2020. However, despite being pointed out, compliance was not made by the Institute as the fund balances of the IUC project were not included in the annual accounts. This has resulted in understatement of Current Liabilities as well as Current Assets by ₹ 0.46 crore.

A.2 Designated/ Earmarked/ Endowment Funds (Schedule 2)

Capital Grant in Aid: ₹ 4.79 crore

Vide comment no. A.1.1 of the previous year Separate Audit Report, it was pointed out that the Institute kept capital grant to the extent of ₹ 4.79 crore, utilized for creation of fixed assets, in the Designated Fund, instead of Corpus/Capital Fund which was in contradiction of the prescribed format instructions that the Grants from UGC, Government of India and State Government to the extent utilized for capital expenditure, should be included under Corpus/ Capital Fund.

After considering verification of the reply of the Institute that funds of ₹ 4.79 crore included ₹ 0.05 crore which actually pertains to Earmarked/Endowment Fund, it was observed that balance amount of ₹ 4.74 crore was still not rectified by transferring the same to Corpus/Capital Funds, despite being pointed in the previous year Separate Audit Report. Therefore, compliance of the observation was not made by the Institute. This has resulted in overstatement of Designated/ Earmarked Funds and understatement of Corpus/Capital Fund by ₹ 4.74 crore.

A.3 Current Liabilities and Provisions (Schedule 3)

A.3.1 Current Liabilities: ₹ 27.76 crore

Unutilised Grants: ₹ 26.08 crore

(i) As per the prescribed format (page 88), while calculating revenue expenditure from grants, actual payments made in the year for retirement benefits should be included and provision made in the year for retirement benefits should not be included in it. However, it has been observed that the Institute has included provision for retirement benefits amounting to ₹ 5.70 crore (1.53 + 4.17) as expenditure while calculating revenue expenditure from Grant in the Schedule 3C. Therefore, In the Schedule 10, the Institute has taken revenue expenditure at ₹ 25.51 crore instead of ₹ 19.81 crore.

Therefore, Unutilised Grants are understated and Corpus/Capital Funds were overstated to the extent of ₹ 5.70 crore. Besides Income on account of Grant/Subsidies has also been overstated to the same extent.

In this context, since this accounting treatment is being followed from the past years also, the amount of provision for retirement benefits booked as expenditure in these years should be worked out and added back to Grant balances and actual payments made for retirement benefits should be deducted for correcting grant balances and necessary correction accounting entries be made in the accounts.

(ii) Unutilised balance of Government grant funds as on 31.03.2020 worked out to be ₹12.06[1] crore. However, the Institute has shown unutilised balance of grant in Schedule 10 as ₹5.83 crore. Therefore, grant balances have been shown short to the extent of ₹ 6.23 crore.

Reasons for showing short balance of ₹ 6.23 crore by the Institute in the Schedule 10 are given below :-

- The Institute has taken opening balance of ₹ 11.58 crore in the Schedule 10, instead of unutilised balance of ₹ 12.11 crore at the end of previous year Separate Audit Report. Thus, the Institute has taken less balance of ₹ 0.53 crore[2];
- As commented in the comment at Sl.no. A.1.3.2 (i) above, the Institute booked excess expenditure of ₹ 5.70 crore from grant funds.

Therefore, the grant balances in Schedule 10 are needed to be rectified.

As a result of observations at Sl.no. A.3.1.2 (i) and (ii) above. Unutilised grants were understated and Corpus/Capital Fund were overstated by ₹ 6.23 crore. Besides, Income on account of Grant/ Subsidies was overstated by ₹ 5.70 crore.

1. Refer to comment at Sl.no. C.
2. In the Separate Audit Report for the year 2018-19, opening balance minus 0.53 crore .... The expenditure was to be met out from Internally Generated Revenue (IGR) instead of showing minus balance under grants (OH-36) as the institute has incurred expenditure over and above grant funds.

B. General

B.1 Net impact of Audit comments on the Annual Accounts

Net impact of Audit comments on the annual accounts of the Institute for the year ending 31 March 2020 is as under:

i. Assets understated by ₹ 1.33 crore.

ii. Liabilities understated by ₹ 1.95 crore.

iii. Corpus/Capital Fund overstated by ₹ 0.62 crore. Besides, the surplus is overstated by ₹ 5.70 crore.

B.2 Provisions: ₹ 6.01 crore

As per prescribed format of accounts as well as Accounting Standard 15 issued by ICAI, the Institute needs to make provision for retirement benefits based on actuarial valuation.

Vide comment no. A.I.3 (i) of the Separate Audit Report for the year 2018-19, it was pointed out that as per actuarial report, the liabilities for superannuation pension, gratuity and leave encashment was worked out to ₹ 49.31 crore, ₹ 2.80 crore and ₹ 2.25 crore, respectively. Against this, Institute has made a provision of ₹ 0.17 crore, ₹ 2.78 crore and ₹ 1.93 crore respectively. As per prescribed format of accounts as well as Accounting Standard 15 issued by ICAI, the Institute needs to make provision for retirement benefits based on actuarial valuation.

However, compliance to the observation was not made by the Institute. It has further been observed that in the annual accounts for the year 2019-20, provision for these retirement benefits have been made on estimation basis rather than on actuarial valuation basis contravening the instructions contained in the prescribed format and Accounting Standard 15.

Observation in this regard has also been included in the SAR for the year 2019-20.

B.3 Ministry of Education vide O.M. No. F. No. 19-1/2017-IFD dated 27 January 2022 communicated that Ministry of Finance has clarified that Autonomous bodies may adopt Payment of Gratuity Act, 1972 administered by the Ministry of Labour and Employment and the issue relating to implementation of Payment of Gratuity Act may be taken up with Ministry of Labour and Employment directly or through Ministry of Education.

Further, Integrated Finance Division, Department of Higher Education, Ministry of Education, to ensure a uniform position across all ABs, has moved a proposal for seeking the approval of Ministry of Labour and Employment.

Annual Accounts for the year 2019-20, included an accumulated provision amounting to ₹ 0.36 crore in respect of gratuity to the employees, covered under NPS. However, gratuity can be given to the employees of the ABs only if approved by the Ministry of Labour and Employment. Hence, in view of the above, this fact should have been disclosed in notes to accounts.

B.4 As per Schedule 23 Notes to Accounts point (c) the depreciation has been provided as per WDV method however as per Schedule 4 Fixed assets. SLM method is actually used which is as per approved Ministry of Education. Hence, Notes to Accounts needs to be corrected.

C. Grant-in-Aid

The position of grant-in-aid of the Institute as on 31.03.2020 is as detailed below:

Amount in ₹ Crore

Particular	OH-31 General	OH-35 Capital	OH-36 Salary	Interest	Total
Opening Balance as on 01.04.2019	8.44	1.98	1.11	0.58	12.11
Received during the year	11.92	1.30	6.72	0.09	20.03
Total amount	20.36	3.28	7.83	0.67	32.14
Expenditure	14.58	0.27	4.90	0.33	20.08
Unspent as on 31.03.2021	5.78	3.01	2.93	0.34	12.06

D. Management letter

Deficiencies which have not been included in the Audit report have been brought to the notice of the Institute's management through a management letter issued separately for remedial/ corrective action.

v) Subject to our observations in the preceding paragraphs, we report that the Balance Sheet and Income and Expenditure Account/Receipts & payments Account dealt with by this report are in agreement with the books of accounts.

vi) In our opinion and to the best of our information and according to the explanations given to us, the said financial statements read together with the Accounting Policies and Notes on Accounts, and subject to the significant matters stated above and other matters mentioned in Annexure to this Audit Report give a true and fair view in conformity with accounting principles generally accepted in India:

a. In so far as it relates to the Balance Sheet, of the state of affairs of the Indian Institute of Advanced Study, Shimla as at 31st March 2019; and

b. In so far as it relates to Income & Expenditure Account, of the surplus for the year ended on that date.

For and on behalf of the C & AG of India.

Place: Chandigarh

Sd/-

Date: 29.4.22

Principal Director of Audit (Central), Chandigarh

Annexure to Audit Report

1. Adequacy of Internal Audit system

Internal Audit of Institute is being conducted by the Chartered Accountant. Internal Audit system was found to be adequate.

2. Adequacy of Internal control system

Internal control system is considered inadequate to the extent that:

(i) There was no system of taking confirmation of balances from debtors.

(ii) Details of the item wise, highest and lowest levels of consumable stock fixed and maintained not made available.

3. System of Physical verification of Fixed Assets

Physical verification of Fixed Assets was conducted.

4. System of Physical verification of Inventory

Physical verification of Inventory was conducted.

5. Regularity in payment of statutory dues:

No such irregularity was noticed in respect of payment of statutory dues.

Sd/-
Director

DO No: DGA (C)/CE/ SAR/IIAS /23-24/ 280

सुशील कुमार ठाकुर, आई.ए.ए.एस.
Sushil Kumar Thakur, IAAS

सत्यमेव जयते

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़
DIRECTOR GENERAL OF AUDIT (CENTRAL), CHANDIGARH

Dated: **29.04.2022**

Dear Prof. Gupta,

The audit of annual accounts of your Institute for the years ended 31 March 2020 and 31 March 2021 was conducted and audit comments in respect of the same have been reported through the Separate Audit Reports. In this regard, it is to bring to your kind attention that corrective action, to certain persistent irregularities (as detailed in Annexure 1 and Annexure 2 for the year 2019-20 and 2020-21, respectively) which are repeatedly included in the Separate Audit Reports/ Management Letters (as briefed in the Part A of the annexures enclosed), has not been taken by the management of the Institute, which needs your immediate intervention. Besides, there are certain other deficiencies noticed which have not been included in the Separate Audit Reports but, nevertheless, are significant (as detailed in the Part B of the annexures), are also being brought to your attention for remedial /corrective action.

You are requested to issue instructions for taking corrective measures in this regard.

Warm regards

Yours sincerely,

Prof. Chaman Lal Gupta,
Director,
Indian Institute of Advanced Study,
Shimla (HP)

प्लॉट नं. 20-21, लेखा भवन, सैक्टर 17-ई, चण्डीगढ़-160017 **Plot No. 20-21, Lekha Bhawan, Sector 17-E, Chandigarh-160017**
दूरभाष / Tel.: 0172-2782020, 2782022, फैक्स / Fax : 0172-2782021, 2783974, ईमेल / E-mail : pdacchandigarh@cag.gov.in

Annexure 1 to the management letter (for the year 2019-20)

PART A: Persistent Irregularities being included in the Separate Audit Reports

Compliance to the following observations included in the previous year Separate Audit Reports was not made. As compliance of these observations, was not made, following observations have been repeated in the current year Separate Audit Report for the year 2019-20 (kindly refer to Separate Audit Report):-

A.1 Non-accounting of Inter University Centre for Humanities and Social Science (IUC) grant in the annual accounts

(Comment no. A.1.1 and A. 1.2 of the Separate Audit Report 2019-20)

(Comment no. A.1.2.1 of Separate Audit Report for the year 2018-19);

(Comment no. A of Separate Audit Report 2017-18)

A.2 Non Provisioning for retirement benefits on actuarial valuation

(Comment no. A.3.2 of the Separate Audit Report 2019-20)

(Comment no. A.1.3 (i) of the Separate Audit Report for the year 2018-19).

(Comment no. B.6 of Separate Audit Report 2017-18)

A.3 Keeping of capital grant to the extent of ₹ 4.79 crore, utilized for creation of fixed assets, in the Designated Fund, instead of Corpus/ Capital Fund

(Comment no. A.2 of the Separate Audit Report 2019-20)

(Comment no. A. 1.1 of the Separate Audit Report 2018-19)

PART B: Other Irregularities noticed during the audit of account of the Institute for the year 2019-20 which have not been included in the Separate Audit Report

B. Balance Sheet

B.1 Sources of Funds

Current Liabilities and Provisions (Schedule 3)

Current Liabilities: ₹ 2776.46 lakh

The Institute has been allotted building and furniture by the Ministry of Education on monthly rent of ₹ 1,000/- & ₹ 500/- respectively. Rent for the year 2019-20 was not paid in 2019-20 but in 2020-21. As the rent was not paid in 2019-20, liability for the same amounting to ₹ 0.18 lakh should have been booked in the annual accounts. This has resulted understatement of Expenditure as well as Current Liabilities by ₹ 0.18 lakh.

B.2 Income & Expenditure Account

Income

Other Income: ₹ 67.93 lakh

Reliance Jio Infratel Pvt. Ltd. (RJIPL) was allowed to install its telecommunication equipments in the premises of the Institute at a monthly rent/fee of ₹ 25,000/- w.e.f. 25th February, 2019 to 24th February 2021 & thereafter 10 percent hike w.e.f. 25th February 2021 to 31 March 2021 at the rate of ₹ 27,500/- per month. As per the agreement, RJIPL installed its equipments in February, 2019 and deposited an amount of ₹ 6.00 lakh (14.01.2020) on account of rent/fee for 24 months i.e. from 25th February, 2019 to 25th February, 2021.

The amount received for the period upto March 2020 should have been booked as income and balance amount should have been treated as advance received. However, the Institute treated the entire amount received of ₹ 6.00 lakh as income for the year 2019-20. This has resulted on overstatement of Income and understatement of Current Liabilities by ₹ 2.71 lakh (for the period from 1st April, 2020 to 24th February/2021).

B.3 Cash and Bank Balances in Saving Accounts of ₹ 417.28 lakh, included amounts of ₹ 0.33 lakh and ₹ 0.30 lakh for which the Institute has not produced any record. It was informed by the Institute that, the amounts were appearing since 1975-76 and records for the same have been weeded out. As the amount is outstanding since 1975-76 and records for the same informed to be untraceable/ weeded out, the management of Institute may consider writing off these assets.

Sd/-
Director

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY, SHIMLA
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

BALANCE SHEET AS ON 31ST MARCH 2020

Amount in Rs. Ps.

Source of Funds	**Schedule**	**Current Year 2019-20**	**Previous Year 2018-19**
Corpus/Capital Fund	1	25,66,82,769.70	25,04,29,917.80
Designated/ Earmarked / Endowment Funds	2	4,84,22,659.74	4,79,13,915.74
Current Liabilities & Provisions	3	33,77,04,317.05	36,10,05,188.79
Total		64,28,09,746.49	65,93,49,022.33
Application of Funds	**Schedule**	**Current Year 2019-20**	**Previous Year 2018-19**
Fixed Assets			
Tangible Assets	4	21,59,08,633.47	21,79,86,224.47
Intangible Assets	4	8,564.00	14,273.00
Capital Works-in-progress		-	-
Investments from Earmarked / Endowment Funds	5	-	-
Long Term		-	-
Investments - Others	6	-	-
Current Assets	7	31,60,88,135.02	31,01,30,244.86
Loans, Advances & Deposits	8	11,08,04,414.00	13,12,18,280.00
Total		64,28,09,746.49	65,93,49,022.33
Significant Accounting Policies	23	-	-
Contingent Liabilities and Notes to Accounts	24	-	-

Sd/-	Sd/-	Sd/-
(Rakesh K. Sharma)	(Col. Vijay K. Tiwari)	(Makarand R. Paranjape)
Accounts Officer	Secretary	Director

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

INCOME AND EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED ON 31ST MARCH 2020

Amount in Rs. Ps.

Particulars	Schedule	Current Year 2019-20	Previous Year 2018-19
INCOME			
Academic Receipts	9	-	-
Grants / Subsidies	10	25,50,73,813.49	17,40,26,723.27
Income from investments	11	-	-
Interest earned	12	-	-
Other Income	13	67,93,207.90	93,41,985.72
Prior Period Income	14	-	-
Depreciation transferred to Capital fund Grant- in-Aid		-	43,56,080.00
TOTAL (A)		**26,18,67,021.39**	**18,77,24,788.99**
EXPENDITURE			
Staff Payments & Benefits (Establishment expenses)	15	12,94,80,301.75	8,97,49,941.00
Academic Expenses	16	3,95,12,202.00	3,34,89,867.20
Administrative and General Expenses	17	1,54,34,156.09	1,86,45,049.99
Transportation Expenses	18	4,17,808.00	3,97,765.00
Repairs & Maintenance	19	7,16,06,321.50	3,17,02,705.18
Finance costs	20	32,66,505.15	2,722.30
Depreciation	4	40,51,664.00	46,97,590.00
Other Expenses	21	-	-
Prior Period Expenses	22	(46,43,481.00)	38,672.60
TOTAL (B)		**25,91,25,477.49**	**17,87,24,313.27**
Balance being excess of Income over Expenditure (A-B)		27,41,543.90	90,00,475.72
Transfer to / from Designated Fund		-	-
Building fund		-	-
Others (specify)		-	-
Balance Being Surplus / (Deficit) Carried to Capital Fund		-	-
Significant Accounting Policies	23	-	-
Contingent Liabilities and Notes to Accounts	24	-	-

Sd/-	Sd/-	Sd/-
(Rakesh K. Sharma)	(Col. Vijay K. Tiwari)	(Makarand R. Paranjape)
Accounts Officer	Secretary	Director

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

SCHEDULE-1 CORPUS/CAPITAL FUND

Amount in Rs. Ps.

Particulars		**Current Year 2019-20**	**Previous Year 2018-19**
	Balance at the beginning of the year	25,04,29,917.80	24,27,45,672.08
Add:	Contributions towards Corpus/Capital Fund	7,78,419.00	-
Add:	Grants from UGC, Government of India and State Government to the extent utilized for capital expenditure	27,32,889.00	-
Add:	Assets Purchased out of Earmarked Funds	-	-
Add:	Assets Purchased out of Sponsored Projects, where ownership vests in the institution	-	-
Add:	Assets Donated/Gifts Received	-	-
Add:	Other Additions (Provision Written Back)	-	-
Add:	Excess of Income over expenditure trasferred from the Income & Expenditure Account	27,41,543.90	90,00,475.72
Total		**25,66,82,769.70**	**25,17,46,147.80**
(Deduct)	Deficit transferred from the Income & expenditure Account	-	-
(Deduct)	Income Tax paid	-	13,16,230.00
Balance at the year end		**25,66,82,769.70**	**25,04,29,917.80**

Sd/-
(Rakesh K. Sharma)
Accounts Officer

Sd/-
(Col. Vijay K. Tiwari)
Secretary

Sd/-
(Makarand R. Paranjape)
Director

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

SCHEDULE-2 DESIGNATED/ EARMARKED / ENDOWMENT FUNDS/CAPITAL GRANT

Amount in Rs. Ps.

Particulars	Fund wise Breakup					Total	
	Capital Grant in aid	Fund AAA	Fund BBB	Fund CCC	Endowment Funds	Current Year	Previous Year
A.							
a) Opening balance	4,79,13,915.74						4,24,91,712.00
b) Additions during the year	-						97,78,283.74
c) Income from investments made of the funds							
d) Accrued Interest on investments/Advances							
e) Interest on Savings Bank a/c							
f) Other additions (Endoment & Corpus Donations)	5,08,744.00						-
Total (A)	**4,84,22,659.74**	**0**	**0**	**0**	**0**		**5,22,69,995.74**
B.							
Utilisation/Expenditure towards objectives of funds							
ii) Capital Expenditure	-						-
ii) Revenue Expenditure	-						-
Less Depreciation	-						43,56,080.00
Total (B)	**-**	**0**	**0**	**0**	**0**		**43,56,080.00**
Closing balance at the year end (A - B)	4,84,22,659.74						4,79,13,915.74
Represented by							
Cash And Bank Balances	-						-
Investments							
Interest accrued but not due							
Fixed Assets	4,84,22,659.74						4,79,13,915.74

Sd/-
(Rakesh K. Sharma)
Accounts Officer

Sd/-
(Col. Vijay K. Tiwari)
Secretary

Sd/-
(Makarand R. Paranjape)
Director

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

SCHEDULE-3 CURRENT LIABILITIES & PROVISIONS

Amount in Rs. Ps.

	Current Year 2019-20	Previous Year 2018-19
A. CURRENT LIABILITIES		
1. Deposits from staff		
2. Deposits from Other	-	-
3. Sundry Creditors a) For Goods & Services b) Others	14,92,687.00	3,12,234.00
4. Deposit-Others (including EMD, Security Deposit)	10,91,250.00	11,250.00
5. Statutory Liabilities (GPF, TDS, WC TAX, CPF, GIS, NPS):	7,30,975.19	2,80,966.19
a) Overdue	-	-
b) Others	-	-
6. Other Current Liabilities	-	-
a)Salaries	93,34,656.00	70,98,913.00
b)Receipts against sponsored projects	-	-
c) Receipts against sponsored fellowships & scholarships	-	-
d)Unutilised Grants (GOI MHRD & IC4HD)	26,07,77,066.11	29,98,52,284.60
e) Unutilised Grants of MOC	2,02,157.00	2,02,157.00
f) Unutilised Grant of NDL	36.00	36.00
g) Other liabilities Refund amount to SPRO	9,470.00	9,372.00
h) Expenses Payable	39,12,054.00	44,15,534.00
i) Payable for Relief Fund	95,877.00	-
Total (A)	**27,76,46,228.30**	**31,21,82,746.79**
B. PROVISIONS		
1. For Taxation		
2. Gratuity	3,34,65,510.00	2,77,78,398.00
3. Superannuation Pension	17,00,000.00	17,00,000.00
4. Accumulated Leave Encashment	2,48,92,578.75	1,93,44,044.00
5. Trade Warranties/Claims	-	-
6. Others (Specify)	-	-
Total (B)	**6,00,58,088.75**	**4,88,22,442.00**
Total (A+ B)	**33,77,04,317.05**	**36,10,05,188.79**

Sd/-
(Rakesh K. Sharma)
Accounts Officer

Sd/-
(Col. Vijay K. Tiwari)
Secretary

Sd/-
(Makarand R. Paranjape)
Director

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

SCHEDULE-3 (A) SPONSORED PROJECTS

Amount in Rs. Ps.

Name of the Project	Opening Balance		Receipts/Recoveries/during the year	Total	Expenditure During The Year	Closing Balance	
	Debit	Credit				Debit	Credit
IC4HD	-	18,40,13,990.00	1,84,53,901.00	20,24,67,891.00	-	-	20,24,67,891.00
MOC	-	2,02,157.00	-	2,02,157.00	-	-	2,02,157.00
NLD Grant	-	36.00	-	36.00	-	-	36.00
GOI MHRD	-	11,58,38,294.60	20,02,77,583.00	31,61,15,877.60	25,78,06,702.49	-	5,83,09,175.11
Total (Rs.)	**-**	**30,00,54,477.60**	**21,87,31,484.00**	**51,87,85,961.60**	**25,78,06,702.49**	**-**	**26,09,79,259.11**

Sd/-
(Rakesh K. Sharma)
Accounts Officer

Sd/-
(Col. Vijay K. Tiwari)
Secretary

Sd/-
(Makarand R. Paranjape)
Director

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

SCHEDULE-4 (I) FIXED ASSETS ACQUIRED OUT OF GRANT IN AID

Amount in Rs. Ps.

A. Fixed Assets since inception of Institute							
Particular	**Rate of depreciation**	**Opening Balance 01.04.19**	**Additions upto 01.04.2019 to 31.03.2020**	**Deletion 01.04.2019 to 31.03.2020**	**Gross Block as on 31.3.2020**	**Depreciation for the Year**	**Written Down value on 31.03.2020**
Audio Visual	-	4,22,500.00	-	-	4,22,500.00	-	4,22,500.00
Word Processors	-	13,04,921.00	-	-	13,04,921.00	-	13,04,921.00
Furniture & Fittings	-	74,39,798.75	-	-	74,39,798.75	-	74,39,798.75
Lib. Books & Scientific Journals	-	14,55,68,614.51	-	-	14,55,68,614.51	-	14,55,68,614.51
Office Equipment	-	2,02,84,117.83		-	2,02,84,117.83	-	2,02,84,117.83
Plant & Machinery	-	1,45,805.00	-	-	1,45,805.00	-	1,45,805.00
Vehicles	-	28,38,064.64	-	-	28,38,064.64	-	28,38,064.64
Sub-Total (A)		**17,80,03,821.73**			**17,80,03,821.73**	**-**	**17,80,03,821.73**
Fixed assets							
B. Plan							
Audio Visual Equipment	7.50	1,66,197.00	-	-	1,66,197.00	12,465.00	1,53,732.00
Computers & Peripherals	20.00	4,04,635.00	-	-	4,04,635.00	80,927.00	3,23,708.00
Crokery	7.50	9,18,719.00		-	9,18,719.00	68,904.00	8,49,815.00
Lib. Books & Scientific Journals	10.00	1,17,89,420.00	-	-	1,17,89,420.00	11,78,942.00	1,06,10,478.00
Office Equipment	7.50	7,36,273.00	-	-	7,36,273.00	55,220.00	6,81,053.00
Plant & Machinery	7.50	6,59,669.00		7,64,525.00	(1,04,856.00)	(1,08,723.00)	3,867.00
Sub-Total(B)		**1,46,74,913.00**	**-**	**7,64,525.00**	**1,39,10,388.00**	**12,87,735.00**	**1,26,22,653.00**

C. Non- Plan	Rate of depreciation	Opening Balance 01.04.19	Additions upto 01.04.2019 to 31.03.2020	Deletion 01.04.2019 to 31.03.2020	Gross Block as on 31.3.2020	Depreciation for the Year	Written Down value on 31.03.2020
Audio Visual Equipment	5.00	34,988.00	-	-	34,988.00	1,749.00	33,239.00
Computers & Peripherals	20.00	1,81,660.00		-	1,81,660.00	36,332.00	1,45,328.00
Furniture, Fixtures & Fittings	7.50	1,25,197.00		-	1,25,197.00	9,390.00	1,15,807.00
Library Books and Equipments	10.00	1,577.00	-	-	1,577.00	158.00	1,419.00
Office Equipment	7.50	88,592.00		-	88,592.00	6,644.00	81,948.00
Plant & Machinery	5.00	1,38,120.00	-	-	1,38,120.00	6,906.00	1,31,214.00
Sub total (C)		**5,70,134.00**	**-**	**-**	**5,70,134.00**	**61,179.00**	**5,08,955.00**
D. Fixed Assets under IC4HD							
Furniture, Fixtures & Fittings	7.50	1,23,343.00	-	-	1,23,343.00	9,251.00	1,14,092.00
Lib. Books & Scientific Journals	10.00	1,35,667.00	-	-	1,35,667.00	13,570.00	1,22,097.00
Office Equipment	7.50	2,77,347.00	-	-	2,77,347.00	20,800.00	2,56,547.00
Sub-Total (D)		**5,36,357.00**	**-**	**-**	**5,36,357.00**	**43,621.00**	**4,92,736.00**
E. Fixed Assets (New Format)							
Audio Visual Equipment	7.50	7,86,857.74		-	7,86,857.74	59,014.00	7,27,843.74
Audio Visual Equipment	7.50	12,298.00	-	-	12,298.00	922.00	11,376.00
Computers & Peripherals	20.00	21,13,475.00	85,890.00	-	21,99,365.00	4,39,873.00	17,59,492.00
Furniture, Fixtures & Fittings	7.50	8,87,346.00	4,98,011.00	-	13,85,357.00	1,03,902.00	12,81,455.00
Furniture, Fixtures & Fittings	100.00	-	1,312.00	-	1,312.00	1,310.00	2.00
Lib. Books & Scientific Journals	10.00	1,14,81,992.00	15,99,205.00	-	1,30,81,197.00	13,08,120.00	1,17,73,077.00
Office Equipment	5.00	10,03,048.00	2,73,513.00	-	12,76,561.00	63,828.00	12,12,733.00
Plant & Machinery	7.50	2,32,834.00	62,973.00	-	2,95,807.00	22,186.00	2,73,621.00
Vehicles	7.50	13,56,419.00	-	-	13,56,419.00	1,01,731.00	12,54,688.00

Capital Assets (SC)							
Particular	**Rate of depreciation**	**Opening Balance 01.04.19**	**Additions upto 01.04.2019 to 31.03.2020**	**Deletion 01.04.2019 to 31.03.2020**	**Gross Block as on 31.3.2020**	**Depreciation for the Year**	**Written Down value on 31.03.2020**
Audio Visual Equipment	7.50	1,07,240.00	-		1,07,240.00	8,043.00	99,197.00
Computers & Peripherals	20.00	1,51,140.00	16,520.00		1,67,660.00	33,532.00	1,34,128.00
Furniture, Fixtures & Fittings	7.50	49,327.00	-		49,327.00	3,700.00	45,627.00
Lib. Books & Scientific Journals	10.00	6,87,251.00	-		6,87,251.00	68,725.00	6,18,526.00
Office Equipment	7.50	2,50,550.00	2,415.00		2,52,965.00	18,972.00	2,33,993.00
Office Equipment	100.00	-	2,247.00		2,247.00	2,245.00	2.00
Plant & Machinery	7.50	56,891.00	84,495.00		1,41,386.00	10,604.00	1,30,782.00
Capital Assets(ST)							
Audio Visual Equipment	7.50	42,761.00	-	-	42,761.00	3,207.00	39,554.00
Computers & Peripherals	20.00	9,586.00	51,018.00	-	60,604.00	12,121.00	48,483.00
Computers & Peripherals	100.00	-	1,400.00	-	1,400.00	1,399.00	1.00
Furniture, Fixtures & Fittings	7.50	40,810.00	-	-	40,810.00	3,061.00	37,749.00
Lib. Books & Scientific Journals	10.00	3,67,445.00	-	-	3,67,445.00	36,745.00	3,30,700.00
Office Equipment	7.50	1,04,282.00	11,850.00	-	1,16,132.00	8,710.00	1,07,422.00
Plant & Machinery	7.50	-	42,040.00	-	42,040.00	3,153.00	38,887.00
Sub-Total (D)		**1,97,41,552.74**	**27,32,889.00**	**-**	**2,24,74,441.74**	**23,15,103.00**	**2,01,59,338.74**

(F) Intangible assets	Rate of depreciation	Opening Balance 01.04.19	Additions upto 01.04.2019 to 31.03.2020	Deletion 01.04.2019 to 31.03.2020	Gross Block as on 31.3.2020	Depreciation for the Year	Written Down value on 31.03.2020
Computers & Peripherals	40.00	14,273.00	-	-	14,273.00	5,709.00	8,564.00
Sub-Total (F)		**14,273.00**	**-**	**-**	**14,273.00**	**5,709.00**	**8,564.00**
Total I (A+B+C+D+E+F)		**21,35,41,051.47**	**27,32,889.00**	**7,64,525.00**	**21,55,09,415.47**	**37,13,347.00**	**21,17,96,068.47**
Schedule-4(ii) Fixed Assets acquired out of Own funds							
Fixed Assets acquired out of own funds	Rate of depreciation	**Opening Balance 01.04.19**	**Additions upto 01.04.2019 to 31.03.2020**	**Deletion 01.04.2019 to 31.03.2020**	**Gross Block as on 31.3.2020**	**Depreciation for the Year**	**Written Down value on 31.03.2020**
Audio Visual Equipment	7.50	9,02,356.00	-	-	9,02,356.00	67,677.00	8,34,679.00
Computer Software	40.00	11,870.00	-	-	11,870.00	4,748.00	7,122.00
Computers & Peripherals	7.50	29,74,167.00	-	-	29,74,167.00	2,23,063.00	27,51,104.00
Furniture, Fixtures & Fittings	7.50	4,99,203.00	-	-	4,99,203.00	37,440.00	4,61,763.00
Office Equipment	7.50	22,305.00	-	-	22,305.00	1,673.00	20,632.00
Plant & Machinery	7.50	49,545.00	-	-	49,545.00	3,716.00	45,829.00
Sub total (ii)		**44,59,446.00**	**-**	**-**	**44,59,446.00**	**3,38,317.00**	**41,21,129.00**
Grand total (GOI +Own fund +Tangible assets)		**21,79,86,224.47**	**27,32,889.00**	**7,64,525.00**	**21,99,54,588.47**	**40,45,955.00**	**21,59,08,633.47**
Grand total (Tangeible +intangible)		**21,80,00,497.47**	**27,32,889.00**	**7,64,525.00**	**21,99,68,861.47**	**40,51,664.00**	**21,59,17,197.47**

Sd/-
(Rakesh K. Sharma)
Accounts Officer

Sd/-
(Col. Vijay K. Tiwari)
Secretary

Sd/-
(Makarand R. Paranjape)
Director

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

SCHEDULE-5 INVESTMENTS FROM EARMARKED/ENDOWMENT FUNDS

Amount in Rs. Ps.

	Current Year 2019-20	Previous Year 2018-19
1 In Central Government Securities	-	-
2 In State Government Securities	-	-
3 Other approved Securities	-	-
4 Shares	-	-
5 Debentures and Bonds	-	-
6 Term Deposits with Banks	-	-
7 Others (to be specified)	-	-
Total	**0**	**0**

SCHEDULE-5 (A) INVESTMENTS FROM EARMARKED/ ENDOWMENT FUNDS (FUND WISE)

Sl. No.	Funds	Current Year, 2018-19
1	FDR	-
2	-	-
3	-	-
4	-	-
5	Endowment Fund Investments	-
	Total	**0**

SCHEDULE-6 INVESTMENTS-OTHERS

	Current Year 2019-20	Previous Year 2018-19
1. In Central Government Securities	-	-
2. In State Government Securities	-	-
3. Other approved Securities	-	-
4. Shares	-	-
5. Debentures and Bonds	-	-
6. Others (to be specified)	-	-
Total	**-**	**-**

Sd/-
(Rakesh K. Sharma)
Accounts Officer

Sd/-
(Col. Vijay K. Tiwari)
Secretary

Sd/-
(Makarand R. Paranjape)
Director

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

SCHEDULE-7 CURRENT ASSETS

Amount in Rs. Ps.

	Current Year 2019-20	Previous Year 2018-19
1. Stock:		
a) Stores and Spares	-	-
b) Loose Tools		
c) Publications	58,84,267.75	58,65,736.75
d) Laboratory chemicals, consumables, Medicines and glass ware	1,16,178.91	84,964.00
e) Building Material	-	-
f) Electrical Material	-	-
g) Consumabale Items	9,69,934.08	11,95,734.58
h) Water supply material	-	-
i) Souvenir Item	7,96,434.05	9,21,444.25
2. Sundry Debtors		
a) Debts Outstanding for a period exceeding six months	4,41,707.00	5,48,221.75
b) Others	63,037.00	-
3. Cash and Bank Balances		
Cash in Hand	-	1,18,714.00
a) With Scheduled Banks:	-	-
- In Current Accounts	-	-
- In term deposit Accounts	26,60,64,980.00	25,50,44,871.00
-In Savings Accounts	4,17,27,940.23	4,63,18,714.53
b) With non-Scheduled Banks:	-	-
- In term deposit Accounts	-	-
- In Savings Accounts	-	-
4. Post Office- Saving Accounts	-	-
Stock Of Postage Stamps	20,693.00	28,881.00
Misc Advance (IC4HD)	2,963.00	2,963.00
Drafts and IPO in hand	-	-
Total	**31,60,88,135.02**	**31,01,30,244.86**

Sd/-	Sd/-	Sd/-
(Rakesh K. Sharma)	(Col. Vijay K. Tiwari)	(Makarand R. Paranjape)
Accounts Officer	Secretary	Director

Note: Annexure A shows the details of Bank Accounts

ANNEXURE A

Amount in Rs. Ps.

Savings Bank Accounts	
Grants from UGC A/C	-
University/ Institute Receipts A/C	94,16,962.00
Scholarship A/C	-
Academic Fee Receipt A/C	-
Development (Plan) A/C	-
Combined Entrance Exams(CBT) A/C	-
UGC Plan Fellowship A/C	-
Corpus Fund A/C	7,18,419.00
Sponsored Projects Fund A/C	-
Sponsored Fellowship A/C	-
Endowment & Chair A/C (EMF)	5,08,744.00
UGC JRF Fellowship A/C (EMF)	-
HBA Fund A/C (EMF)	-
Conveyance A/C (EMF)	-
UGC Rajiv Gandhi National Fellowship A/C (EMF)	-
Academic Development Fund A/C (EMF)	-
Deposit A/C	-
Student Fund A/C	-
Student Aid Fund A/C	-
Plan Grants for specific schemes	3,10,83,815.23
Current Account	
Term Deposits with Schedule Banks	26,60,64,980.00
Total	**30,77,92,920.23**

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

SCHEDULE-8 LOANS, ADVANCES & DEPOSITS

Amount in Rs. Ps.

	Current Year 2019-20	Previous Year 2018-19
1. Advances to employees: (Non-interest bearing)		
a) Salary	-	-
b) Festival	-	-
c) Medical Advance	-	-
d) Other	-	58,000.00
i) WCA	-	450.00
ii) Bad Climate and Flood Advanced	431.00	431.00
2. Long Term Advances to employees: (Interest bearing)		
a) Vehicle loan	4,000.00	29,000.00
b) Home loan	-	-
c) Others (to be specified)	24,44,442.00	24,44,442.00
d) Computer Advance	4,55,071.00	1,34,004.00
3. Advances and other amounts recoverable in cash or in kind or for value to be received:		
a) On Capital Account .	-	-
b) to Suppliers	-	-
c) Others (i) to CPWD)	10,14,39,054.00	12,19,95,859.00
ii) Recoverble from IUC	52,112.00	18,732.00
iii) Recoverable from ASI	6,73,916.00	20,92,610.00
iv) GST TDS Recoverable	3,227.00	-
v) Recoverble from Mess	2,19,050.00	96,878.00
vi) Recoverble from Guest House	1,58,400.00	39,800.00
vii) Recoverble from Ticket Booth	70,634.00	1,06,219.00
viii) Manager SBI	27,92,316.00	-
ix) Recoverable From Furniture Place	85,000.00	-
x) Recoverable From JIO	1,08,000.00	
4. Prepaid Expenses		
a) Other expenses(Prepaid e-journal subscription)	8,78,779.00	17,20,171.00
b) Prepaid AMC(ic4hd)	-	-
5. Deposits		
a) Telephone	36,200.00	36,200.00
b) Misc Advance Imperest	5,000.00	-
c) TDS FY 2019-20	60,000.00	-
d) AICTE, if applicable	-	-
e) Guests	2,400.00	2,400.00
i) Security with Vineet Gas Agency	19,000.00	19,000.00
j) Security with Municipal Corporation	980.00	980.00

k) Deposit for fuel	1,00,000.00	1,00,000.00
l) Others	4,633.00	4,633.00
m) Excess Payment of Leave Encashment Recoverable	-	-
n) TDS recoverable	95,237.00	95,237.00
o) Books Under Printing	30,612.00	1,04,114.00
p) Advance Tax	10,00,000.00	20,53,200.00
q) Income Tax Recoverable	65,920.00	65,920.00
Recoverable from mess	-	-
6. Income Accrued:	-	-
a) On Investments from Earmarked/ Endowment Funds	-	-
b) On Investments-Others	-	-
c) On Loans and Advances	-	-
d) Others (includes income due unrealized)	-	-
7. Other - Current assets receivable from UGC/sponsored projects	-	-
a) Debit balances in Sponsored Projects	-	-
b) Debit balances in Sponsored Fellowships & Scholarships	-	-
c) Grants Receivable from GOI	-	-
d) Other receivables from UGC	-	-
8. Claims Receivable (from NDL Grant)	-	-
TOTAL	**11,08,04,414.00**	**13,12,18,280.00**

Note: 1. If revolving funds have been created for House Building, Computer and Vehicle advances to employees, the advances will appear as part of Earmarked/endowment Funds. The balance against this interest -bearing advances will not appear in this schedule.

Sd/-	Sd/-	Sd/-
(Rakesh K. Sharma)	(Col. Vijay K. Tiwari)	(Makarand R. Paranjape)
Accounts Officer	Secretary	Director

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

SCHEDULE-9 ACADEMIC RECEIPTS

Amount in Rs. Ps.

	Current Year 2019-20	Previous Year 2018-19
FEES FROM STUDENTS		
Academic		
1. Tuition fee	-	-
2. Admission fee	-	-
3. Enrolment fee	-	-
4. Library Admission fee	-	-
5. Laboratory fee	-	-
6. Art & Craft fee	-	-
7. Registration fee	-	-
8. Syllabus fee	-	-
Total (A)	-	-
Examinations		
1. Admission test fee	-	-
2. Annual Examination fee	-	-
3. Mark sheet, certificate fee	-	-
4. Entrance examination fee	-	-
Total (B)	-	-
Other Fees		
1. Identity card fee	-	-
2. Fine/ Miscellaneous fee	-	-
3. Medical fee	-	-
4. Transportation fee	-	-
5. Hostel fee	-	-
Total (C)	-	-
Sale of Publications		
1. Sale of Admission forms	-	-
2. Sale of syllabus and Question Paper, etc.	-	-
3. Sale of prospectus including admission forms	-	-
Total (D)	-	-
Other Academic Receipts		
1. Registration fee for workshops, programmes	-	-
2, Registration fees (Academic Staff College)	-	-
Total (E)	**-**	**-**
GRAND TOTAL (A+B+C+D+E)	**-**	**-**

Note: In case fees like entrance fee, subscriptions etc are material and are in the nature of capital receipts, such amount should be recognized to the Capital Fund. Otherwise such fees will be appropriately incorporated in this schedule.

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

SCHEDULE-10 GRANTS/SUBSIDIES (IRREVOCABLE GRANTS RECEIVED)

Amount in Rs. Ps.

Particulars	General/Capital/Salary		Non-Plan	Current Year 2019-20	Previous Year 2018-19
	Govt. of India	Specific Schemes IC4HD	GOI	Total	Total
Balance B/F	11,58,38,294.60	18,40,13,990.00	-	29,98,52,284.60	31,62,65,171.68
Add: Receipts during the year	19,94,00,000.00	-	-	19,94,00,000.00	15,05,82,000.00
Interest Earned on GIA	8,77,583.00	1,53,47,462.00	-	1,62,25,045.00	1,68,10,119.93
Prior Period Entry Rectified	-	31,06,439.00	-	31,06,439.00	-
Total	**31,61,15,877.60**	**20,24,67,891.00**	**-**	**51,85,83,768.60**	**48,36,57,291.61**
Less: Refund to UGC /GOI (Trf to General fund)			-	-	-
Balance	**31,61,15,877.60**	**20,24,67,891.00**	**-**	**51,85,83,768.60**	**48,36,57,291.61**
Less: Utilised for Capital expenditure (A)	27,32,889.00	-	-	27,32,889.00	97,78,283.74
Balance	**31,33,82,988.60**	**20,24,67,891.00**	**-**	**51,58,50,879.60**	**47,38,79,007.87**
Less: Utilized for Revenue Expenditure (B)	25,50,73,813.49	-	-	25,50,73,813.49	17,40,26,723.27
Balance C/F (C)	**5,83,09,175.11**	**20,24,67,891.00**	**-**	**26,07,77,066.11**	**29,98,52,284.60**

Sd/-
(Rakesh K. Sharma)
Accounts Officer

Sd/-
(Col. Vijay K. Tiwari)
Secretary

Sd/-
(Makarand R. Paranjape)
Director

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

SCHEDULE-11 INCOME FROM INVESTMENTS

Amount in Rs. Ps.

Particulars	Earmarked / Endowment Funds		Other Investments	
	Current Year 2019-20	**Previous Year 2018-19**	**Current Year 2019-20**	**Previous Year 2018-19**
1. Interest				
a. On Government Securities	-	-	-	-
b. Other Bonds/Debentures	-	-	-	-
2. Interest on Term Deposits	-	-	-	-
3. Income accrued but not due on Term Deposits/Interest bearing advances to employees -	-	-	-	-
4. Interest on Savings Bank Accounts	-	-	-	-
5. Others (Specify)	-	-	-	-
Total	0.00	0.00	0.00	0.00
Transferred to Earmarked/Endowment Funds				
Balance	Nil	Nil		

Note: Interest accrued but not due on Term Deposits from HBA fund, conveyance advance fund and Computer Advance fund and on interest bearing advances to employees will be included here (Item 3), only where Revolving funds (EMF) for such advances have been set up.

Sd/-	Sd/-	Sd/-
(Rakesh K. Sharma)	(Col. Vijay K. Tiwari)	(Makarand R. Paranjape)
Accounts Officer	Secretary	Director

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

SCHEDULE-12 INTEREST EARNED

Amount in Rs. Ps.

	Current Year 2019-20	**Previous Year 2018-19**
1. On Savings Accounts with scheduled banks	-	-
2 On Loans	-	-
a. Employees/Staff	-	-
b. Others(FDR)	-	-
3. On Debtors and Other Receivables	-	-
Total		
Note: Please refer to schedule-10 .		

SCHEDULE-13 OTHER INCOME

Items of material amounts included in Miscellaneous Income should be separately disclosed.		
		Amount in Rs. Ps.
A. Income from Land & Buildings	**Current Year 2019-20**	**Previous Year 2018-19**
1. Hostel Room Rent		
2, License fee	-	-
3. Hire Charges of Auditorium/Play ground/Convention Centre, etc	-	-
4. Electricity charges recovered	-	-
5. Water charges recovered .	-	-
Total	-	
B. Sale of Institute's publications*	9,80,059.30	12,48,617.37
C. Income from holding events		
1. Gross Receipts from annual function/ sports carnival	-	-
Less: Direct expenditure incurred on the annual function/ sports carnival	-	-
2. Gross Receipts from fetes	-	-
Less: Direct expenditure incurred on the fetes	-	-
3, Gross Receipts for educational tours	-	-
Less: Direct expenditure incurred on the tours	-	-
4. Others (to be specified and separately disclosed)	-	-
Total	-	-
D. Others		
1. Income from consultancy	-	-

2. RTI fees	-	-
3. Income from Royalty	-	-
4. Sale of application form (recruitment)	-	-
5. Misc. receipts (Sale of tender form, waste paper, etc.)	-	-
6. Profit on Sale/disposal of Assets	-	-
a) Owned assets	-	-
b) Assets received free of cost	-	-
7. Grants/Donations from Institutions, Welfare Bodies and International Organizations	-	-
8 Others (specify)		
Rent for other specfic facility extended	54,660.00	16,690.00
Guest House	7,43,249.00	4,59,170.00
Pvt use of vehicle	-	-
sale of plant	17,070.00	17,950.00
liabrary membership	34,918.00	41,696.00
Sale of unusable items	-	-
Application fee	-	-
Misellaneous income	52,167.00	4,57,112.00
Net Income of Ticket booth	*49,11,084.60*	*71,00,750.35*
Total Others (specify)	-	-
Total (D)	58,13,148.60	80,93,368.35
Grand Total (A+B+C+D)	**67,93,207.90**	**93,41,985.72**

Sd/-
(Rakesh K. Sharma)
Accounts Officer

Sd/-
(Col. Vijay K. Tiwari)
Secretary

Sd/-
(Makarand R. Paranjape)
Director

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

SCHEDULE-14 PRIOR PERIOD INCOME

Amount in Rs. Ps.

Particulars	**Current Year 2019-20**	**Previous Year 2018-19**
1. Academic Receipts	-	-
2. Income from Investments	-	-
3.Interest earned	-	-
4. Other Income/Adjustment	-	-
Total		-

SCHEDULE-15 STAFF PAYMENTS & BENEFITS (ESTABLISHMENT EXPENSES)

These shall be classified separately for teaching and non-teaching staff; adhoc staff, Arrears of DA, Salary arrears due to increment shall be shown separately		
	Current Year 2019-20	**Previous Year 2018-19**
a) Salaries and Wages	6,89,12,070.00	5,84,65,439.00
b) Allowances and Bonus	-	-
c) Contribution to Provident Fund/NPS	15,01,388.00	8,58,795.00
d) Contribution to Other Fund (specify) Pension Fund	-	-
e) Staff Welfare Expenses	-	-
f) Retirement and Terminal Benefits	1,53,32,125.75	65,75,239.00
g) LTC facility	2,85,724.00	1,03,897.00
h) Medical facility	4,10,674.00	4,93,000.00
i) Children Education Allowance	9,72,000.00	8,95,500.00
j) Honorarium	2,36,256.00	1,89,106.00
k) Others (specify) pension	4,16,70,064.00	2,19,98,965.00
l) Liveries	1,60,000.00	1,70,000.00
m) Hospitality		-
Total	**12,94,80,301.75**	**8,97,49,941.00**

Sd/-
(Rakesh K. Sharma)
Accounts Officer

Sd/-
(Col. Vijay K. Tiwari)
Secretary

Sd/-
(Makarand R. Paranjape)
Director

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

SCHEDULE-15 A EMPLOYEES RETIREMENT AND TERMINAL BENEFITS

Amount in Rs. Ps.

	Pension	Gratuity	Leave Encashment	Total
Opening Balance as on				
Addition: Capitalized value of Contributions Received from other Organizations	-	-	-	-
Total (a)				
Less: Actual Payment during the Year (b)	-	-	-	
Balance Available on 31,03 c (a-b)	-	-	-	
Provision required on 31.03 as per Actuarial Valuation (d)	-	-	-	
A. Provision to be made in the Current year (d-c)	-	-	-	
B. Contribution to New Pension Scheme	-	-	-	
C. Medical Reimbursement to Retired Employees	-	-	-	
D. Travel to Hometown on Retirement	-	-	-	
E. Deposit Linked Insurance Payment	-	-	-	
Total (A+B+C+D+E)				

Note:
1. The total (A+B+C+D+E) in this sub schedule wiir&eVieTigure against Retirement and Terminal Benefits in Schedule 15.
2, Items B,C,D&E will be accounted on accrual basis and will include bills preferred but outstanding for payment on 31/3.

Sd/-	Sd/-	Sd/-
(Rakesh K. Sharma)	(Col. Vijay K. Tiwari)	(Makarand R. Paranjape)
Accounts Officer	Secretary	Director

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

SCHEDULE-16 ACADEMIC EXPENSES

Amount in Rs. Ps.

	Current Year 2019-20	**Previous Year 2018-19**
a) Laboratory expenses	-	-
b) Field work/Participation in Conferences		
c) Expenses on Seminars/Workshops	38,17,819.00	35,33,069.20
d) Payment to visiting faculty	1,92,014.00	-
e) Examination	-	-
f) Student Welfare expenses	-	-
g) Admission expenses	-	-
h) Convocation expenses	-	-
i) Publications	6,69,872.00	5,17,782.00
j) Stipend/means-cum-merit scholarship	-	-
k) Subscription Expenses	-	-
l) Others (specify) fellowship to fellows	3,48,32,497.00	2,94,39,016.00
ii) National fellowship to fellows	-	-
Total	**3,95,12,202.00**	**3,34,89,867.20**

Sd/-
(Rakesh K. Sharma)
Accounts Officer

Sd/-
(Col. Vijay K. Tiwari)
Secretary

Sd/-
(Makarand R. Paranjape)
Director

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

SCHEDULE-17 ADMINISTRATIVE AND GENERAL EXPENSES

Amount in Rs. Ps.

	Current Year 2019-20	**Previous Year 2018-19**
A Infrastructure		
a) Electricity and power	37,22,061.00	36,66,244.00
b) Water charges	(81,175.00)	11,14,098.00
c) Insurance	1,10,576.00	99,341.00
d) Rent, Rates and Taxes (including property tax)	22,72,264.00	17,75,110.00
B Communication		-
e) Postage and Stationery	74,676.00	1,12,361.00
f) Telephone, Fax and Internet Charges	2,15,312.00	2,49,259.00
C Others		
g) Printing and Stationery (consumption)	7,04,371.00	10,74,991.49
h) Travelling and Conveyance Expenses	34,01,537.00	40,05,054.00
i) Hospitality	3,14,599.00	4,47,889.00
j) Auditors Remuneration	80,405.00	1,20,643.00
k) Professional Charges	5,16,987.00	6,49,720.00
1) Advertisement and Publicity	6,82,215.00	10,88,706.00
m) Magazines & Journals	6,99,618.00	11,70,302.00
n) E-resource subscription	19,63,231.00	17,54,968.00
o) Others (specify)Medicine	4,94,750.09	1,88,708.00
p) Misc Expenditure	37,196.00	1,54,768.00
q) Publication Printing of Books	2,25,533.00	9,72,887.50
Total	**1,54,34,156.09**	**1,86,45,049.99**

Sd/-	Sd/-	Sd/-
(Rakesh K. Sharma)	(Col. Vijay K. Tiwari)	(Makarand R. Paranjape)
Accounts Officer	Secretary	Director

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

SCHEDULE-18 TRANSPORTATION EXPENSES

Amount in Rs. Ps.

Particulars	**Current Year 2019-20**	**Previous Year 2018-19**
1 Vehicles (owned by institution)		
a) Running expenses	2,88,604.00	3,53,021.00
b) Repairs & maintenance	1,29,204.00	44,744.00
c) Insurance expenses	-	
2 Vehicles taken on rent/lease	-	
a) Rent/lease expenses	-	
3 Vehicle (Taxi) hiring expenses	-	
Total	4,17,808.00	3,97,765.00

SCHEDULE-19 REPAIRS & MAINTENANCE

Particulars	**Current Year 2019-20**	**Previous Year 2018-19**
a) Buildings	6,94,23,151.00	3,04,57,481.00
b) Furniture & Fixtures	-	-
c) Plant & Machinery	-	-
d) Office Equipment	3,90,789.00	5,41,561.00
e) Computers	-	-
f) Laboratory & Scientific equipment	-	-
g) Audio Visual equipment	-	-
h) Cleaning Material & Services	-	-
i) Book binding charges	-	-
j) Gardening	3,22,554.00	4,02,375.00
k) Estate Maintenance	-	
1) Others (Specify) Consumble store	14,69,827.50	3,01,288.18
Fixed assets written off	-	
Total	**7,16,06,321.50**	**3,17,02,705.18**

Sd/-	Sd/-	Sd/-
(Rakesh K. Sharma)	(Col. Vijay K. Tiwari)	(Makarand R. Paranjape)
Accounts Officer	Secretary	Director

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

SCHEDULE-20 FINANCE COSTS

Amount in Rs. Ps.

Particulars	Current Year 2019-20	Previous Year 2018-19
a) Bank charges	5,358.22	2,722.30
b) Refund of Interest to GOI	32,61,146.93	-
Total	**32,66,505.15**	**2,722.30**

SCHEDULE-21 OTHER EXPENSES

Particulars	Current Year 2019-20	Previous Year 2018-19
a) Provision for Bad and Doubtful Debts/Advances	-	-
b) Irrecoverable Balances Written - off	-	-
c) Grants/Subsidies to other institutions/organizations	-	-
d) Others (specify)	-	-
Total	-	

SCHEDULE-22 PRIOR PERIOD EXPENSES

Particulars	Current Year 2019-20	Previous Year 2018-19
1 Retirment Benefits	-	
2 Academic expenses	-	
3 Administrative expenses	-	
4 Transportation expenses	-	
5 Repairs & Maintenance	(46,43,481.00)	
6 Other expenses	-	38,672.60
Total	(46,43,481.00)	**38,672.60**

Sd/-	Sd/-	Sd/-
(Rakesh K. Sharma)	(Col. Vijay K. Tiwari)	(Makarand R. Paranjape)
Accounts Officer	Secretary	Director

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

RECEIPT AND PAYMENT ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31.03.2020

Amount in Rs. Ps.

	RECEIPT	Current Year	Previous Year	1	Expenses	Current Year	Previous Year
1	Opening Balance				a) Establishment Expenses	13,06,98,393.00	10,40,08,688.00
	a) Cash Balances	1,18,714.00	1,73,955.00		b) Academic Expenses	76,30,667.00	2,31,98,428.80
	b) Bank Balances				c) Administrative Expenses	3,02,95,321.22	2,35,63,546.06
	i) In Current accounts				d) Transportation Expenses	2,93,682.00	3,62,702.00
	ii) Saving accounts	4,63,18,714.53	13,36,97,424.03		e) Repair & maintenance	4,27,22,557.00	7,46,69,674.00
	iii) Term deposit with bank	25,50,44,871.00	22,07,62,795.00		f) Prior period expenses/ Bank Charges	-	2,722.30
2	Grants Received			2.00	Payment against Earmarked/Endowment Funds	95.00	-
	a) From Government of India						
	i) Capital Grant	1,30,00,000.00	56,81,000.00	3.00	Recoverable from Others		
	ii) Revenue Grant	18,64,00,000.00	14,49,01,000.00	4.00	Payment against Sponsored Fellowship/ Scholarship		
	b) From Ministry of culture (GOI)			5.00	Investment and Deposits made a) Out of Earmarked/ Endowment funds b) Out of own funds (Investments -Others		
	c) From other sources (Interest on FDR with Bank in respect of IC4HD)	1,53,47,462.00	1,35,48,973.00	6.00	Term Deposits with Scheduled Banks renewed		-

	c) Grant in Aid recoverable from GOI			7.00	Expenses Payable	41,39,511.00	-
3	Academic Receipts				Recoverable from Bank	27,92,316.00	
4	Receipts against Earmakred/Endowment Funds	12,73,213.00	-				
5	Receipts from IC4HD						
					a) Fixed Assets		
6	Receipts against sponsored Fellowship and Scholarships				i) Out of Grant in aid	8,69,689.00	18,82,726.74
7	Income on Investments from) a) Earmarked/Endowment funds b) Other investments	-	-		ii) From own sources	-	-
8	Interest received on				b) Capital Works-in-progress		
	a) Bank Deposit				Other payments including statutory payments	-	-
	b) Loan and advances	-	-		Refunds of intt on GIA Grants	32,61,146.93	
	c) Saving Bank Accounts	8,77,583.00	32,61,146.93	8.00	Advances and Withdrawn		
9	Investments encashed	-	-	9.00	a) Staff	5,00,000.00	1,28,000.00
10	Terms deposits with scheduled Banks matured	-	-	10.00	b) Others	1,93,000.00	35,13,951.00
					Closing balances		
11	Other Income (including Prior Period Income	1,05,72,024.85	1,06,97,111.47	11.00	a) Cash in Hand	-	1,18,714.00
12	Deposits and Advances	21,18,019.00	63,733.00	12.00	b) Bank Balances		
					In Current Accounts		
13	Miscellaneous Receipts including	1,18,697.00	25,600.00		In Saving Accounts	4,17,27,940.23	4,63,18,714.53

14	Any Other Receipts	-			Term deposit with bank	26,60,64,980.00	25,50,44,871.00
	Total	**53,11,89,298.38**	**53,28,12,738.43**		**Total**	**53,11,89,298.38**	**53,28,12,738.43**

Sd/-
(Rakesh K. Sharma)
Accounts Officer

Sd/-
(Col. Vijay K. Tiwari)
Secretary

Sd/-
(Makarand R. Paranjape)
Director

INDIAN INSTITUE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA – 171 005

ACCOUNTING POLICIES AND NOTES TO ACCOUNTS FOR THE YEAR ENDING 31.03.2020

ACCOUNTING POLICIES (Schedule-23)

(a) Accounting Concepts

The financial statements have been prepared under the Historical Cost convention in accordance with the Generally Accepted Accounting Principles as applicable in India.

The Society generally follows Accrual System of Accounting and recognizes significant items of Income and Expenditure on Accrual Basis.

(b) Revenue Recognition:

i. GIA is accounted for on receipt basis.

ii. Incomes from Interest on Investments are accounted on accrual basis.

iii. Interest on interest bearing advances to staff for House Building, Purchase of Vehicles and Computers is accounted on accrual basis every year, though the actual recovery of interest starts after the full repayment of the Principal.

Fixed Assets

i. The Fixed Assets of the Society are stated at Historical Cost and includes allthe incidental expenses. Fixed assets appearing in the balance sheet are at cost less depreciation.

ii. Land and Building in which institute is operating its activities is gifted by GOI to the institute. However, ownership of the land and building as per revenue record is with the CPWD. Hence financial value of the same is not accounted for in the books of accounts.

iii. Fixed assets purchased from the capital Granit in Aid has been shown as addition in the fixed assets.

iv. No fixed assets has been sold or disposed off, retire from their active use during the year.

(c) Depreciation:

i. As per accounting policy followed during previous years, no depreciation on old balances of fixed assets acquired up to 31.3.2014 have been provided during year.

However, Depreciation on addition made in fixed assets after 01.04.2014 have been provided as per rates prescribed in Formats of Financial Statements for Central Higher Educational Institutions with WDV method.

ii. As the freehold land and building has not been accounted for in the books of accounts, No depreciation has been charged on the same.

iii. Assets, the individual value of each of which is Rs. 2000 or less (except Library Books) are treated as Small Value Assets, 100% depreciation has been provided in respect of such assets at the end of the year by taking useful life as 1 year and WDV Re.1/- per asset.

iv. Depreciation has been transferred to capital Grant-in-Aid, in case of fixed acquired out of Grant-in- Aid.

(d) **Method of Valuation/Inventory:** Valuation of Publication (Books) Inventory, publication, souvenir items consumable items, medicine is on the basis of Cost or Net Reliable Value, whichever is less.

(e) Valuation of investments: Investments are valued at cost pulse interest accrued.

(f) **Change in accounting policy**: To prepare the financial statements as per the Formats of Financial Statements for Central Higher Educational Institutions During the year additions in fixed assets has been credited to the Corpus Fund "*Grants from UGC, Government of India and State Government to the extent utilized for capital expenditure"* as prescribed in the Formats of Financial Statements for Central Higher Educational Institutions.

(g) **Treatment of employee retirement benefits**: Retirement benefits to the regular employees are to be paid by the Central Govt at the time of retirement of employee. Provision made during the year has been accounted for on the basis of the calculation sheet provided by the administration department of the institute. As the retirement benefits are guaranteed by the Central Govt and budget is released by the Central Govt. Therefore provision shown in the balance sheet is not as per the actuarial valuation and institute feel there is no need for actuarial valuation.

(h) **Provision for Income Tax**: During the year society is got registered u/s 12A of the income tax act, 1961. Hence provision for income tax has not been made during the year.

(i) **Corpus Fund:** During the year Rs 718419.00 has been received in Corpus fund account. This amount will be utilised as per the direction of the management. This amount along with Interest earned is also credited to designated/ Earmarked fund account.

(j) **Endowment fund**: During the year Rs 508744.00 has been received in endowment fund account. This amount will be utilised as per the direction of the management. This amount along with Interest earned is also credited to designated/ earmarked fund account.

NOTES TO ACCOUNTS (Schedule-24)

1. **Contingent Liabilities:** There is no contingent liability as on 31.03.2020.
2. The accounts have been prepared as per the new format supplied by the Ministry of Human Resource Development (Government of India) in compliance with Uniform Accounting Standard.
3. Separate Balance Sheet has been prepared for General Provident Fund Account, IUC Funds and Mess Funds.
4. Detail of provision for Provision of Gratuity and Leave encashment : Detail of the same is as under:

Particulars	As on 31.3.2020	As on 31.03.2019
Provision of Gratuity	3,34,65,510.00	2,77,78,398.00
Provision for Leave encashment	2,48,92,578.75	1,93,44,044.00

5. Institute Publication amounting to Rs.58,84,267.75 (as at 31.03.2019 Rs. 58,65,736.75) as shown in the balance sheet under “Current Assets” is based on the information supplied by the Sales and Public Relation Officer(SPRO)
6. In the opinion of the Institute the Current Assets, Loans and Advances are approximately of the value stated, if realised in the ordinary course of business. The provision of all the known liabilities is adequate and not excess of the amount considered reasonably necessary.
7. Debit and Credit balances in the accounts of Creditors, Debtors and others are subject to confirmation and reconciliation.
8. Sundry debtors Rs. 5,04,744.00 out of these Rs. 360570.80 has been purposed to write off. Balance sundry debtors of Rs.147173.20 are considered good for Recovery.
9. Miscellaneous advance Rs .24,44,442.00 which is outstanding from recovery for more than five years, however these are considered good for recovery.
10. As per the requirement of funding agency i.e UGC separate balance sheet of IUC fund has been prepared. Fixed assets of IUC funds is Rs. 86,87,236.00 Ownership of the same is vested with institute.
11. Previous year figure have been re-worked, re-grouped and rearranged, wherever considered necessary to make the comparable with those of current year
12. Schedule 1 to 24 is integral part of Balance Sheet and has been duly authenticated.

Sd/-	Sd/-	Sd/-
(Rakesh K. Sharma)	(Col. Vijay K. Tiwari)	(Makarand R. Paranjape)
Accounts Officer	Secretary	Director

INTER UNIVERSITY CENTER FOR HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES (UGC)

DOGER & Co.
CHARTERED ACCOUNTANTS
(O) 0177-2656809, 2656162, (M) 98170-73000

AUDITORS' REPORT

We have audited the "Balance Sheet "of Inter University Centre for Humanities and Social Sciences (UGC), Shimla as at 31st March, 2020 and also their 'Receipt and Payment Account "and Income and Expenditure Account" for the year ended on that date, annexed here to and report that: -

These financial statements are the responsibility of the Inter-University Centre Management. Our responsibility is to express an opinion on these financial statements based on our audit.

We conducted our audit in accordance with auditing standards generally accepted in India. Those standards require that we plan and perform the audit to obtain reasonable assurance about whether the financial statements are free of material misstatement. An audit includes examining, on a test check basis, evidence supporting the amounts and disclosures in the financial statements. An audit also includes assessing the accounting principles used and significant estimates made by the management, as well as evaluating the overall financial statements presentation. We believe that our audit provides a reasonable basis for our opinion.

Subject to foregoing remark we report that: -

1. We have obtained all the information and explanation which to the best of our knowledge and belief were necessary for the purpose of audit.
2. In our opinion and to the best of our information and according to explanation given to us the said accounts read with the Accounting Policies & Annexure to Audit Report in Schedule 2, give a true and fair view:-
   (a) In the case of the Balance Sheet, of the state of affairs of the Centre as at 31st March, 2020.
   (b) In the Case of Income and Expenditure Account, of the amount utilized form Grant-in-Aid for the year ended on that date.
   (c) In case of Receipt and Payment Account, of the amount received and payments made during the year ended on the date.

for Doger & Co.,
Chartered Accountants
ICAI FRN 019516N

Shimla
Dated: 17/02/2021

CA. Munish Kaundal
Partner M.No. 508733
UDIN: 21508733AAAABR5975

Office: First Floor, Opp. Panchayat Bhawan Main Gate, Bus Stand, Shimla (H.P.)171001
Email ID: dogersachin@gmail.com

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

(BALANCE SHEET AS ON 31ST MARCH, 2020)

Liabilities		Amount (Rs)		Assets		Amount (Rs)
Capital Reserve	74,88,354.00	86,87,236.00		Fixed Assets		86,87,236.00
Opening Balance	74,88,354.00			(As per Schedule-I)		
Add: Additions for the Year	11,98,882.00					
				Current Assets, Loans & Advances		45,70,184.51
Current Liabilities		45,70,184.51		SBI SB A/c 10116686391	34,53,817.51	
Unspent Grant In Aid	40,84,678.51			GIA Receivbale from UGC	2,56,576.00	
				Advance To Drivers	5,50,000.00	
Amount Payable to IIAS (Main A/c)	52,112.00			Loans and Advances (Asset)	3,09,791.00	
Salary/Wages payable	68,016.00					
Expenses Payable	3,55,600.00					
Audit Fee payable	9,778.00					
Total		**1,32,57,420.51**		**Total**		**1,32,57,420.51**

Sd/-
(Rakesh K. Sharma)
Accounts Officer

Sd/-
(Col. Vijay K. Tiwari)
Secretary

Sd/-
(Makarand R. Paranjape)
Director

As per our report of even date

for Doger & Co.
Chartered Accountants
ICAI FRN 019516N

(CA Munsih Kaundal)
ICAI M.No. 090655
ICAI M.No. 508733

Place : Shimla
Dated: 22.10.2021

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

SCHEDULE OF FIXED ASSETS FOR THE FINANCIAL YEAR 2019-20

Schedule-1

S.No	Item	**Opening Balance as on 1.4.2019**	**Addition during the year**	**Deletion during the year**	**Closing Balance as on 31.03.2020**
1	Computer	1764725.00	0.00	0.00	1764725.00
2	Electrical Equipment	876816.00	1198882.00	0.00	2075698.00
3	Furniture & Fixtures	1444317.00	0.00	0.00	1444317.00
4	Library Books	2809649.00	0.00	0.00	2809649.00
5	New Vehicle	592847.00	0.00	0.00	592847.00
	Grand Total	**7488354.00**	**1198882.00**	**0.00**	**8687236.00**

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

RECEIPTS AND PAYMENTS STATEMENT FOR THE YEAR 1ST APRIL, 2019 TO 31ST MARCH , 2020

	Receipts	Amount (Rs)		Payments	Amount (Rs)
By	**Opening Balance**		To	Revenue Expenditure	
	- SBI SB A/c 10116686391	52,20,226.01		121 Admim.& Secretal Support of Postage ,Medical	73,044.00
				127 Computer Facilities and Other Electronics	34,260.00
By	**Revenue Receipts**			145 Maintenance Allowance	8,74,425.00
	- Interest Received	97,699.00		146 T.A to Associates	7,31,122.00
	- Misc Income	2,967.00		147 Research Seminar /Studyweek/workshop	11,265.00
				150 Misc.Contigent Exp.	11,13,956.00
By	**Other Receipts**			153 Maintence of IUC Vehicle of POL	1,42,359.00
	- Mess Charges Collected	4,96,160.00		Salary/wages OTA/contractual Staff	23,21,338.00
	- Grant-in -Aid	48,55,000.00			
	- Advance Refunded by Driver	1,655.00	To	Other Payment	
				- Misc Advances	7,99,149.00
				- Mess Charges deposite with IIAS Mess	4,96,160.00
				- Audit Fee Payable	9,681.00
				- Purchase of Machinery	5,94,133.00
				- Bank charges	265.50
				- Paid to IIAS Main Account	18,732.00
			To	Closing Balance	
				- SBI SB A/c 10116686391	34,53,817.51
	Total Rs	#########		**Total Rs**	**1,06,73,707.01**

Sd/-
(Rakesh K. Sharma)
Accounts Officer

Sd/-
(Col. Vijay K. Tiwari)
Secretary

Sd/-
(Makarand R. Paranjape)
Director

As per our report of even date

for Doger & Co.
Chartered Accountants
ICAI FRN 019516N

(CA Munsih Kaundal)
ICAI M.No. 090655
UDIN: 21508733AAAABR5975

Place : Shimla
Dated: 22.10.2021

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

INCOME AND EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH,2020

	EXPENDITURE	AMOUNT (Rs.)	INCOME	AMOUNT(Rs.)
To			By Income :	
	121 Admim.& Secretal Support of Postage ,Medical,	73,044.00	- Interest earned	97,699.00
	127 Computer Facilities and Other Electronics	34,260.00	- Misc Income	2,967.00
	145 Maintenance Allowance	8,74,425.00	- Grant in Aid Utilized	52,58,555.50
	146 T.A to Associates	7,31,122.00		
	147 Research Seminar /Studyweek/workshop	-1,900.00		
	150 Misc.Contigent Exp.	11,13,956.00		
	153 Maintence of IUC Vehicle of POL	1,42,359.00		
	Professional Expenses	9,736.00		
	Salary/wages OTA/contractual Staff	23,81,954.00		
	Bank Charges	265.50		
To	**Salary Expenditure**			
	- Admin. Unit Wages OTA,TA/Da /Honororium	-		
	Total	**53,59,221.50**	**Total**	**53,59,221.50**

ANNEXURE TO AUDIT REPORT

1. **Compliance of Previous year Audit Report:** Compliance of the previous audit report has not been shown to us. Audit paras of previous year report are reproduced asunder:

   a. Advance of Rs. 18,475.00 recoverable from Professor R.S. Mishra is long outstanding in the books of accounts since 1994-95. However no concrete steps have been taken to recover the amount for the last 24 year. Efforts should be made to adjust/recover the same at theearliest.

   b. Advance of Rs. 1,00,000.00 was paid to Dr. V.C. Thomas on 20.03.2004. Expenses related to this advance paid have not been booked in the books of accounts till the date of audit. 15 years have since passed and the amount is still outstanding in the books of accounts. Sincere efforts are required to be made to adjust / recover the same at theearliest.

   c. Another advance of Rs. 15,000.00 was paid to Director ICAR New Delhi through ARO for seminar. Out of the above advance, Rs. 10,000.00 is still outstanding for which the corresponding expenses have not been booked till the date of audit. Steps are being taken to adjust/recover this amount. However, we are to state that this amount should be reconciled immediately either through recovery of amount or booking of corresponding expenditure as peractual.

   d. Similarly an advance of Rs. 2,75,000.00 was paid to Registrar, Jawaharlal Nehru University, New Delhi on 30.03.2007 through ARO for organizing seminar. From the said advance an expenditure of Rs. 94,884.00 has been booked post seminar and an amount of Rs. 1,80,116.00 is still outstanding for which no expenditure details have been received by the Institute. The amount is outstanding for 12 years till the date of audit. We are to state that stringent directions be passed for adjustment /recovery of this amount at theearliest.

For Doger& Co.
Chartered Accountants
I ICAIFRN 019516N

Place: Shimla
Dated: 23.12.2020

CA. Munish Kaundal
Partner
ICAIAI M. No. 508733
UDIN: 21508733AAAAEE9598

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

ACCOUNTING POLICIES FOR THE YEAR ENDING ON 31st March, 2020

1- Accounting Convention - The financial statements are prepared under the historical cost convention on accrual basis and in accordance with generally accepted accounting principles and applicable accounting standards in India. Except insurance of vehicle expenses which have been accounted for on cash basis.

2- Fixed Assets: Fixed assets are shown at historical cost. The cost includes any cost attributable in bringing the assets to its working condition for its intended use.

3- Depreciation on Fixed assets: As per accounting policy followed by the Institute, no depreciation has been charged on the Fixed Assets.

4- Retirement Benefits: Provisions for retirement benefits of the employees are not provided in the books of accounts as all of the employees are hired on contractual basis.

Sd/-	Sd/-	Sd/-
(Rakesh K. Sharma)	(Col. Vijay K. Tiwari)	(Makarand R. Paranjape)
Accounts Officer	Secretary	Director

for Doger & Co.
Chartered Accountants
ICAI FRN 019516N

(CA Munsih Kaundal)
ICAI M.No. 508733

LIBRARY

The library caters to the needs of Fellows, Associates, visiting professors, visiting scholars, IUC Associates, Consulting members and seminar participants etc. It remains open throughout the year except the gazetted holidays. The activities and the services of the library during the years as under: -

1. **Library Services:** The library is a member of E-Shodh Sindhu and has access to all major e-resources under the consortium in the field of Humanities and social science. The library is fully automated and the catalogue of the books is on Institute's website. By using internet, users can access library catalog 24x7 hours from anywhere.

2. **Digitization of Institute's out of copyright books:** Digitization is an ongoing process. The library has initiated to digitize the out of copyright books and IIAS monographs. It has digitized 11,848 books. The library has successfully customized the Dspace layout and configured the Pdf viewer, which enables us to restrict the download of copyright books. A dedicated team of library professional has been engaged for the scanning of books. On an average 1000 pages are being scanned every day. These scanned pages are being further edited by using appropriate software; the OCR of the scanned book is also being done by the library team. A suitable interface for uploading and searching of digitized books has also been developed by the library. The digitized content can be accessed by the scholar community from our website: http://14.139.58.199:8080/jspui/. During the period under report the library has digitized 2488 books.

3. **Pre-Print server:** To strengthen Humanities and Social Sciences digital content. The library has initiated and installed the Open Preprint System (OPS) in 2020. It is an open-source preprint server for managing the posting of research papers. It is being used for hosting preprint materials in the field of Humanities and Social Sciences. It contains unpublished researcher papers submitted by the Fellows and Associates of the institute. Suitable open-source software is being used to facilitate upload, search, view, and download the unpublished articles. This platform is dedicated to the scholars associated with the Institute and making early versions of research outputs permanently available. The objective of establishing a preprint server is to disseminate the knowledge and make it searchable for the benefit of the academic community. It is to expand the preprint server at the national level to facilitate the hosting of unpublished research papers in the Humanities and Social Sciences. In this regard, suitable software and server have been configured. The library is the first in the country to successfully implement Open Preprint System (OPS). Currently, it has more than 500 research papers. IIAS Preprint Server can be accessed by anyone at anytime from anywhere by visiting the website: 14.139.58.200/ops/index.php/ips/.

4. **Hosting of IIAS Journals:** IIAS Open Access policy implementation moved forward with

the launch of two peer-review journals such as SHSS and Summerhill using the Open Journal System (OJS). The IIAS has published two peer review journals since 1994 in print form. In the year 2018, a major project was undertaken to host these journals on the online platform. The library has successfully hosted these journals (Summerhill and SHSS) using open-source software Open Journal System (OJS) and made them accessible to the public without any restrictions. The library has digitized all issues starting, from vol.1 and no.1. During this process, the library staff has scanned, split, and converted it into PDF format. In addition, it has developed a feature of indexing all the issues at the article level and created names of individual authors and their affiliations of more than 1200 articles. The entire work was successfully executed by the library staff.

PUBLICATIONS

The Institute's main objective is to encourage and disseminate research. It publishes the research outputs of its Fellows, the Visiting Professor and the proceedings of the seminars conducted by the Institute in the form of books. These are published either as entirely IIAS publications, or in collaboration with leading commercial publishers such as Orient Blackswan, Oxford University Press, Permanent Black, Routledge, SAGE, Primus, Springer and the like. The Institute has over 500 such publications to its credit. These are available at the IIAS Bookshop located in the Fire-Station Café on the campus. They can also be procured online through the Institute's website iias.ac.in & Amazon or through written requests to the Sales and Public Relations Officer of the Institute.

The following books/journals as published during this period

1. Reference As Action: Space and Time in Later Wittgenstein by Dr. Enakshi Ray Mitra
2. Tripunithura Grandhavari- A Study by Dr. P. Narayanan.
3. The Yoga of Netra Tantra Third Eye and Overcoming Death by Professor Bettina Sharada Baumer (Co-published with D.K. Printworld).
4. Need for Inclusive Reforms: Varying Perspectives edited by Dr. Arun Kumar.
5. Spatializing Popular Sufi Shrines in Punjab Dreams, Memories, Territoriality by Dr. Yogesh Snehi (Co-published with Routledge).

   Sanskrit Parsing Based on the Theories of Sabdabodha by Dr. Amba Kulkarni (Co-published with D.K. Printworld).
6. Tracing Gandhi Satyarthi to Satyagrahi by Dr. Samir Banerjee (Co-published with Routledge).
7. (Hi) Stories of Desire Sexualities and Culture in Modern India edited by Dr. Rajeev Kumaramkandath & Dr. Sanjay Srivastava (Co-published with Cambridge University Press).

8. Structuring Advaita Dialetic: A Study on Shree Harsha's Khandanakhandakhadyam and Naishadhiyacharitam by Dr. A.P. Francis.
9. बनारसी ठुमरी की परंपरा–ठुमरी गायिकाओं की चुनौतियाँ एवं उपलब्धियां"- डॉ. ज्योति सिन्हा।
10. Food in the Life of Mizos: From Precolonial Times to the Present by Dr. Jagdish Lal Dawar.
11. Rethinking Comparative Aesthetics in a Contemporary Frame edited by Professor R.N. Misra & Professor Parul Dave Mukherji.
12. Twenty-Third Dr. Sarvepalli Radhakrishnan Memorial Lecture 'The Dharma of Translation Sanskrit Classics in Contemporary Times' by Shri Bibek Debroy.

Journals

1. Summerhill: IIAS Review Vol. XX, No.2, Winter 2014 edited by Dr. Albeena Shakil.
2. Summerhill: IIAS Review Vol. XXIV, No.2, Winter 2018 edited by Professor Vibha Arora.
3. Summerhill: IIAS Review Vol. XXV, No.1, Summer 2019 edited by Professor Amiya Sen and Professor R.C. Pradhan.
4. Summerhill: IIAS Review Vol. XXV, No.2, Winter 2019 edited by Professor Amiya Sen and Professor R.C. Pradhan.
5. हिमांजलि अंक -18 (जुलाई- दिसम्बर 2018) संपादक- डॉ. रमाशंकर सिंह एवं डॉ. मनीषा चौधरी।
6. हिमांजलि अंक -19 (जनवरी-जून 2019) संपादक -डॉ. रमाशंकर सिंह एवं डॉ. मनीषा चौधरी।

OFFICIAL LANGUAGE CELL

During the period under report the Institute made following efforts to follow the guidelines issued by the Department of Official Language (Ministry of Home Affairs) and the Official Language Division (Ministry of Education) for practical use and promotion of Hindi in official work:

The Institute organized quarterly meetings of Official Language Implementation Committee on 21st June 2019, 23rd September 2019, 12th December 2019 and 18th March 2020. The meeting was presided over by the Secretary of the Institute in which Section Heads were present. The ways and means for progressive use of Hindi in official works were discussed and steps were taken to comply with the guidelines of Department of Official Language, Ministry of Home Affairs and Official Language Division, Ministry of Education, Government of India in this regard.

The Institute submitted Quarterly Hindi Progress Reports in time to the Department of Official Language (Ministry of Home Affairs), Division of Official Language (Ministry of Education) and Town Official Language Implementation Committee, Shimla.

Like every year, the Institute organised Hindi Diwas Samaroh with great enthusiasm. Eminent

educationist, linguist of the country and the Chairman of the Institute Professor Kapil Kapoor, all the National Fellows, Fellows, Associates and officials of the Institute were present on this occasion. Professor Kapil Kapoor said in his address that Hindi is a symbol of our national identity and the knowledge contained in it and other regional languages of India is not less than the English language, but we are still directly and indirectly slaves to the colonial mentality. Propagation and promotion of Hindi and other regional languages of India is very necessary for the success of democracy. Professor Ramesh Chandra Pradhan said that Hindi is the language of our soul. Professor M.P. Singh emphasized the need to study the areas of social science through Hindi medium and to formulate the language policy of the country. Professor Megha Deshpande highlighted the importance of Hindi language and recited the poem 'Srijanta'. Professor Data Ram Purohit said that most of the credit for the development of Hindi language goes to the Hindi Cinema industry and Hindi scholars. Professor Sharad Deshpande said that on this occasion there should be an open discussion on the development of Hindi and the challenges being faced. Dr. Satyendra Kumar emphasized to link Hindi language with employment. Professor Hitendra Patel, Dr. Abhishek Kumar Yadav, Dr. Bahadur Singh Parmar and Dr. Anita Nair also expressed their concern over the present condition of Hindi language in their lectures. The Secretary of the Institute, Col. (Dr.) Vijay Tiwari said that there is no deed to worry about the development and promotion of Hindi. Today many languages can coexist. The countrymen living in remote, border areas understand Hindi very well and the villagers of those areas communicate well in Hindi with the army. The 18th issue of the bi-annual Hindi magazine 'Himanjali' was also launched on this occasion.

The Institute organized various Hindi competitions in the month of September-October 2019. The Officials of the Institute participated with great enthusiasm. The winners of competitions were awarded as per the incentive scheme for promoting official language.

10 officials of the Institute were awarded for doing maximum work in Hindi during previous financial year under the incentive scheme for noting/drafting in Hindi introduced by the Department of Official Language, Ministry of Home Affairs.

MISCELLANEOUS

SALES AND PUBLIC RELATIONS

During the period from 1st April 2019 to 31st March 2020, the visitors purchased **1476** books costing to Rs. 3,64,326.00 (Rupees Three Lakh Sixty Four Thousand Three Hundred Twenty Six only). The Institute sold **569** books to various clients across the country of a sum of Rs. 1,84,016.00 (Rupees One Lakh Eighty Four Thousand Sixteen Only). The Institute participated in World Book Fair held at New Delhi w.e.f 04-01-2020 to 12-01-2020 and sold **578** books. Net amount from the sale of books was Rs. 1,09,887.00 (Rupees One Lakh Nine Thousand Eight

Hundred Eighty Seven only). The Institute also sold **745** books through online platforms such as Buildbazzar and Amazon worth Rs.1, 97,227.00 (Rupees One Lakh Ninety Seven Thousand Two Hundred Twenty Seven Only). Thus the Institute received an amount of Rs. 8, 55,456.00 (Rupees Eight Lakh Fifty Five Thousand Four Hundred Fifty Six Only) from sale of its publications.

The Institute received 2, 20,999 Tourists and earned a sum of Rs.99, 89,850.00 (Rupees Ninety Nine Lakhs Eighty Nine Thousand Eight Hundred Fifty Only) by charging entry fee. The Institute has also earned a sum of Rs.7, 65,980.00 (Rupees Seven Lakhs Sixty Five Thousand Nine Hundred Eighty Only) from vehicles' entry fee. Thus, the total income during the period under report from tourists' entry fee was Rs. 1, 07, 55,830.00 (Rupees One Crore Seven Lakhs Fifty Five Thousand Eight Hundred Thirty Only).

Souvenir items such as a booklet of IIAS, T-shirts, Sweat-Shirts, Caps, Coffee Mugs, Picture Postcards, IIAS Calendars and Greeting Cards are available for sale at the IIAS Book Shop. During this period, the Institute sold souvenirs of a sum of Rs. 4,20,595.00 (Rupees Four Lakhs Twenty Thousand Five Hundred Ninety Five Only) from the gross sale of souvenir and earned Rs. 1,32,178.00 (Rupees One Lakhs Thirty Two Thousand One Hundred Seventy Eight Only) net profit.

ESTATE

During the period under report, both wings of the CPWD (Civil & Electrical) and Archaeological Survey of India (ASI) continued to attend the day-to-day maintenance work of the Institute. The details are as under:

a) A sum of Rs. 16, 13,540.00 was released to CPWD (Civil) by the Institute against the estimate of Rs. 48, 40,620.00 for repair and renovation of Mali Line-2.

b) A sum of Rs. 47, 05,000.00 was released to CPWD (Civil) by the Institute for A/R & M/O for non-residential buildings.

c) A sum of Rs. 51, 88,221.00 was released to CPWD (Civil) by the Institute for A/R & M/O for residential buildings.

d) A sum of Rs. 62, 70,000.00 was released by the Institute to CPWD (Civil) for A/R & M/O (Residential & non-residential) works.

e) A sum of Rs. 22,04,300.00 was released to CPWD (Civil) by to Institute for provision of mezzanine floor and cement concrete paver block at Cow-shed at IIAS.

f) The Institute released a sum of Rs. 41, 25,788.00 to CPWD (Electrical) for A/R &M/O of residential & non- residential buildings.

g) The Institute released a sum of Rs. 26, 84,246.00 to CPWD (Electrical) for repair and renovation of electrical installation of Observatory Cottage (VRF/VRV system).

h) The Institute released a sum of Rs. 7, 37,901.00 to CPWD (Electrical) for repair and renovation of electrical installation of Delvila servant quarters.

i) The Institute released a sum of Rs. 8,09,993.00 to CPWD(Electrical) for providing EI at main building IIAS, replacement of old wiring, DB, switches with new wiring DB and switches.

j) The Institute released a sum of Rs. 8, 38,497.00 to CPWD (Electrical) for renovation of Saria Store building for new CPWD enquiry under R.P. Niwas.

k) The Institute has released a sum of Rs. 37, 31,971.00 to CPWD (Electrical) for replacement of 4/6 passenger (408 kg.) Lift at IIAS, R.P. Nivas, Shimla.

l) The Institute released a sum of Rs.6, 94,537.00 to CPWD (Electrical) for up gradation and electrical installation and fixtures at Mali Line.

m) The Institute has released a sum of Rs. 16, 49,340.00 to CPWD (Electrical) for Maintenance of Electrical Installations (MOEI) at IIAS.

n) The Institute has released a sum of Rs. 22, 00,000.00 for MOEI 2019-20 against excess expenditure in addition demand.

o) During the period under report, the ASI has been asked to complete the pending works and to submit the utilization certificate at the earliest.

STORE AND SUPPLY

During the period under report the Store and Supply section purchased various office equipments of Rs. 25, 13, 660/- (Rupees twenty five lakhs thirteen thousand six hundred sixty only) for fellows and smooth functioning of the Institute.

DISPENSARY

Institute houses a well-equipped dispensary with a Resident Medical Officer and a Pharmacist. 2874 patients visited the dispensary and 70 emergencies were attended by the RMO beyond duty hours.

A lecture on *Harmful Effects of Tobacco and Drug Abuse* was organized on 31.05.2019 to observe the World No Tobacco Day. Ms. Nupur Khanna delivered a lecture on Waste Management and Cleanliness on 4th September 2019. Apart from this, lectures on various issues like Anger Management, Happiness, Meditation, and Emotional Intelligence were also organized.

In a Blood Test and Health Check-up camp on 18th and 19th June 2019, blood test screening of 132 officials, scholars in residence and their family members was done. Health and Wellness week was observed from 6th to 14th August 2019. Yoga Classes for the fellows, officials and their family members were also started at the Institute. Necessary Health Advisories were issued during the outbreak of Covid 19 in March 2020.

HORTICULTURE

The Institute has a beautiful and expansive garden with a variety of flora, and is one of best landscaped gardens located at such a height. The garden is watered throughout the year by rain water harvested from the roof of the large buildings on the estate. There are three nurseries in the garden that cater to its needs and to also nurture some rare Himalayan plants. The Institute's garden has been recognized as one of the most beautiful and well-maintained gardens in the region. To the delight of those who love gardening, saplings are available for sale to the public in the nursery.

During the period under report, the Horticulture Section involved in maintenance and development of the heritage garden of the Institute including planting, pruning, fertilizing, pest management, mulching, watering, weeding, grounds clean-up, and general lawn maintenance. The main area's which come under the department are: Main building garden, Siddharth-vihar, Squire Hall, Prospectus hill, Bilaspur house, Red stone, Craillvilla, Apple orchard, Kiwi Block, Rose garden and other fellows/officers/staff residence. The garden has wide varieties of plants like Chinar, Maple, Magnolia, Orchids, Shrubs and climbers like Fuchsia, Wisteria, Tacoma, Honeysuckle, Bulbous plants like Clivia Lilly, Agapanthus Lilly, Crinum, Calla Lilly, Day Lilly, and huge varieties of annual flowers.

Besides day-to- day routine work the garden section planted around 1500 plants of strawberry (mainly chandler) in the Apple orchard, situated in the campus of the Institute and around 450 plants of cauliflower were planted between the rows of Apple trees.

VAN MAHOTSAV

During the period under report the Institute celebrated Van Mahotsav with great enthusiasm to save the Mother Nature and create awareness about Environment the Institute. All the fellows, officers and staff members of the institute plant trees (*Cedrus deodara, Aesculus indica, Quercus*) at different location of the Institute.

INTERNATIONAL YOGA DAY

The Institute celebrated International Yoga Day on 21st June 2019 with enthusiasm. A yoga camp was organized on this occasion. Yoga instructor Ms. Gayatri Iyer taught various *yogasanas* to the fellows, associates, officers, employees and their family members and highlighted the importance of yoga in life for physical and mental health.

INTERNAL COMPLAINT COMMITTEE

During the period under report the Institute received one complaint and immediate action was taken by the Internal Complaints Committee.

RIGHT TO INFORMATION

During the period under report 35 applications were received under RTI Act 2005 and supplied requisite information to the applicants well in time.

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

SOCIETY

1. Professor (Retd.) Kapil Kapoor
   Chairman, Governing Body
   Indian Institute of Advanced Study,
   Rashtrapati Nivas, Shimla – 171005.

2. Professor Makarand R. Paranjape
   Director
   Indian Institute of Advanced Study
   Rashtrapati Nivas, Shimla-171005

Rule 3(a) Institutional Members (Ex-Officio)

1. Shri R. Subrahmanyam, IAS
   Secretary
   Department of Higher Education
   Ministry of Human Resource Development
   Room No. 127-C-Wing
   Shastri Bhavan, New Delhi - 110 015

2. Shri Girish Chandra Murmu, IAS
   Secretary Expenditure
   Government of India
   Department of Expenditure
   Ministry of Finance
   North Block, Central Secretariat
   New Delhi -110 001

3. Shri Sukhbir Singh Sandhu
   AS (TE) &CVO
   Additional Charge of Joint Secretary (Higher Education & ICR Division)
   Union Ministry of Human Resource Development
   Room No.109-C
   Shastri Bhavan
   New Delhi – 110 015

4. Professor D.P. Singh
   Chairman
   University Grants Commission
   Bahadurshah Zafar Marg
   New Delhi – 110 002

5. Dr. Shekhar C. Mande
   Director-General
   Council of Scientific & Industrial Research
   Anusandhan Bhawan
   2; Rafi Ahmed Kidwai Marg
   New Delhi – 110 001

6. Dr. Braj Bihari Kumar
   Chairman
   Indian Council of Social Science Research
   Post Box No.10528
   Aruna Asaf Ali Marg
   New Delhi – 110 067

7. Professor Arvind P. Jamkhedar
   Chairman
   Indian Council of Historical Research
   35, Ferozeshah Road, New Delhi – 110 001

8. Professor Ramesh Chandra Sinha
   Chairman
   Indian Council of Philosophical Research
   36, Tughlakabad Institutional Area
   Mehrauli Badarpur Road
   New Delhi – 110 062

9. Professor Govind Prasad Sharma
   Chairman
   National Book Trust,
   5, Nehru Bhavan
   Institutional Area, Phase – II
   Vasant Kunj, New Delhi – 110 070

10. Dr. Chandrashekhar Kambar
    (President, Sahitya Akademi)
    "Siri Sampige"
    No. 44, Ist Main, Banashankari 3rd Stage,
    4th Block, Bengaluru-560 085

11. Shri Shekha rSen
    Chairman,
    Sangeet Natak Akademi,
    Rabindra Bhavan
    Ferozeshah Road, New Delhi – 110 001

12. Shri Uttam Pacharne
    Chairman
    Lalit Kala Akademi
    Rabindra Bhavan,
    35, Ferozeshah Road, New Delhi – 110 001

13. Shri Ajay Kumar Sood
    Chairman
    Indian National Science Academy,
    Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi 110002

14. Dr. Vinay Prabhakar Sahasrabuddhe
    President,
    Indian Council for Culture Relations
    N-38, Panchsheel Park, New Delhi –110 017

15. Professor Manikrao Madhavrao Salunkhe
    President
    Association of Indian Universities
    AIU House
    16 Comrade Indrajit Gupta Marg (Kotla Marg)
    Landmark: Opposite National BalBhawan, Near I.T.O.
    New Delhi -110002
    &
    Vice Chancellor
    Bharati Vidyapeeth (Deemed to be University), Pune

16. Shri A.D. Choudhury
    Director General
    National Library
    Belvedere, Alipore
    Kolkata – 700 027

17. Shri Pranav Khullar
    Director-General of Archives
    National Archives of India
    Janpath, New Delhi – 110 001

18. Dr. Shrikant Baldi, IAS
    Chief Secretary
    Government of Himachal Pradesh
    H.P. Secretariat
    Shimla - 171 002 (H.P.)

These Institutional members may, if necessary, be represented, at the meetings, by their nominees.

Rule 3(b) Nominated Member
Rule 3(b)(i) Six Vice-Chancellors of Indian Universities nominated by Central Government.

1. Professor Kuldip Chand Agnihotri
   Vice Chancellor
   Central University Dharamshala
   Himachal Pradesh- 176206

2. Vacant

3. Prof. S.K.Srivastava
   Vice-Chancelor
   North-Eastern Hill University
   Shillong 793 022

4. Professor B. Timmegowda
   Ex- Vice Chancellor
   Karnataka State Rural Development & Panchayath Raj University

5. Professor Appa Rao Podile
   Vice-Chancellor
   University of Hyderabad
   Prof.C.R. Rao Road, Gachibowli
   Hyderabad - 500046, Telangana

6. Professor Vasant Shinde
   Ex-Vice Chancellor
   Deccan College Post Graduate and Research Institute
   (Deemed to be University), Pune

Rule 3(b)(ii) Educationists and those eminent in the fields of learning, culture and science, nominated by the Central Government.

1. Professor Kapil Kapoor
   B-2/332, Ekta Garden,
   9-I.P.Extension,
   Mother Dairy Marg, Delhi – 110092.

2. Professor Chaman Lal Gupta
   Vice-Chairman, Governing Body
   Indian Institute of Advanced Study
   Rashtrapati Nivas, Shimla – 171005

3 Professor G.K. Karanth
   Professor Sociology
   Centre for Study of Social Change and Development
   Institute for Social and Economic Change
   Bangalore – 560072

4 Professor Sanjeev Kumar Sharma
   Vice-Chancellor,
   Mahatma Gandhi Central University
   Camp Office, Raghunathpur
   Motihari-845 401, Near OP Thana
   East Champaran, Bihar

5 Professor Pawan Kumar Sharma
Professor & HoD
Department of Political Science
Atal Bihar Vajpayee Hindi University
Madhya Pradesh - 462016

6. Professor B.K. Kuthiala
(Chairman, Haryana State Higher Education Council)
House No. 743, Sector-12A
Panchkula-134 109 Haryana

7. Professor (Dr.) Jagbir Singh
WZ- 707/C, Street No. 18
Shiv Nagar, Jail Road
New Delhi – 110058

8 Professor Rakesh Kumar Mishra
202, Sai Apartments
C-40, J Park-II
Mahanagar Extension
Lucknow-226 006

9. Professor HimanshuPrabha Ray
603 Ivory Towers,
The Retreat Complex
Sector 30, South City I
Gurgaon 122007, Haryana

10. Professor D. Murali Manohar
Department of English,
University of Hyderabad
P.O. Central University
Hyderabad - 500 046, Telangana State

11. Professor Sharad Deshpande
13 Khagol Vaigyanik
Cooperative Housing Society
38/1 Panchwati Pasan, Pune – 411008

12. Vacant

13. Professor D.N. Tripathi
    Leela Nilayam
    99-A, Indira Nagar, P O Sheopuri,
    New Colony, Gorakhpur -273 016
    Uttar Pradesh.

14. Professor Prema Nanda kumar
    Sri Aurobindo Scholar
    Swami Vivekananda Chair,
    Mahatma Gandhi University
    Kerala –686560.

15. Vacant

16. Shri Rajeev Malhotra
    Founder
    The Infinity Foundation
    174 Nassau St. PMB 400
    Princeton, NJ 08542

17. Dr. K.S.Kannan
    107, Vybhavi,
    17th Main, 4th Cross (New 2B Cross)
    Muneshwara Block Bangalore - 560 026

18. Professor ShantishreeDhulipudiPandit
    Department of Politics & Public Administration
    University of Pune
    Maharashtra- 411007

19. Professor G. Nageswara Rao
    Vice-Chancellor
    Andhra University
    Visakhapatnam- 530 003
    Andhra Pradesh

20. Professor Gururaj Karajagi
    Founder and Chairman,
    Academy for Creative Teaching (ACT)
    Bangaluru – 560032

Rule 3 (c) Representatives of the Institute

1. Director, Indian Institute of Advanced Study, Shimla.
2. All Fellows for the time being in position.

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
Rashtrapati Nivas, Shimla-171005

GOVERNING BODY

1. Professor (Retd.)Kapil Kapoor
   Chairman, Governing Body
   Indian Institute of Advanced Study,
   Rashtrapati Nivas, Shimla - 171005

2. Professor Chaman Lal Gupta
   Vice-Chairman, Governing Body
   Indian Institute of Advanced Study,
   Rashtrapati Nivas, Shimla – 171005.

3. Professor Makarand R. Paranjape
   Director
   Indian Institute of Advanced Study
   Rashtrapati Nivas, Shimla-171005

3. A representative each of the Ministry of Human Resource Development and the Ministry of Finance.

1. Shri R. Subrahmanyam, IAS
   Secretary,
   Department of Higher Education,
   Ministry of Human Resource Development,
   Room No. 127-C- Wing
   Shastri Bhavan,
   New Delhi -110 015.

2. Smt. Darshana M Dabral
   Joint Secretary & Financial Adviser
   Department of Secondary & Higher Education
   Ministry of Human Resource Development
   120-C, Shastri Bhavan,
   New Delhi - 110 015

4. Five Institutional Members

1. Professor D.P. Singh
   Chairman
   University Grants Commission,
   Bahadurshah Zafar Marg,
   New Delhi – 110 002.

2. Dr. Braj Bihari Kumar
   Chairman
   Indian Council of Social Science Research,
   Post Box No.10528,
   Aruna Asaf Ali Marg, New Delhi – 110 067

3. Professor Professor Ramesh Chandra Sinha
   Chairman,
   Indian Council of Philosophical Research,
   36, Tughlakabad Institutional Area,
   Mehrauli Badarpur Road, New Delhi – 110 062.

4. Dr. Girish Sahni,
   Director-General,
   Council of Scientific & Industrial Research and Secretary
   DSIR Anusandhan Bhavan,
   2 , Rafi Marg, New Delhi – 110 001.

5. Professor Arvind P. Jamakhedar
   Chairman
   Indian Council of Historical Research
   35, Ferozeshah Road, New Delhi – 110 001

These Institutional members may, if necessary, be represented, at the meetings, by their nominees.

4. Two Vice-Chancellors from category 3(b)(i) of the Members of Society nominated by the Central Government.

1. Vacant

3. Prof. S.K.Srivastava
   Vice-Chancelor
   North-Eastern Hill University,
   Shillong 793 022

5. Four persons from Category 3(b)(ii) of the Members of the Society nominated by the Central Government:

1. Professor Chaman Lal Gupta
   Vivek Kutir, Summer Hill,
   Shimla – 171005

2. Professor G.K. Karanth
   Professor Sociology
   Centre for Study of Social Change and Development,
   Institute for Social and Economic Change,
   Bangalore – 560072

3. Professor Sanjeev Kumar Sharma
   Vice-Chancellor
   Mahatma Gandhi Central University
   Camp Office, Raghunathpur,
   Motihari-845 401, Near OP Thana,
   District-East Champaran, Bihar,

4. Professor Gururaj Kharajagi
   Founder and Chairman,
   Academy for Creative Teaching (ACT),
   Bengaluru – 560032

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
Rashtrapati Nivas, Shimla-171005

FINANCE COMMITTEE

1. Professor Makarand R. Paranjape
Director
Indian Institute of Advanced Study
Rashtrapati Nivas
Shimla – 171 005

2. Smt. Darshana M Dabral
Joint Secretary & Financial Adviser
Department of Secondary & Higher Education
Ministry of Human Resource Development
120-C, Shastri Bhavan
New Delhi – 110 015

(ex-officio)

3. Professor Arvind P. Jamkhedkar
Chairman
Indian Council of Historical Research
35, Ferozeshah Road
New Delhi – 110 001

4. Professor (Dr.) Jagbir Singh
WZ- 707/C, Street No. 18,
Shiv Nagar, Jail Road,
New Delhi – 110058

5. Professor Sharad Deshpande
13 Khagol Vaigyanik
Cooperative Housing Society
38/1 Panchwati Pasan
Pune – 411008